छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल के पाठ्यक्रमानुसार

हिंदी

कक्षा- 10वीं

आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतः
छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल
रायपुर

वर्ष - 2018

पाठ्यक्रम एवं अनुक्रमणिका

सरल क्रमांक	इकाई क्रमांक	आबंटित अंक	पाठ की विधा एवं पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या
01	प्रथम इकाई	10	कविता 01	दोहे – कबीर, रहीम एवं वृन्द	01
			गद्य 02	हमारा आदिवासी समाज – सोमदत्त शर्मा	13
			व्याकरण (काव्य के तत्व)	रस – परिभाषा, अंग एवं प्रकार	21
02	द्वितीय इकाई	09	कविता 03	आज मैं बीज हूँ – नागार्जुन	27
			कविता 04	वीरों का कैसा हो बसंत – सुभद्रा कुमारी चौहान	31
			गद्य 05	धूप बत्ती : बुझी, जली – कन्हैयालाल	37
			लेखन 06	पत्र कैसे लिखें – पत्र लेखन	45
03	तृतीय इकाई	12	कविता 07	इसे जगाओ – भवानी प्रसाद मिश्र	52
			लेखन 08	निबंध कैसे लिखें – निबंध लेखन	56
			व्याकरण	शब्द शक्ति – अभिधा, लक्षणा एव व्यंजना (परिभाषा और उदाहरण)	60
04	चतुर्थ इकाई	08	कविता 09	वीरांगना – केदारनाथ अग्रवाल	63
			गद्य 10	लघु कथाएँ	66
			व्याकरण (काव्य के तत्व)	छंद का परिचय – दोहा, चौपाई, सोरठा, गीतिका, हरिगीतिका	70
05	पंचम् इकाई	10	कविता 11	बहुत दिनों के बाद – नागार्जुन	75
			गद्य 12	अपना–पराया – हरसरन सिंह बिश्नोई	77
			व्याकरण	तत्सम, एवं तद्भव शब्द	86

06	षष्ठम् इकाई	10	कविता 13	सवैया – रसखान	89
			गद्य 14	भारत की ये बहादुर बेटियाँ	92
			व्याकरण	मुहावरे और लोकोक्ति	103
07	सप्तम् इकाई	13	कविता 15	चन्द्रगहना से लौटती बेर – केदार नाथ अग्रवाल	108
			गद्य 16	बहादुर – अमरकान्त	111
			गद्य 17	जैसे कोई और हो – अशोक शुक्ल	122
			लेखन 18 .	प्रपत्र कैसे भरें	131
08	अष्ठम् इकाई	10	कविता 19	मेघ आए – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	141
			गद्य 20	ठेले पर हिमालय – धर्मवीर भारती	145
			लेखन 21 .	तालिका निर्माण कैसे करें	152
09	नवम् इकाई	08	कविता 22	पद – सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई	161
			गद्य 23	सरकारी मकान – रामदरश मिश्र	171
			व्याकरण (काव्य के तत्व)	अलंकार – परिभाषा एवं प्रकार	176
10	दशम् इकाई	10	कविता 24	बीती विभावरी, जाग री – जयशंकर प्रसाद	180
			गद्य 25	अखबार की दुनिया	184
			लेखन 26	समस्या प्रधान परियोजना, शुद्ध ज्ञान वर्धक परियोजना	190

हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को सीख लेने के बाद विद्यार्थी –

1. भाषिक तत्वों का ज्ञान तथा हिन्दी के भाषिक कौशलों की क्षमता का विकास कर सकेगा।
2. हिन्दी साहित्य को पढ़कर उसका रसास्वादन कर सकेगा।
3. भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना जागृत होगी।
4. व्यावहारिक एवं व्यावसायिक संदर्भों में हिन्दी का सटीक प्रयोग कर सकेगा।
5. विभिन्न मानवीय मूल्यों तथा सद्प्रवृत्तियों की पहचान कर सकेगा।
6. विभिन्न प्रकार के प्रपत्रों को ठीक–ठीक भर सकेगा।
7. अपने विचारों तथा भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकेगा।
8. परियोजना निर्माण कर समस्या को सही ढंग से प्रस्तुत कर सकेगा।
9. भाषा व व्याकरण को सही एवं शुद्ध रूप में प्रस्तुत कर सकेगा।
10. शब्दकोष में वृद्धि कर सकेगा।

संयोजक

श्री दीपक सिंह ठाकुर

लेखक मंडल

श्री दीपक सिंह ठाकुर

श्री कुबेर सिंह साहू

श्री रामचन्द्र राठौर

श्रीमती माया कोसरिया

श्री विद्यानंद पाण्डेय

प्रश्न – पत्र की योजना
SCHEME OF QUESTION PAPER

विषय
हिंदीं (201)

पूर्णांकः 100
समय : 3 घंटे

परीक्षा : हाई स्कूल

(अ) शैक्षणिक उद्देश्य के अनुसार मान

(A) Weightage as per Educational objective :

स0क्र0	उद्देश्य	अंक	प्रतिशत
1.	ज्ञान (Knowledge)	30	30%
2.	अवबोध (Understanding)	50	50%
3.	अनुप्रयोग एवं कौशल (Application & Skill)	20	20%
	योग	100	100%

(ब) इकाईवार अंको का मान

सं. क्रं.	इकाई / माड्यूल क्रं.	इकाई / माड्यूल का नाम	इकाई पर आबंटित अंक	प्रश्न–पत्र के प्रारूप अनुसार आबंटित अंक
1		प्रथम	10	1+2+3+4 =10
2		द्वितीय	09	1x2+2+5+ = 09
3		तृतीय	12	1x2+2+8 = 12
4		चतुर्थ	08	1x3+2+3 = 08
5		पंचम	10	1+2+3+4 = 10
6		षष्ठम	10	1x2+3+5 = 10
7		सप्तम	13	1x3+2x2+3x2 = 13
8		अष्टम	10	1x2+3+5 = 10
9		नवम	08	1+2+5 = 08
10		दशम	10	1x3+3+4 = 10

प्रश्न – पत्र ब्लूप्रिंट

BLUE PRINT OF QUESTION PAPER

विषय
हिंदी (201)

पूर्णांक: 100
समय : 3 घंटे

परीक्षा : हाई स्कूल

स. क्र.	इकाई / माड्यूल क्रं.	माड्यूल / इकाई का नाम	इकाई पर आबंटित अंक	अंकवार प्रश्न							कुल प्रश्न
				1अंक	2अंक	3अंक	4अंक	5अंक	6अंक	6अंक या इससे अधिक	
1		कविता– कबीर, रहीम वृन्द गद्य– हमारा आदिवासी समाज व्याकरण– रस	10	1	1	1	1	–	–	–	3(1)
2		कविता– आज मैं बीज हूँ वीरों का कैसा हो बसंत धूप बत्ती : बुझी, जली पत्र कैसे लिखे– पत्र लेखन	09	2	1	–	–	1 (पत्र)	–	–	2(2)
3		कविता– इसे जगाओ निबंध कैसे लिखे– निबंध लेखन व्याकरण– शब्द शक्ति	12	2	1	–	–	–	–	1 (निबंध)	2(2)
4		कविता– वीरांगना गद्य– लघु कथाएँ व्याकरण– छंद	08	3	1	1	–	–	–	–	2(3)
5		कविता– बहुत दिनों के बाद गद्य– अपना–पराया व्याकरण– तत्सम, तदभव	10	1	1	1	1	–	–	–	3(1)
6		कविता– सवैया गद्य– भारत की ये बहादुर बेटियाँ मुहावरे और लोकोक्ति	10	2	–	1	–	1 अपठित	–	–	2(2)
7		कविता– चन्द्रगहना से लौटती बेर गद्य– बहादुर, जैसे कोई और हो प्रपत्र कैसे भरें	13	3	2	2	–	–	–	–	4(3)
8		कविता– मेघ आए गद्य– ठेले पर हिमालय लेखन तालिका निर्माण कैसे करें	10	2	–	1	–	1	–	–	2(2)
9		कविता – पद गद्य– सरकारी मकान व्याकरण अलंकार	08	1	1	–	–	1	–	–	2(1)
10		कविता– बीती विभावरी, जाग री गद्य– अखबार की दुनिया परियोजना निर्माण	10	3	–	1	1	–	–	–	2(3)
		योग	100	20	16	24	12	20	–	08	100
		प्रश्नों का योग		(1)	(8)	(8)	(3)	(4)	–	(01)	24+1 = 25

प्रथम इकाई

पद्य

दोहे – संत कबीर, रहीम एवं वृन्द

गद्य

हमारा आदिवासी समाज – सोमदत्त शर्मा

व्याकरण (काव्य के तत्व)

रस – परिभाषा, अंग एवं प्रकार

पाठ – 1

दोहे

1. संत कबीर के दोहे

(1) संत कबीर का जीवन परिचय –

संत कबीर का आविर्भाव सन् 1398 में काशी में हुआ माना जाता है। इनका लालन–पालन नीरू और नीमा नामक दंपत्ति ने किया। संत कबीर ने विधिवत् शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, फिर भी इनकी रचनाओं में जीवन के अनुभव भरे हुए हैं। निरंतर सत्संग के द्वारा इन्होंने धर्म के गूढ़ रहस्यों को समझा और अपने अनुभव को जनसाधारण की भाषा में काव्य रूप में अभिव्यक्त किया। स्वामी रामानंद के उदार विचारों का भी इन पर बहुत प्रभाव पड़ा। इन्होंने अपनी रचनाओं में समाज में फैली रूढ़ियों, पाखंडों और अंधविश्वासों पर तीखा प्रहार किया है। जिस साम्प्रदायिक एकता के प्रति आज हम सचेत हैं, तब उसे संत कबीर ने अपनी कविता का मुख्य विषय बनाया। सन् 1518 में संत कबीर का मगहर नामक स्थान में निर्वाण हुआ।

(2) रचनाएँ – संत कबीर की प्रामाणिक उपलब्ध कृतियाँ हैं –

(1) बीजक, (2) अनुराग सागर, (3)साखी ग्रंथ,

(4) शब्दावली, (5) कबीर ग्रंथावली।

'बीजक'के तीन भाग हैं – साखी, शबद और रमैनी। शब्दावली में लगभग 59 प्रकार के शब्द संग्रहित हैं।

(3) काव्यगत विशेषताएँ – संत कबीर की काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

(1) इनकी अधिकांश रचनाएँ गेय हैं।
(2) इनके काव्य में अनेक स्थलों पर रहस्यात्मकता के दर्शन होते हैं।
(3) संत कबीर के काव्य में एक सुनिश्चित दार्शनिक विचारधारा मिलती है।
(4) अद्वैतवादी विचारधारा में आत्मा और परमात्मा को तात्विक दृष्टि से आपने एक माना है।
(5) ब्रह्म के साथ एकाकार होने के लिए संत कबीर ने 'अहं' का त्याग आवश्यक माना है।

(4) भावपक्ष –

संत कबीर धार्मिक संकीर्णता को दूर करने वाले समाज सुधारक के रूप में भी हमारे सामने आते हैं। वे सभी धर्मों की एकता के समर्थक थे। राम–रहीम की एकता बताकर, उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों के धार्मिक विद्वेष को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने दोनों धर्मों में व्याप्त आंडबरों की खूब निंदा की, दोनों धर्म के पंडितों और मुल्लाओं को बाह्य आडंबरों में उलझे होने पर खूब फटकारा। आपकी रचनाओं को पढ़ने एवं सुनने से पाठकों को रसानुभूति होती है।

(5) कलापक्ष –

संत कबीर के लिए कविता साध्य न होकर साधन थी। वे सहज अनुभूतियों को प्रभावी शैली में जनमानस तक

पहुँचाना चाहते थे। संत कबीर की वाणी में सच्चे हृदय से कही गई बातें हैं, जो दिल में घर कर लेती हैं। ठीक निशाने पर चोट करने की कला में संत कबीर अद्वितीय हैं। उनके कहने का ढंग ओजपूर्ण और सुबोध है। कठिन विचारों को भी वे अनुप्रास, अन्योक्ति, दृष्टांत, रूपक व उपमा के माध्यम से बड़े ही मर्मस्पर्शी ढंग से समझाते हैं। उनकी भाषा जनसाधारण में प्रचलित बोलचाल की भाषा है। कबीर की इस भाषा को सधुक्कड़ी अथवा पंचमेल खिचड़ी भाषा भी कहा जाता है।

(6) साहित्य में स्थान –

भक्तिकाल के अंतर्गत निर्गुण शाखा की ज्ञानमार्गी काव्य धारा के संत कवि कबीर ने लोक आडंबर का विरोध किया है। उन्होंने लोक आदर्शों की स्थापना की इसलिए उन्हें समाज–सुधारक भी कहा गया है। कबीर ने जाति, वर्ग और सम्प्रदाय की जगह मानव–धर्म को महत्त्वपूर्ण माना।

000

संत कबीर के दोहे

पानी केरा बुदबुदा, अस मानुष की जात।
देखत ही छिप जायेगा, ज्यों तारा परभात।।1।।

अर्थ :– जीवन की नश्वरता का वर्णन करते हुए संत कबीर कहते हैं कि यह जीवन पानी के बुलबुलों की तरह क्षणभंगुर है। यह सदा साथ न देने वाले तारों की तरह है जो प्रातः होते ही छिप जाते हैं। ।1।

गोधन, गजधन, बाजिधन और रतन सब खान।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान।।2।।

अर्थ :– संत कबीर कहते हैं – गऊ, हाथी, घोड़े और सभी रत्न–रूपी धन पाकर भी मन को संतोष नहीं मिलता परन्तु जब संतोष–रूपी धन मिलता है तो ये सारे धन धूल के समान लगने लगते हैं। ।2।

ऊँचे कुल का जनमिया, करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधु निंदै सोइ।।3।।

अर्थ :– सद्कर्म की महत्ता बताते हुए संत कबीर कहते हैं कि अच्छे कुल में जन्म लेकर भी बुरे कर्म करनेवाले मनुष्य का जीवन वैसा ही है जैसे सोने के कलश में मदिरा भरा हो। ।3।

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छबाय।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करत सुभाय।।4।।

अर्थ :– संत कबीर कहते हैं कि निंदा (आलोचना) करनेवालों से दूर नहीं भागना चाहिए बल्कि उन्हें सदैव अपने पास रखना चाहिए क्योंकि ये हमारे दोषों को उजागर करते हैं। इससे हम अपनी बुराइयों को दूर कर अपने स्वभाव को निर्मल बना सकते हैं। ।4।

गुरू कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि–गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर मारै चोट।।5।।

अर्थ :– संत कबीर कहते हैं कि सद्गुरु कुम्हार की तरह और शिष्य कच्चे मिट्टी से बने घड़े की तरह होते हैं। जैसे कुम्हार अंदर से सहारा देकर और बाहर से आघात करके घड़े को गढ़ता है, वैसे ही गुरू भी अपने शिष्यों को गढ़ता है। 5।

जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।
दोऊ हाथ उलीचिए, यही सयानो काम।।6।।

अर्थ :– संत कबीर कहते हैं कि नाव में भरनेवाले जल को दोनों हाथों से उलीचनेवाले तथा परिवार में आये हुए संकट को जल्द से जल्द दूर करनेवाले व्यक्ति ही बुद्धिमान होते हैं। ।6।

कबीरा गर्व न कीजिए, ऊँचा देख अवास।
काल्ह परै भुइं लेटना, ऊपर जामिहैं घास।।7।।

अर्थ :– संत कबीर कहते हैं कि धन–दौलत सदा रहनेवाली चीज नहीं है अतः अपने ऊँचे महल–अटारी को देखकर कभी घमंड नहीं करना चाहिए। काल की मार से ये मिट्टी में मिल जाते हैं और इसके ऊपर घास उग जाते हैं। ।7।

दुर्लभ मानुष जनम है, देह न बारंबार।
तरवर जो पत्ता झड़े, बहुर न लागै डार।।8।।

अर्थ :– संत कबीर कहते हैं कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है। यह शरीर बार–बार नहीं मिलता। जैसे वृक्ष से अलग हुआ पत्ता दुबारा डाल पर नहीं लग सकता वैसे ही मृत्यु के बाद दुबारा जन्म नहीं मिलता। ।8।

साधु भूखा भाव का, धन का भूखा नाहि।
धन का भूखा जो फिरै, सो तो साधु नाहि।।9।।

अर्थ :– संत कबीर कहते हैं कि साधु भाव के भूखे होते हैं, धन के नहीं। जो व्यक्ति धन का भूखा होता है, वह साधु नहीं हो सकता।

> **टीप :–** संत कबीर के इन दोहों में बड़े गूढ़ अर्थ छिपे हुए हैं। दोहों के साथ दिया हुआ अर्थ उस दोहे का मात्र भाव समझने में सहायता करने के लिए है। आप स्वतः इन गूढ़ अर्थों के बारे में सोचिए और उनका अर्थ–विस्तार कीजिए।

पाठगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

अ. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. कबीर ने आँगन में कुटी छवाकर .... को बसाने के लिए कहा है।
2. कबीर ने .... को देखकर गर्व न करने को कहा है।
3. मनुष्य का जन्म .... है।
4. कोई .... नहीं पूछता।
5. साधु .... का भूखा होता है।

ब. नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए–

1. कबीर के अनुसार किस धन के समक्ष सभी धन धूल के समान हैं –
   क. गोधन ख. गजधन ग. संतोष धन घ. रतनधन
2. ऊँचे कुल में जन्म लेने के बावजूद व्यक्ति की निंदा क्यों होती है?
   क. क्योंकि वह अच्छा कर्म नहीं करता
   ख. क्योंकि वह साधुओं का सत्संग करता है
   ग. सुरापान नहीं करता
   घ. धन को इकट्ठा नहीं होने देता
3. साधू किसका भूखा होता है–
   क. धन का ख. भाव का ग. पद का ग. भोजन का
4. अच्छा गुरू क्या करता है?
   क. स्वभाव को निर्मल बना देता है
   ख. रास्ते में फूल बोता है
   ग. घर में धन बढ़वाता है
   घ. हमारे अवगुणों को दूर करता है
5. सयाना काम क्या है–
   1. दान 2.कंजूसी 3. स्वार्थ 4. लालच

स. – उचित संबंध जोड़िए –

'अ'		'ब'
कुम्हार	–	अस मानुष की जात
निंदक	–	मिट्टी में मिल जाना
भुँई लोटना	–	मोती, मानुष, चून
पानी केरा बुदबुदा	–	मिट्टी का बर्तन बनानेवाला
बिन पानी सब सून	–	निंदा करनेवाला

लघुउत्तरीय प्रश्न–

1. मनुष्य के जीवन को पानी के बुलबुले की तरह क्यों माना गया है?
2. कवि कबीर ने सर्वश्रेष्ठ धन किसे माना है ?
3. निंदकों को अपने पास क्यों रखना चाहिए ?
4. जीवन दुर्लभ है – इसे किस दृष्टांत द्वारा अभिव्यक्त किया गया है?
5. अपने ऊँचे घर पर घमंड क्यों नहीं करना चाहिए?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न–

1. साधु की कौन–कौन सी विशेषताएँ कबीर ने वर्णित की हैं?
2. कबीर ने जाति भेद को दूर करने के लिए कौन सा दोहा कहा है?
3 कबीर के अनुसार सयाना काम क्या है?
4. ऊँचे कुल में जन्म लेने का लाभ कब प्राप्त नहीं होता?
5. कबीर ने गुरू को कुम्हार क्यों माना हैं?

योग्यता विस्तार

हिन्दी साहित्य का इतिहास :– हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार कालखण्डों में बाँटा गया है –

1. **आदिकाल** (वीरगाथा काल, अपभ्रंश काल या चारण काल – सन 933 से 1318 तक)
2. **भक्तिकाल** (पूर्वमध्य काल – सन् 1318 से 1643 तक)
3. **रीतिकाल** (उत्तरमध्य काल या श्रृंगार काल – सन् 1643 से 1843 तक)
4. **आधुनिक काल** (अद्यतन काल – सन् 1900 से अब तक)

इस इकाई में आपने कबीर दास की कविताओं का अध्ययन किया हैं। आपने सूरदास, तुलसीदास एवं मीरा बाई की कविताओं का भी अध्ययन किया है। ये कवि भक्तिकाल के कवि हैं। भक्तिकाल को पूर्वमध्य काल भी कहते है। इस काल को निम्न धाराओं में विभाजित किया गया है –

भक्तिकाल (पूर्वमध्य काल)

- निर्गुण भक्ति काव्यधारा
  - ज्ञानाश्रयी काव्यधारा
  - प्रेमाश्रयी काव्यधारा
- सगुण भक्ति काव्यधारा
  - कृष्णभक्ति काव्यधारा
  - रामभक्ति काव्यधारा

भक्तिकाल (पूर्वमध्य काल) की विशेषताएँ

भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं –

1. इस काल को उच्चकोटि के काव्य सृजन के कारण हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है।
2. भक्तिकाल के कवियों ने ईश्वर के लोकरक्षक व लोकरंजक, दोनों ही रूपों की झांकी प्रस्तुत की है।
3. आदिकाल के समय निराश, हताश व दुखी जनता के मन में आशा का पुनः संचार हुआ।
4. इस काल के काव्य ब्रज व अवधी भाषा में रचे गये।
5. इस काल के काव्य में करुण, शांत, वात्सल्य व श्रृंगार रस की प्रधानता है।
6. रस, छंद और अलंकार की दृष्टि से इस काल की रचनाएँ अत्यंत समृद्ध हैं।
7. इस काल में प्रबंध एवं मुक्तक, दोनों ही प्रकार के काव्यों की रचना हुई।
8. इस काल के कवियों ने गुरू की महिमा का बखान किया है।
9. इस काल के कवियों ने विभिन्न मत–मतांतरों, धर्मों और विचारधाराओं का समन्वय करते हुए मानवतावादी विचारधारा की स्थापना का प्रयास किया है।

ज्ञानाश्रयी काव्यधारा की विशेषताएँ –

कबीरदास निर्गुण भक्ति काव्यधारा के ज्ञानाश्रयी काव्यधारा के प्रमुख संत कवि थे। इस धारा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं –

1. निर्गुण एवं निराकार ईश्वर की उपासना की है।
2. सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक आडंबरों, अंधविश्वासों, जात–पाँत, छुआछूत एवं रूढ़िवाद, का विरोध किया गया है।
3. राम और रहीम में एकता बताकर धार्मिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया गया है।
4. बहुदेववाद का विरोध किया गया है।
5. गुरू के पद को ईश्वर से अधिक महत्व दिया गया है।
6. रहस्यवादी काव्य की रचनाएँ की गई हैं।

शब्दार्थ

बुदबुदा – बुलबुला
परभात – प्रभात, सुबह
गो – गऊ, गाय
गज – हाथी
बाजि – घोड़ा
धूरि – धूल

जनमिया – जन्मा
सुबरन – ऊच्च वर्ण, ऊँचा कुल
(सुबरन का अर्थ स्वर्ण, या सोना भी होता है।)
कलस – कलश, घड़ा

आँगन कुटी छवाय –
(मुहावरे के रूप में) सम्मान के साथ
नियरे – पास
सुभाय – स्वभाव
दोऊ – दोनों
उलीचिए – अंजुली से फेंकिए
सयानो – समझदार, बुद्धिमान

सिश – शिष्य
गढ़ना – निर्माण करना
कुंभ – घड़ा
खोट – दोष
अंतर – अंदर
सहार – सहारा
अवास – निवास, मकान
काल्ह – कल
भुईं – धरती
जामिहैं – उगेंगे

उत्तर – अ

1. निंदक
2. ऊँचा अवास
3. दुर्लभ
4. जाति
5. भाव

उत्तर – ब

1. संतोषधन
2. क्योंकि वह अच्छा कर्म नहीं करता
3. भाव का
4. हमारे अवगुणों को दूर करता है
5. दान

उत्तर – स

1. मिट्टी का बर्तन बनानेवाला
2. निंदा करनेवाला
3. मिट्टी में मिल जाना
4. अस मानुश की जात
5. मोती, मानुष, चून

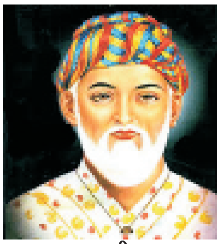
रहीम

2. रहीम के दोहे

रहीम का जीवन परिचय :–

कवि रहीम भक्त कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। ये अकबर के संरक्षक बैरम खाँ के पुत्र थे। इनका जन्म सन् 1556 ई. में लाहौर में हुआ था। पिता की मृत्यु के पश्चात् इनका पालन–पोषण इनकी माता द्वारा किया गया। इन्होंने अरबी, फारसी, हिन्दी एवं संस्कृत का ज्ञान प्राप्त किया था। इनकी प्रतिभा के कारण बादशाह अकबर ने इन्हें अपने नवरत्नों में शामिल किया। अकबर ने इन्हें प्रधान सेनापति बनाया। इन्हें 'मिर्जा खाँ' की उपाधि प्रदान की गयी। रहीम गुणसम्पन्न, परोपकारी, महादानी एंव विद्वान थे। अकबर की मृत्यु के पश्चात् बादशाह जहाँगीर ने इन पर विद्रोह का आरोप लगाकर इनकी सारी सम्पत्ति को जब्त कर लिया। इस कारण इन्हें जीवन के अंतिम दिनों में आर्थिक तंगी, अपमान एवं संकटों का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद इन्होंने अपना स्वाभिमान एवं चारित्रिक दृढ़ता का परित्याग नहीं किया। इनकी मृत्यु सन् 1626 ई. में दिल्ली में हुई थी।

रचनाएँ –

रहीम की प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नलिखित हैं – दोहावली, बरवै, नायिका भेद, श्रृंगार सोरठा, मदनाष्टक, रासपंचाध्यायी, रहीम सतसई।

भावपक्ष –

रहीम कृष्णभक्त कवि थे। भक्ति के अलावा उनके काव्य में नीति, श्रृंगार एवं लोकव्यहार के भाव भी निहित हैं। इनके काव्य में प्रकृति का वर्णन भी मिलता है। इन्होंने अपने काव्य के माध्यम से समाज को सही दिशा में ले जाने का प्रयास किया है। इनके दोहे जनमानस में प्रसिद्ध हैं।

कलापक्ष –

रहीम के दोहों में अवधी, ब्रज, अरबी–फारसी, संस्कृत आदि भाषा के शब्दों का समावेश है। भाषा सरल, सरस, प्रभावशाली एवं प्रवाहशाली है। दोहा तथा बरवै छंद में इन्होंने रचनाएँ लिखीं। लगभग सभी अलंकारों का प्रयोग इन्होंने किया है लेकिन दृष्टांत, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास का अधिक प्रयोग है।

साहित्य में स्थान –

रहीम की रचनाओं में भारतीय संस्कृति, जन–जीवन एवं रहन–सहन की झलक दिखाई देती है। इन्होंने अपने काव्य के द्वारा हिन्दी साहित्य के गौरव में वृद्धि की है। रहीम की भक्ति एंव नीति की मिसालें दी जाती हैं। उनके काव्य में उनका व्यक्तित्व प्रतिबिम्बित होता हैं।

000

दोहे :–

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधै मौन।
अब दादुर वक्ता भए, हमको पूछत कौन।।1।।

अर्थ :– रहीम कवि कहते हैं कि वर्षा ऋतु आने पर मेंढकों का टरटराना सुनकर बेचारी कोयल चुप हो जाती है। वह मन में सोचती है कि अब हमें कौन पूछेगा? 1

खैर, खून, खाँसी, खुशी, वैर प्रीति मदपान।
रहिमन दाबे ना दबै, जानत सकल जहान।।2।।

अर्थ :– रहीम कवि कहते हैं कि पान के साथ खाया हुआ कत्थे का रंग, खून, खाँसी, खुशी और नशीला पदार्थ खाने पर उसका प्रभाव, दबाने पर भी नहीं दबते हैं और दुनिया जान जाती है। 2

जे गरीब पर हित करै, ते रहीम बड़ लोग।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण–मिताई जोग।।3।।

अर्थ :– रहीम कवि कहते हैं कि गरीबों का हित करनेवाले महान होते हैं जैसे सुदामा के साथ मित्रता निभाकर कृष्ण अवतारी बन गये। 3

टूटे सुजन मनाइए, जो टूटे सौ बार।
रहिमन फिरि–फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार।।4।।

अर्थ :– रहीम कवि कहते हैं कि गुणी और विद्वान व्यक्ति के साथ यदि संबंध सौ बार भी टूटे तो उसे प्रयत्न करके जोड़ लेना चाहिए जैसे मोतियों का हार जितने बार टूटता है उतने ही बार हम उसे पुनः पो (गूँथ) लेते हैं। 4

दीनन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहि लखै, दीनबंधु सम होय।।5।।

अर्थ :– रहीम कवि कहते हैं कि गरीब सबके काम आता है परन्तु गरीब की सहायता कोई नहीं करता। जो गरीब की सहायता करता है वह ईश्वर के समान होता है। 5

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुरै, जुरै गाँठ परि जाय।।6।।

अर्थ :– रहीम कवि कहते हैं कि परस्पर व्यवहार में प्रेम रूपी धागे को कभी नहीं तोड़ना चाहिए क्योंकि टूटने के बाद यह फिर नहीं जुड़ता है। यदि जुडा भी तो गाँठ तो पड़ ही जायेगा। अर्थात पहले जैसी सरलता नहीं रह जाती है। 6

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष, चून।।7।।

अर्थ :– रहीम कवि कहते हैं कि मनुष्य को अपना पानी अर्थात मान–सम्मान बचाकर रखना चाहिए। पानी के बिना मोती, मनुष्य और चूना बेकार हो जाते हैं। (**श्लेश अलंकार** – यहाँ पानी के तीन अर्थ हैं – मोती के लिए चमक, मनुष्य के लिए सम्मान, तथा चूने के लिए उसकी उपयोगिता है।) 7

यों रहीम सुख होत है, उपकारी के संग।
बाँटनवारे के लगे, ज्यों मेंहदी के रंग।।8।।

अर्थ :– रहीम कवि कहते हैं कि उपकार करनेवाले व्यक्ति की संगति से मुफ्त में ही सुख मिल जाता है जैसे मेंहदी बाँटनेवाले के हाथों में मेंहदी लग ही जाती है। 8

खीरा सिर ते काटिए, मलियत लोन लगाय।
रहिमन करूए मुखन को, चहियत इहै सजाय।।9।।

अर्थ :– खीरे का सिर काटकर उसमें नमक मिलाकर रगड़ने से उसका कड़ुआपन दूर होता है। रहीम कवि कहते हैं कि कटु वचन बोलनेवालों को भी ऐसी ही सजा मिलनी चाहिए। अर्थात कटु वचन बोलनेवालों की बात कट ही जाती है। कटु वचन नहीं बोलना चाहिए।9

मान सहित विषपान करि, शंभु भए जगदीश।
बिना मान अमृत पियो, राहु कटायो शीश।।10।।

अर्थ :– रहीम कवि कहते हैं कि मान–सम्मान सहित प्राप्त विष को पीकर शिव ईश्वर बन गये परंतु बिना मान के प्राप्त अमृत पीकर भी राहु को अपना सिर कटाना पड़ गया। 10

> **टीप** :– रहीम के इन दोहों में बड़े गूढ़ अर्थ छिपे हुए हैं। दोहे के साथ दिया हुआ अर्थ उस दोहे का मात्र भाव समझने में सहायता करने के लिए है। आप स्वतः इन गूढ़ अर्थों के बारे में सोचिए और उनका अर्थ–विस्तार कीजिए।

पाठगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ

अ. सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए –

1. वर्षा ऋतु में कौन मौन साध लेता है?
   क. मेंढ़क ग. कोयल ख. मोर घ. कौवा
2. रहीम के अनुसार खून, खाँसी, खुशी, बैर, प्रीति, मद्‌यपान के अलावा और किस चीज को छिपाया नहीं जा सकता?
   क. कत्था ग. चोरी ख. चूना घ. बर्तन
3. रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सून।
   पानी गए न ऊबरै ,मोती मानुष चून।।
   इस दोहे में कौन सा अलंकार हैं?
   क. उपमा ग. रूपक ख. अतिशयोक्ति घ. श्लेष
4. रहीम के अनुसार मानव दीनबन्धु के समान कब बनता है?
   क. जब वह गरीबों की सेवा करता है।
   ख. जब वह सभी से लडता है।
   ग. जब वह गरीबों को दुखी करता है।
   घ. जब वह गरीबों से बात करता है।
5. रहीम ने धागों की तुलना किससे की है?
   क. गरीबी ग. प्रेम ख. सुख घ. क्रोध

ब. – निम्न लिखित कथन के सामने दिये गए कोष्टक में सत्य/असत्य लिखिए –

(अ) वर्षा ऋतु आते ही कोयल चुप हो जाते हैं और मेढक टर्राने लगते हैं। (   )

(ब) खैर, खून खाँसी, खुशी, बैर प्रीत और मदपान को छिपाया जा सकता है। (   )

(स) रूठे हुए स्वजनों को कभी नहीं मनाना चाहिए। (   )

(द) यदि अमृत अपमान सहकर भी मिले तो उसे पी लेना चाहिए। (   )

(इ) प्रेम रूपी धागे को कभी नहीं तोड़ना चाहिए। (   )

लघुउत्तरीय प्रश्न –

1. रहीम के अनुसार कौन–कौन सी चीजें दबाने से भी नहीं दबती हैं?
2. रहीम ने किस प्रकार के व्यक्ति को बड़ा माना है?
3. प्रेम के धागे को क्यों नहीं तोड़ना चाहिए?
4. रहीम ने पानी के क्या–क्या अर्थ बताए हैं?
5. रहीम ने खीरा का उदाहरण क्यों दिया है?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न –

1. उपकारी के साथ रहने से क्या लाभ होता है?
2. रहीम ने मान तथा बिना मान के लिए कौन–कौन सा उदाहरण बताया है?
3. नाराज स्वजनों को क्यों मना लेना चाहिए?
4. जब मेंढक बोलने लगते हैं तब कोयल क्यों मौन हो जाती है?
5. कृष्ण एवं सुदामा की मित्रता के बारे में आप क्या जानते हैं?
6. भगवान शिव द्वारा विषपान एवं राहु द्वारा छिपकर अमृतपान की पौराणिक कथा को अपने शब्दों में लिखिए।

शब्दार्थ

पावस – वर्षा ऋतु
कोइल – कोयल
मौन – चुपचाप
दादुर – मेंढक
बक्ता – बोलनेवाला

खैर – कत्था
बैर – शत्रुता
मदपान – नशापान
सकल – समस्त
जहान – संसार

जे – जो
हित – भला
बड़ – बड़े, महान!
बापुरो – बेचारा

सुजन – गुणीजन, स्वजन
पोइए – गूँथिए
मुक्ता – मोती

दीन – गरीब
सबन – सबको
लखत – देखता है
दीनहि – गरीब को
लखै – देखता है
दीनबंधु – ईश्वर

सून – सूना
ऊबरै – बचा रहना
चून – चूना

उपकारी – भला करने वाला
बाँटनवारे – बाँटनेवाले

लोन – नमक

उत्तर

अ.	ब.
1. कोयल	1. सत्य
2. कत्था	2. असत्य
3. श्लेष	3. असत्य
4. जब वह गरीबों की सेवा करता है।	4. असत्य
5. प्रेम	5. सत्य

3. वृन्द के दोहे

वृन्द का जीवन परिचय

भाव पक्ष :–
कवि वृन्द ने जीवन के अनुभवों को शब्दों में पिरोकर प्रस्तुत किया है। छोटे–छोटे दोहों में गंभीर अर्थ भरकर उन्होंने जीवन की शिक्षा प्रदान की है। नीति, उपदेश एवं भक्ति के भावों के माध्यम से उन्होंने समाज का दिशा–निर्देश किया। आप भक्तिकाल के प्रसिद्ध कवि थे।

कलापक्ष :–

1. भाषा :– ब्रजभाषा का लालित्य मौजूद है। भाषा सरस एवं सरल है। देशज शब्दों का प्रयोग हुआ है।
2. छंद :– कवि वृन्द ने अपने भावों को दोहा छंद में अभिव्यक्त किया है।
3. अलंकार योजना :– कवि वृन्द ने सहज–स्वाभाविक रूप से अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश आदि अलंकारों का प्रयोग किया गया है।
4. रस :– भक्ति एंव नीति के दोहों में शांत रस है।
5. शब्द गुण :– माधुर्य गुण मौजूद है।

साहित्य में स्थान :–
नीतिगत दोहों एवं जीवन के अनुभव की अभिव्यक्ति में वृन्द का स्थान अद्वितीय है।

वृन्द के दोहे

करत–करत अभ्यास ते, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत–जात ते, सिल पर परत निसान।।1।।

अर्थ :– कवि वृन्द कहते हैं कि जैसे रस्सी के बार–बार आने–जाने से पत्थर में निशान पड़ जाते हैं, वैसे ही अभ्यास करते–करते मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञानी बन जाता है।

नैना देत बताय सब, हिय को हेत–अहेत।
जैसे निरमल आरसी, भली बुरी कहि देत।।2।।

अर्थ :– कवि वृन्द कहते हैं कि जैसे स्वच्छ दर्पण सब कुछ सच–सच कह देता है, वैसे ही हमारी आँखें हमारे मन की बातों को कह देती हैं।

पाठगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

सबसे अधिक सही उत्तर के आगे सही का चिह्न लगाइये–

1. अभ्यास का अर्थ है –
   - क. काम में खुशी होना।
   - ख. कार्य की बुराई करना।
   - ग. कार्य एवं कारण का संबंध जान लेना।
   - घ. कार्य को तेज गति से करने लगना।
2. जड़मति का अर्थ है –
   क. मूर्ख ख. ज्ञान ग. तेज घ. बुरा
3. नैना शब्द है –
   क. तत्सम ख. तद्भव ग. अंग्रेजी घ. अरबी
4. दोहा छंद में कितने चरण होते हैं –
   क. एक ख. दो ग. तीन घ. चार
5. वृन्द की रचनाएँ है –
   क. कवित्त ख. सवैया ग. पद घ. दोहा

लघुउत्तरीय प्रश्न –

1. वृन्द ने मूर्ख के लिए जड़मति शब्द का प्रयोग क्यों किया है?
2. वृन्द के अनुसार नैना क्या बता देते हैं?
3. 'आरसी' के उदाहरण द्वारा कवि वृन्द ने क्या व्यक्त किया है?
4. कुएँ का उदाहरण किस दोहे में दिया गया है? लिखिए।
5. कुएँ का उदाहरण देकर कवि वृन्द कौन सा संदेश देना चाहते हैं?

दीर्घउत्तरीय–

1. वृन्द के दोहों की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।
2. वृन्द के दोहों में प्रयुक्त तत्सम् और तद्भव शब्दों को छाँटकर लिखिए।
3. वृन्द ने अपने दोहों में कौन–कौन से भाव प्रस्तुत किये हैं?

शब्दार्थ

जड़मति – मूर्ख
सुजान – चतुर
रसरी – रस्सी
सिल – पत्थर
निसान –निशान

हिय – हृदय
हेत – भलाई
अहेत – बुराई
निरमल – निर्मल, स्वच्छ
आरसी – दर्पण

उत्तर

1. ग. कार्य एवं कारण का संबंध जान लेना।
2. क. मूर्ख
3. ख. तद्भव
4. घ. चार
5. घ. दोहा

पाठ–2

हमारा आदिवासी समाज

सोमदत्त शर्मा

लेखक का जीवन परिचय

सोमदत्त शर्मा गंभीर विषयों पर कलम चलानेवाले सशक्त निबंधकार हैं। उनके निबंध अनुसंधानात्मक एवं वर्णनात्मक श्रेणी में शामिल किये जा सकते हैं ।

भाषा – सोमदत्त शर्मा के निबंधों की भाषा सरल एवं बोधगम्य है। कहीं भी कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया है। वाक्य छोटे, स्पष्ट एवं सार्थक हैं। अरबी, फारसी, उर्दू, संस्कृत तथा अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग से भाषा में विविधता का समावेश किया गया है। लेखक ने एक ही भाव को प्रकट करनेवाले भिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है जैसे–अनभिज्ञ, नावाकिफ, बेखबर, आदि। यह उनकी विशिष्टता है। बोलचाल की शब्दावली में उन्होंने पाठ लिखे हैं। भाषा पर उनका पूर्ण आधिकार जाहिर होता है।

शैली – लेखक सोमदत्त शर्मा की शैली रोचक, जीवंत, प्रभावशाली एवं सरल है। वर्णनात्मक शैली में विषयवस्तु को पूर्णतः स्पष्ट किया गया है। परिचयात्मक शैली में वे पूरे विषय का संपूर्ण परिचय देते हैं।

साहित्य में स्थान –

आधुनिक युग के विशिष्ट शैली में ज्ञानवर्धक निबंध लिखनेवालों में सोमदत्त शर्मा अग्रणी हैं। विषय का गहन अध्ययन कर चिंतनपूर्ण निबंध लिखकर शर्मा जी ने पाठक के हृदय में विचारों की नयी तरंग उत्पन्न की है।

000

हमारा आदिवासी समाज

पाठ का मूल भाव –

इस पाठ में लेखक ने आदिवासी जन–समुदायों की बोलियों, रीति–रिवाजों, पर्वों, प्रथाओं एवं कानूनों का रोचक एवं स्पष्ट वर्णन किया है। ये आदिवासी वनों में रहते हैं एवं वैज्ञानिक आविष्कारों एवं उपलब्धियों से बेखबर हैं। भारत के बहुत सारे प्रदेशों में बसे आदिवासियों के लोकगीत तथा लोकनृत्य हैं। इनकी कलाएँ भारत में ही नहीं विदेशों में भी काफी प्रसिद्ध हुई हैं। आदिवासी आपने जीवन–यापन हेतु प्राकृतिक साधनों पर निर्भर हैं। असुर आदिवासी समुदाय की लोहा गलाने की कला तो प्राचीनतम व्यावसायिक कला है। आधुनिक युग में यह कला खतरे में पड़ गयी है। अशिक्षा, कुपोषण, नशाखोरी, अंधविश्वास एवं विभिन्न रोगों से धिरे ये आदिवासी समुदाय इनसे मुक्ति पाने हेतु संघर्षशील है। विभिन्न सरकारी योजनाएँ भी इनके उत्थान हेतु अग्रसर हैं। इस प्रकार अब आदिवासी समाज का जीवन स्तर सुधर रहा है।

हमारा आदिवासी समाज

बात कुछ साल पहले की है। मध्य प्रदेश के पिछड़े इलाके की समस्याओं के निराकरण के संबंध में विचार करने के लिए कुछ सामाजिक कार्यकर्ता एकत्रित हुए थे। इनमें कुछ ऐसे कार्यकर्ता भी थे, जिन्होंने अपने जीवन में पहली बार शहर देखा था। अतः शहर के रहन–सहन आदि की कोई जानकारी उन्हें नहीं थी। विचार–विमर्श एक हॉल मे संपन्न हुआ। तत्पश्चात् सब लोग खाना खाने चले गए। लोगों के हॉल से जाने के बाद संयोजक महोदय ने एक नौजवान को हॉल का विद्युत बल्ब बुझा आने को कहा। इस नौजवान ने अपने गाँव में लोगों को फूँक मारकर दिया बुझाते देखा था। वह विद्युत–बल्ब को भी फूँक से बुझाने की चेष्टा करने लगा। दरअसल उसे नहीं मालूम था कि दीये का स्थान अब विद्युत–बल्ब ने ले लिया है, जिसे जलाने–बुझाने के लिए सिर्फ स्विच बोर्ड पर लगे एक छोटे से बटन को दबाना पड़ता है। जो भी हो, उस नौजवान के लिए तो यह आश्चर्य की बात थी कि इस तरह दूर खडे रहकर कैसे इस नए किस्म के दीये को जलाया या बुझाया जा सकता है। हमारे लिए आश्चर्य की बात यह हैं कि विज्ञान की तमाम उपलब्धियों के बावजूद आज भी ऐसे मानव समुदाय हैं, जो जंगलों और पहाड़ों के बीच उन्हीं आदिम परिस्थितियों में रहने को विवश हैं, जिनमें कभी हमारे पूर्वज रहते होंगे ।

जंगलों और पर्वतों के बीच रहनेवाले ये मानव 'आदिवासी' या 'वनवासी' या 'जनजाति' के नाम से जाने जाते हैं। यानी ऐसे लोग जो मानवीय उपलब्धियों से नावाकिफ, विज्ञान के चमत्कारों से अनभिज्ञ तथा मानवीय उपलब्धियों के कारण समाज में आ रहे बदलाव से एकदम बेखबर अपनी ही दुनिया में रमे हैं। दुनिया भर में ऐसे मानव–समुदाय कई हिस्सों में पाए जाते हैं। अपने देश में भी छत्तीसगढ़, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, झारखंड, असम, मेघालय, अंडमान–निकोबार, मिजोरम, नागालैंड, कर्नाटक, अरूणांचल प्रदेश, उत्तरांचल और हिमांचल प्रदेश आदि राज्यों में ऐसे अनेक आदिवासी समुदाय मिलते हैं। इन्हें कहीं "थारू" (उत्तरांचल), कहीं 'खासी' (असम) तो कहीं 'मुंडा' 'असुर' 'बिरजिया' 'हो' आदि नामों से जाना जाता है। इन समुदायों की अपनी–अपनी बोलियाँ हैं। झारखंड की मुंडा जनजाति के लोग आपस में जिस बोली में बातचीत करते हैं उसे 'मुंडारी' कहते हैं। झारखंड के 'कुरमी' समुदाय के लोगों की बोली 'कुरमाली' कहलाती है। इसी तरह से झारखंड में 'हो' 'उराँव', 'खड़िया' 'संथाल' और 'असुर' समुदाय के लोगों की बोलियों को क्रमशः 'हो', 'उराँव', 'खड़िया', 'संथाली' और 'असुर' कहा जाता है। कभी–कभी एक क्षेत्र में एक से अधिक बोलियोंवाले आदिवासी समुदाय एकत्र हो जाते हैं, तो वे आपसी व्यवहार के लिए एक संपर्क भाषा का विकास कर लेते हैं। झारखंड के आदिवासी समुदायों और मूल निवासियों ने ऐसी ही संपर्क भाषा का विकास किया है, जिसे 'नागपुरी' या नागपुरिया के नाम से जाना जाता है।

आदिवासी समूहों के अपने पर्व हैं, अपने तीज–त्योहार हैं। उनके अपने रीति–रिवाज हैं, प्रथाएँ हैं और अपने नियम–कानून हैं जिन्हें वे लोग अपने ही तरीके से व्यवहार में लाते हैं। उदाहरण के लिए विवाह की प्रथा को देख सकते हैं। छत्तीसगढ़ की जन–जातियों में विवाह के लिए एक प्रथा प्रचलित है, जिसे 'गोल–गधेडे' की प्रथा कहते हैं। इसमें निश्चित तिथियों में समुदाय के शादी–योग्य नौजवानों और नवयुवतियों को एकत्र किया जाता है। युवतियाँ एक बहुत बड़े बाड़े के भीतर रहती हैं और युवक बाड़े के बाहर रहते हैं। इस बाड़े के बीचों–बीच एक स्तम्भ गाड़कर उस पर नारियल टाँग दिया जाता है। संकेत मिलने पर नौजवानों को बाड़े के भीतर घुसकर, स्तंभ पर चढ़कर उस नारियल को तोड़कर लाना होता है। यह कार्य सुनने में जितना आसान लगता है, करने में उतना ही कठिन होता है, क्योंकि बाड़े के भीतर युवतियाँ नारियल तोड़ने का प्रयास करनेवाले युवकों को तरह–तरह से प्रताड़ित करती हैं, यंत्रणा देती हैं। इन यातनाओं को झेलते हुए जो आदिवासी युवक नारियल तोड़कर लाने में

सफल हो जाता है, उसे मनपंसद साथी चुनने का अधिकार मिल जाता है। दरअसल बात यह है कि आदिवासी समुदाय के लोग जंगलों में रहते हैं। उन्हें तरह–तरह की प्राकृतिक आपदाओं को झेलते हुए जीवन–यापन के लिए अपेक्षित सामग्री जुटानी होती है, जैसे लकड़ी काटना या शिकार करना। ऐसे कार्य वही व्यक्ति कर सकता है जो दृढ़ इच्छा–शक्तिवाला और शारीरिक रूप से सक्षम हो। 'गोल–गधेड़े' की प्रथा के द्वारा वास्तव में, शादी के इच्छुक नौजवानों की जीवन–संघर्ष के लिए अपेक्षित दृढ़ इच्छा–शक्ति तथा शारीरिक क्षमता का आकलन किया जाता है।

इसी तरह से झारखंड़ के 'असुर' समुदाय में एक प्रथा प्रचलित है, जिसमें विवाह–योग्य युवती की घर बनाने की कुशलता परखी जाती है। असुरों के घर तिकोने पिरामिड–नुमा होते हैं और एक खास तरह के जंगली पत्तों से इन्हें बनाया जाता है। असुर लड़कियाँ ऐसे घर बनाने में माहिर होती हैं। इन घरों की खासियत यह होती है कि भयंकर से भयंकर वर्षा में भी इनके अंदर पानी नहीं टपकता। यदि लड़की द्वारा बनाए गए घर में एक बूँद भी पानी चला जाता है, तो इसे उसकी अक्षमता का परिचायक माना जाता है। इसी तरह से उत्तरांचल और झारखंड के थारू आदिवासी लकड़ी के लठ्ठों और नरकुल से अपने घर बनाते हैं। कहते हैं कि घर इतने वैज्ञानिक ढंग से बनाये जाते हैं कि इन पर भयंकर से भयंकर बाढ़ का भी कोई असर नहीं होता।

विवाह हो अथवा अंतिम संस्कार, आदिवासी समुदाय सर्वत्र अपनी विशिष्टताओं के साथ खड़ा दिखाई देता है। उत्तरांचल की एक जनजाति हैं 'भोटिया'। इसमें किसी की मृत्यु हो जाने पर मृत्यु–स्थल से दरवाजे तक भेड़ की ऊन या उससे बुना हुआ वस्त्र फैला दिया जाता है। इसके पीछे मान्यता यह कि ऐसा करने से उस मृतक की आत्मा पुनः उसी घर में आ जाती है।

जिस तरह आदिवासियों ने विवाहादि की प्रथाओं को निभाने के लिए अपने ही विश्वास और नियम बनाये हैं, उसी तरह कुछ घटनाओं को प्रतीक बनाकर प्रथा के रूप में मनाने की परंपरा भी इनमें देखने को मिलती है। ये पर्व वास्तव में संकट के समय दिखाये गये साहस और कौशल के प्रतीक के रूप में स्थापित हुए हैं। ऐसा ही एक पर्व है 'जनी शिकार'। इसमें प्रत्येक बारह वर्ष पर स्त्रियाँ पुरूषों का वेश धारण करके जंगल में शिकार करने जाती हैं। कहते हैं कि उरॉव लोग जब रोहतास की पहाड़ियों से झारखंड (उन दिनों बिहार का छोटा नागपुर) में बसने जा रहे थे तो रास्ते में कोयल नदी के तट पर रात्रि हो जाने के बाद पुरूष शराब के नशे में डूबकर सो गये। तभी शत्रु सेना ने आक्रमण कर दिया। तब पुरूषों को युद्ध करने के योग्य न पाकर उरॉव स्त्रियाँ पुरूषों का वेश धारण कर, तीर–कमान हाथ में लेकर शत्रु की सेना पर टूट पड़ीं और उसे दूर तक खदेड़ दिया। इस घटना की याद में पर्व शुरू हुआ 'जनी शिकार'। यह पर्व आज भी झारखंड के आदिवासी समुदायों में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। आदिवासी समुदायों में परंपरागत सामाजिक प्रथाओं, रीतियों और नियम कानूनों की जानकारी एक से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करने के लिए सामुदायिक केंद्रों की स्थापना की परंपरा मिलती है। इन्हें कहीं 'घोटुल' और कहीं 'रंग–बंग' कहा जाता है, किंतु विभिन्न कारणों से अब यह परंपरा शिथिल होती जा रही है।

आदिवासी लोग प्रकृति के बीच रहते हैं, प्रकृति से जीने की प्रेरणा ग्रहण करते हैं और प्रकृति की ही उपासना करते हैं। सिंगबोंगा (सूर्य, ईश्वर) आदि इनके प्रमुख उपास्य देवता हैं। स्थानीय परंपरा व उपयोगिता के आधार पर वृक्षों, पहाड़ों व नदियों आदि प्राकृतिक उपादानों की पूजा का प्रचलन भी इनमें पाया जाता है।

प्रकृति–प्रेमी आदिवासियों के त्योहार भी प्रकृतिपरक हैं। झारखंड के आदिवासियों के बीच प्रचलित करमा, माधे पर्व, हेरो पर्व, बाह पर्व और सरहुल जैसे त्योहार हों या उत्तरांचल के थारूओं के दशहरा, माघ खिचड़ी, गुडिया और बजहर – सभी त्योहारों में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित की जाती है।

झारखंड की 'हो' जनजाति में 'माघ' पर्व विशेषतः मनाया जाता है, जो छह दिनों तक चलता है। यह माघ–पूर्णिमा को मनाया जाता है। इसमें छह दिनों तक अलग–अलग तरह से पूजा सम्पन्न की जाती है।

माघ पर्व के बाद फागुन पूर्णिमा में 'बाह पर्व' मनाया जाता है। यह दो दिनों तक चलता है। तत्पश्चात् खेतों में 'धान बोना' समाप्त कर आषाढ़ पूर्णिमा को 'हेरो पर्व' मनाया जाता है। यह पर्व भी दो दिनों का होता है। अंत में विशेष पर्व 'जोमनाम' (नया खाना) होता है। जैसे ही पहला धान फूट कर पकता है, लोग उस नए धान के चाँवल की पूजा करते हैं।

थारूओं का बजहर त्योहार ज्येष्ठ या वैशाख में होता है। निश्चित दिन गाँव के समस्त पुरूष घरों से जरूरी सामान तथा अनाज लेकर गाँव के बाहर किसी पीपल या बरगद के पेड़ के नीचे रख आते हैं। उसी दिन सभी थारू स्त्रियाँ वहाँ खाना पकाती हैं। पुरूष वहीं भोजन करते हैं। रात में पुरूष घर आ जाते हैं। स्त्रियाँ पेड़ के नीचे गाना–बजाना करती रह जाती हैं।

इन त्योहारों और पर्वों से जुड़े हैं अनेक लोकगीत, नृत्य और राग। इनका अपना स्वरूप है और है अपनी पहचान। प्रकृति के बीच रहकर संघर्ष करते हुए, आदिवासियों ने लोक–कलाओं के विकास में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाई है। ये कलाएँ कहीं शास्त्रीय कलाओं के लिए आधार–भूमि का काम करती हैं, तो कहीं अपनी स्वतंत्र पहचान बनाकर देश–विदेश में ख्याति अर्जित कर चुकी हैं। झारखंड में लोकप्रिय 'छऊ' नृत्य कला का एक ऐसा ही रूप है, जो देश–विदेश मे होनेवाले उत्सवों और महोत्सवों में प्रमुखता के साथ प्रदर्शित किया जाता है। इसमें पौराणिक कथाओं को आधार बनाकर नर्तक समूह नृत्य करते हैं। नर्तकों के मुँह पर कथा के पात्रों के अनुरूप मुखौटे लगे होते हैं। ताल व लय के साथ अभिनय इसकी प्रमुख विशेषता है। झारखंड के अंगद महतो का नाम प्रमुख छऊ नर्तकों में गिना जाता है। आदिवासी पेंटिंग भी कला के क्षेत्र में अपना प्रमुख स्थान बना चुकी है। आदिवासियों के जीवन के साक्षी आस्था और विश्वासों, को आदिवासी पेंटिंग का प्रमुख आधार बनाया जाता है। मजेदार बात यह है कि इन कलाकृतियों में भरे जानेवाले रंग भी मुख्य रूप से मिट्टी से ही बनाये जाते हैं।

आदिवासी समाज अपने जीवन–यापन के लिए प्राकृतिक साधनों पर निर्भर है। खेती, पशुपालन, लकड़ी काटना, रस्सी बुनना आदि इनके प्रमुख व्यवसाय हैं। असुरों की लोहा गलाने की कला तो प्राचीनतम व्यावसायिक कला है। लोहे–इस्पात के बड़े कारखानों से यह कला खतरे में पड़ गई है। इधर फिर इसके संरक्षण के उपाय किए जा रहे हैं। सरकारी प्रयासों से इनके बीच मधुमक्खी पालन, मुर्गी पालन, तथा कुटीर उद्योग से संबंधित अनेक योजनाओं का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। इससे इनके जीवनस्तर में सुधार आना अवश्यंभावी है, किंतु, अशिक्षा, कुपोषण, नशाखोरी, जुआ, अंधविश्वास, और तरह–तरह की बीमारियों से घिरे ये जनजातीय समुदाय आज भी इनसे मुक्ति पाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। आजादी और विकास की किरणों का प्रकाश आज भी इनके लिए प्रतीक्षित ही है, हालांकि आदिवासी समाज अंगड़ाइयाँ लेने लगा है और इनके बीच के बहुत से लोग ऊँचे पदों पर आसीन हैं तथा राजनीति में भी महत्तवपूर्ण स्थानों पर हैं।

000

पाठगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

अ. सही विकल्प का चयन कर लिखिए

1. 'जनी शिकार' उत्सव किस प्रदेश में मनाया जाता है?
   क. झारखंड ख. उत्तरांचल ग. छत्तीसगढ़ घ. मेघालय
2. 'गोल गधेडें' विवाह प्रथा किस राज्य के आदिवासियों में हैं?
   क. छत्तीसगढ़ ख. नागालैंड ग. मेघालय घ. उड़ीसा
3. 'माघपर्व' किस जनजाति में मनाया जाता हैं?
   क. उरांव ख . हो ग. कुरमी घ. संथाल
4. थारूओं का 'बजहर' त्यौहार किस मास में मनाया जाता है?
   क. बैसाख ख. भादों ग. सावन घ . कातिक
5. खासी जनजाति किस राज्य में मिलती है ?
   क. छत्तीसगढ़ ख. असम ग. झारखंड घ. उत्तरांचल

ब. निम्नलिखित प्रश्नों का हाँ या नहीं में उत्तर दीजिए –

1. भोटिया जनजाति पुनर्जन्म में विश्वास करती है।
2. अंगद महतो प्रसिद्ध चित्रकार हैं।
3. जनी शिकार पर्व संकट के समय दिखाए गए साहस का प्रतीक है।
4. आदिवासी समुदाय बीमारियों से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।
5. फागुन पूर्णिमा को हेरो पर्व मनाया जाता है।

स. उचित सम्बन्ध जोडिये –

1. हो	अ. छत्तीसगढ़
2. वैज्ञानिक घर	ब. मुंडा
3. गोल गधेड़े	स. झारखंड़
4. मुंडारी	द. उपास्य देव
5. सिंगबोंगा	इ. थारू

द . निम्नलिखित कथनों में सही कथन पर सही तथा गलत पर गलत निशान लगाइए –

1. नौजवान ने विद्युत–बल्ब को फूंक मार कर बुझाने का प्रयास किया।
2. जोमनाम पर्व में नया धान नहीं खाया जाता।
3. आदिवासियों के त्यौहार प्रकृतिपरक हैं।
4. आदिवासी समाज अब विकास कर रहा है।
5. हो जनजाति का पर्व दो दिनों तक चलता है।

इ. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. झारखंड के असुरों के घर ....आकार के होते हैं।
2. झारखंड के आदिवासियों की संपर्क भाषा.........................है।
3. उत्तरांचल और झारखंड के आदिवासी ....से अपने घर बनाते हैं।
4. भोटिया जनजाति .... प्रदेश में रहती हैं।
5. संथाली बोली .... समुदाय में बोली जाती है।

अनेक शब्दों के बदले में एक शब्द

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए –

1. – 'जिसका बोध सरलता से हो सके' इस वाक्याश के लिए 'बोधगम्य' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
2. – 'ज्ञान बढ़ाने वाला' इस वाक्यांश के लिए 'ज्ञानवर्धक' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

नीचे ऐसे ही कुछ वाक्य अथवा वाक्यांश लिखे हुए हैं, जिनके बदले में एक शब्द लिखिए –

(अ) वन में बसने वाला –
(ब) जिसकी अपेक्षा किया जाय –
(स) जिसकी उपासना किया जाता हो –
(द) सबसे अधिक पुराना –
(इ) दूसरों के उपकार को माननेवाला –

लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. झारखंड के समुदाय तथा उनकी बोलियों के नाम लिखिए।
2. आदिवासी या वनवासी किन्हें कहा जाता है?
3. भारत में किन–किन राज्यों में आदिवासी समुदाय मिलते हैं?
4. भोटिया समुदाय के अंतिम संस्कार की परंपरा का वर्णन कीजिए।
5. आदिवासियों के कौन–कौन से व्यवसाय हैं, संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न –

1. आदिवासियों की प्रथाओं में से किन्हीं चार प्रथाओं का वर्णन कीजिए।
2. छत्तीसगढ़ियों की जनजातियों की वैवाहिक प्रथा का वर्णन कीजिए।
3. आदिवासी जन–समुदायों के प्रमुख व्यवसाय कौन–कौन से है? सरकार इनके जीवनस्तर को सुधारने के लिए क्या–क्या आवश्यक कदम उठा रही है?
4. जनी शिकार पर्व का वर्णन कीजिए।
5. छऊ नृत्य की चार विशेषताएँ लिखिए।

6. निम्नलिखित अपठित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

इंग्लैण्ड के एक विद्वान को युवावस्था में राज–दरबारियों में जगह नहीं मिली। इस पर जिंदगी भर वह अपने भाग्य को सराहता रहा। बहुत से लोग इसे अपना बड़ा भारी दुर्भाग्य समझते, पर वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ बुरे लोगों की संगति में पड़ता, जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते। बहुत से लोगों के साथ रहकर पल भर में ही बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। वे उतने ही समय में ऐसी बातें कह जाते हैं, जिससे मन में बुरा प्रभाव पड़ जाता है। ऐसी बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं।

प्रश्न

1. इंग्लैण्ड का विद्वान भाग्य को क्यों सराहता रहा?
2. बुराई मन पर आसानी से क्यों हावी हो जाती है?
3. कुसंग आध्यात्मिक उन्नति में बाधक क्यों है?
4. इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।
5. इस अनुच्छेद का एक तिहाई शब्दों में सार लिखिए।

योग्यता विस्तार :–

निम्न सारणी को पूर्ण कीजिए

स.क्र.	जनजातियों के नाम	राज्य के नाम	प्रमुख परंपराएँ	प्रमुख त्यौहार	प्रमुख नृत्य
01	थारू				
02	खासी				
03	मुंडा				
04	असुर				
05	बिरजिया				
06	हो				
07	असुर				
08	उराँव				
09	भोटिया				

शब्दार्थ

निराकरण – समाधान, दूर करना
एकत्रित – इकट्ठे
संयोजक – कार्यक्रम को चलानेवाला
आदिम परिस्थितियाँ – बहुत प्राचीन काल के हालात
वनवासी – वनों में रहने वाले
नावाकिफ – अनभिज्ञ, बेखबर, अनजान
जनजाति – जंगलों या पहाड़ों में रहनेवाले ऐसे मानव समूह जिनकी जीवन–शैली मुख्य धारा से कुछ भिन्न है
संपर्क भाषा – आपसी संपर्क में प्रयुक्त होनेवाली भाषा
पर्व – उत्सव
स्तम्भ – खंभा
प्रताड़ित करना – सताना
यंत्रणा – तकलीफ, कष्ट
अपेक्षित – आवश्यकतावाली, चाही गई, जरूरी
यापन – बिताना
सामग्री – सामान
सक्षम – समर्थ, क्षमता रखनेवाला व्यक्ति
इच्छा शक्ति – इच्छित वस्तु प्राप्त करने की शक्ति
आकलन – मापना, अंदाजा लगाना
पिरामिड – मिस्त्र के राजा–रानियों के तिकोने विशाल मकबरे
अक्षमता – अयोग्यता

परिचायक – परिचय देनेवाला
नरकुल – पतली लंबी पत्तियों तथा पतले गाँठदार डंठलवाला पौधा
अंतिम संस्कार – मृत्यु के बाद का संस्कार
सर्वत्र – सब जगह
विशिष्टताओं – विशेषताओं
परंपरागत – पुराने जमाने से चली आने वाली
हस्तांतरित – बदलना, एक हाथ से दूसरे हाथ में पहुँचाना
उपास्य – उपासना करने योग्य
कृतज्ञता – आभार
ख्याति – प्रसिद्धि, मशहूरी
अर्जित – प्राप्त, कमाई हुई
पौराणिक – पुराणों से संबद्ध
अभिनय – प्रदर्शन (हाव–भावों का), एक्टिंग
पेंटिंग – चित्रकला
साक्षी – प्रमाण
अवश्यंभावी – जरूरी रूप से होना
मुक्ति – छुटकारा
प्रतीक्षित – जिसकी प्रतीक्षा किया जाए

उत्तर

1. – क. झारखंड	1. झारखंड	1. तिकोनें पिरामिडनुमा
2. – क. छत्तीसगढ़	2. थारू	2. नागपुरी
3. – ख . हो	3. छत्तीसगढ़	3. लकड़ी के लट्ठों और नरकुल
4. – क. बैसाख	4. मुंडा	4. उत्तरांचल
5. – ख. असम	5. उपास्य देव	5. संथाल
1. हाँ	1. सही	(अ) वनवासी
2. नहीं	2. गलत	(ब) अपेक्षित
3. हाँ	3. सही	(स) उपास्य
4. हाँ	4. सही	(द) प्राचीनतम
5 .नहीं	5. गलत	(इ) कृतज्ञ

व्याकरण

(काव्य के तत्व)

रस

काव्य सुनने, पढ़ने या देखने (नाटक आदि) से जिस आनंद की प्राप्ति होती है उसे रस कहते हैं। रस को काव्य की आत्मा माना गया है।

रस की परिभाषा – आचार्य भरतमुनि ने अपनी पुस्तक 'नाट्यशास्त्र' में रस की निम्न परिभाषा दी है। आचार्य भरत मुनि के अनुसार –

'विभावानुभाव संचारीभावः संयोगाद्रस निष्पात्तिः।'

अर्थात – 'विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से रस के निष्पत्ति होती है।'

इस प्रकार रस के निम्नलिखित चार अंग होते हैं –

1. स्थायी भाव
2. संचारी भाव अथवा व्यभिचारी भाव
3. विभाव
4. अनुभाव

भाव :– मन के विकारों को भाव कहते हैं। आचार्य भरतमुनि ने इसके दो प्रकार बताये हैं – 1. स्थायी भाव, तथा 2. संचारी भाव या व्यभिचारी भाव

1. स्थायी भाव –

सहृदय अर्थात श्रोता, दर्शक या पाठक के हृदय में जो भाव स्थायी रूप से मौजूद रहते हैं उन्हें स्थायी भाव कहते हैं। ये लम्बे समय तक प्रभावशील होते हैं। इन्हें छिपाया नहीं जा सकता। इन्हें बदला भी नहीं जा सकता है। आचार्य भरतमुनि ने इसकी संख्या 9 बताई है। प्रत्येक रस का निश्चित स्थायी भाव होता है। वर्तमान में वात्सल्य नामक एक और रस मान लिया गया है जिसका स्थायी भाव वत्सल या पुत्र–प्रेम माना गया है।

रस के प्रकार :– दस रस और उनके स्थायी भाव निम्न हैं –

क्रमांक	रस के नाम	स्थायी भाव
1.	श्रृंगार रस	रति या प्रेम
2.	हास्य	हास
3.	रौद्र	क्रोध
4.	भयानक	भय
5.	वीर	उत्साह
6.	अद्भुत	आश्चर्य
7.	करूण	शोक
8.	वीभत्स	घृणा
9.	शांत	निर्वेद
10.	वात्सल्य	वत्सलता

2. संचारी भाव या व्यभिचारी भाव :– जो भाव सहृदय के हृदय में अस्थायी रूप से प्रगट होते हैं, और जल्द ही मिट जाते हैं उन्हें संचारी भाव या व्यभिचारी भाव कहा गया है। आचार्य भरतमुनि ने इसकी संख्या 33 बताई हैं। शंका, मोह, गर्व, चिंता, हर्ष, आदि भाव संचारी भाव हैं। इनकी तुलना पानी के बुलबुलों से की गई है।

3. विभाव :– स्थायी भावों को जागृत करनेवाले कारकों को विभाव कहा गया है। यह रस निष्पत्ति का प्रमुख कारण होता है। इसके 3 प्रकार होते हैं –

1. आलंबन विभाव 2. उद्दीपन विभाव, 3. आश्रय।

4. अनुभाव :– आश्रय की चेष्टाओं को अनुभाव कहते हैं। इसके दो प्रकार होते हैं –

1. बाह्य चेष्टाएँ 2. आंतरिक चेष्टाएँ।

स्थायी भाव तथा संचारी भाव में अंतर :–

क्र	स्थायी भाव	संचारी भाव
1.	सहृदय के हृदय में जो भाव स्थायी रूप से मौजूद रहते हैं उन्हें स्थायी भाव कहते हैं।	ये सहृदय के हृदय में अस्थायी रूप से प्रगट होते हैं, और जल्द ही मिट जाते हैं।
2.	आचार्य भरतमुनि ने इसकी सख्या 9 बताई है।	इसकी संख्या 33 हैं।
3,	प्रत्येक रस का एक ही स्थायी भाव होता है।	एक ही रस के एक से अधिक संचारी भाव हो सकते हैं।
4.	कोई भी एक स्थायी भाव एक ही रस के साथ आता है।	कोई भी एक संचारी भाव एक से अधिक रसों के साथ आ सकता है। इसीलिए इसे व्यभिचारी भाव कहा गया है।

रस के प्रकार और उनकी परिभाषाएँ :–

1. श्रृंगार रस – सहृदय के हृदय में स्थित रति नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के साथ संयोग होता है तब श्रृंगार रस की निष्पत्ति होती है।

यहाँ स्त्री–पुरूष के प्रेम–भाव का वर्णन किया जाता है। इसके दो भेद हैं –

क. संयोग श्रृंगार ख. वियोग श्रृंगार

क. संयोग श्रृंगार – जहाँ नायक–नायिका के प्रेम, मिलन, स्पर्श, आलाप, आदि का वर्णन होता है। वहाँ संयोग श्रृंगार होता है

उदाहरण –

राम को रूप निहारति जानकी,
कंकन के नग की परछाही ।
या तै सजै सुधि भूल गई कर
टेकि रही पल हारत नाही

ख. वियोग श्रृंगार – जब नायक तथा नायिका के मध्य वियोग का वर्णन होता है वहाँ वियोग श्रृंगार होता है।

उदाहरण – 'मधुवन तुम कत रहत हरे।
विरह–वियोग श्यामसुंदर के ,
ठाढ़े क्यों न जरे।

2. हास्य रस – जब किसी भी विचित्र वेशभूषा, कथन, हाव भाव देखकर हँसी आती हो तो वहाँ हास्य रस होता है। इसका स्थायी भाव हास है।

उदाहरण – इस दौडधूप में क्या रखा, आराम करो, आराम करो।
आराम जिंदगी की कुंजी, इससे न तपेदिक होती है।
आराम सुधा की एक बूँद, तन का दुबलापन खोती हैं।
आराम शब्द में राम छुपा, जो भवबंधन को खोता हैं।
इसलिए तुम्हें समझाता हूँ, मेरे अनुभव से काम करो।

3. रौद्र रस – शत्रु द्वारा अपमान, शत्रु का सम्मुख आ जाना, शत्रुओं के द्वारा, अनुचित कार्य होने का वर्णन पर रौद्र रस उत्पन्न होता है। इसका स्थायी भाव क्रोध हैं।

उदाहरण – श्री कृष्ण के वचन सुन, अर्जुन क्रोध से जलने लगे।
सब शोक अपना भूलकर, करतल युगल मलने लगे।
संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े।
करते हुए यह घोषणा, वे हो गए उठकर खड़े।

4. भयानक रस – जब किसी वर्णन से भय उत्पन्न होता हो, वहाँ भयानक रस होता है। इसका स्थायी भाव भय है।

उदाहरण – एक ओर अजगरहिं लखि, एक ओर मृगराज।
विकल बटोही बीच में, पर्‌यो मूरछा खाय।।

5. अद्‌भुत रस – इसका स्थायी भाव आश्चर्य है। आश्चर्यजनक घटना या वस्तु का वर्णन सुनकर, देखकर या पढ़कर जब व्यक्ति के मन में आश्चर्य या विस्मय पैदा हो तो वहाँ अद्‌भुत रस होता है।

उदाहरण – बिनु पग चलै, सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म, करै विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु बानी बक्ता बड़ जोगी।

6. करुण रस – इसका स्थायी भाव शोक है। जहाँ मृत्युतुल्य वियोग का वर्णन होता है वहाँ करूण रस होता है।

उदाहरण – अभी तो मुकुट बँधा था माथ
हुए अब ही हल्दी के हाथ।
हाय!रूक गया यही संसार
बना सिन्दूर अँगार।

8. वीभत्स रस – इसका स्थायी भाव घृणा है। घृणा को उत्पन्न करने वाले दृश्यों का वर्णन होने पर वीभत्स रस होता है।

उदाहरण – सिर पर बैठयो काग, आँख दोउ खात निकारत।
खींचत जीभहिं स्यार, अतिहि आनंद उर धारत।।

9. शांत रस – इसका स्थायी भाव निर्वेद या वैराग्य है। जहाँ सुख, दुख चिंता, राग–द्वेष आदि कुछ भी भाव नहीं है वहाँ शांत रस होता है। यहाँ सांसारिक वस्तुओं से विरक्ति का वर्णन होता है।

उदाहरण – सुन मन मूढ़! सिखावन मेरो।
हरिपद विमुख लह्यो न काहू सुख ,
सठ! यह समझु सबेरो।

10. वात्सल्य रस – बच्चों की चेष्टाओं से माता–पिता के हृदय में जो आनंद का भाव पैदा होता है, उसे वात्सल्य रस कहते हैं। इसका स्थायी भाव वत्सल या पुत्रप्रेम है।

उदाहरण – 'माँ ओ' कहकर बुला रही थी,
मिट्टी लेकर आयी थी,
कुछ मुँह में, कुछ लिए हाथ में
मुझे खिलाने आई थी।

000

पाठगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ – खाली स्थान भरिए –

1. आचार्य .... ने रस की परिभाषा दी है।
2. रस के ....अंग होते हैं।
3. हृदय में हमेशा विद्यमान भाव..............कहलाते हैं।
4. संचारी भाव की संख्या ....हैं।
5. हास्य रस का स्थायी भाव ....है।

उचित संबंध जोड़िए –

(अ)

1. जल्दी–जल्दी बनने और मिटने वाले भाव	–	विभाव
2. जिन बातों से रस की मात्रा बड़ जाती है	–	अनुभाव
3. वे भाव जो हृदय में स्थायी रूप से रहते हैं	–	संचारी भाव
4. रस निष्पत्ति का प्रमुख कारण	–	स्थायी भाव
5. आश्रय की चेष्टाएँ	–	उददीपन विभाव

(अ) निम्नलिखित रसों और उनके स्थायी भावों को उचित क्रम में व्यवस्थित करके लिखिए –

1. श्रृंगार रस	–	शोक
2. हास्य रस	–	भय
3. भयानक रस	–	हास
4. शांत रस	–	रति या प्रेम
5. करुण रस	–	निर्वेद

लघुउत्तरीय प्रश्न –

1. अनुभाव किसे कहते हैं?
2. रस की परिभाषा लिखिए।
3. करूण रस का एक उदाहरण दीजिए।
4. रसों के नाम एवं प्रत्येक का स्थायी भाव लिखिए।
5. विभाव किसे कहते हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. स्थायी भाव तथा संचारी भाव में कोई चार अंतर लिखिए।
2. श्रृंगार रस की परिभाषा तथा उदाहरण दीजिए।
3. रस के अंगों का परिचय दीजिए।
4. वात्सल्य रस की परिभाषा तथा उदाहरण दीजिए
5. 'बिनु पद चले, सुनै बिनु काना' इन पंक्तियों में कौन सा रस है? उस रस की परिभाषा लिखिए।

योग्यता विस्तार :–

निम्नलिखित प्रारूप में पहले खालीस्थान पर क्रमशः रति, करुण, हास तथा घृणा नामक स्थायी भाव लिखिए तथा दूसरे खाली स्थान पर उससे संबंधित रस का नाम लिखिए।

सहृदय के हृदय में स्थित .... नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के साथ संयोग होता है तब .... रस की निष्पत्ति होती है।

द्वितीय इकाई

पद्य 1. आज मैं बीज हूँ – नागार्जुन मिश्र
2. वीरों का कैसा हो बसंत – सुभद्रा कुमारी चौहान

गद्य 1. धूप बत्ती – बुझी, जली – कन्हैयालाल

व्याकरण (पत्र लेखन) – पत्र कैसे लिखें

पाठ–3

आज मैं बीज हूँ

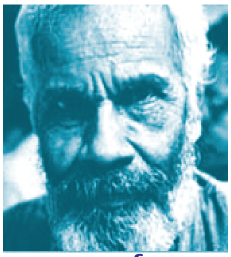

नागार्जुन

कवि नागार्जुन का संक्षिप्त जीवन परिचय – प्रयोगवादी कविता के सशक्त हस्ताक्षर कविवर नागार्जुन का जन्म बिहार के दरभंगा जिले के तरौनी गाँव में 30 जून 1911 ई. में हुआ था। इनके बचपन का नाम बैद्यनाथ मिश्र था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत पाठशाला में हुई। इन्हें मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी अकादमी के द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है। इनका निधन 05 नवंबर 1998 ई. में हुआ।

रचनाएँ –

कविता संग्रह – अपने खेत में, युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, तालाब की मछलियाँ, खिचड़ी विपल्व देखा हमने, हजार–हजार बाहोंवाली, पुरानी जूतियों का कोरस, तुमने कहा था, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, इस गुबार की छाया में, ओम मंत्र, भूल जाओ पुराने सपने, रत्नगर्भ।

उपन्यास – रतिनाथ की चाची, बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, नयी पौध, वरुण के बेटे, दुखमोचन, उग्रतारा, कुंभीपाक, पारो, आसमान में चाँद तारे।

व्यंग्य – अभिनंदन

निबंध संग्रह – अन्नहीनम क्रियानाम

बाल साहित्य – कथा मंजरी भाग–१, कथा मंजरी भाग–२, मर्यादा पुरुषोत्तम, विद्यापति की कहानियाँ

भाव पक्ष – नागार्जुन ने समाज की विषमताओं, गरीबी, दुखों तथा संकटों का वर्णन अपनी कविताओं में किया है। यथार्थवादी दृष्टिकोण से उन्होंने जीवन को देखा एवं प्रस्तुत किया। नए ढंग की मौलिक रचनाओं में उन्होंने कम शब्दों में अधिक अर्थ को व्यक्त किया है। उनके भावों में नवीनता है। प्रकृति के सजीव चित्रण के अलावा उन्होंने समाज के दबे हुए इन्सानों की पीड़ा को अपनी कविता में ढाला है। आम आदमी के जीवन से जुड़ी कविताएँ उन्होंने लिखी।

कलापक्ष – नागार्जुन ने हिन्दी तथा मैथिली दोनों भाषाओं में अपनी रचनाएँ लिखीं। खड़ी बोली हिन्दी भाषा में तत्सम, तद्भव, अरबी, फारसी के शब्द भी शामिल हैं। नागार्जुन की भाषा समृद्ध है। सरल एवं छोटी रचनाओं में लयबद्धता है। मुक्त छंद का प्रयोग है।

साहित्य में स्थान – आधुनिक कवियों में नागार्जुन का स्थान अद्वितीय है। आप किसी वाद या खेमे के साहित्यकार न होकर कबीर और निराला की परम्परा के कवि हैं। आपको नई कविता का पुराना कवि कहा जाता है। आप घुमक्कड़ एवं फक्कड़ साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध हुए।

आज मैं बीज हूँ

केन्द्रीय भाव –

'आज मैं बीज हूँ' कविता साधारण और उपेक्षित लोगों में विश्वास भर देने वाली कविता है। इसमें नागार्जुन बीज के माध्यम से अपनी भावनाएँ प्रस्तुत करते हैं। जिस तरह बीज में संभावनाएँ हैं वैसे ही दबे–कुचले मामूली आदमी में भी आत्म–विश्वास भरा हुआ है। बस उसे आगे बढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण की जरूरत है।

बस, थोड़ी और उमस
बस, थोड़ी और धूप
बस, थोड़ी और पानी
बस, थोड़ी और हवा
बस, थोड़ा और भुरभुरापन
क्या देर है भला बाहर आने में!

आज मैं बीज हूँ
कल रहूँगा अंकुर
बटुर–बटुर आएगी दुनिया, मुझे देखने को आतुर
आज मैं बीज हूँ
अलक्षित, नाचीज हूँ
गर्क हूँ धरती की जादुई कोख में।

000

शब्दार्थ :–

उमस (ऊमस) – हवा न चलने से होने वाली गर्मी, जिसमें नमी रहती है।
भुरभुरापन – आसानी से टूटकर चूरा बन जाने की विशेषता, जुते हुए खेत की मिट्टी का गुण
अंकुर – अँखुआ
बटुर–बटुर – सिमटकर, एकत्र होकर
आतुर – बेचैन और उत्सुक
अलक्षित – जिस पर ध्यान न दिया गया हो, अनदेखा
नाचीज – सामान्य, बेहद मामूली
गर्क – डूबा हुआ, गड़ा हुआ
जादुई – जादू से उत्पन्न या प्रगट, चमत्कारिक गुणों से युक्त
कोख – माँ का गर्भ, गोद

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

अ. दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. इस कविता में कवि नागार्जुन किसके बारे में कह रहे हैं –
   क, पेड़ के बारे में ख, स्वयं के बारे में
   ग, बीज के बारे में घ, अंकुर के बारे में
2. बीज कहाँ छिपा रहता है –
   क, धरती में ख, पानी में
   ग, रेत में घ, अँखुए के नीचे
3. दुनिया किसे देखने के लिए आतुर होगी –
   क, बीज को ख, पेड़ को
   ग, कवि को घ, अंकुर को
4. 'आज मैं बीज हूँ' कविता की भाषा–शैली की विशेषता है –
   क, सरल भाषा ख, अलंकार प्रधान
   ग, संस्कृतयुक्त भाषा घ, कठिन भाषा
5. नागार्जुन बीज के माध्यम से किसकी बात कर रहे हैं?
   क. साधारणजन की ख. अमीर लोगों की
   ग. पेड़ की घ, समाज की

ब. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का निशान लगाइए –

1. बीज को उगने के लिए केवल मिटट्ी की जरूरत होती है।
2. बीज पेड़ बनता है वैसे ही साधारणजन का भी विकास हो सकता है।
3. बीज से कभी अंकुर नहीं निकलता।
4. बीज से मानव की तुलना की गई है।
5. बीज उमस, धूप, पानी, हवा और भुरभरी मिटट्ी पाकर उगता है।

लघुउत्तरीय प्रश्न –

1. बीज के द्वारा कवि नागार्जुन मानव के लिए क्या कहना चाहते हैं?
2. जादुई कोख का क्या अर्थ है?
3. नागार्जुन की दो रचनाओं के नाम लिखिए।
4. नागार्जुन का क्या विश्वास है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'आज मैं बीज हूँ' कविता का भाव–सौंदर्य व्यक्त कीजिए।
2. 'आज मैं बीज हूँ' कविता का सार लिखिए।
3. 'आज मैं बीज हूँ' कविता की भाषा की विशेषताएँ लिखिए।
4. 'आज मैं बीज हूँ' कविता का उद्देश्य लिखिए।
5. नागार्जुन का जीवन परिचय लिखिए।

योग्यता विस्तार

समाज की विषमताओं, गरीबी तथ गरीबों के दुखों–संकटों का वर्णन करने में नागार्जुन प्रसिद्ध हैं। उन्होंने जीवन को यथार्थवादी दृष्टिकोण से देखा और अपनी कविताओं में उनका उसी तरह वर्णन किया है। निम्न कविता में अकाल और उसके बाद की स्थिति का वर्णन किया गया है। समझने का प्रयास कीजिए एवं अन्य कवियों की ऐसी ही यथार्थवादी कविताओं का संकलन तैयार कीजिए।

अकाल और उसके बाद

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।

उत्तर

1. – (ग) बीज के बारे में
2 – (ख) धरती में
3 – (घ) अंकुर को
4 – (क) सरल भाषा
5 – (क) साधारणजन की

1. ✗
2. ✓
3. ✗
4. ✓
5. ✓

पाठ–4

वीरों का कैसा हो बसंत

सुभद्रा कुमारी चौहान

कवि का जीवन परिचय

''बुदेले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसीवाली रानी थी।'' इस गीत की अमर गायिका, सहृदया सुभद्रा कुमारी चौहान प्रसिद्ध कवयित्री थीं। वात्सल्य रस एवं स्वतंत्रता की चिन्गारियों का स्वागत करनेवाली सुभद्रा कुमारी चौहान जी का जन्म 16 अगस्त 1904 ई. में प्रयाग के निहालपुर ग्राम में हुआ था। बचपन से ही आप कविताएँ लिखती थीं। अपका विवाह जबलपुर के वकील श्री लक्ष्मण सिंह चौहान के साथ हुआ। आपने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया और जेल भी गयीं। आपकी शिक्षा प्रयाग के क्रास्थवेस्ट कॉलेज में हुई। काशी के थियोसॉफिकल स्कूल में भी आपने अध्ययन किया। 15 फरवरी 1948 ई. में मोटर दुर्घटना में आपका दुखद निधन हुआ।

रचनाएँ –

1. काव्य संग्रह – 'मुकुल', 'त्रिधारा'।
2. कहानी संग्रह – बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे–सादे चित्र।
3. बालोपयोगी रचना – 'सभा का खेल'।

भावपक्ष –

आपके काव्य में ओजस्वी राष्ट्रीय विचारधारा का चित्रण है।
सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना का भाव है।
बालजीवन एवं मातृभाव का वर्णन किया गया है।
प्रेम और सौदर्य का वर्णन किया गया है।

कलापक्ष –

शुद्ध खड़ीबोली सरल एवं प्रवाहशाली भाषा का प्रयोग किया है। इन्होंने अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग किया है। छंद योजना में तुकांत छंद है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कविताओं में अभिधा तथा लक्षणा शब्द शक्ति तथा तीनों शब्द गुणों जैसे – ओज, माधुर्य एवं प्रसाद का प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान –

सुभद्रा जी के काव्य में पारिवारिक संस्कार तथा मार्मिकता होने के कारण उन्हें आधुनिक युग की कवयित्रियों में अधिक लोकप्रियता मिली। आपकी कविताएँ राष्ट्रीय जागरण में सहायक हुई हैं, इसलिए हिन्दी साहित्य में आपका स्थान सर्वश्रेष्ठ है। प्रेरणास्पद तथा ओजस्वी गीतों की गायिका सुभद्रा कुमारी चौहान हिन्दी साहित्य में चिरस्मरणीय रहेंगी।

वीरों का कैसा हो बसंत ?

केन्द्रीय भाव –

सुभद्रा जी की इस कविता में राष्ट्र–प्रेम प्रगट हो रहा है। उन्होंने धरती को एक दुल्हन के रूप में चित्रित किया है। कवयित्री ने पूरे भारत के भौगोलिक स्वरूप को ध्यान में रखा है। पूरे देश में आजादी की लड़ाई लड़नेवाले वीर, वसंत–उत्सव की खुशियों की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। वे तो इस पर्व को बलिदान पर्व के रूप में मना रहे हैं। गुलाम देश में जनता को अंग्रेजों के अत्याचार से बचाना वीरों का कर्त्तव्य है। उन्होंने राम–रावण युद्ध, कुरूक्षेत्र के महाभारत युद्ध, हल्दीघाटी के युद्ध की घटनाओं का वर्णन करते हुए वीरों को अधिकारों की रक्षा तथा अन्याय का विरोध करने के लिए प्रेरित किया है।

आ रही हिमालय से पुकार,
है उदधि गरजता बार–बार,
प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,
सब पूछ रहे दिग–दिगंत,
वीरों का कैसा हो बसंत?

फूली सरसों ने दिया रंग,
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग,
वधु–वसुधा पुलकित अंग–अंग,
हैं वीर–वेश में किंतु कंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?

भर रही कोकिला इधर तान,
मारू बाजे पर उधर गान,
है रंग और रण का विधान,
मिलने आए हैं आदि–अंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?

गलबाहें हों या हों कृपाण,
चल–चितवन हो, या धनुष–बाण,
हो रस–विलास या दलित त्राण,
अब यही समस्या है दुरंत,
वीरों का कैसा हो बसंत?

कह दे अतीत अब मौन त्याग,
लंके! तुझमें क्यों लगी आग?
ऐ कुरूक्षेत्र! अब जाग, जाग,
बतला अपने अनुभव अनंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?

हल्दीघाटी के शिलाखंड!
ऐ दुर्ग! सिंहगढ़ के प्रचंड!
'राणा', 'ताना' का कर घमंड,
दो आज जगा स्मृतियाँ ज्वलंत,
वीरों का कैसा हो बसंत?

भूषण अथवा कवि चंद नहीं,
बिजली भर दे वह छंद नही!
है कलम बँधी स्वच्छंद नहीं,
फिर हमें बतावे कौन? हंत!
वीरों का कैसा हो बसंत ?

000

शब्दार्थ

उदधि – समुद्र,
प्राची – पूर्व दिशा,
भू – पृथ्वी,
नभ – आकाश,
अपार – जिसका पारनहो, अनंत,
दिग–दिगंत – सारी दिशाएँ और दिशाओं के छोर, सर्वत्र, सभी ओर,
फूली – खिली हुई, प्रसन्न,
मधु – मिठास, रस,
अनंग – कामदेव (प्रेम अैर सौंदर्य के देवता),
वसुधा – धरती,
वधु – दुल्ह ,
वधु–वसुधा – दुल्हन जैसी धरती
पुलकित – आनंदित, खुश, प्रसन्न,
कंत – प्रेमी, प्रिय पति,
कोकिला – कोयल,
तान – संगीत का सुर,
तान भरना – सुर में गाना,
मारू बाजे – युद्ध मे बजने वाले बाजे, नगाड़े,
मारू बाजे पर गान – 'मरने–मारने' का जोश भर देनेवाली नगाडों की थाप,
रंग – मस्ती और खुशी, विलास,
रण – युद्ध,
विधान – आयोजन,
आदि – आरंभ,
गलबाहें –गले में बाहें, दोहती, मित्र–भाव,
चल – चंचल,
चितवन – नजर,
रस – आनंद,
दलित – दबे–कुचले लोग,
त्राण – रक्षा,
दुरंत – भीषण, कठिन,
अतीत – इतिहास, बीता हुआ समय
लंके – हे लंका! (सम्बोधन),
कुरूक्षेत्र – महाभारत युद्ध का प्रसिद्ध स्थान,
हल्दी घाटी – मेवाड़ (राजस्थान) का वह प्रसिद्ध स्थान जहाँ राणा प्रताप और अकबर की सेना में युद्ध हुआ था।
सिंह–गढ़ – महाराष्ट्र का वह प्रसिद्ध किला, जिसे शिवाजी ने मुगलों से लड़कर वापिस लिया था,
राणा – राणा प्रताप,
ताना – शिवाजी का वीर साथी जो सिंहगढ़–विजय में मारा गया था।
ज्वलंत – जलती हुई, महत्वपूर्ण।
स्मृतियाँ – यादें,
भूषण – रीतिकाल के वीर रस में कविता लिखनेवाले एक कवि।
चंद – कवि चंदवरदाई,
कलम बंधी – लिखने पर शासन की पाबंदी,
स्वच्छंद – बंधनमुक्त,
हंत – हाय, (एक शोक सूचक शब्द)।

पाठगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

अ. उचित संबध जोडिए –

क. लंका	1. राजपूत–मुगल युद्ध
ख. कुरूक्षेत्र	2. राम–रावण युद्ध
ग. हल्दी घाटी	3. कौरव–पांडव युद्ध

ब. विलोम शब्द लिखिए –

क. अतीत –
ख. पुराना –
ग. स्वतंत्र –
घ. गुलाम –
ड़ वीर –

स. सही विकल्प चुनकर लिखिए –

1. खिली हुई सरसों ने क्या दिया है?
   क. रंग   ख. मधु   ग. रस   घ. बीज
2. गलबाहें हों या हों.................................।
   क. कृपाण   ख. त्राण   ग. धनुष–बाण   घ. बंदूक
3. किन्तु कन्त किस वेश में हैं?
   क. सुन्दर   ख. वीर   ग. उत्तम   घ. देव
4. चल–चितवन हो या ....।
   क. दलित–त्राण   ख. धनुष–बाण   ग. कृपाण   घ. सुंदर दृश्य।
5. हो रस–विलास या ....।
   क. कृपाण   ख धनुष–बाण   ग. दलित–त्राण   घ. आराम।

द. नीचे दिए कथनों में से जो सही हो उनके सामने सही (✓) का तथा जो गलत हो उनके सामने गलत (×) का चिह्न लगाइए –

1. इधर कोयल मारू गीत गा रही है।
2. उधर मारू बाजे मधुर तान भर रहे हैं।
3. सिंहगढ़ दुर्ग राणा उदयसिंह की याद दिलाता है।
4. हल्दी घाटी के पत्थर राणाप्रताप की याद दिलाते हैं।
5. तानाजी ने सिंहगढ़ को आजाद कराने के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

इ. पर्यायवाची शब्द लिखिए –

1. समुद्र, 2. भूमि, 3. आकाश।

फ. अधूरे वाक्य को सही विकल्प का चयन कर पूर्ण कीजिए।

वाक्य – सन् 1947 से पहले जब भारत परतंत्र था, तब –

क. लोग मस्ती से वसंत का त्यौहार मनाते थे।
ख. कोई अपने मन की बात आजादी से कह या लिख नहीं सकता था।
ग. लोगों को लिखने और बोलने की पूरी छूट थी।
उत्तर – ख.

लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. हिमालय से बार–बार क्या पुकार आ रही है?
2. कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान 'वीरों का कैसा हो बसंत?' प्रश्न बार–बार क्यों उठाती हैं?
3. सुभद्रा कुमारी चौहान ने लंका, हल्दी घाटी, सिंहगढ़ जैसे दुर्गों का जिक्र क्यों किया है?
4. सुभद्रा कुमारी चौहान के अनुसार बसंत ऋतु में धरती किस रूप में सजी–सँवरी प्रतीत होती है?
5. 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता में कवयित्री के समक्ष कौन–सी कठिन समस्या है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
2. कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान ने क्यों कहा है कि कलम बंधी है?
3. हल्दी घाटी के युद्ध के बारे में सुभद्रा कुमारी चौहान क्या भाव अभिव्यक्त कर रही हैं?
4. वीरों का कैसा हो वसंत की भाषा–शैली पर टिप्पणी कीजिए।
5. सिद्ध कीजिए कि 'वीरों का कैसा हो बसंत' देशभक्ति पूर्ण कविता है।

उत्तर

अ	ब	स	द
(क) – 2	क. वर्तमान,	1. रंग,	1. ✗
(ख) – 3	ख नया,	2. कृपाण,	2. ✗
(ग) – 1	ग. परतंत्र,	3. वीर	3. ✗
	घ आजाद,	4. धनुष–बाण	4. ✓
	ड़ कायर	5. दलित–त्राण।	5. ✓

योग्यता विस्तार

काव्य

काव्य की परिभाषा – विभिन्न विद्वानों ने काव्य को अलग–अलग ढंग से परिभाषित किया है। कुछ परिभाषा नीचे दिये जा रहे हैं –

आचार्य विश्वनाथ – ''रसात्मकं वाक्यं काव्यम्।'' अर्थात्, रसमय वाक्य ही काव्य है।
पंडित जगन्नाथ – ''रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करनेवाले शब्दों को काव्य कहते हैं।''
जयशंकर प्रसाद :– ''काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है।''

काव्य के पक्ष :– काव्य के दो पक्ष होते हैं –

1. भाव पक्ष – इसके अंतर्गत काव्य के विषय आते हैं।
2. कला पक्ष – कवि द्वारा प्रयुक्त भाषा, रस, छंद एवं अलंकार, जिनसे उनकी शैली बनती है, कला पक्ष के अंतर्गत आते हैं।

काव्य के भेद

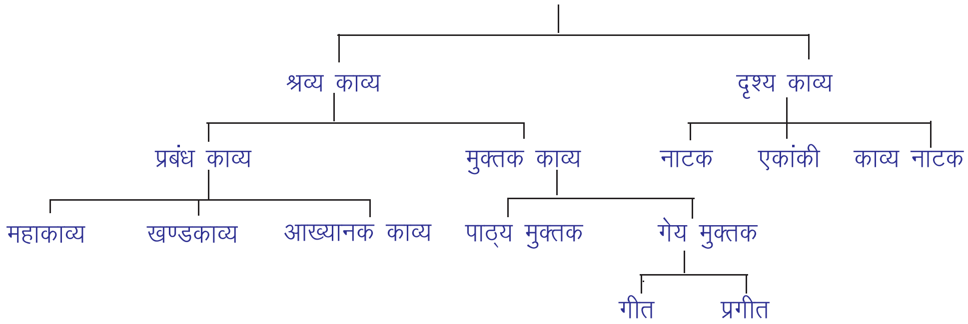

सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित ''झांसी की रानी'' नामक कविता से आप परिचित होंगे। यह कविता 'आख्यानक काव्य' का श्रेष्ठ उदाहरण है। इसमें झांसी की रानी 'लक्ष्मी बाई' के शौर्य का वर्णन किया गया है।

पाठ–5

धूप–बत्ती : बुझी, जली

कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर

कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' का जीवन परिचय – कन्हैया लाल मिश्र''प्रभाकर' का जन्म सहारनपुर जिले के देवबन्द नगर में हुआ था। प्रारंभिक जीवन से ही राजनीतिक और सामाजिक कार्यों में भाग लेने के कारण उन्हें अनेक बार कारावास की यातना सहनी पड़ी। पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रभाकर जी का कार्य विशेष रूप से सराहनीय रहा है। ज्ञानोदय पत्रिका का कुछ समय से सम्पादन करने के अतिरिक्त आपने सहारनपुर से प्रकाशित होने वाले पत्र 'नया जीवन' तथा 'विकास' का लम्बे समय तक सम्पादन किया। आपको भारत सरकार ने हिन्दी सेवा के लिये 1990 में पद्म श्री की उपाधि से अलंकृत किया।

पत्रकारिता में आपकी विशेष रूचि है। विविध पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से ही आपने आम जीवन को अपनी विचारधारा एवं अपने आदर्शों से अवगत कराया है। आप सन् 1950 से रिपोर्ताज लेखन की ओर उन्मुख रहे हैं। विकास, ज्ञानोदय, विश्वतान तथा नया जीवन जैसी लोकप्रिय पत्रिकाओं का सम्पादन तथा संचालन किया है।आप इसी क्षेत्र में रहकर निरन्तर अपनी लेखन प्रतिभा का परिचय दे रहे है।

रचनाएँ –

श्री कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' ने गद्य की अनेक विधाओं का प्रवर्तन एवं पोषण किया है। कथा, संस्मरण, रिपोर्ताज, रेखाचित्र जैसी विधाओं के क्षेत्र में प्रभाकर जी अग्रणी रहे हैं। उनकी उल्लेखनीय रचनाएँ अधोलिखित हैं –

रेखाचित्र – नई पीढ़ी नये विचार, जिन्दगी मुस्काए, माटी हो गई सोना।
निबन्ध संग्रह – बाजे पायलिया के घुँघरू।
लघु कथा संग्रह – आकाश के तारे, धरती के फूल।
संस्मरणात्मक रेखाचित्र – दीप जले, शंख बजे।
रिपोर्ताज – क्षण बोले, कण मुस्कराए, महके आँगन चहके द्वार।

प्रभाकर जी की रचनाओं पर उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप है, इसलिये उनकी कृतियाँ भावात्मक एवं सरस हैं। व्यावहारिक पक्ष की प्रबलता ने उनकी रचनाओं को प्रभावशाली बना दिया है। वे सीधा उपदेश न देकर परिस्थिति के अनुरूप सदाचरण की प्रेरणा देते हैं। व्यंग्यात्मक शैली के कारण उनकी रचनाओं में रोचकता का समावेश है।

भाषा –

मिश्र जी की भाषा प्रायः व्यावहारिक है। सम्पादन के आदर्श का निर्वाह करते हुए वे ऐसी भाषा का प्रयोग करते है जो जन जीवन के लिये सुबोध एवं सहज है। प्रभाकर जी के निबन्धों की भाषा संस्कृतनिष्ठ न होकर बोल चाल की प्रांजल हिन्दी है। तत्सम शब्दों की अधिकता होते हुए भी भाषा बोधगम्य तथा सरल है।

शैली –

गंभीर किन्तु सरल एवं रोचक, आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक एवं विचारात्मक शैली है।

साहित्य में स्थान –

आधुनिक युग के बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकारों में कन्हैया लाल जी मिश्र प्रभाकर विशिष्ट स्थान रखते हैं। लेखक, संपादक तथा संचालक के रूप में आपने प्रसिद्धि प्राप्त की है।

धूप–बत्ती : बुझी, जली!

कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर

मूल भाव –

'धूप बत्ती जली बुझी 'पाठ में लेखक ने धूपबत्ती के दो रूपों, खडी हुई धूपबत्ती और तिरछी झुकी हुई धूपबत्ती की उपमा क्रमशः घमंडी व्यक्ति और विनम्र व्यक्ति से की है। जिस प्रकार धूपबत्ती को झुकाने पर ही वह जल पाती है वैसे ही नम्रता से ही हम देनेवाले के निकट पहुँच पाते हैं। यदि व्यक्ति में योग्यता है तो उसकी मदद करनेवालों की कमी नहीं है। कठिन परिस्थितियों में विनम्रता को हम हथियार की तरह प्रयुक्त कर सकते हैं। अहंकार से हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते। इस प्रकार लेखक ने विनम्रता के महत्व को बताने के लिए अपने अनुभवों, विचारों एवं प्रचलित कहावतों का सहारा लिया है।

अपनी कोठारी में आते ही देखा कि कल सुबह धूपबत्ती जलाई थी, वह पूरी तरह जली नहीं थी, कुछ जल कर बुझ गई थी और अब भी ज्यों की त्यों खडी है। मुझे वह सिर–जली ऐसी लगी कि जैसे कोई मनुष्य हो, थोड़े बहुत ज्ञान से जिसका बौद्धिक जागरण तो हो गया हो पर मानसिक विकास न हुआ हो और वह उस बौद्धिक जागरण को अपना संपूर्ण विकास मानकर अहंकार में उफना फिरता हो।

मेरा मन दया से भर गया और मैंने उस धूपबत्ती को बिना उठाए ही फिर से जलाने का निश्चय कर लिया। झट मैंने दियासलाईजलाई और उसे धूपबत्ती के सिर से लगाया। दियासलाई जलकर बुझ गई, पर धूपबत्ती न जली। मैंने दियासलाई की दूसरी तीली जलाई ओर उसे उसके दाहिनी और लगाया, पर वह भी जलकर बुझ गई।

धूपबत्ती अब भी बिना जली पहले जैसे ही सिर जली खड़ी थी और मेरे लिए अब कोई मार्ग न था कि उसे खड़ी रहते जला दूँ। मैंने उसे उसके स्थान से उखाड़ लिया और उसे झुकाकर चौथी दियासलाई जलाई। अरे साहब, वह दियासलाई से छूते ही जल उठी।

दियासलाई में अब भी इतना दम था कि तैयार हो, तो वह चार–पाँच धूपबत्तियाँ और जला दे। जली धूपबत्ती ने अपनी सुगंध से कोठरी को भर दिया। यह काम समाप्त हुआ, तो बुद्धि ने अपनी कलाबाजी दिखाई, तीन दियासलाइयाँ पूरी जलकर बुझ गई पर धूपबत्ती न जली और एक दियासलाई के स्पर्श मात्र से ही वह भभक उठी, यह क्या बात है?

मन ने कहा, ''कोई बात तो है यह, पर प्रश्न तो यह है कि क्या बात है वह?''

अब ऊहापोह की बारी है, तर्क वितर्क की बारी है, चिंतन की बारी है।

जब तक तीन दियासलाइयाँ जलकर बुझीं धूपबती खड़ी थी और जब चौथी को छूते ही जल उठी, तो झुकी हुई थी।

लगता है, इस अनुभव में मेरे प्रश्न का उत्तर आ गया है, पर वह इतना संकेतात्मक है कि कहूँ समा गया है। समाए को जानना आवश्यक है, तो सोच रहा हूँ कि धूपबत्ती खड़ी हो या तिरछी, उसमें जलने की शक्ति बराबर ही है,

पर खड़ी हुई धूपबती दियासलाई की ज्वाला को ग्रहण करने में असमर्थ रहती है और तिरछी धूपबत्ती उसे सुगमता से ग्रहण कर लेती है क्योंकि झुकी हुई धूपबत्ती को दियासलाई अपनी लौ के पूरे घेरे में ले पाती है और सीधी खड़ी को नहीं।

बात हाथ आ गई, पर बात अपने में इकली–इकहरी बात ही तो नहीं है, उसमें बात–बात में बात भी तो है, ज्यों केले के पात में पात–पात में पात।'

तो यह निकली आ रही है बात में से बात कि किसी से कुछ लेना हो, तो झुकना आवश्यक है। झुकना, क्या शरीर का? नहीं जी, यों झुककर दण्डवत् लेटकर ही तो फौज के सिपाही गोलियाँ दागते हैं। तो झुकना देह का? नहीं, भाव का। साफ–साफ यों कि पाने के लिए नम्र होना आवश्यक है। लोकोक्ति है – बेटा बनकर सबने खाया, बाप बन कर किसी ने नहीं। यह बेटा बनना नम्रता ही तो है?

याद आ रहा है संस्कृत का एक श्लोक, जिसमें सुख की कुंजी बताई गई है। ''विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्। पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्म ततः सुखम्।'' भाव यह है कि विद्या से मनुष्य में विनय आती है, विनय से पात्रता – पाने को योग्यता और वह पात्रता से पाता है धन, धन से करता है धर्म, तब सुख ही सुख। तो पात्रता का मूल है विनय, नम्रता, झुकना।

क्यों भला? नम्रता से दाता के मन में प्रवेश पाना सुगम है, सहज है। इससे दाता के मन में देने की वृत्ति खिलती है, वह देने में सुख देता है और अविनय से वह वृत्ति संकुचित होती है, वह देने में भार मानता है।

हमारे लोकजीवन में इसका एक मर्मस्पर्शी संस्मरण सुरक्षित है, 'कानी भाभी' पानी पिला। हाँ इन बोलों दूध के कटोरे!'

भाभी की एक आँख शीतला में मारी गई और अब वह कानी है। उसका देवर, भाभी के लिए जिससे प्यारा कोई रिश्ता नहीं, उससे पानी चाहता है। लोक की ही अभिव्यक्ति है, पानी से भी पतला क्या? देवर को ही क्या, पानी तो किसी को भी पिलाया जा सकता है उसके लिए किसी पात्रता की आवश्यकता नहीं।

ठीक है, पानी पीने के लिए किसी पात्रता की आवश्यकता नहीं, पर अपात्रता न हो यह तो आवश्यक है और 'कानी' विशेषण ने, देवर की अविनयी वृत्ति ने उसकी अपात्रता सिद्ध कर दी है।

भारतीय संस्कार है कि जो अपात्र को दे, वह पतित। तो देवर को भाभी का चुभता उत्तर है – हाँ इन बोलों दूध के कटोरे! अरे देवरजी, तुम्हारे बोल तो इतने मीठे है कि मैं तुम्हें पानी नहीं, दूध पिलाऊँगी, मुँह धोए रहो!

हमारे लोक जीवन में विनय का भी एक संस्मरण सुरक्षित है, रानी भाभी, पानी पिला, पानी देवर के कुत्तों को!

प्यासा देवर भाभी से कहता है मेरी, रानी भाभी, दो घूँट पानी पिला दो। रानी के विशेषण में जो नम्रता है अपनी अपेक्षा दूसरे को महत्त्व देने की जो वृत्ति है, उसने भाभी का मन पुलकित कर दिया और उसकी उदारता को, ममता को जगा दिया है।

वह कहती है, अरे देवर जी पानी का क्या पिलाना, पानी तो मैं लाडले देवर के कुत्तों के लिए भी स्वयं कुएँ से भर खींच लाऊँ, देवर जी, तुम तो कुछ और पियो – दूध, लस्सी, शिकंजी, शरबत!

माँगा था पानी, मिला चुभता ताना और माँगा था पानी पर मिल रहा है दूध–शरबत। अकड़ने और झुकने का यह चमत्कार है।

ओह, याद आ गए बुजुर्ग दोस्त कुंदनलाल। मेरी ही जन्मभूमि में सुनार का काम करते थे। बडे ही दिलचस्प आदमी थे। जब हम उनकी दुकान पर पहुँचते थे सोने–चाँदी का कोई जेवर बनाते होते और हम कहते, ''कहिए, क्या बना रहे हैं भाई साहब?

वे अपना हथौड़ा रोक देते और राजा टोडरमल के समय का अपना चश्मा नाक से माथे पर रखते हुए कहते, ''अजीब सवाल है कि आज मैं क्या बना रहा हूँ? अरे भाई, किसी की बनती है नथ, किसी की अँगूठी, किसी का हार और किसी का कंगन पर अपनी तो मैं दाल–रोटी ही बनाता हूँ, क्या आज, क्या कल और क्या परसों।'' और

तब ऐसी मीठी हँसी हँसते कि उस बुढ़ापे में भी उनका खुबानी चेहरा कंधारी अनार हो जाता !

अपनी ठुक–ठुक के बीच उन्होंने उर्दू में कुछ कविताएँ भी लिखी थीं। एक शेर याद आ गया है पर याद धोखा दे गई, शेर कहाँ, शेर का भाव ही बस कि सुराही बहुत कीमती है, उसमें शराब भी बहुत कीमती है और वह साकी के बहुत कीमती हाथों में भी है बेशक, वह महत्त्व तो उस मामूली प्याले का है जो उस सुराही को सिर झुकाकर शराब देने के लिए विवश कर देता है।

वही बात कि देने से बढ़कर लेने वाले की पात्रता है। लो, स्मृति के आसन पर आ बैठे हैं पूज्य मदनमोहन जी मालवीय, जिन पर सदा धन बरसा। उस बार काशी विश्वविद्यालय में उनके दर्शन करने गया, तो बातों–बातों में उन्होंने कहा था, ''देश के हर द्वार पर एक दाता खड़ा है, अपनी खुली थैली लिए, पर कमी उन हाथों की है, जिनमें वह भेंट दे सकें!''

मेरे उठते–उठते, आग्रह से कहा था उन्होंने, "भूलना मत इसे।"

और मुंबई मेल के उस थर्ड क्लास कंपार्टमेंट में उस दिन पूज्य मालवीय जी के संदेश का परीक्षण कितना सफल रहा था।

मेल का हर डिब्बा करीब–करीब 'एयरटाइट' था, बस खाली था एक डिब्बा पर इसमें चढ़ना शेर की दाढ़ से गोश्त निकालना था। स्टेशन के आते ही उसकी बंद खिडकी से एक रोबीले पेशावरी पठान का चेहरा बाहर निकल आया। खिड़की के बाहर हम सात मुसाफिर थे। खान और फौजी उस युग के शेर–साँप थे, उन्हें लाँघना कठिन क्या, असंभव ही था।

खान ने मुसाफिरों को देखा और पूरे रोब से कहा, ''खिड़की नही खुलेगा।''

हम सबने समझ लिया कि ठीक ही है यह कि खिड़की नहीं खुलेगा, तो हम सात मुसाफिरों में से पाँच तो उसी क्षण दूसरे डिब्बे की ओर भाग निकले। छठे ने सामने से आते चैकर से शिकायत की, ''जनाब, ये हजरत पूरा डिब्बा घेरे बैठे हैं और हमें चढ़ने नहीं देते।''

चैकर महोदय ने अपने नए यूनीफार्म के रोब में जरा डाँट के स्वर में खान से कहा ''आप दूसरे मुसाफिरों को चढ़ने से नहीं रोक सकतें, खोलिए खिडकी।'' खान ने चुपचाप खिड़की खोल दी और चैकर की ओर मुस्कुराते हुए कहा ''ओः तुम बैठाएगा इशकों? बैठाओं। जब गाड़ी चलेगा और हम इस शाला को बाहर फेंकेगा, तो तुम शाला झंडी हिलाना।''

चैकर तो खिसका ही, वे मुसाफिर महाशय भी नौ दो ग्यारह हुए। खान ने उन्हें आवाज देकर कहा, "ओः कहाँ जाता है? आवो ईढर, हम पूरी शीट देगा।'' निमंत्रण काफी उदार था पर उसे स्वीकार करने की शक्ति उन महाशय में न थी। वे चले ही गए। खान ने अपनी खिड़की धम से बंद कर ली।

मैं अब भी अपनी जगह खड़ा था, अपनी अटैची हाथ में लटकाए। खान ने मुझे देखा, मैंने खान को। उसने क्या सोचा मैं नहीं जानता, पर मैंने सोचा, "मालवीय जी महाराज का वचन है कि हर द्वार पर एक दाता खड़ा है तो क्या यह खान भी दाता है?''

तभी खान ने मुझसे कहा, ''तुम नहीं गया?''

मैंने संक्षेप में कहा, ''नहीं खान साहब!''

''क्यों गाड़ी में नहीं चड़ेगा?''

''चढूँगा, अगर आप प्यार से चढ़ाएँगे।''

क्यों? दूसरे डब्बे में नहीं चड़ेगा?''

''खान साहब, आप एक बहादुर पठान है और बहादुर आदमी का दिल बहुत बड़ा होता है। उसमें ही जगह न मिले, तो फिर कहाँ जगह मिलेगी?''

''तुम डरता नहीं, हम तुम्हें नीचे फेंक देगा?''

''नहीं खान साहब, बहादुर आदमी के पंजे सख्त होते हैं, दिल मुलायम होता है। आप मुझे नीचे नहीं फेंक सकते।''

खान ने कुछ सोचा कि तभी गार्ड की सीटी बजी और हरी झंडी हिली। खान ने दरवाजा खोला और मुझे बुलाया। मैं झपटकर दरवाजे पर पहुँचा कि खान ने सहारा देकर मुझे भीतर ले लिया।

अठारह आदमियों के बैठने लायक उस छोटे से डिब्बे में खान था, उसकी खूबसूरत बीवी थी और दो बच्चे थे। सबके बिस्तर बिछे थे, जैसे वे पलंग पर ही हों। मैंने खान की बीवी को सलाम किया और खान को धन्यवाद दे, दूसरी तरफ बैठ गया। कुछ देर बाद धीरे से खान मेरे पास आये और उसने मुझे दो बहुत बढ़िया सेव दिए। खाकर मजा आ गया और मैंने सोचा, ''मालवीय जी महाराज का वचन सत्य है कि देश के हर द्वार पर एक दाता खड़ा है, अपनी खुली थैली लिए, पर कमी उन हाथों की है जिनमें वह अपनी भेंट दे सके।''

सचमुच यह खान, जिसे हम सात मुसाफिरों ने यमदूत या जीता भूत समझा था, एक दाता ही तो था और उसकी प्यार भरी भेंट मेरे हाथों में थी, पर मेरी सनक देखिए कि मैं अपने अब दाता की कसकर परीक्षा लेने पर तुल गया था।

दूसरे स्टेशन पर गाड़ी आकर रूकी तो समय की बात, स्टेशन मेरी तरफ था। खान की तरह मैं खिड़की से बाहर झुक गया। तीन मुसाफिर थे दो जवान एक बूढ़ा। बिना खान की तरफ देखे, जोर से मैंने कहा, बूढ़े बाबा, यह खान साहब का डिब्बा है। उन्होंने मुझे मेहरबानी करके बैठने की जगह दे दी है। वह जगह मैं तुम्हें दे दूँगा और खुद खड़ा रहूँगा। तुम भीतर आ जाओ।'' और बिना क्षण भर रूके, मैंने उन दोनों जवानों से कहा, ''तुम्हारे लिए दरवाजा नहीं खुलेगा, तुम कहीं और चले जाओ।''

तुरंत वे दोनों चले गए और मैंने बूढे को भीतर ले अपनी जगह बैठा दिया। मैं कुछ देर तो खिड़की पर झुका रहा और फिर दीवार से लगकर खड़ा–खड़ा अपनी पुस्तक पढनें लगा।

कोई बीस मिनट बाद खान ने पूछा, ''तुम क्यों खड़ा है मेरे भाई?''

सरलता से मैंने कहा, '' खान साहब, आपने मेहरबानी करके जो जगह मुझे दी थी, वह मैने बूढे बाबा को दे दी लेकिन मुझे कोई दिक्कत नहीं है, आप आराम से लेटिए।'' खान ने बिना अपनी गंभीरता भंग किए कहा, ''नहीं तुम भी बैठो।'' खान को धन्यवाद देकर मैं बैठ गया।

दूसरे स्टेशन पर गाड़ी ठहरी तो मैंने एक स्त्री और उसके बालक को अपनी जगह बिठा दिया और खड़ा हो गया। कुछ देर बाद खान की बीवी ने खान के कान में कुछ कहा और खान ने मुझे फिर बैठा दिया।

अब दोपहर भर गई थी। सोने के लिए करवट लेते–लेते खान ने मुझसे कहा, ''तुम चाएगा तो किसी को बैठाएगा पर तुम जरूर बैठेगा, हम सोता है।'' और खान जब सोकर उठा तो हम बारह थे। खान देखकर हँसा और बोला, "सरकार तुमको रोज बौम्बे मेल में रखे तो बौत मुसाफिर को आराम होगा।"

मैंने कहा, "पर खान साहब, आपको भी मेरे साथ रहना पड़ेगा, नहीं तो मुझे खाली डिब्बा कहाँ मिलेगा!" खान और उसकी पत्नी इतने जोर से हँसे कि मजा आ गया। शाम को सात बजे मैं अपने स्टेशन पर उतरा तो खान ने मुझसे हाथ मिलाया और उसकी बीवी ने मुझसे पहले मुझे सलाम किया।

खान की सख्ती क्यों छूमंतर हो गई थी?

खान देने को क्यों उतावला हो उठा था?

मेरी सफलता का रहस्य क्या था?

धूपबत्ती तीन दियासलाइयों में क्यों न जली?

चौथी दियासलाई के छूते ही धूपबत्ती क्यों जल उठी?

देख रहा हूँ, "धूपबत्ती झमझम जल रही है और मेरी कोठरी उसकी भीनी सुगंध से भरी है।" सोच रहा हूँ, "यह पहली दियासलाई में जल जाती तो यह बात और बात में छिपी बात मैं कैसे पाता?

000

पाठगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(अ) दिये गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए –

1. अपनी कोठरी में आते ही लेखक ने देखा कि धूपबत्ती –

क. कुछ जलकर बुझ गई थी।
ख. बिल्कुल नहीं जली थी।
ग. अभी भी जल रही थी।
घ. पूरी तरह जल गई थी।
उत्तर – क. कुछ जलकर बुझ गई थी।

2. दियासलाई के स्पर्श से धूपबत्ती नहीं जली क्योंकि –

क. वह तिरछी थी। ख. वह टूट गई थी।
ग. वह एकदम सीधी थी। घ. वह गीली थी।
उत्तर – ग. वह एकदम सीधी थी।

3. रानी भाभी, पानी पिला में 'रानी' संबोधन किस बात का प्रतीक था –

क. मजाक ख. चापलूसी ग. धनी घ. नम्रता तथा आदर
उत्तर – घ. नम्रता तथा आदर।

4. देनेवाले से बढ़कर लेनेवाले की .... है।

क. पात्रता ख. नम्रता ग. दरिद्रता घ. मित्रता
उत्तर – पात्रता

5. लेखक ने कहा, 'नहीं खान साहब, बहादुर आदमी के पंजे सख्त होते है, दिल .... होता है।

क. कमजोर ख. मुलायम ग. छोटा घ. कठोर
उत्तर – ख. मुलायम

(ब) निम्नलिखित कथनों में से सही कथन पर सही (✓) तथा गलत पर गलत (×) का निशान लगाइये –

1. 'किसी से कुछ लेना है तो झुकना आवश्यक है' वे इस कथन में झुकना का अर्थ तन का झुकना से है।
2. 'अरे देवरजी तुम्हारे बोल तो इतने मीठे हैं कि मैं तुम्हें पानी नहीं दूध मिलाऊँगी, मुहँ धोए रहो' इस वाक्य में मुँह धोए रहो का अर्थ पानी से चेहरा धो लो से है।

3. मुंबई मेल में बहुत भीड़ थी।
4. पठान यात्री लेखक को ट्रेन से बाहर नहीं रोक सका क्योंकि लेखक बलवान थे।
5. लोकोक्ति है बेटा बनकर सबने खाया, बाप बनकर किसी ने नहीं।

लघुउत्तरीय प्रश्न –

1. खान की सख्ती क्यों छूमंतर हो गई थी?
2. चौथी बार धूपबत्ती जलने के प्रसंग से लेखक ने क्या सिद्ध किया है?
3. मुंबई मेल के एक डिब्बे में चढ़ना क्यों कठिन था?
4. रानी भाभी के संबोधन से क्या प्रभाव पड़ा?
5. 'क्या बना रहे हैं भाई साहब?' का उत्तर सुनार कुंदनलाल क्या देते थे?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न –

1. इस पाठ में दिया गया विनम्रता का महत्व समझाने वाला कोई एक उदाहरण लिखिए।
2. 'धूपबत्ती : बुझी, जली' पाठ में पठान के हृदय परिवर्तन का क्या कारण था?
3. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' जी ने पं. मदनमोहन मालवीयजी से क्या सीखा?
4. रानी भाभी एवं कानी भाभी का प्रसंग अपने शब्दों में लिखिए।

इस पाठ के अंत में लेखक ने कुछ प्रश्न पूछे हैं। प्रश्न इस प्रकार हैं –

(अ) ख़ान की सख्ती क्यों छूम–मंतर हो गई?
(ब) ख़ान देने को क्यों उतावला हो उठा था?
(स) मेरी सफलता का रहस्य क्या था?
(द) धूपबत्ती तीन दीया सलाईयों में क्यों न जली?
(इ) चौथीं दियासलाई के छूते ही धूपबत्ती क्यों जल उठी?

सोचिए और उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास कीजिए।

इस पाठ में मुहावरों और कहावतों का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।
जैसे –

बेटा बनकर सबने खाया बाप बनकर किसी ने नहीं – विनम्रता से सबको लाभ होता है, रोब जमाने से कुछ प्राप्त नहीं होता।

मुँह धोए रहो – अपनी हैसियत में रहो।
(ताना मारने का भाव, कि आस लगाए रहो, कुछ भी नहीं मिलेगा)

कहावत/मुहावरे

शेर की दाढ़ से गोश्त निकालना – असंभव काम
नौ दो ग्यारह होना – भाग खड़ा होना

इस पाठ में से ऐसे ही कुछ और मुहावरे चुनकर लिखिए और उसका अर्थ समझने का प्रयास कीजिये।

शब्दार्थ

अहंकार में उफनना = अपने आगे किसी को कुछ न समझना, इतराना।
भभक उठना = तेजी से जलना
सुगमता = सरलता
स्पर्श = छूना

कलाबाजी दिखाना = नट का खेल देखना।

चतुराई दिखाना = यहाँ अर्थ है व्यर्थ का तर्क–वितर्क करना

इकली इकहरी = एक अर्थ वाली
पात = पत्ता

दंडवत – पेट के बल लेटकर प्रणाम करना।

वृत्ति खिलना – भाव जगना।

अविनय – नम्रता का न होना, ढीठपन
संकुचित – सिकुड़ना
मर्मस्पर्शी – मन को छूने वाला
शीतला – चेचक

संस्कार – पारिवारिक सीख, शिक्षा आदि से परिष्कृत

अपात्र – अयोग्य
पतित – नीच, गिरा हुआ, पराजित
पुलकित – प्रसन्न
स्मृति – याद

दाता – देने वाला

थर्ड क्लास कपार्टमेंट – (अंग्रेजी शब्द) तीसरी श्रेणी का डिब्बा (पहले भारतीय रेलों में तीसरी श्रेणी का डिब्बा भी होता था)

एयरटाइट – (अंग्रेजी शब्द) – जिसमें हवा भी न घुस सके

उत्तर – (ब)

1. (✗)
2. (✗)
3. (✓)
4. (✗)
5. (✓)

पाठ – 6

व्याकरण

पत्र–लेखन

हमें अपने जीवन में अनेक बार विभिन्न अवसरों पर पत्र लिखना पड़ता है। पत्र–लेखन एक कला है। पत्र अपने दूरस्थ संबंधियों तथा मित्रों से बातचीत करने का एक अच्छा, सुगम और सस्ता साधन है। पत्र में जितनी स्वाभाविकता और आत्मीयता होगी, वह उतना ही प्रभावकारी होगा। इसमें लेखक की भावनाएँ ही नहीं व्यक्त होती, बल्कि उसका व्यक्तित्व भी उभरता है। पत्र भावात्मक, विचारात्मक तथा सूचनावाहक होते हैं।

पत्र में निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए :–

1. पत्र संक्षिप्त होना चाहिए परन्तु उसमें विषय का कलेवर सम्पूर्ण हो।
2. पत्र में अनावश्यक विस्तार न हो, परंतु विचार स्पष्ट हों।
3. पत्र का उद्देश्य एवं विषय–वस्तु इतनी स्पष्ट होनी चाहिए कि एक बार पढ़ने से ही समझ में आ जाए।
4. पत्र की भाषा सरल, सुबोध एवं पठनीय हो।
5. पत्र में आरम्भ से अंत तक नम्रता, मैत्री एवं मृदुता के भाव बने रहने चाहिए।

पत्र लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :–

1. पत्र के प्रारूप को पूर्णतः ध्यान में रखना चाहिए।
2. यथास्थान विरामादि चिह्नों का प्रयोग करना चाहिए।
3. पत्र में पंक्तियाँ अथवा शब्द सटाकर नहीं लिखना चाहिए।
4. विषय वस्तु को पूर्णतः ध्यान में रखकर, अनुच्छेद बनाकर लिखना चाहिए।
5. पत्र में कड़वी या अशोभनीय बातों का जिक्र नहीं करना चाहिए।
6. पाठक के मन को दुःखी करने वाले शब्दों या तथ्यों का उल्लेख नहीं करना चाहिए।

शीर्षक पत्रों की श्रेणियाँ – पत्रों को हम दो श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं।

1. **औपचारिक पत्र (व्यावसायिक व अधिकारिक पत्र)** – ऐसे पत्र जो सरकारी कार्यालयों के कर्मचारियों, प्रधानाचार्यो, प्राचार्यों अध्यापकों, प्रकाशकों, व्यासायिक संस्थानों के अधिकारियों, दुकानदारों आदि को लिखे जाते हैं, औपचारिक पत्र कहलाते हैं।

2. **अनौपचारिक पत्र (व्यक्तिगत पत्र)** – ऐसे पत्र जो रिश्तेदारों, मित्रों, परिचितों आदि को लिखे जाते हैं, अनौपचारिक पत्र कहलाते हैं। बधाईपत्र, निमंत्रण–पत्र तथा शोक पत्र भी इन्हीं के अंतर्गत आते हैं।

पत्र के अंग – मूल रूप में पत्र के तीन प्रमुख अंग होते हैं –

1. प्रारम्भ, 2. मध्य, 3. अंत।

इन्हीं तीन प्रमुख अंगों को हम छः अंगों में विभक्त कर उन पर विचार करते हैं। ये छः अंग हैं –

1. पता तथा तिथि
2. संबोधन एवं अभिवादन
3. पत्र की विषयवस्तु
4. अभिनिवेदन
5. पत्र की समाप्ति तथा नाम
6. पता

ये अंग सभी तरह के पत्रों में होते हैं लेकिन प्रस्तुत करने का तरीका बदल जाता है।

(क) पता और तिथि –

यदि पत्र लेखक का पता नहीं होगा तो पत्र पाने वाला व्यक्ति यह नहीं जान पायेगा कि पत्र आया कहाँ से है। इसी प्रकार पत्र बहुत दिनों के बाद पहुँचता है अतः तिथि लिख देने से समाचार एवं वस्तुस्थिति स्पष्ट हो जाती है।

अतः पत्रों में ऊपर दाएँ कोने में पूरा पता एवं उसके नीचे तारीख लिखी जाती है जैसे –

एल. आई. जी. – 8 सेक्टर 4
दीनदयाल उपाध्याय नगर
रायपुर (छत्तीसगढ़)
दिनांक 02.11.2009

इस प्रकार पत्र लेखक अपने पत्र – व्यवहार का पूर्ण पता दे देता है। साथ ही पत्र लेखन की तारीख लिख देता है।

(ख) संबोधन तथा अभिवादन –

सामान्य जीवन में भी हम अपने से बड़ों के चरण – स्पर्श एवं प्रणाम के द्वारा अभिवादन करते हैं तथा छोटों को शुभाशीष प्रदान करते हैं। पत्रों में भी पत्र लेखक अपने संबंधों के आधार पर संबोधन एवं अभिवादन करता है। इसके कुछ उदाहरण आगे सारिणी में आपको दिये जायेंगे।

(ग) पत्र की विषयवस्तु –

इसके बाद पत्र की सामग्री अर्थात् विषय – वस्तु दी जाती है। पत्र–लेखक जिस उद्देश्य से पत्र लिखता है इसमें उसका वर्णन होता है। इसे संदेश भी कह सकते हैं। इसकी भाषा स्पष्ट एवं गरिमामय होनी चाहिए। इसमें अनावश्यक विस्तार न हो यह ध्यान रखें।

(घ) समापन–शब्द तथा नाम –

संदेश या उद्देश्य समाप्त होने के पश्चात् हम समापन–शब्द का प्रयोग करते हैं जैसे आपकी पुत्री, आपका आज्ञाकारी शिष्य, तुम्हारा मित्र, भवदीय आदि। यह नयी पंक्ति में लिखा जाता है तथा इसके बाद अल्पविराम (,) का चिह्न लगाया जाता है।

अंत में हस्ताक्षर तथा पूरा नाम लिखा जाता है।

(ङ) पता –

व्यक्तिगत पत्रों में पता लिफाफे पर ही लिखा जाता है जबकि औपचारिक पत्रों में पत्र के आरंभ में भी पता लिखा जाता है। आवेदन पत्रों में भी अंत में नाम के नीचे प्रेषक अपना पता लिखता है।

पता में मकान नंबर, मुहल्ले का नाम, गाँव, डाकखाना, तहसील तथा जिला का नाम स्पष्ट अक्षरों में लिखा जाना चाहिए कोष्टक में राज्य का भी नाम होना चाहिए। फिर पिन कोड लिखें।

पत्र लिखनेवाले के सम्बन्ध अनुसार सम्बोधन, अभिवादन तथा अभिनिवेदन की सारणी

क्र.	संबंध	संबोधन	अभिवादन	अभिनिवेदन
01	अपने से बड़े सम्बंधियों को पत्र	पूज्य पिताजी, पूजनीय माताजी, आदरणीय या आदरणीया माता	प्रणाम, सादर प्रणाम , सादर चरण स्पर्श	आपका आज्ञार्थी, कृपाभिलाषी, आपका स्नेहाकांक्षी
02	बराबरवाले, सहेली, मित्र, सहपाठी, आदि को पत्र	प्रिय मित्र, प्रिय सखि, मित्रवर, बंधुवर, प्रियवर, आदि	नमस्ते, जयहिंद, नमस्कार, आदि	आपका मित्र, तुम्हारी सखि, तुम्हारा स्नेही, तुम्हारा ही, भवदीय, कृपाकांक्षी भवदीया, आपका, आदि
03	प्रतिष्ठित व्यक्तियों को पत्र	माननीय, मान्यवर आदरणीय, आदि	नमस्ते, नमस्कार	भवदीय, कृपाकांक्षी, हितचिंतक, हितेच्छु, आदि
04	अपने से छोटों को पत्र	आयुष्मान, चिरंजीव, प्रियवर, प्रिय, आदि	शुभाशीष, शुभ आशीर्वाद, प्रसन्न रहो, खुश रहो, आदि	तुम्हारा शुभाभिलाषी, हितचिंतक, हितेच्छु, आदि
05	पति द्वारा पत्नी को पत्र	प्रिये, प्राणाधिके	शुभाशीष	तुम्हारा हितैशी
06	पत्नी द्वारा पति को पत्र	मेरे सर्वस्व, मेरे जीवनधारा	सादर प्रणाम	आपकी स्नेहाकांक्षी
07	व्याहारिक या व्यापारिक पत्र	प्रिय महाशय, महोदय जी, प्रिय महाशया, महोदया जी, मान्यवर, आदि	नमस्ते, वंदेमातरण जयहिंद,नमस्कार, आदि	भवदीय, भवदीया, आपका कृपाभिलाषी
08	सरकारी तथा व्यावसायिक पत्र	महोदय	आदरणीय	भवदीय, भवदीया, प्रार्थी, आवेदक, निवेदक

कुछ पत्रों के उदाहरण

प्रश्न 1. अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए जिसमें उसे व्यायाम का महत्व बताया गया हो।

उत्तर :–

मकान नं. 21
बूढ़ापारा रायपुर
दिनांक 24. 11. 2009

प्रिय भाई प्रबुद्ध,
शुभाशीष।

तुम्हारे पत्र से ज्ञात हुआ है कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। यह जानकर मुझे चिंता हो रही है क्योंकि स्वास्थ्य मनुष्य की सबसे बड़ी संपत्ति है और स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। तुम व्यायाम भी नहीं करते हो तथा प्रातःकाल भ्रमण के लिए भी नहीं जाते हो।

तुम्हारे जीवन में जितना महत्व अध्ययन का है उतना ही स्वास्थ्य का। इसकी रक्षा के लिए व्यायाम रामबाण औषधि है। व्यायाम से शरीर सुंदर, सुदृढ़ और सुगठित बनता है। शरीर में रक्त संचार भी उचित ढंग से होता है। पाचन शक्ति तीव्र होती है। व्यायाम रोगों का प्रतिकार करने में समर्थ है।

तुम्हारे जैसे प्रतिभावान विद्यार्थी के लिए व्यायाम का महत्व है। जब शरीर ही स्वस्थ नहीं रहेगा तो अध्ययन कैसे करोगे। क्या तुम भूल गये कि "एक तंदुरूस्ती हजार नियामत" व्यायाम से ही अध्ययन में मन लगता है। तुम्हें प्रतिदिन व्यायाम, आसान और प्रातःकाल भ्रमण करना चाहिए। खेल भी खेलने चाहिए। खेल भी अच्छा व्यायाम है।

मैं आशा करता हूँ कि मेरा पत्र मिलने के पश्चात् तुम अपने को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम अवश्य करोगे।

तुम्हारा बड़ा भाई
अनिरूद्ध कसार

प्रश्न 2. सचिव माध्यमिक शिक्षा मंडल रायपुर छत्तीसगढ़ को दसवीं बोर्ड परीक्षा की अंक सूची की द्वितीय प्रति प्राप्त करने हेतु एक आवेदन पत्र लिखिए।

उत्तर :–

प्रति,

सचिव,
माध्यमिक शिक्षा मंडल छत्तीसगढ़
रायपुर

विषय – अंक सूची की द्वितीय प्रति भेजने हेतु।

महोदय जी,

निवेदन है कि मेरी कक्षा 10वीं की अंकसूची खो गई है। मैंने सन् 2008 में दसवीं की परीक्षा दी थी। अतः मुझे अंकसूची की द्वितीय प्रति भेजने का कष्ट करें। इस हेतु मैंने निर्धारित शुल्क 50/– रूपये बैंक चालान नं. 24633, दिनांक 07–07–09 से आपके नाम से भेज रहा हूँ–

मेरी संबंधित जानकारी निम्नलिखित हैं–

1. नाम	–	उत्सव जैन
2. पिता का नाम	–	श्री गुमानचंद जैन
3. परीक्षा का नाम	–	हाईस्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा 2008
4. परीक्षा केंन्द्र क्र.	–	2406
5. परीक्षा केंन्द्र	–	श्री बालाजी विद्या मंदिर दुर्ग
6. अनुक्रमांक	–	23578432
7. नियमित/स्वाध्यायी	–	नियमित
8. पूरा पता	–	उत्सव जैन, मार्फत श्री गुमानचंद जैन, सिकोलाभाठा, दुर्ग (छ.ग.)
9. संलग्न बैंक चालान	–	रू. 50/– चालान नं. 24633, दिनांक 07.07.2009

दिनांक – 07.07.2018

विनीत

उत्सव जैन

प्रश्न 3. स्वास्थ्य अधिकारी नगरपालिका महासमुन्द को एक पत्र लिखिए जिसमें गंदगी की समस्या की ओर ध्यान दिलाया गया हो।

उत्तर –

प्रति,

स्वास्थ्य अधिकारी
नगर पालिका
महासमुन्द (छ.ग.)

विषय – गंदगी की समस्या।

महोदय,

बड़े खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि पिछले दस दिनों से हमारी बस्ती में ढंग से सफाई नहीं हो रही है। स्थान–स्थान पर कूड़े के ढेर पड़े हैं। सफाई कर्मचारी दिखाई ही नहीं पड़ते। नालियाँ बंद पड़ी हैं। यदि इस समस्या को तुरंत हल नहीं किया गया तो कोई भी महामारी फैल सकती है।

मैं पंचशील नगर के सभी निवासियों की ओर से आपसे निवेदन कर रहा हूँ कि सफाई का विशेष प्रबंध तुरंत किया जाय।

भवदीय,

दिनांक 30.10.2018

संजय शर्मा
वार्ड नं. 19, पार्षद, पंचशीलनगर
महासमुन्द (छ.ग)

पाठगत प्रश्न

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. पत्र के .... अंग होते हैं।
2. .... पत्र रिश्तेदारों को लिखे जाते हैं।
3. पारिवारिक पत्रों में ऊपर .... कोने में पूरा पता लिखना चाहिए।
4. माननीय संबोधन .... के लिए लिखा जाता है।

(उत्तर – 1. 6, 2. अनौपचारिक, 3. दाएँ, 4. प्रतिष्ठित व्यक्तियों)

दीर्घउत्तरीय प्रश्न –

1. अपने मित्र को जन्मदिवस पर एक बधाई पत्र लिखिए।
2. अपने पिता को पत्र लिखिए जिसमें अपनी परीक्षा की तैयारी का वर्णन किया गया हो।
3. अपनी शाला के प्राचार्य को एक आवेदन पत्र लिखिए जिसमें स्वास्थ्य खराब होने के कारण तीन दिन की छुट्टी देने हेतु निवेदन किया गया है।
4. पत्र वितरण में गड़बड़ी की शिकायत करते हुए मुख्य डाकपालन अधिकारी को पत्र लिखिए।
5. मुहल्ले में चोरी की घटना में वृद्धि होने की शिकायत करते हुए थाना प्रभारी आरंग को पत्र लिखिए।

तृतीय इकाई

पद्य

इसे जगाओ – भवानी प्रसाद मिश्र

गद्य

निबंध कैसे लिखें

व्याकरण

शब्द शक्ति

पाठ–7

इसे जगाओ

भवानी प्रसाद मिश्र

कवि *भवानी प्रसाद मिश्र का* जीवन परिचय –

गाँधी जी के अहिंसा वादी विचारों से प्रभावित कवि श्री भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म 29 मार्च 1914 ई. में गाँव टिगरिया जिला होशंगाबाद में हुआ था। इन्होंने सुप्रसिद्ध पत्रिका 'कल्पना' का सम्पादन किया। वे आकाशवाणी में सेवारत रहे। आकाशवाणी से अवकाश प्राप्त करने के उपरान्त गाँधी साहित्य सम्पादक मण्डल के सदस्य रहे। 20 फरवरी 1985 में उनका निधन हुआ।

रचनाएँ –

कविता संग्रह –

गीत फरोश, चकित है दुख, गांधी पंचशती, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, त्रिकाल संध्या, व्यक्तिगत, परिवर्तन जिए, तुम आते हो, इदम् न मम्, शरीर कविता : फसलें और फूल, मानसरोवर दिन, सम्प्रति, अँधेरी कविताएँ, तूस की आग, कालजयी, अनाम और नीली रेखा तक।

बाल कविताएँ –

तुकों के खेल,

संस्मरण –

जिन्होंने मुझे रचा

निबन्ध संग्रह –

कुछ नीति कुछ राजनीति।

भाव पक्ष – विश्वबन्धुत्व की भावना से ओतप्रोत कवि श्री भवानी प्रसाद मिश्र की कविता में मानव चेतना और विकास समाहित है। जड़ चेतन उनके प्रेरणास्श्रोत हैं। कल–कल करती मुझे, कलरव करती पक्षियाँ, उदित होता सूर्य, उतुंग पर्वत शिखर कवि को प्रभावित करते हैं।

कला पक्ष – मिश्र जी अपनी कविता में सहज बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं। कविता में चमत्कार पैदा करने के उद्देश्य से क्लिष्ट, अप्रचलित या संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग नहीं करते। आम बोलचाल की भाषा में उच्च कोटि की कविता करना मिश्र जी की विशेषता है। मानवीय संवेदनाओं को बोलचाल की भाषा में व्यक्त करने में भवानी जी अग्रणी हैं।

इसे जगाओ

कविता का केन्द्रीय भाव – कर्महीन व्यक्ति सोये हुए के समान हैं। 'इसे जगाओ'' कविता में कवि ने संदेश दिया है कि सूरज अपने समय पर उदित और अस्त होता है। संसार को जीवन, ऊर्जा और प्रकाश देता है। उसके आगमन से ही संसार सचेतन हो पाती है। निरन्तर चलनेवाली हवा संसार को जीवन प्रदान करती है। प्रातः होते ही पक्षी कलरव कर जीवन के गीत गाने लगती हैं। हमें सूरज, हवा और पक्षी से सजग और क्रियाशील होना सीखना चाहिए। वक्त गुजर जाने के बाद जागने वालों के हाथ से अवसर निकल चुका होता है। ऐसी स्थिति में वे हड़बड़ाकर या घबराकर भागने लगते हैं। घबराकर भागने और तेज गति से चलने मे फर्क होता है। तेज गति का अर्थ होता है सही समय पर सचेत होना, अवसर से न चूकना। जो सही अवसर का उपयोग करते हैं वे ही प्रगति करते हैं।

इसे जगाओ

भई, सूरज
जरा इस आदमी को जगाओ
भई, पवन
जरा इस आदमी को हिलाओ,
यह आदमी जो सोया पड़ा है,
जो सच से बेखबर
सपनों में खोया पड़ा है।
भई, पंछी
इसके कानों पर चिल्लाओ!
भई, सूरज!
जरा इस आदमी को जगाओ!
वक्त पर जगाओ,
नहीं तो जब बेवक्त जागेगा यह
तो जो आगे निकल गए हैं
उन्हें पाने
घबरा के भागेगा यह!
घबरा के भागना अलग है
क्षिप्र गति अलग है
क्षिप्र तो वह है
जो सही क्षण में सजग है

सूरज, इसे जगाओ,
पवन, इसे हिलाओ,
पंछी, इसके कानों पर चिल्लाओ!

000

भवानी प्रसाद मिश्र

पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1 – दिये गये विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. कवि ने किसे वक्त पर जगाने की बात कही है –
   (क) सूरज (ख) पवन (ग) पंछी (घ) आदमी
2. बेवक्त जागने पर क्या होगा ?
   (क) दिन का समय गुजर जायेगा
   (ख) आराम मिलेगा
   (ग) दुनिया के मुकाबले में पिछड़ जायेगा
   (घ) चिन्ता नहीं रहेगी।
3. कविता में क्षिप्र किसे बताया गया है –
   (क) जो घबराकर भगाता है
   (ख) जो अवसर को नहीं चूकता
   (ग) जो क्षण भर को सजग रहता है
   (घ) जो तेज रफ्तार से चलता है
4. कवि ने जगाने का अनुरोध सूर्य, पवन और पक्षी से किया है, क्योंकि वे –
   (क) सुन्दर हैं। (ख) क्रियाशील हैं।
   (ग) प्रगतिशील हैं। (घ) अनुभवी हैं।
5. इसे जगाओ कविता में कवि ने किस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है?
   (क) संस्कृतनिष्ठ (ख) चमत्कारिक
   (ग) अलंकारिक (घ) बोलचाल
6. इस कविता में कवि ने किस शैली का प्रयोग किया है?
   (क)वार्तालाप (ख) संक्षेप
   (ग) विवरणात्मक (घ) आत्मकथात्मक

प्रश्न 2.सही कथनों के आगे सही (✓) तथा गलत कथनों के आगे गलत (✗) का चिह्न अंकित कीजिए

(क) सूर्य संसार को जीवन, ऊर्जा और प्रकाश प्रदान करता है।
(ख) घबरा कर भागने और क्षिप्र में अंतर है।
(ग) जो सही क्षण में सजग है, उसे घबराहट होती है।
(घ) माथापच्ची करने पर प्रगति होती है।
(ड़) बेवक्त जागेगा वह पीछे रह जायेगा।

प्रश्न 3 – (अ) उचित संबंध जोड़िए –

(1)	सूरज	–	गतिशील
(2)	पवन	–	तेज
(3)	पक्षी	–	वक्त गुजर जायेगा
(4)	क्षिप्र	–	ऊर्जा
(5)	बेवक्त	–	कलरव

(ब) उचित संबंध जोड़िए –

1. भई पवन	–	इसके कानों पर चिल्लाओं
2. भई सूरज	–	सही क्षण में सजग होकर चलना
3. भई पंछी	–	इस आदमी को हिलाओ
4. यह आदमी	–	इस आदमी को जगाओ
5 क्षिप्र गति	–	जो सोया पड़ा है

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 4 – कवि ने किसे जगाने का अनुरोध किया है?

प्रश्न 5 – कवि ने किस–किस से सोये हुए व्यक्ति को जगाने का अनुरोध किया है?

प्रश्न 6 – वक्त पर जागने और बेवक्त जागने में क्या फर्क बताया गया है?

प्रश्न 7 – 'इसे जगाओ' कविता का मूल संदेश अपने शब्दों में लिखिए?

प्रश्न 8 – भवानी प्रसाद मिश्र की भाषा पर प्रकाश डालिए?

प्रश्न 9 – कविता में आई 'जो सच से बेखवर, सपनों में खोया पड़ा है' पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

शब्दार्थ

पवन – हवा, वायु

बेखबर – अनजान

बेवक्त – असमय, अवसर बीत जाने पर

क्षिप्र – तेज

सजग – सावधान, जागा हुआ, चौकन्ना

उत्तर

उत्तर 1 –

(1) घ,
(2) ग,
(3) ख,
(4) ख,
(5) घ,
(6) क ।

उत्तर 2 –

(क) ✓
(ख) ✓
(ग) ✗
(घ) ✗
(ड) ✓

उत्तर 3 (अ) –

सुरज – ऊर्जा
पवन – गतिशील
पक्षी – कलरव
क्षिप्र – तेज
बेवक्त – वक्त गुजर जायेगा।

उत्तर 3 (ब) –

1. इस आदमी को हिलाओ
2. इस आदमी को जगाओ
3. इसके कानों पर चिल्लाओं
4. जो सोया पड़ा है
5 सही क्षण में सजग होकर चलना

पाठ–8

निबंध कैसे लिखें

निबंध लेखन –

निबंध गद्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। इस विधा के अन्तर्गत हम कोई घटित घटना, मन में उठनेवाले किसी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक विचार या मन में उठनेवाले किसी भाव को एक या अनेक अनुच्छेदों में लिखते हैं। अनिवार्यता इस बात की होती है कि किसी बात, घटना या विचार को अनुच्छेदों में सही क्रम में रखा जाय।

निबंध क्या है : – निबंध शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – नि + बंध। बंध का अर्थ है – बाँधना या बाँधा हुआ तथा इसमें लगे 'नि' उपसर्ग का अर्थ है अच्छी तरह या भली भाँति। अर्थात् निबंध का तात्पर्य है विचारों अथवा घटनाओं को सही क्रम देकर गुँथा जाये या बाँधा जाये।

निबंध लिखना क्यों आवश्यक है

किसी विषय पर अपने विचार को क्रम से, व्यवस्थित ढंग से लिखने पर लोग हमारी बातों को सहजता से समझ सकते हें। एवं हमारे विचारों से प्रभावित हो सकतें है। निबंध लिखने से हमें किसी विषय पर अपने विचारों को एकत्रित करने, क्रमबद्ध करने, उदहरण जुटाने और उन्हें प्रभावशाली भाषा में कहन–लिखने का अभ्यास होता है।

निबंध के प्रकार –

लिखनेवाले की मनः स्थिति और विषय के अनुसार अलग-अलग तरह के निबंध लिखे जा सकते हैं। इस प्रकार निबंध अनेक प्रकार के होते हैं। किन्तु विशेष रूप से निबंध तीन प्रकार के होते हैं –

(1) वर्णनात्मक निबंध
(2) विचारात्मक निबंध
(3) भावात्मक निबंध

वर्णनात्मक निबंध – वर्णनात्मक निबंध में किसी वस्तु, किसी घटना, किसी त्यौहार, किसी प्रदेश, किसी यात्रा, किसी दर्शनीय स्थल आदि का वर्णन कया जाता है। इसे लिखना अपेक्षाकृत सरल होता है क्योंकि ये सूचनात्मक होते हैं।

विचारात्मक निबंध – विचारात्मक निबंध मे बुद्धि तत्व की प्रधानता होती है। सामान्यतः यह किसी धार्मिक राजनीतिक, सामाजिक समस्या पर आधारित होता है। इसे लिखने के लिए चिन्तन की आवश्यकता होती है। इसमें अच्छे–बुरे पहलुओं पर विचार किया जाता है तथा समस्या को हल करने का सुझाव भी दिया जाता है।

भावात्मक निबंध – भावात्मक निबंध में कल्पना की प्रधनता होती है। इसमें हम विषय के प्रति अपनी भावात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इसमें तर्क की गुजांइश कम होती है भाव की तीव्रता होने के कारण इन निबंधों में एक प्रकार की आत्मीयता होती है।

निबंध के अंग –(1) भूमिका
(2) विषयवस्तु
(3) उपसंहार

भूमिका – भूमिका को सामान्य शब्दों में प्रस्तावना भी कहते हैं। प्रस्तावना रोचक होने पर पाठक के पढ़ने की जिज्ञासा बढ़ती है, इसलिए निबंध की शुरूआत किसी लेखक कवि, चिन्तक के कथन से प्रारंभ करना चाहिए अथवा हाल में घटी कसी घटना के उल्लेख से करना चाहिए। प्रस्तावना की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अंतिम पंक्ति तक पहुँचते–पहुँचते निबंध के मूल तथ्य का उल्लेख कर दिया जाना चाहिए।

उदाहरण के लिए भूमिका का एक नमूना यहाँ प्रस्तुत कया जा रहा है। "परहित सरिस धरम नहीं भाई'' विषय पर हम कुछ इस प्रकार प्रस्तावना लिख सकते हैं।

''मानव एवं पशु में आहार, निद्रा, भय आदि प्रवृत्तियाँ समान होती है। लेकिन भाव, विचार तथा वाणी की दृष्टि से वे पशुओं से अलग हैं। पशुओं को वाणी का वरदान नहीं मिला है जबकि मानव बोल सकता है। मावन में कई गुण ऐसे हैं जिससे अच्छे और बुरे मानव के रूप में उसकी पहचान होती है। सेवा, प्रेम, सद्भाव, परोपकार जैसे गुण अच्छे गुणों में शामिल हैं।''

विषयवस्तु – विषयवस्तु निबंध का केन्द्रीय भाग होता है, जिसका विस्तार किया जाता है। विषय के विभिन्न पक्षों का गहराई से विश्लेषण करके उसके पक्ष–विपक्ष में तर्क दिया जाता है। लाभ तथा हानि का भी उल्लेख किया जाता है। यह भी ध्यान दखना चाहिए कि कोई बात किसी पक्ष विशेष के लिए आपत्तिजनक न हो।

उपसंहार – उपसंहार पूरे निबंध का निचोड़ और निष्कर्ष होता है। भूमिका पाठक को निबंध पढ़ने के लिए आकर्षित करती है तो उपसंहार पढ़ने वालों पर निबंध का प्रभाव आथवा छाप छोड़ता है।

विषयवस्तु में जिन बिन्दुओं को उठाई जाती है, उन पर जो तर्क दिये जाते हैं, उनका निष्कर्ष और समाधान उपसंहार में दिया जाता है। प्रभावी उपसंहार उसे कहते है कि उसे पढ़ने के बाद निबंध अधूरा न लगे।

निबंध का नमूना – हमने निबंध के तीनों प्रमुख भागों पर चर्चा किया है। अब आपके सामने उदाहरण के रूप में एक निबंध को प्रस्तुत किया जाता हैं। ध्यान से पढ़ने पर आप समझ जायेगें कि निबंध कैसे लिखा जाना चाहिए

सबसे सुंदर देश हमारा

संपूर्ण भूमंडल में सैकड़ों देश हैं एक से बढ़ कर एक छोटे–बड़े, गर्म–ठंडे, धनी–निर्धन अनेक प्रकार के देश। पर सारे भूमंडल में शेर–सा सिर उठाए, अंगद के पाँव–सा अटल, सूरज–सा प्रखर, चाँद–सा उजला, बस एक ही देश है – मेरा देश, भारत देश। तभी तो प्रसिद्ध शायर इकबाल ने कहा है – 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।' तीन–तीन सागर रात–दिन इसके चरण पखारते हैं। अथाह सागर की लहरें एक पर एक आकर, इसके तटों पर सिर पटकती हैं, पर इसकी थाह नहीं पातीं। निराश लौट जाती हैं। प्रकृति ने इसे अपनी प्रियतम पहचान दी है, बर्फीला हिमालय इसे रूप देता है, सुंदरतम बनाता है। कश्मीर से उत्तर पूर्व के प्रांतों तक फैला हिमालय सदा धवल, सदा शीतल, ऐसा है इसका मुकुट।

गंगा–यमुना इसके गले का हार है। नर्मदा, ताप्ती, महानदी, कृष्णा, कावेरी इसकी धमनियाँ हैं, इसका जीवन है। विंध्य–सतपुड़ा इसके कमरबंद है। अरावली श्रृंखला इसकी धूसर अलकें हैं। ऐसा सुंदर–सलोना मोहक है इसका रूप। तभी तो देवता भी मेरे देश में जन्म लेना चाहते हैं। मेरे देश की धरती सतरंगी है। कहीं हरेभरे खेत, कहीं–कहीं सूरजमुखी का पीलापन, तो कहीं टेसू की लालिमा और कहीं गेहूँ–धान के रंग

बदलते खेत। केरल के ताड़, नारियल, काजू, कहवा के बगीचे, सतपुडा के घने वन, कश्मीर की केसर की क्यारियाँ, असम के चाय बाग, सब मिलाकर मेरे देश के सौंदर्य को हजार गुना कर देते हैं।

मेरे देश वासियों की वेशभूषा देखिए – रंगीले राजस्थान की ओढ़नी, गुजराती पाग, पंजाबी सलवार–कुरता, हरियाणा की घाघरी, बनारसी साड़ियाँ, कश्मीरी फिरन, हर प्रांत का कोई न कोई विशेष पहनावा। इतना सुंदर, इतना मोहक कि विदेशी पर्यटक देखते ही रह जाते हैं।

तीज–त्यौहार हों या मेले–उत्सव हों, मरे देशवासियों के कंठों से लोकगीतों की लहरें फूटकर सारे वायुमंडल को गूँजा देती हैं। नाचते पैरों की थिरकन तो बस देखते ही बनती है। साथ में इतने विविध वाद्य कि बस पूछिए मत!

विशेषताएँ तो और भी हैं मेरे देश में। इतने बड़े देश के सौंदर्य को भला शब्दों में कैसे बाँधा जा सकता है। अनेक कवियों ने, लेखकों ने इसकी प्रशंसा में बहुत कुछ लिखा है, पर इसके सौंदर्य का संपूर्ण वर्णन कोई नहीं कर सका। नित बदलते सौंदर्य का सम्पूर्ण वर्णन भला कैसे हो सकता है। हर भोर इस देश में नया रंग भरती है, हर शाम इसे नया रूप देती है। हम तो बस इतना ही कह सकते हैं – सबसे सुंदर, सबसे प्यारा, देश हमारा।

000

निबंध लेखन के पूर्व की तैयारी :

निबंध लेखन प्रारंभ करने के पूर्व विद्यार्थियों को कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

विषय का चुनाव : प्रश्न पत्र में प्रायः चार या पाँच विषय दिये होतें हैं, जिनमें से किसी एक पर निबंध लिखना होता है। आपको उसी विषय का चयन करना चाहिए जिसके संबंध में आपको अच्छी जानकारी हो, जिस पर आपके स्वयं के विचार और धारणायें भी हों। यदि आपको लगे कि आप एक से अधिक विषय में, किसी पर भी अच्छा निबंध लिख सकते हैं तो केवल उस विषय को चुनिये जिसके बारें में आपको लगे कि उस पर कम विद्यार्थी लिखेंगे।

रूपरेखा निमार्ण : विषय चुनने के बाद भूमिका, विषय और उपसंहार में आप क्या देना चाहेंगे, इसका निर्धारण कर लेना चाहिए, इससे निबंध लिखने में सुविधा होगी। जैसे – "महासागर का जीवन'', विषय चुनने पर रूपरेखा कुछ इस प्रकार हो सकती है –

भूमिका :– अ नगर और महानगर, किसे कहते हैं

अ महानगरों की विशेषताएँ, मेरा महानगर, इसकी वशेषताएँ

विषय वस्तु वर्णन –

महानगर में भीड़भाड़
आवास की समस्या
निवास और कार्यस्थल की दूरी, यातायात की समस्या
व्यस्तता और समय का अभाव
तड़क–भड़क, शान–शौकत और गरीबी
प्रदूषण – ध्वनि, वायु, जल और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ
बड़े–बड़े अस्पताल फिर भी चिकित्सा साधनों की अपर्याप्तता

आसपास ढेरों लोग होते हुए भी आपसी परिचय का अभाव
सुख सुविधाएँ, रोजगार की संभावना
देश–विदेश से संपर्क

उपसंहार

बुराइयाँ भी, अच्छाईयाँ भी
उद्योग–धंधों के कारण विवशता
कुछ सुझाव

कुछ महत्वपूर्ण विषय जिस पर आपको रूपरेखा तैयार करना है, जो कक्षा दसवीं के छात्रों के लिए परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं –

पर्यावरण प्रदूषण
श्रम का महत्व
छात्रजीवन में अनुशासन का महत्व
किसी मैच का आँखों देखा वर्णन
भारतीय किसान
विज्ञान – वरदान या अभिशाप
दूरदर्शन – वरदान या अभिशाप
कोई राष्ट्रीय पर्व
शिक्षित बेरोजगारी
कम्प्यूटर – आज की आवश्यकता

व्याकरण

शब्द–शक्ति

'शब्द' भाषा की आधारभूत इकाई है, और कोई 'शब्द', शब्द तब कहलाता है, जब उसका एक निश्चित अर्थ हो। 'शब्द–शक्ति' में दो शब्द हैं – शब्द और शक्ति, जिसका अर्थ है – 'शब्द की शक्ति'। शब्द और अर्थ अभिन्न हैं। 'शब्द–शक्ति' में शब्द में निहित इसी शक्ति यानी छिपे हुए अर्थ की शक्ति पर विचार किया जाता है।

शब्द–शक्ति की परिभाषा – शब्दों के अर्थों का बोध करानेवाले व्यापार को शब्द शक्ति कहते हैं।

शब्द शक्ति के प्रकार – अर्थबोध पाने की मुख्यतः तीन विधियाँ हो सकती हैं। इन्हीं के आधार पर शब्द शक्ति के तीन भेद माने गये हैं।

(1) अभिधा – जो वाच्यार्थ पर आधारित है।
(2) लक्षणा – जो लक्ष्यार्थ पर आधारित है।
(3) व्यंजना – जो व्यंग्यार्थ पर आधारित है।

1. अभिधा शब्द शक्ति

परिभाषा – "जिस शब्द शक्ति द्वारा मुख्य अर्थ का प्रत्यक्ष बोध होता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं।"

मुख्य अर्थ का तात्पर्य है लोक में प्रचलित, शब्द कोष में दिये गये या व्याकरण द्वारा समर्थित अर्थ से है। जैसे – 'नर' का अर्थ पुरूष है, यही अर्थ शब्द कोष में दिया है और यही लोक में प्रसिद्ध है। परन्तु कभी–कभी एक शब्द के एक से अनेक अर्थ भी शब्द कोष में दियें होते हैं और लोक में प्रचलित होते हैं, तब उनमें से कौन सा अर्थ ग्रहण किया जाय, यह उसके प्रसंग पर निर्भर करता है, जैसे –

(1) कविता सुनने में रस आ गया।

(2) उसे मधुर रस प्रिय है।

रस के अनेक अर्थ होने के कारण पहले वाक्य मे 'रस' का अर्थ आनन्द है, तथा दूसरे वाक्य में रस का अर्थ स्वाद (खट्टा, मीठा, नमकीन, आदि) है।

एक अन्य उदाहरण :–

कनक–कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
या खाये बौराए जग, वा पाये बौराय।।

यहाँ 'कनक' शब्द के दो अर्थ 'धतुरा' और 'सोना' है जो प्रसंगानुसार ग्रहण किये गये हैं।

2. लक्षणा शब्द–शक्ति

परिभाषा – "मुख्य अर्थ के बाधा होने पर प्रयोजन के आधार पर जिस शक्ति के द्वारा अभिधेयार्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ का बोध होता है, उसे लक्षणा शब्द–शक्ति कहते है।"

जैसे – 1. रानी कमलमुखी है।

2. सुरेश तो गधा है।

रानी के मुख को 'कमल' कहने में और सुरेश को 'गधा' बताने में मुख्य अर्थ ग्रहण करना संभव नही है। तब हम 'कमल' की कमनीयता, कोमलता, तथा 'गधा' की मूर्खता का विचार करके वास्तविक बात को लक्ष्यार्थ से सम्बन्धित कर समझ लेते हैं कि रानी 'कमल' जैसे आकर्षक कमनीय मुखवाली है और सुरेश 'गधे' के समान मूर्ख व्यक्ति है।

अन्य उदाहरण – (1) राम की बात सुनकर श्याम चौकन्ना हो गया।

चौकन्ना का शाब्दिक अर्थ है चार कानों वाला किन्तु श्याम चार कानों वाला नहीं हो सकता अर्थात् यहाँ चौकन्ना का लक्ष्यार्थ है 'सावधान' होना।

(2) उदित उदय गिरी मंच पर, रघवुर बाल पतंग।
विकसे संत सरोज सब, हरसे लोचन–मृंग।।

सूर्य के उदित होने पर कमल खिल जाते हैं और भौंरे प्रसन्न हो जाते हैं, वैसे ही ऋषि–मुनि राम को मंच पर देखने से प्रसन्न हो गये और उनके नेत्रों से प्रसन्नता झलकने लगी। इस प्रकार पतंग का लक्ष्यार्थ रामचन्द्र (सूर्य) से है।

3. व्यंजना शब्द–शक्ति

परिभाषा – "शब्द के जिस व्यापार से उसके मुख्य अर्थ और लक्ष्य अर्थ से भिन्न किसी अन्य विशेष अर्थ का बोध होता है, उसे व्यंजना शब्द–शक्ति कहते हैं।"

इस प्रकार व्यंजना में अभिष्ठ अर्थव्यंग्यार्थ या 'गूढ़ार्थ' होता है, जिसे सहृदय जन अनुभव कर लेते हैं।

उदारण –

(1) यदि किसी दुष्ट जन को देखकर यह कहा जाये – 'आइये महात्मा! आपका स्वागत है', तो इसमें निहित व्यंग्य (छिपा हुआ अर्थ) होगा अरे दुष्ट! तुम यहाँ क्यों आये हो?

(2) यदि किसी व्यक्ति को देखकर यह कहा जाये कि – 'कहो पहलवान! मार लिये मैदान?' तो इसमें निहित व्यंग्य (छिपा हुआ अर्थ) होगा – 'अरे कमजोर! यह तेरे वश की बात नहीं है।'

चतुर्थ इकाई

पद्य

वीरांगना – केदारनाथ अग्रवाल

गद्य

लघुकथाएँ – चितरंजन 'भारती' एवं विष्णु प्रभाकर

व्याकरण (काव्य के तत्व)

छंद – दोहा, सोरठा, चौपाई, गीतिका, हरिगीतिका

पाठ–9

वीरांगना

केदारनाथ अग्रवाल

कवि परिचय –

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म बांदा जिले के कमासिन गाँव में हुआ था। आप पेशे से वकील थे। प्रगतिवाद और छायावाद का आप पर विशेष प्रभाव था। आप प्रगतिवादी और छायावादी कविता के शीर्षस्थ कवि हैं।

रचनाएँ – 'युग में गंगा,' 'नींद के बादल', 'लोक और आलोक', 'फूल नहीं रंग बोलते हैं,' 'आग का आइना', पंख और पतवार आदि। आपके निबंध संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं।

भाव पक्ष – शोषण के खिलाफ जंग, नारी के प्रति सम्मान और राष्ट्र चेतना आपकी कविताओं की विशेषताएँ हैं।

कलापक्ष – सामान्य बोलचाल की प्रचलित भाषाओं को आप सहजता से प्रयोग करते हैं। भावों की अभिव्यक्ति में चित्रात्मकता आपकी विशेषता है। 'गागर में सागर' भरना कोई आप से सीखे।

साहित्य में स्थान – आप हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य कवि हैं। आपको साहित्य अकादमी तथा सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

वीरांगना

केन्द्रीय भाव – समाज में नारी की महती भूमिका की ओर कवि ने इंगित किया है। इस कविता में नारी की भूमिका, दृढ़ता तथा सहनशक्ति का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। दृढ़ता की परिचायक नारी लोहे जैसी सख्त है। कष्ट उठानेवाली, कठिनाइयों को झेलनेवाली नारी का जीवन किसी भठ्ठी की तपन से कम नही है। लोहा तपकर पिघलता है। नारी का पिघलना, नारी की दया, करूणा तथा सहानुभूति का परिचायक है। सशक्त ,कठोर, तपने और गलनेवाली नारी परिस्थिति अनुसार जब आवश्यकता पड़ती है तो हथियार भी उठा लेती है, और तब वह दुश्मनों के लिए रणचण्डी से कम नहीं होती।

वीरांगना

मैंने उसको
जब–जब देखा
लोहा देखा
लोहे जैसा
तपते देखा
गलते देखा
ढलते देखा
मैंने उसको
गोली जैसा
चलते देखा।

000

– केदारनाथ अग्रवाल

पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1 दिये गये विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(1) कविता में 'मैंने उसको' किसे कहा गया है?
(क) पत्नी को (ख) पति को (ग) नारी को (घ) पुरूष को

(2) कवि ने नारी को निम्नलिखित में से किस रूप में नहीं देखा?
(क) लोहा (ख) गोली (ग) वीरांगना (घ) बंदूक

(3) 'गोली जैसा चलते देखा' का आशय है –
(क) आत्मरक्षा में गोली चलाना
(ख) दूसरों की रक्षा के लिए हमला करना
(ग) सम्मान की रक्षा के लिए आक्रामक होना
(घ) नाम कमाने के लिए गोली–सा होना

(4) ''तपते देखा, गलते देखा'' में गलने का क्या आशय है?
(क) लोहे की तरह पिघल जाना
(ख) मोम की तरह पिघल जाना
(ग) पुरूष का कष्ट सहना
(घ) नारी के मन की करूणा, दया, सहानुभूति

प्रश्न 2 उचित सबंध जाड़िए–

(1) वीरांगना – नारी की दृध्ता
(2) उसको से तात्पर्य – केदारनाथ अग्रवाल
(3) लोहा देखा – नारी

प्रश्न 3 निम्न लिखित पर (✓) अथवा गलत (✗) का निशान लगाइए–

(1) नारी के स्वभाव की तुलना लोहे से की गयी है।
(2) मोम के समान ही नारी कपतों और कठिनाईयों से तपकर पिघलती है।
(3) समय पड़ने पर नारी गोली के समान चल भी सकती है।

प्रश्न 4 नारी के संदर्भ में 'लोहे जैसा तपना' क्या है ?
प्रश्न 5 नारी की तुलना लोहे से क्यों की गयी है ?
प्रश्न 6 नारी लोहे के समान कैसे ढलती है ?
प्रश्न 7 नारी गोली के समान चलने को कत्व विवश होती है ?

उत्तर

(1) ग
(2) घ
(3) ग
(4) घ

योग्यता विस्तार –

नारियों की महानता तथा उसके चरित्र की दृढ़ता से संबंधित पद पहले भी लिखे जाते रहे हैं। ऋग्वेद में स्त्री को परिवार की स्वाभिमानी महारानी कहा गया है –

सम्राज्ञी श्वसुरे भव सम्राज्ञी श्वश्रुवां भव।
ननान्दरी सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु।।

अर्यात् (घर मे) सास, श्वसुर, ननंद, देवर आदि सबकी सम्राज्ञी बनो।

मनुस्मृति में नारी की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यतैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

अर्थात् ''जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवताओं का निवास होता है, जहाँ इनका आदर नहीं होता अथवा अपमान होता है, वहाँ सारे धर्म–कर्म निष्फल हो जाते हैं।''

शास्त्रकार ने भार्या को छः प्रकार से पुरुष के लिए हितसाधक बतलाया है –

कार्येषु मंत्री, कर्णेषु दासी, भोज्येषु माता, रमणेषु रम्भा ।
धर्मानुकूला क्षमया धरित्री, भार्या च षड्गुणवती च दुर्लभा।

अर्थात् ''कार्य (परामर्श) में मंत्री के समान, दासी के समान कार्य करनेवाली, भोजन कराने में माता के समान पथ्य देनेवाली, आनन्दोपभोग के लिए रम्भा के समान, धर्म अनुकूल आचरण करनेवाली और क्षमा को धारण करने में पृथ्वी के समान क्षमाशील ऐसे छः गुणों से युक्त स्त्री सचमुच एक दुर्लभ रत्न है।

दार्शनिक अरस्तु ने कहा था कि – 'नारी की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति आधारित है।' स्वतंत्रता संग्राम के मध्य नारीयों के योगदान को देखकर महात्मा गाँधी ने कहा था कि – 'नारी को अबला कहना उसका अपमान करना है।'

जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' में लिखा है –

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग–पग–तल में।
पीयुष श्रोत–सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।।

अर्थात – ''हे नारी! तुम (गंगा के समान) श्रद्धा स्वरूप हो। जिस प्रकार गंगा हिमालय से निकलकर आपनी अमृततुल्य धारा से मानव समाज का कल्याण करती है उसी तरह तुम भी पुरूष के जीवन को सुंदर बनाने के लिए उसके विश्वास रूपी हिमालय से निकलकर अमृतस्रोत के समान बहा करो।'

वैदिककाल से आजतक हमारे देश में अनेक महान् नारियाँ हुई हैं। अपने आसपास आपने भी कुछ दृढ़ स्वभाववाली कर्मठ नारियों को देखा होगा। ऐसे ही कुछ नरियों की सूची बनाइए।

अपने घर–परिवार में माँ, दादी, चाची, बुआ, बहन आदि में से आप किसके गुणों से अधिक प्रभावित है? इनके बारे में एक टिप्पणी लिखिए।

पाठ–10

लघु कथाएँ

लघु कथा क्या है?

लघु का अर्थ होता है, छोटा और कथा का अर्थ होता है, कहानी। इससे स्पष्ट है कि लघुकथा अर्थात् छोटी कहानी।

लघु कथा की विशेषताएँ :–

1. लघु कथा में पात्रों की संख्या सीमित होती है।
2. लघु कथा प्रायः एक ही घटना या चरित्र को लेकर लिखी जाती है।
3. इसकी भाषा सरल और चुटीली होती है।
4. इसमें छिपे व्यंग्य अथवा तथ्य के पीछे कोई न कोई सीख होती है।
5. इसमें नैतिकमूल्य प्रधान होता है जो निष्कर्ष रूप में उभरकर आता है।
6. इसका निष्कर्ष शिक्षाप्रद होता है।

आइये अब हम दो लघु कथाएँ पढ़ें :–

1. अच्छा कौन?

एक रेल में चार यात्री यात्रा कर रहे थे। उनमें एक बंगाली , एक तमिल, एक ऐंग्लो–इंडियन तथा एक हिन्दी–भाषी क्षेत्र का था। वे लोग अपनी–अपनी भाषा पर बात कर रहे थे।

बंगाली महोदय बोले, 'बांग्ला सबसे मीठी भाषा है। इसने भारतीय साहित्य को अत्यंत उच्चकोटि के साहित्य से समृद्ध किया है।'

तमिल–भाषी महोदय बोले, 'तमिल भाषा बहुत प्राचीन है। इसका साहित्य बहुत उच्चकोटि का है। इसका प्रादुर्भाव तब हुआ था जब आर्य भाषा निम्न स्तर पर थी।'

ऐंग्लो–इंडियन महोदय भला कैसे चुप रहते, वह बोले, 'अंग्रेजी सबसे अच्छी, सबसे सरल भाषा है। यह लगभग पूरे विश्व में बोली जाती है। इसका साहित्य अत्यंत समृद्ध है। इसका दूसरी भाषाओं से क्या मुकाबला?'

अब चौथे यात्री की बारी थी। वे किसी हिन्दी–भाषी क्षेत्र के ग्रामीण रहे होंगे, बोले, 'आप लोगों की बातें सही हैं, मगर आप लोग हिन्दी में क्यों बातें कर रहे हैं?'

बाकी तीनों एक–दूसरे का मुँह देखने लगे।

– चितरंजन 'भारती'

2. फर्क

उस दिन उसके मन में इच्छा हुई कि भारत और पाक के बीच की सीमा–रेखा को देखा जाए जो कभी एक देश था, वह अब दो होकर कैसा लगता है। दोनों एक–दूसरे के प्रति शंकालु थे। दोंनो ओर पहरा था। बीच में कुछ

भूमि होती है जिस पर किसी का अधिकार नहीं होता। दोंनो उस पर खड़े हो सकते हैं। वह वहीं खड़ा था, लेकिन अकेला नहीं था – पत्नी थी और थे अठारह सशस्त्र सैनिक और उनका कमांडर भी। दूसरे देश के सैनिकों के सामने वे उसे अकेला कैसे छोड सकते थे।

इतना ही नहीं, कमांडर ने उसके कान में कहा, 'उधर के सैनिक आपको चाय के लिए बुला सकते हैं, जाइएगा नहीं। पता नहीं क्या हो जाए? आपकी पत्नी साथ में है और फिर कल हमने उनके छह तस्कर मार डाले थे।'

उसने उत्तर दिया, 'जी नहीं, मैं उधर कैसे जा सकता हूँ?'

और मन ही मन कहा, मुझे आप इतना मूर्ख कैसे समझते हैं? मैं इंसान हूँ, अपने–पराये में भेद करना मैं जानता हूँ। इतना विवेक मुझमें है।

वह यह सब सोच ही रहा था कि सचमुच उधर के सैनिक वहाँ आ पहुँचे। रोबीले पठान थे। बडे तपाक से हाथ मिलाया। उस दिन ईद थी। उसने उन्हें मुबारकबाद दी। बड़ी गरमजोशी के साथ एक बार फिर हाथ मिलाकर वे बोले, 'इधर तशरीफ लाइए। हम लोगों के साथ एक प्याला चाय पीजिए।

इसका उत्तर उसके पास तैयार था। अत्यंत विनम्रता से मुस्कराकर उसने कहा, 'बहुत–बहुत शुक्रिया। बड़ी खुशी होती आपके साथ बैठकर, लेकिन मुझे आज ही वापस लौटना है और वक्त बहुत कम है। आज तो माफी चाहता हूँ।'

इसी प्रकार शिष्टाचार की कुछ और बातें हुई कि पाकिस्तान की ओर से कुलांचे भरता हुआ बकरियों का एक दल उसके पास से गुजरा और भारत की सीमा में दाखिल हो गया। एक साथ सबने उनकी ओर देखा। एक क्षण बाद उसने पूछा, 'ये आपकी हैं?'

उनमें एक सैनिक ने गहरी मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया, 'जी! हाँ जनाब, हमारी हैं। जानवर हैं फर्क करना नहीं जानते।'

–विष्णु प्रभाकर

शिक्षाप्रद निष्कर्ष

''अच्छा कौन'' का निष्कर्ष है कि सभी भाषाएँ अच्छी होती हैं। हिन्दी भाषा इतनी व्यापक और प्रभावशाली है कि भारत में जब–जब अलग–अलग भाषा बोलनेवाले मिलते हैं तो वे हिंदी में ही बातचीत करते हैं। क्योंकि इसे भारत का हर भाषा–भाषी समझ सकता है अर्थात हिंदी भारत के सभी भागों में बोली जाती है।

''फर्क'' कथा से निष्कर्ष निकलता है कि मनुष्य, मनुष्य में फर्क करता है, जानवर नहीं अर्थात् वे सब मिलजुल कर रहते हैं। हमें जानवरों से यह गुण सीखना चाहिए।

पाठगत प्रश्न

(1) दिये गये विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

(1) भारत में जब दो से अधिक प्रदेशों के लोग आपस में मिलते हैं, तो वे किस भाषा में बातचीत करते हैं?

(क) तमिल (ख) हिन्दी (ग) बांग्ला (ध) अंग्रेजी

(2) ऐंग्लोइंडियन के अनुसार अंग्रेजी भाषा अच्छी हैं, क्योंकि उसे

(क) अंग्रेज और अमेरिकन बोलते हैं।
(ख) कई देशों में पढ़ाई जाती है।
(ग) ऐंग्लोइंडियन बोलते हैं।
(घ) विश्व के अधिकतर देशों में बोली जाती है।

(3) ग्रामीण ने यह सिद्ध कर दिया कि हिन्दी श्रेष्ठ भाषा हैं, क्योंकि वह –
(क) उसकी अपनी भाषा है (ख) राजभाषा है
(ग) हमारी संपर्क भाषा है (घ) सरल भाषा है

(4) दो देशों की सीमाओं के बीच खाली पड़ी भूमि पर –
(क) दोनों देशों का अधिकार होता है।
(ख) दोनों देशों के लोग जा सकते हैं।
(ग) किसी भी देश का आदमी नहीं जा सकता।
(घ) टैंक खड़े किये जाते हैं।

(5) इतना विवेक मुझमें है, लेखक ने ऐसा क्यों सोचा?
(क) वह उनके साथ चाय पी सकता है।
(ख) वह उन्हें ईद मुबारक कह सकता है।
(ग) वह अपने पराये में भेद कर सकता है।
(घ) वह सैनिकों से नहीं डरता।

प्रश्न 2 निम्नलिखित कथनों पर सही (✓) अथवा गलत का (✗) निशान लगाइए –

(1) बांग्ला सबसे प्राचीन भाषा है।
(2) लेखक अपने–पराये में फर्क करना जानता था।
(3) जानवर फर्क करना जानते हैं।
(4) सब लोग हिन्दी में ही बात कर रहे थे।
(5) आप उधर जाकर लंच कर सकते हैं।
(6) कल हमने उनके छः तस्कर मार डाले थे।
(7) दोनों ओर के लोग एक दूसरे के प्रति शंकालु थे।
(8) मैं अपने पराये में भेद करना नहीं जानता हूँ।
(9) पहले भारत में बांगला देश और पाकिस्तान भी शामिल थे।
(10) मनुष्य भेदभाव करता है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित अनेक शब्दों (वाक्यांशों) के लिए एक शब्द लिखिए –

(अ) भारत में जन्मा, परंतु उसके माता–पिता में से कोई एक अंग्रेज हो –
(ब) गाँव का रहनेवाला –
(स) हिन्दी भाषा बोलनेवाला –
(द) चोरी के माल का व्यापारी –
(इ) सभ्यतापूर्वक किया गया आचार–व्यवहार –

प्रश्न 4 बांग्लाभाषी यात्री ने बांग्ला भाषा की क्या–क्या विशेषताएँ बताई हैं?
प्रश्न 5 तमिलभाषी यात्री ने तमिल भाषा की क्या–क्या विशेषताएँ बताई हैं?
प्रश्न 6 भारत में जब अलग–अलग भाषाओं के बोलने वाले आपस में मिलते हैं तो वे किस भाषा में बात करते हैं और क्यों ?
प्रश्न 7 भारत का बँटवारा हो जाने के बाद हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लोग एक–दूसरे पर शक क्यों करते हैं?
प्रश्न 8 'जानवर हैं, फर्क करना नहीं जानते ' कहकर जानवर और मनुष्य में क्या अन्तर बताया गया है?
प्रश्न 9 ''अच्छा कौन'' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए –
प्रश्न 10 ''फर्क कहानी '' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए–

योग्यता विस्तार

योजक चिह्न (Hyphen) **(–) :–**

भाषा में विराम चिह्नों का विशेष महत्व होता है। इनके भी अपने अर्थ होते हैं। ये किसी पद या कथन के अर्थ–अभिव्यक्ति को निर्देशित करते हैं। योजक चिह्न भी एक तरह का विराम चिह्न है। इस पाठ में आये निम्न शब्दयुग्मों को देखिए। इनमें योजक चिह्नों का प्रयोग हुआ है –

सीमा–रेखा, एक–दूसरे, अपने–पराय, बहुत–बहुत, जब–जब अलग–अलग, भाषा–भाषी

योजक चिह्न की आवश्यकता क्यों?

1. योजक चिह्न से शब्दों का अर्थ स्पष्ट होता है, जैसे –
'कु–शासन' का अर्थ है बुरा शासन तथा 'कुशासन' का अर्थ है, कुश से बना आसन।
2. इससे शब्दों के उच्चारण तथा वर्तनी का अंतर स्पष्ट होता है, जैसे –
'उप–माता' – सौतेली माँ। तथा 'उपमाता' – उपमा देने वाला।

उदाहरणों से स्पष्ट है कि शब्द निर्माण में योजक चिह्नों का अपना महत्व है। इसके प्रयोग के कुछ महत्वपूर्ण नियम इस प्रकार हैं –

1. दो प्रधान पदों के मध्य जहाँ 'और' लुप्त हो, जैसे –
दाल–रोटी, राम–सीता, माता–पिता, अमीर–गरीब, भूखा–प्यासा, आदि।
2. द्वन्द्वसमास के पदों के मध्य –
मान–मर्यादा, रूपया–पैसा, चाल–चलन, आदि।
3. दो शुद्ध संयुक्त क्रियाओं के बीच, जैसे –
मारना–पीटना, उठना–बैठना, खाना–पीना, आदि।
4. शब्दयुग्म, जहाँ दूसरा शब्द निरर्थक हो, जैसे –
अनाप–शनाप, खाना–वाना, आदि।
5. दो शब्दों के बीच जहाँ सम्बधकारक – के, का, और की लुप्त हो, जैसे –
शब्द–सागर, मानव–शरीर, लेखन–कला, आदि।
6. गुणवाचक विशेषण के साथ 'सा'' का प्रयोग होने पर, जैसे –
बड़ा–सा पेड़, चांद–सा मुखड़ा, सागर–सा विशाल, आदि।
7. पँक्ति के अंत में स्थानाभाव के कारण शब्दों की अपूर्णता की स्थिति में।

शब्दार्थ

ऐंग्लो–इंडियन – भारत में जन्मा या यहाँ रहनेवाला जिसके पूर्वजों में एक यूरोपियन हो
हिन्दी–भाषी – हिन्दी बोलनेवाला
उच्चकोटि – श्रेष्ठ , ऊँच्च श्रेणी
प्रादुर्भाव– उत्पत्ति, प्रकट होना
अत्यंत – बहुत अधिक
पाक – पाकिस्तान
सीमारेखा –दो प्रदेशों, क्षेत्रों या देशों को बाँटनेवाली रेखा
शंकालु – शक करनेवाला
सशस्त्र – हथियारो के साथ, हथियारबंद
तस्कर – चोरी से सामान लानेवाला
विवेक – ज्ञान, भले–बुरे की पहचान
पठान – एक जाति
तपाक – झट से, एकदम
गरमजोशी – गहरा प्यार
तशरीफ लाइए – आइए, पधारिये
शुक्रिया – धन्यवाद
शिष्टाचार – अच्छा व्यहार, सभ्य आचरण
कुलांचे भरता – कूदता–दौड़ता हुआ

उत्तर

(1) ख
(2) घ
(3) ग
(4) ख
(5) ग

(1) ✗
(2) ✓
(3) ✗
4) ✓
(5) ✗
(6) ✓
(7) ✓
(8) ✗
(9) ✓
(10) ✓

एंग्लों इण्डियन
ग्रामीण
हिन्दी–भाषी
तस्कर
शिष्टाचार

व्याकरण

छंद

परिभाषा – अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रा–गणना तथा यति–गति से संबद्ध विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्यरचना 'छंद' कहलाती है। छंद वस्तुतः कविता की सहज गति के नियमबद्ध रूप हैं, जिसमें वर्ण, मात्रा, यति, तुक, पाद आदि का पूर्ण ध्यान रखा गया हो।

हम कह सकते हैं कि छंद वह रचना होती है जिसमें निम्नलिखित अंग होते हैं –

(1) पाद या चरण,
(2) मात्रा और वर्ण,
(3) मात्राओं की गणना अर्थात् लघु और गुरू,
(4) संख्या और क्रम, (वर्णों और मात्राओं के निश्चित क्रम अर्थात् गण, होते हैं)
(5) लय (यति),
(6) गति
(7) तुक

1. पाद या चरण –

प्रायः छंद के चतुर्थ भाग को पाद या चरण कहते हैं; अर्थात छंद के चार चरण होते हैं। प्रथम और तृतीय को विषम तथा द्वितीय और चतुर्थ को सम चरण कहते हैं, जैसे –

श्री गुरु चरण सरोज रज,	प्रथम चरण
निज मन–मुकुर सुधार।	द्वितीय चरण
बरनौ रघुवर विमल जस,	तृतीय चरण
जो दायक फल चार ।।	चतुर्थ चरण

कुण्डलिया और छप्पय छंदों में छः चरण होते हैं। ये दो प्रकार के छंदों से मिलकर बनते हैं। इन्हें संयुक्त छंद कहा जाता है।

2. मात्रा और वर्ण –

मात्राएँ स्वर की होती हैं। स्वर दो प्रकार के होते हैं – ह्रस्व स्वर और दीर्घ स्वर। दीर्घ स्वर वाले वर्णों के उच्चारण में ह्रस्व से दो गुना समय लगता है। ह्रस्व स्वर की मात्रा को लघु और दीर्घ स्वर की मात्रा को गुरू कहते हैं। गणना में लघु का चिह्न 'I' तथा गुरू का चिह्न 'S' माना गया है। लघु के लिए एक तथा दीर्घ के लिए दो अंक निर्धारित हैं। स्वर की ही मात्राएँ गिनी जाती हैं व्यंजन की नहीं। 'स्थ्य' में तीन व्यंजन हैं परन्तु स्वर एक ही है – 'अ'; अतः इसकी मात्रा एक होगी।

अक्षर को वर्ण कहते हैं। मात्रा के अनुसार ये भी ह्रस्व और दीर्घ होते हैं परन्तु गणना में ह्रस्व और दीर्घ दोनों को 'एक' गिना जाता है।

उदाहरण – 'पानी' में दो वर्ण तथा चार मात्राएँ हैं।

3. लघु और गुरू के नियम :–

ह्रस्व स्वर – अ, इ, उ तथा चन्द्र बिन्दु ँ वाले ह्रस्व स्वर लघु माने जाते हैं, जैसे – हँ लघु है।
दीर्घ स्वर – आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ तथा औ
अनुस्वार (ं) युक्त वर्ण, जैसे – संसार में सं गुरू है।
विसर्गयुक्त वर्ण, जैसे – दुःख में दुः गुरू है।
संयुक्त वर्ण के पूर्व का लघु भी गुरू माना जाता है, जैसे – सत्य में स गुरू है।

छंद के सम तथा विषम चरणों में मात्राओं की गणना करना –

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन–मुकुर सुधार।
बरनौ रघुवर विमल जस, जो दायक फल चार ।।

पाद या चरण	सम/विषम	मात्राओं की संख्या
s ।। ।।। ।S। ।। श्री गुरु चरण सरोज रज,	विषम	13
।। ।। ।।। ।S। निज मन मुकुर सुधार।	सम	11
।।S ।।।। ।।। ।। बरनौ रघुवर विमल जस,	विषम	13
S S।। ।। S। जो दायक फल चार ।।	सम	11

4. संख्या, क्रम और गण –

मात्राओं और वर्णों की गणना को संख्या कहते है।

लघु–गुरू के स्थाननिर्धारण को क्रम कहते हैं। मात्राओं और वर्णों की संख्या और क्रम की सुविधा के लिए तीन–तीन वर्णों का समूह बनाया गया है जिसे गण कहते हैं। गणों की संख्या आठ है, इसे याद रखने के लिए 'यमाताराजभानसलगा' सूत्र का उपयोग किया जाता है। गण निम्नानुसार है –

गण	वर्णक्रम :– आदि–मध्य–अंत	चिह्न	सूत्र के अनुसार उदाहरण
यगण	लघु–गुरू–गुरू	ISS	यमाता
मगण	गुरू–गुरू–गुरू	SSS	मातारा
तगण	गुरू–गुरू–लघु	SSI	ताराज
रगण	गुरू–लघु–गुरू	SIS	राजभा
जगण	लघु–गुरू–लघु	ISI	जभान
भगण	गुरू–लघु– लघु	SII	भानस
नगण	लघु–लघु–लघु	III	नसल
सगण	लघु–लघु–गुरू	IIS	सलगा

लय (यति), गति और तुक :–

5. लय (यति) :– छंद शास्त्र में ' यति' का अर्थ विराम या विश्राम है। सामान्यतः प्रत्येक चरण के अंत में यति होता है। कभी–कभी चरण के मध्य में भी यतियाँ होती हैं।

6. गति :– गति छंद को संगीत से जोड़ता है। 'गति' का अर्थ लय व प्रवाह है इसका कोई विशेष नियम नहीं है।

7. तुक :– 'तुक' का अर्थ चरण के अंत में वर्णों की आवृत्ति है। संस्कृत में सामान्यतः तुक का अधिक महत्व नहीं है परन्तु हिन्दी में तुक छंद की आत्मा की तरह है। पाँच मात्राओं के तुक को श्रेष्ठ माना गया है।

–: छंद के प्रकार :–

वर्ण और मात्रा के अनुसार

1. वर्णिक छंद – केवल वर्ण गणना के आधार पर रचित छंद।
2. वर्णिक–वृत्त छंद – चार चरण वाले छंद जिसके प्रत्येक चरण में गणों की संख्या, प्रकार और क्रम एक समान हो।
3. मात्रिक छंद – मात्रा की गणना पर आधारित छंद।
4. मुक्त छंद – मात्रा, वर्ण अथवा चरणों की अनियमितता वाले छंद। इसमें विचार, भाव और पद्य का प्रवाह ही अपेक्षित होता है।

चरण के अनुसार मात्रिक छंद अथवा वर्णिक छंद के तीन प्रकार होते हैं –

1. सम (समवर्णिक अथवा सममात्रिक) – जिसके सभी चरण समान हों।
2. विषम –(विषम वार्णिक अथवा विषम मात्रिक) जिसमें दो या अधिक चरण असमान हों।
3. अर्धसम – (अर्धसम वार्णिक अथवा अर्धसम मात्रिक) जिसके आधे–आधे चरणों में समानता हों।

दोहा –

दोहा छंद अर्धसम मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। पहले और तीसरे चरण में अर्थात् विषम चरणों में 13 – 13 मात्राएँ और दूसरे तथा चौथे चरण अर्थात् सम चरणों में 11 – 11 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अन्त में गुरू एवं लघु तथा तुकांत होना आवश्यक है।

उदाहरण –

कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर।
समय पाय तरूवर फरै, केतक सींचो नीर।।

चौपाई –

यह सम मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16–16 मात्राएँ होती हैं। चरण के अंत में गुरू (ऽ) और लघु (।) नहीं होना चाहिए, पर दो गुरू (ऽऽ) या दो लघु (।।) हो सकते हैं।

उदाहरण–

इहि विधि राम सबहि समुझावा।
गुरू पद–पदुम हरषि सिर नावा।।
गनपति, गौरि, गिरीसु मनाई।
चले असीस पाई रघुराई।।

सोरठा–

यह अर्धसम मात्रिक छंद होता है। इसमें चार चरण होते हैं। यह दोहे के बिल्कुल उल्टा होता हैं। इसके विषम चरणो में 11–11 मात्राएँ और सम चरणों में 13–13 मात्राएँ होती हैं। पहले और तीसरे चरण के अंत में गुरू (ऽ) एवं लघु (।) तथा तुकांत होते हैं।

उदाहरण–

कहै जु पावै कौन, विद्या धन उद्यम बिना।
ज्यों पंखे की पौन, बिना डुलाए न मिले।।

गीतिका–

यह एक सममात्रिक छंद है। इसके चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 14 एंव 12 की यति से 26 मात्राएँ होती हैं। अन्त में क्रमशः लघु–गुरू (।ऽ) होते हैं।

उदाहरण –

हे प्रभो आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिए ।
शीघ्र सारे दुगुर्णो को, दूर हमसे कीजिए।
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें
ब्रम्हचारी, धर्मरक्षक, वीर, व्रतधारी बनें।

हरिगीतिका –

यह एक सममात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। इस छंद के प्रत्येक चरण में 16 और 12 के विराम से कुल 28 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण–

मेरे इस जीवन की है तू, सरस साधना कविता।
मेरे तरू की तू कुसुमित, प्रिय कल्पना लतिका।
मधुमय मेरे जीवन की प्रिय, है तू कल कामिनी।
मेरे कुंज कुटीर द्वार की, कोमल चरण गामिनी।

पंचम इकाई

1. पद्य –

बहुत दिनों के बाद – नागार्जुन

2 गद्य –

अपना–पराया – हरसरन सिंह विश्नोई

3. व्याकरण –

तत्सम् एवं तद्भव

पाठ–11

बहुत दिनों के बाद

नागार्जुन

केन्द्रीय भावः–

गाँव का वातावरण स्वच्छ और निर्मल होता है। शहर के भीड़–भाड़वाले वातावरण में कई प्रकार की अशुद्धियाँ घुली होती हैं। गाँव को छोड़कर शहर में जीविकोपार्जन करने वाले लोग जब गाँव में आते हैं तो उन्हें गाँव की हर चीज आनंददायक लगती है। इस कविता में ग्रामीण जीवन की सरलता, सादगीपन, अकृत्रिम सौंदर्य, रूप, गंध, रस , स्पर्श आदि का वर्णन किया गया है तथा इसकी तुलना शहर के भाग–दौड़वाली जीवनशैली से की गई है। इस कविता के माध्यम से 'नई कविता' के सौंदर्य और विशेषताओं को समझने का प्रयास कीजिए।

बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद –
अबकी मैंने जी भर देखी,
पकी–सुनहली फसलों की मुसकान!
बहुत दिनों के बाद।
अबकी मैं जी भर सुन पाया–
धान कूटती किशोरियों की कोकिल–कंठी तान।
बहुत दिनों के बाद

अबकी मैंने जी भर सूँघे –
मौलसिरी के ढेर–ढेर–से ताजे–टटके फूल!
बहुत दिनों के बाद।

अबकी मैं जी भर छू पाया –
अपनी गँवई–पगडंडी की चंदनवर्णी धूल!
बहुत दिनों के बाद

अबकी मैंने जी भर तालमखाना खाया
गन्ने चूसे जी भर
बहुत दिनों के बाद
अबकी मैंने जी भर भोगे–
गंध–रूप–रस–शब्द–स्पर्श सब साथ–साथ इस भू पर
बहुत दिनों के बाद।

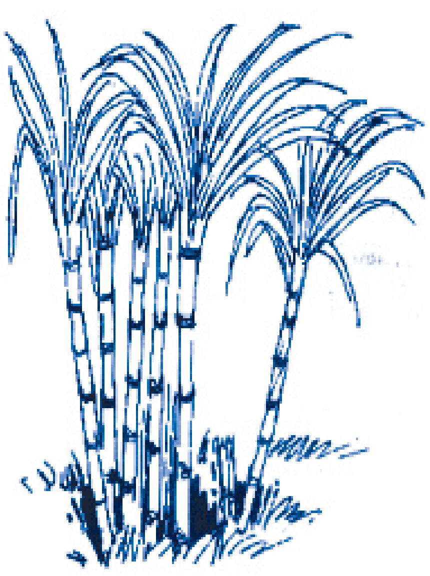

000

पाठ्यगत प्रश्न

प्रश्नोत्तर–(1) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(अ) उचित संबंध जोडिए–

	क	ख
1.	सुना	तालमखाना
2.	सूंघे	फसलो की मुसकान
3.	छुआ	कोकिलकंठी तान
4.	देखी	चन्दनवर्णी धूल
5.	खाया	मौलसिरी के फूल

(ब) उचित शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए :–

1. किशोरियाँ.................................... कूटती हैं।
2. कवि ने ताजे–टटके .... के फूल सूंघे।
3. कवि ने बहुत दिनों के बाद.............................. चूसे।
4. कवि ने जी भर .... खाया।
5. कवि ने इस भू पर .... का भोग किया।

(2) लघुउत्तरीय प्रश्न :–

1. कवि ने जी भर क्या देखा?
2. किशोरियों की आवाज कैसी है?
3. इस कविता में किस फूल का वर्णन किया गया है?
4. गाँव की पगडंडी की धूल किसके समान है?
5. तालमखाना किसे कहते हैं? यह कहाँ पाया जाता है?

(3) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :–

1. 'बहुत दिनों के बाद' कविता में ग्राम्य जीवन की झाँकी किस प्रकार प्रस्तुत की गई है?
2. शहरी भागदौड़ की जिंदगी की तुलना ग्राम्य जीवन से किस प्रकार की गई है?
3. बहुत दिनों तक गाँव से दूर रहने के बाद गाँव लौटने पर कवि ने क्या अनुभव किया? बताइये।
4. आप भी ग्राम्य जीवन के अपने अनुभवों संक्षेप में लिखिए।

शब्दार्थ

किशोरियों – युवतियों
गँवई – गाँव
पगडंडी – पैदल चलने का रास्त
चंदनवर्णी – चंदन के वर्णों (रंग) वाली
भोगे – आनंद लिया
भू – पृथ्वी, धरती
दृष्य – रूप के दर्शन
वाणी – बोली, वचन
सूंघना – गंध का आनंद लेना

उत्तर – 1

उत्तर :– (अ)

1. कोकिलकठी तान
2. मौलसिरी के फूल
3. चन्दनवर्णी धूल
4. फसलों की मुसकान
5. तालमखाना

उत्तर – (ब)

1. धान
2. मौलसिरी
3. गन्ना
4. तालमखाना
5. गंध, रूप, रस, शब्द स्पर्श आदि

पाठ–12

अपना पराया

हरसरन सिंह विश्नोई

मूलभाव –

यह पाठ साहित्यिक पाठ नहीं है। यह विज्ञान विषय से संबंधित है। इस पाठ में जिस तरह की भाषा का प्रयोग किया गया है उसे वैज्ञानिक भाषा कहते हैं। विज्ञान में कार्य और कारण को स्पष्ट करनेवाली भाषा का प्रयोग किया जाता है अतः इसकी वाक्य संरचना में भी कार्य–कारण का संबंध होता है। उदाहरण– ''छींक आना और नाक से पानी बहना शरीर की स्वाभाविक प्रतिरक्षात्मक प्रकियाएँ हैं''। इस वाक्य में 'छींक आना और नाक से पानी बहना' कार्य है तथा'शरीर की स्वाभाविक प्रतिरक्षात्मक प्रकियाएँ' कारण हैं। विज्ञान संबंधी वस्तुओं, संकल्पनाओं, परिभाषाओं और अवधारणाओं कार्य–कारण का संबंध बताने के लिए विशेष शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है जिन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं। इस पाठ में विज्ञान और आयुर्विज्ञान (या चिकित्सा शास्त्र) के अनेक पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हुआ है, जैसे –

प्रतिपिंड – रोगाणुओं से लड़ने के लिए शरीर में बननेवाले विशेष प्रकार के पिंड

प्रजनन – अपने जैसे जीवों को जन्म देने की प्रकिया

इस पाठ में प्रयुक्त कुछ और पारिभाषिक शब्द इस प्रकार हैं – लसिका ग्रंथि, क्षय रोग, एलर्जी, कैंसर, जीवाणु, रोगाणु आदि।

इस पाठ में हमारे शरीर में पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के प्रतिरोधक क्षमताओं के बारे में बताया गया है। मानव शरीर की सुरक्षा व्यवस्था मानव को विभिन्न प्रकार की बीमारियों और कष्टों से बचाते हैं। वातावरण में असंख्य रोगाणु होते हैं। ये शरीर में प्रवेश पाने का प्रयत्न करते हैं। त्वचा देह रूपी दुर्ग की बाहरी दीवार के समान रक्षा करती हैं। जीभ द्वारपाल जैसा कार्य करती है हमारे शरीर में रोगाणुओं को प्रवेश करने से गिलटियॉं सुरक्षासेना के समान कार्य करती हैं। प्रतिपिंड उनसे टक्कर लेकर हमारे शरीर की रक्षा करते हैं। चेचक ,पोलियो ,हैजा, टायफाइड, टिटनेस, डिफ्थीरिया, क्षय आदि रोगों का बचाव टीकों के माध्यम से किया जाता हैं। टीकों के माध्यम से शरीर में बने प्रतिपिंड शरीर को रोगों से बचा लेते है।

अपना पराया

हरसरन सिंह विश्नोई

आपकी ऊँगली में कभी कोई काँटा अवश्य गड़ा होगा। उस काँटे को आप अपनी चुटकी , चिमटी अथवा सुई से निकाल देते हैं। यदि काँटे का कुछ अंश त्वचा में ही गड़ा रह जाए तो वहाँ गाँठ–सी बन जाती है। यह गाँठ प्रायः सूखकर निकल जाया करती है और उसी के साथ काँटा भी निकल जाता है। कभी–कभी त्वचा में रह गए काँटे के स्थान पर फोड़ा बन जाता है , जिसके फुटने पर मवाद के साथ काँटे से छुटकारा मिल जाता है।

आपकी आँख में कभी धूल अथवा कोयले का कण चला गया होगा। ऐसी स्थिति में आपकी आँखों से आँसू निकलने लगते हैं, जो उस कण को बहाकर बाहर निकाल देने का प्रयास करते हैं। यदि इस प्रकार भी कण आँख से नहीं निकलता , तो चिकित्सक की सहायता लेनी पड़ती है, क्योंकि कण की चुभन चैन से नही बैठने देती।

छींके सभी को आती हैं। स्वस्थ अवस्था में भी दिन में एक–दो छींके आ जाना कोई विचित्र बात नहीं। नाक के भीतर जरा–सी उत्तेजना हुई नहीं कि छींक आई। रसोई में मसालों के भुनने से छींक आ जाती है। कुछ व्यक्तियों को इत्र अथवा खुशबूदार तेलों से भीं छींक आ जाती है। यही नहीं, छींकों के साथ–साथ कभी–कभी आँख और नाक से भी पानी बहने लगता है।

छींक आना और नाक से पानी का बहना शरीर की स्वाभाविक प्रतिरक्षात्मक प्रक्रियाएँ हैं। इनके द्वारा शरीर उन तमाम बेमेल और हानिकारक पदार्थों को बाहर निकाल फेंकने की चेष्टा करता है, जो वायु द्वारा नाक के भीतर चले जाते हैं। हमारे शरीर की यह सुरक्षा व्यवस्था हमें विभिन्न प्रकार की बीमारियों और कष्टों से बचाती है। मुख के भीतर जीभ एक द्वारपाल जैसा कार्य करती है। खाने–पीने के प्रत्येक पदार्थ का स्वाद लेकर वह उसे परख लेती है। कड़वे और दुःस्वाद पदार्थ को हमारी जीभ प्रायः भीतर ले जाने से इनकार कर देती है। भोजन के ग्रास में भूल से आया हुआ कोई बाल अथवा कंकड़–पत्थर जीभ की पहुँच से बच नहीं पाता ।

खाई हुई प्रत्येक वस्तु तब तक शरीर का अंश नहीं बनती, जब तक आमाशय और अंतड़ी उसे पचाकर रक्त में नहीं पहुँचा देते। कभी–कभी खाई हुई वस्तु को आमाशय स्वीकार नहीं करती और उसे उल्टी के रूप में शरीर से बाहर निकाल फेंकता है। इस प्रकार पेट अथवा आमाशय भी एक प्रकार से द्वारपाल है।

शरीर में होनेवाली जिन प्रतिक्रियाओं का उपर उल्लेख हुआ है, वे किसी न किसी रूप मे शरीर की सुरक्षात्मक प्रतिक्रियाएँ हैं। ये प्रतिक्रियाएँ बाहरी बेमेल अथवा हानिकारक पदार्थों को शरीर में अवशोषित होने से रोकती हैं। शरीर का प्रयास होता है कि आवांछित वस्तु को भीतर प्रविष्ट न होने दे और यदि किसी भी प्रकार भीतर चली भी जाए तो उसे शरीर से बाहर निकाल फेंके।

वातावरण में असंख्य रोगाणु होते हैं। ये हमारे शरीर मे प्रवेश पाने का प्रयत्न करते हैं, ताकि इन्हें आश्रय के साथ–साथ भोजन भी मिल सके। शरीर के उत्तकों को खा–खाकर ये पनपते–बढ़ते और प्रजनन करते है।

इनके प्रभाव से भाँति–भाँति के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। शरीर इन रोगाणुओं को भीतर प्रविष्ट होने से रोकने का प्रयत्न करता है और उनसे अनेक प्रकार से लड़ता–भिड़ता है।

त्वचा, देह रूपी दुर्ग की बाहरी दीवार है। यह दीवार शरीर की मुख्यतः दो प्रकार से रक्षा करती है। प्रथम, यह शरीर के नमी को भाप बनकर उड़ जाने से रोकती है। दूसरे, वायु और वस्त्रादि के स्पर्श से अपने उपर आकर जमने वाले असंख्य रोगाणुओं को यह बाहर ही रोके रहती है। परंतु ये रोगाणु भी घात लगाए बैठे रहते है कि कब कहीं त्वचा कटे या फटे और ये भीतर घुसें। मल–मलकर नहाते समय हम अनजाने ही इन सुक्ष्म रोगाणुओं को धो–धोकर त्वचा से हटाते रहते हैं।

साँस लेते समय वायु से भाँति–भाँति के रोगाणु हमारी नाक द्वारा भीतर जाते हैं। इनमें से कुछ को तो नाक के बाल ही भीतर जाने से रोक देते हैं। कुछ रोगाणु नाक के भीतर के श्लेषमा (लसदार स्राव) मे चिपकर फँस जाते है। ऐसा ही श्लेष्मा फेफड़ों के भीतर की वायुनलियों में भी होता है और वायु द्वारा आए हुए कुछ रोगाणु इसमें चिपक जाते हैं। बलगम के रूप में फेफड़ों से बाहर निकलने वाला यही श्लेष्मा अपने साथ रोगणुओं को भी बाहर निकाल फेंकता है।

हमारे भोजन, दूध, पानी आदि में लुक–छिपकर अनेक प्रकार के रोगाणु पहले मुँह में और फिर मुँह से आगे आहार–नली में पहुँच जाते हैं। मुँह में बनने वाली लार अन्य कई कार्य करने के साथ–साथ कुछ हद तक रोगाणुओं को भी नष्ट करती है। जो रोगाणु आगे पहुँच जाते हैं, उन्हें आमाशय अपने अम्ल से नष्ट कर देता है। इस अम्ल का अनुभव कदाचित् आपको तब हुआ होगा जब भरा पेट दब जाने से भोजन का कुछ अंश उल्टा चलकर मुँह में आ जाता है और उल्टी हो जाती है।

हमने देखा है कि शरीर की सुरक्षा में पहला योगदान त्वचा द्वारा और नाक, फेफड़े और मुँह और आहार–नली की भीतरी परतों द्वारा होता है, जो रोगाणुओं को ऊत्तकों में प्रवेश करने से रोकती हैं। इन परतों के कटने –फटने पर अथवा इनके कमजोर हो जाने पर रोगाणु शरीर के ऊतकों में पहुँच जाते हैं। अतिसूक्ष्म विषाणु (वाइरस) तो पतली त्वचा तथा भीतरी समुची परतों को भी भेदकर घुस जाते हैं। पर जो भी हो, इनका मुकाबला करने के लिए शरीर की सुरक्षा व्यवस्थाएँ भी सक्रिय हो जाती हैं।

अनेक संक्रमण पूरे शरीर में फैलकर स्थानीय होते हैं। कल्पना कीजिए कि आपको हाथ की खाल कहीं कट गई है या आपने ज्यादा खुजला लिया है। तब पहले से ही त्वचा पर जमे अथवा वायु आदि के स्पर्श से आए हुए रोगाणु भीतर प्रवेश कर जाते हैं। अब ये ऊतकों को खा–खाकर पनपने और बढ़ने लगते हैं।

हमारा शरीर भी इनके प्रति निष्क्रिय नहीं होता। रक्त की श्वेत कणिकाओं की सेना सतर्क हो जाती है और रोगाणुओं में से निकले कुछ रासायनिक पदार्थों का सुराग पाकर ये उसी ओर धावा बोल देती है। इस सेना को रोगाणुओं के संक्रमण–स्थल पर जल्दी से पहुँचाने के लिए आसपास की रक्त–नलियाँ फूल जाती हैं, ताकि ज्यादा रक्त पहुँचे। ज्यादा रक्त पहुचँने से संक्रमण–स्थल अधिक लाल, कुछ सुजा हुआ और छूने पर गर्म मालूम पड़ता है। श्वेत–कणिकाएँ रक्त–नलिकाओ की दीवारों में से निकलकर आक्रमणकारियों की ओर बढ़ती है और उन्हें

खा–खाकर नष्ट करने लगती हैं। इस युद्ध में दोनों पक्षों के सदस्य हताहत होते हैं। उनकी मृत देहों का मलबा तथा टूटे–फूटे ऊतक मवाद बन जाते हैं, जो घटनास्थल पर बने फोड़े–फुंसी के फूटने पर बाहर निकल जाते हैं।

यदि प्रथम आक्रमण–स्थल पर ही रोगाणुओं का दमन न हो पाया तो वे विजयी होकर आगे बढ़ते है। अब वे ऊतको के तरल मे पहुँच जाते हैं। ऊतक–तरल पहले तो अपनी ही विशेष नलियों में बहता है और फिर अंततः रक्त में जा मिलता है। अतः ऊतक–तरल मे से होकर रक्त में पहुचँने से पहले हमारे शरीर को इन रोगाणुओं के विरूद्ध एक मोर्चा बनाना होता है। इस मोर्चे का अनुभव कदाचित आपको हुआ होगा। कभी–कभी कांख में या जाँघ में गिलटी फूल जाती हैं जो दर्द करती है। यह गिलटी तभी बनती है जब हाथ या पैर में कोई फोड़ा–फुंसी जैसा संक्रमण हो। गले की टांसिले भी ऐसी ही गिलटियाँ हैं, जो गले के संक्रमण के कारण फूल जाती हैं इस प्रकार की सभी गिलटियाँ मानों हमारे शरीर की सुरक्षा सेना की चौकियाँ है। इनके भीतर एक विशेष प्रकार की भक्षक–कोशिकाएँ होती है जो रक्त की ओर बढ़ते हुए रोगाणुओं को नष्ट करती हैं। जब रोगाणु इन स्थानों पर भी विजयी होकर और आगे बढ़ते है तब वे रक्त में पहुँच जाते हैं। अब रोगी की अवस्था गंभीर हो जाती है और इससे निबटने के लिए शरीर की कुछ अन्य सुरक्षा–व्यवस्थाएँ सक्रिय हो जाती हैं।

अनेक प्रकार के रोगाणुओं के प्रति भक्षक कोशिकाओं की सेना भी पर्याप्त नहीं होती । विषाणुओं (वाइरस) का तो ये भक्षक कोशिकाएँ कुछ भी नही बिगाड सकतीं। इन विषाणुओं के अतिरिक्त जीवाणुओं (बैक्टीरियाँ) में जो विष (टाक्सिन) निकला करते हैं, वे भी भक्षक कोशिकाओं के प्रभाव से मुक्त होते हैं। अतः इन विषाणुओं तथा टाक्सिनों से टक्कर लेने के लिए शरीर में कुछ विशेष रासायनिक अणु कार्य करते हैं, जिन्हें प्रतिपिंड (ऐंटीबॉडी) कहते हैं। ये प्रतिपिंड मुख्यतः गिलटियों (लसिका ग्रंथियों) की कोशिकाओं से बनते हैं। प्रतिपिंडों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये अपने अनुरूप केवल एक ही प्रकार के रोगाणु और रोगविष से टक्कर ले सकते हैं। अतः प्रत्येक रोगाणु और रोगविष के लिए शरीर में पृथक प्रकार के प्रतिपिंड चाहिए।

अधिकतर प्रतिपिंड शरीर में पहले से मौजूद नहीं होते। एक बार कोई रोगाणु अथवा रोगविष शरीर में प्रविष्ट हो जाए और उससे प्रभावित होकर शरीर कम या ज्यादा बीमार होकर ठीक हो जाए, तब शरीर में उस रोग से टक्कर ले सकने वाले प्रतिपिंड बन जाते हैं। ऐसे प्रतिपिंड अलग–अलग समय तक बने रहते हैं। किंतु कुछ रोगों के प्रतिपिंड कुछ ही सप्ताह तक बने रह सकते हैं, जैसे इंफ्लूएंजा के। कुछ रोगों के प्रतिपिंड 10–15 वर्ष तक बने रह सकते हैं, जैसे चेचक के। जब उस रोग–विशेष का आक्रमण होता है , तब ये प्रतिपिंड तत्काल शरीर की रक्षा करके हमें उस रोग से बचाते हैं। हमारे शरीर की स्मरण शक्ति ऐसी विचित्र है कि वह रोगाणु को लंबे अरसे के बाद भी पहचान लेती है। इन्हीं कारणों से मनुष्य को चेतन पिंड कहा गया है।

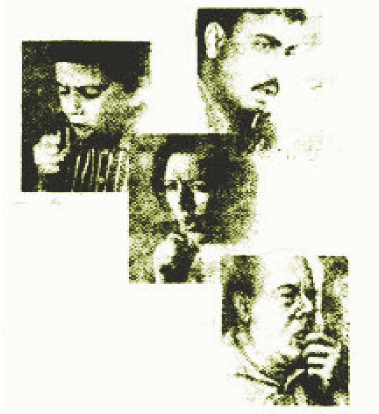

रोगों के बचाव–टीकों में यही सिद्धांत काम में लाया जाता है। आज बीसियों प्रकार के टीके बन चुके हैं, जैसे – चेचक, पोलियो, टिटेनेस, डिफ्थीरिया, हैजा, टाइफाइड, क्षय रोग आदि से बचाव करने वाले। इन सबमें एक ही सिद्धांत है। दुर्बल किए गए रोगाणु अथवा उनका हल्का किया गया विष जान–बूझ कर व्यक्ति के शरीर में प्रविष्ट कराया जाता है। तब व्यक्ति का शरीर उन रोगाणुओं अथवा उस विष से जूझता है और उसके प्रतिपिंड बनाने लग जाता हैं। तदुपरांत जब कभी रोग का वास्तविक संक्रमण होता है तब पहले से ही मौजूद ये प्रतिपिंड रूपी रासायनिक हथियार शरीर को रोग से बचा लेता है।

कुछ लोगों को इत्र, धूल आदि से छींक आती है और आँख–नाक से पानी बहने लगता है। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं, जिन्हें दूध पीने या अंडा खाने से भी परेशानी होने लगती है। इसी प्रकार कुछ व्यक्तियों के लिए पेनिसिलीन जैसी जीवनदायिनी औषधि भी जानलेवा सिद्ध हो सकती है। ऐसी परिस्थितियों में हम कहते हैं कि व्यक्ति को अमुक वस्तु माफिक नहीं आती अथवा उस पदार्थ से उसे एलर्जी है। एलर्जी पैदा करने वाले पदार्थ अधिकतर ऐसे प्रोटीन होते हैं, जो शरीर के लिए सदा पराए बने रहते हैं।

रक्त या ऊतकों में पहुँचने पर इन बेमेल प्रोटीनों को हमारा शरीर किसी प्रकार बाहर निकाल फेंकने का प्रयत्न करता है। इस प्रयत्न में शरीर उनके निराकरण के लिए प्रतिपिंडों बनाता है , लेकिन ये प्रतिपिंड रोगाणुओं के प्रतिपिंडों से कुछ भिन्न होते हैं। इन पराए प्राटीनों से शरीर के पहले संपर्क पर प्रतिपिंड बनने लग जाते हैं। कुछ समय बाद जब ये पराए प्रोटीन से पुनः ऊतकों के संपर्क में आते हैं तब प्रतिपिंडो और उनके बीच एक तीव्र प्रतिक्रिया होती है। जो रोग का भी रूप ले लेती है। शरीर में पित्ती (छपाकी) निकलना, सूजन आ जाना, साँस फूलन, दमा हो जाना – ये सब एलर्जी के ही उदाहरण हैं। मच्छर के काटने के स्थान पर दाफड़–ददोरा पड़ना, खुजली होना और लाल हो जाना भी एक प्रकार की एलर्जी ही है। जो भी हो, एलर्जी के मामले में हर व्यक्ति अलग है। वही पदार्थ एक व्यक्ति के लिए अपना कहा जा सकता है और दूसरे के लिए सर्वथा पराया।

हमारे शरीर में इक्की–दुक्की कोशिकाएँ रोज ही कुछ ऐसी बदलती रहती हैं , जो अपनी होती हुई भी पराई बन जाती है और शरीरद्रोही हो जाती हैं। विशेष प्रकार के प्रतिपिंड इन शरीरद्रोही कोशिकाओं का दमन करके हमें सुरक्षित रखने का प्रयत्न करतें हैं। किंतु जब कभी बागी कोशिकाएँ हद से ज्यादा बढ़ जाती है। तब वे कैंसर का रूप ले सकती हैं।

इस प्रकार हमने देखा कि यदि हम और हमारी जाति जीवित हैं, तो उसका एक बहुत बड़ा श्रेय अपने–पराए की पहचान को ही जाता है। इस अपने–पराए की पहचान करने और उससे जूझने के मोर्चे शरीर में जितनी ज्यादा संख्या में है, उतने ही ज्यादा वे विस्मयकारी भी हैं।

शब्दार्थ

त्वचा	–	खाल, शरीर की सबसे ऊपरी परत
मवाद	–	फोड़े से निकलनेवाला स्राव
चिकित्सक	–	चिकित्सा करनेवाला डॉक्टर
विचित्र	–	अनोखी
उत्तेजना	–	सुरसुराहट
इत्र	–	खुशबूदार द्रव , सेंट
स्वाभाविक	–	आदतन होनेवाली
प्रतिरक्षात्मक	–	अपना बचाव करनेवाली
प्रतिक्रियाएँ	–	कार्य करने का प्रकार, क्रिया के विरोध में क्रिया
हानिकारक	–	नुकसान पहुँचानेवाला
चेष्टा	–	प्रयास, कोशिश
कष्ट	–	तकलीफ
द्वारपाल	–	वह व्यक्ति जो दरवाजे पर रहकर आने जानेवालों पर निगाह रखे पहरेदार, गेटकीपर
दु:स्वाद	–	बुरे स्वादवाला
ग्रास	–	कौर, एक बार खाया जानेवाला गस्सा
प्रतिक्रिया	–	किसी कार्य के जवाब में हुआ कार्य
सुरक्षात्मक	–	बचाव करने वाली
अवशोषित होना	–	घुल–मिल जाना, सोख लिया जाना
अवांछित	–	अनचाही
प्रविष्ट	–	घुसना

असंख्य – अनगिनत
रोगाणु – रोग के अणु, वे सूक्ष्म जीवाणु, जो बीमारी का कारण होते हैं।
आश्रय – रहने/ठहरने की जगह
ऊतक – एक जैसा काम करने वाली कोशिकाओं (सेलों) के समूह से बने पिंड, टिश्यू
प्रजनन – संतान की उत्पति , अपने जैसे जीवों को पैदा करना
देह – शरीर
दुर्ग – किला
घात लगाना – हमला करने के लिए तैयार होना
सूक्ष्म – बहुत छोटे जो बिना यंत्र की सहायता के न दिखे
श्लेष्मा – चिपचिपा, लसदार पदार्थ, जो नाक से बहकर निकलता है
वायु नली – साँस की नली
बलगम – कफ्
आहारनली – भोजन को आमाशय में पहुँचानेवाली नली
विषाणु – वायरस, रोग के विषैले अणु
सक्रिय – क्रियाशील, काम में लगा होना
संक्रमण – एक से दूसरे तक पहुँचना, रोगाणुओं का शरीर में पहुँचना, इन्फैक्शन
स्थानीय – स्थान विशेष तक सीमित , एक ही जगह पर
निष्क्रिय – काम न करनेवाला, क्रियाशीला न होना
श्वेत कणिकाएँ – खून में मौजूद रोग से लड़नेवाले सफेद कण
सुराग पाकर – पता लगते ही, पता पाकर
धावा बोलना – टूट पड़ना, हमला करना
आक्रमणकारी – हमला करनेवाली
हताहत – मरे हुए और घायल
मलबा – टूटी–फूटी चीजों का ढेर
ऊतक तरल – ऊतक के भीतर रहनेवाला द्रव (तरल पदार्थ)
मोर्चा – किसी उद्देश्य या लक्ष्य के लिए एक जुटता
टांसिल – गले की एक ग्रंथि
भक्षक कोशिकाएँ– रोगाणुओं को खा जानेवाली कोशिकाएँ
कांख – बगल
जीवाणु – आँखों से न दिखनेवाले सूक्ष्म सजीव अणु
टॉक्सिन – विषैले पदार्थ
प्रतिपिंड – विशेष रोगाणुओं से लड़ने के लिए शरीर के भीतर बननेवाले पिंड
लसिका–ग्रंथि – प्रतिपिंड बनाने वाली कोशिकाओं की ग्रंथि
इन्फ्लुएंजा – फ्लू , विषुणाओं द्वारा फैलनेवाला बुखार
चेचक – एक बीमारी, जिसमें शरीर पर फफोले से उठते हैं
तत्काल – तुरंत, फौरन, उसी समय
स्मरण शक्ति – याद रखने की क्षमता
टीका – किसी विशेष बीमारी से बचाव के लिए शरीर के भीतर पहुँचाए जानेवाला पदार्थ
वैक्सिन।
पोलियो – एक बीमारी, जिससे प्रायः हाथ या पैर में लकवा मार जाता है।
टिटनेस – एक प्राणलेवा बीमारी, जिसमें शरीर का तंत्रिका–तंत्र बेकार हो जाता है।
डिफ्थीरिया – एक घातक बीमारी , जिसमें गला जकड़ जाता है और साँस रूकने लगतीहै।
हैजा – उल्टी–दस्त की बीमारी
टाइफाईड – मियादी बुखार
क्षय रोग – यक्ष्मा ,टी.बी
प्रविष्ट कराना – अंदर घुसाना या पहुँचाना
तदुपरांत – उसके बाद
एलर्जी – किसी पदार्थ का शरीर के माफ़िक (अनुकूल) न होना
प्रोटीन – भोजन का एक आवश्यक और मूलभूत तत्व
निराकरण – दूर करना , निवारण

तीव्र	–	तेज
पिती	–	त्वचा पर होनेवाले लाल रंग के ददोरे या चकते
दमा	–	साँस की बीमारी
शरीरद्रोही	–	शरीर के प्रति विद्रोह करने वाली, शरीर को नुकसान पहुँचानेवाली
बागी	–	विद्रोही
कैंसर	–	शरीर की कोशिकाओं की असंतुलित वृद्धि से उत्पन्न लाइलाज बीमारी
विस्मयकारी	–	आश्चर्यजनक

पाठ्यगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निम्न प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए–

1. मनुष्य का शरीर है –
   (अ) द्रवपिंड (ब) जड़ पिंड
   (स) गैस पिंड (द) चेतन पिंड
2. आक्रमणकारियों की ओर बढ़ती हैं –
   (अ) लाल रक्त कणिकाएँ (ब) श्वेत रक्त कणिकाएँ
   (स) विषाणु (द) शुक्राणु
3. डिफ्थीरिया रोग किस अंग में होता है –
   (अ) कान (ब) नाक
   (स) आँख (द) गला
4. ज्ञानेंद्रियाँ कौन सा कार्य नहीं कर सकती हैं –
   (अ) खाना (ब) देखना
   (स) सूँघना (द) सुनना
5. अनचाहे पदार्थों को हमारा पेट क्या करता है –
   (अ) वैसा ही बना रहने देता है (ब) ठीक बना देता है
   (स) बाहर निकाल देता है (द) पचा लेता है

लघुउत्तीरय प्रश्न –

1. शरीर रूपी दुर्ग की बाहरी दीवार किसे कहा गया है?
2. ऊत्तक किसे कहते हैं ?
3. गंदे पानी या दूषित भोजन सेवन करने से क्या होता हैं?
4. पिंड कितने प्रकार के होते हैं? नाम लिखिए।
5. क्षय रोग के लक्षण बताइये ?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न –

1. मानव जीवन के लिए अधिक पानी पीना लाभकारी क्यों है?
2. चेतन पिंड किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाये
3. ज्ञानेन्द्रियों को समझाते हुए उनके कार्य बताइये।
4. विषाणु किसे कहते हैं? समझाइये?
5. हैजा होने के कारण एंव उससे बचने के उपाय लिखिए?

उत्तर

1. (द) चेतन पिंड
2. (ब) श्वेत रक्त कणिकाएँ
3. (द) गला
4. (अ) खाना
5. (स) बाहर निकाल देता है।

योग्यता विस्तार

आपने इस पाठ में सूक्ष्म जीवों के बारे में पढ़ा।सूक्ष्म जीवों को हम सूक्ष्मदर्शीयंत्र के बिना नहीं देख सकते। अधिकांश सूक्ष्म जीव पर्यावरण संतुलन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं और हमारे मित्र होते हैं। परंतु कुछ सूक्ष्म जीव मनुष्य सहित अन्य जीवों और पेड़–पौधों में कई प्रकार के रोग पैदा करते हैं जिनमें कुछ जानलेवा भी होते हैं। रोग पैदा करनेवाले सूक्ष्मजीवों को रोगाणुओं कहा जाता है। रोगाणु मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं – 1. जीवाणु (बैक्टीरिया) तथा 2. विषाणु (वायरस)। आइए इनके बारे में जानें –

1. जीवाणु (बैक्टीरिया)

जीवाणु एक अकेन्द्रिक, कोशिका भित्तियुक्त, एककोशिकीय जीव है जो प्रायः सर्वत्र पाये जाते हैं। इसका आकार कुछ मिलिमीटर तक ही होता है। ये पृथ्वी पर मिट्टी में, अम्लीय गर्म जल–धाराओं में, नाभिकीय पदार्थों में जल में, भू–पपड़ी में, यहाँ तक कि कार्बनिक पदार्थों में तथा पौधों एवं जन्तुओं के शरीर के भीतर भी पाये जाते हैं। साधारणतः एक ग्राम मिट्टी में 4 करोड़ जीवाणु कोष तथा एक मिलीलीटर जल में 10 लाख जीवाणु पाए जाते हैं। संपूर्ण पृथ्वी पर अनुमानतः लगभग $5X10^{30}$ जीवाणु पाए जाते हैं, जो संसार के बायोमास का एक बहुत बड़ा भाग है। ये कई तत्वों के चक्र में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं, जैसे कि वायुमंडलीय नाइट्रोजन के स्थरीकरण में।

मानव शरीर में जितनी भी मानव कोशिकाएं है, उसकी लगभग 10 गुणा संख्या तो जीवाणु कोश की ही है। इनमें से अधिकांश जीवाणु त्वचा तथा अहार–नाल में पाए जाते हैं। हानिकारक जीवाणु शरीर प्रतिरक्षा (इम्यून) तंत्र के रक्षक प्रभाव के कारण शरीर को नुकसान नहीं पहुँचा पाते। कुछ जीवाणु लाभदायक भी होते हैं। अनेक प्रकार के परजीवी जीवाणु कई रोग उत्पन्न करते हैं, जैसे – हैजा, मियादी बुखार, निमोनिया, तपेदिक या क्षयरोग, प्लेग इत्यादि. सिर्फ क्षय रोग से प्रतिवर्ष लगभग 20 लाख लोग मरते हैं, जिनमें से अधिकांश उप–सहारा क्षेत्र के होते हैं। विकसित देशों में जीवुणओं के संक्रमण का उपचार करने के लिए तथा कृ षि कार्यों में प्रतिजैविक का उपयोग होता है, इसलिए जीवाणुओं में इन प्रतिजैविक दवाओं के प्रति प्रतिरोधक शक्ति विकसित होती जा रही है। औद्योगिक क्षेत्र में जीवाणुओं की किण्वन क्रिया द्वारा दही, पनीर इत्यादि वस्तुओं का निर्माण होता है। इनका उपयोग प्रतिजैविकी तथा और रसायनों के निर्माण में तथा जैवप्रौद्योगिकी के क्षेत्र में होता है। जीवाणुओं को सबसे पहले डच वैज्ञानिक एण्टनी वॉन ल्यूवोनहूक ने 1676 ई. में अपने द्वारा ही बनाए गए एकल लेंस सूक्ष्मदर्शी यंत्र से देखा पर उस समय उसने इन्हें जंतुक समझा था। 1864 ई. में फ्रांसनिवासी लूई पाश्चर तथा 1890 ई. में राबर्ट कोच ने बताया कि इन जीवाणुओं से रोग फैलते हैं। पाश्चर ने 1889 में प्रयोगो द्वारा यह दिखाया कि किण्वन की रासायनिक क्रिया सूक्ष्म जीवों द्वारा होती है। कोच ने कॉलेरा, ऐन्थ्रेक्स तथा क्षय रोगो पर गहन अध्ययन किया। अंततः कोच ने यह सिद्ध कर दीया कि कई रोग सूक्ष्म जीवों के कारण होते हैं। इसके लिए 1905 ई. में उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जीवाणुओं का वर्गीकरण आकृति के अनुसार किया जाता है। उदाहरण–

1. दण्डाणु (बैसिलाई) – ये दण्ड के आकार के होते हैं और अकेले, श्रृँखला तथा समूह के रूप में पाये जाते हैं।
2. गोलाणु (कोक्काई) – ये गोलाकार होते हैं और ये भी अकेले श्रृँखला तथा समूह के रूप में पाये जाते हैं।
3. सर्पिलाणु (स्पिरिलाई) – ये लहरदार होते हैं।

दण्डाणु

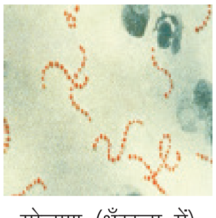

गोलाणु (श्रृँखला में)
(स्ट्रैप्टोकोकस जीवाणु)

सर्पिलाणु

2. विषाणु (वायरस)

विषाणु संक्रमित होने वाले कारक के रूप में जाने जाते हैं और जीवाणु सहित किसी भी जन्तु तथा पौधे की कोशिकाओं में संक्रमित हो सकते हैं। ये जीवाणु से लगभग 100 गुना छोटे होते है। वतावरण में ये निर्जीव की तरह होते हैं परंतु किसी जीवित कोशिका में संक्रमित होने पर सजीवों की तरह जैविक क्रियाएँ प्रदर्शित करते हैं। इसीलिए इन्हें सजीवों और निर्जीवों के बीच की कड़ी कहा जाता है। इसमें न तो जीवद्रव्य पाया जाता है और न ही कोशिकाभित्ति और इसीलिए प्रतिजैविक दवाइयों का इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इन्हें कणों के रूप में प्राप्त किया जा सकता है। अधिकांश विषाणु हानिकारक नहीं होते पर बहुत से विषाणु जंतुओ और पौधों में अनेक रोग पैदा करते हैं। मनुष्य में सर्दी–जुकाम जैसी साधारण बीमारी से लेकर पोलियो, चेचक, पीलिया, तथा टेटनस, रेबीज और एड्स जैसी जानलेवा बीमारियाँ वीषाणुओं के कारण ही होते हैं। विषाणुओं से बचाव ही इन रोगों का सही इलाज है। इन रोगों से बचाव के लिए टीके लगाये जाते हैं। कुछ विषाणुओं के चित्र नीचे दिये गये हैं –

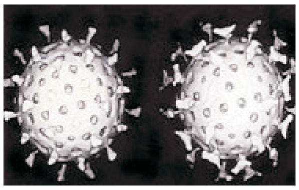

रोट्रा वायरस

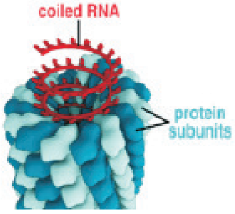

तंबाकू पौधे का मोजेइक रोग का वायरस

जीवाणुओं तथा विषाणुओं के अलावा सूक्ष्मजीवी फफूँदों, प्रोटोजुआ समुदाय के प्राणियों, तथा अनेक प्रकार के कृमियों के कारण भी हमारे शरीर में कई रोग पैदा होते हैं। किसी चिकित्सक से संपर्क करके इन रोगों और इनके कारकों की एक सूची बनाइए।

स्वच्छता का महत्व :–

रोगकारक सूक्ष्मजीव गंदे स्थानों में पाये जाते हैं। ये हवा, पानी, भोजन तथा संपर्क आदि के माध्यम से संक्रमित होते हैं। अपने वातावरण को स्वच्छ रखें। अपने शरीर और हाथों को स्वच्छ रखें। दूषित भोजन व जल ग्रहण न करें। रोग फैलानेवाले मक्खियों–कीड़ों से बचे।

व्याकरण

तत्सम् एवं तद्भव शब्द

तत्सम् शब्द – संस्कृत भाषा के मूल शब्दों को तत्सम् शब्द कहते हैं। तत् = उसके, सम = समान। अर्थात हिन्दी में जब संस्कृत के मूल शब्दों का प्रयोग होतें हैं तो उसे तत्सम शब्द कहते हैं।

तद्भव शब्द – ऐसे शब्द जो संस्कृत और प्राकृत से विकृत होकर हिन्दी भाषा में आये हैं। उन शब्दों को तद्भव शब्द कहते हैं। तत् + भव = तद्भव

तत्सम् शब्द	तद्भव शब्द	तत्सम् शब्द	तद्भव शब्द
चक्र	चक्का	चंचु	चोंच
चन्द्र	चाँद	अमूल्य	अमोल
अमावस्या	अमावस	चैत्र	चैत
कर्पूर	कपूर	गोपाल	ग्वाल
अट्टालिका	अटारी	गोमय	गोबर
अक्षि	आँख	गृह	गेह
आम्र	आम	अकार्य	अकाज
कपाट	किवाड़	आखेट	अहेर
अन्यत्र	अनत	अर्क	आक
चौर	चोर	अंगुष्ठ	अँगूठा
गुहा	गुफा	अर्द्ध	आधा
गौर	गोरा	गोस्वामी	गुसांई
ग्रन्थि	गाँठ	गृद्ध	गिद्ध
आदित्यवार	इतवार	कुक्कर	कुत्ता
कुक्षि	कोख	धृष्टता	ढिठाई
कुपुत्र	कपूत	ज्येष्ठ	जेठ
कर्ण	कान	चिक्कण	चिकना
छिद्र	छेद	चतुर्थी	चौथ
इष्टका	ईंट	शकट	छकड़ा
अवतार	औतार	क्षण	छन
कर्तरी	कतरनी	कुम्भकार	कुम्हार
अवगुण	औगुण	क्षीर	खीर
कार्य	काज	क्षार	खार
कोटि	करोड़	गर्दभ	गधा
इक्ष	ईख	एकादश	ग्यारह

तत्सम् शब्द	तद्भव शब्द	तत्सम् शब्द	तद्भव शब्द
गर्जन	गरज	काष्ठ	काठ
चित्रकार	चितेरा	ईर्ष्या	ईर्षा
अमृत	अमिय	सुपुत्र	सपूत
अंगुली	अंगुरी	अद्य	आज
अनार्य	अनाड़ी	कार्तिक	कातिक
अज्ञान	अजान	गुम्फन	गूँथना
अगम्य	अगम	चूर्ण	चूरन
तृण	तिनका	चवर्ण	चरना
गो	गाय	अग्रहायण	अगहन
कुष्ठी	कोढ़ी	आशीष	आसीस
क्षेत्र	खेत	उलूक	उल्लू
घृत	घी	उष्ट	ऊँट
जिव्हा	जीभ	अश्रु	आँसू
चित्रक	चीता	संध्या	सांझ
क्षीण	छीन	दुर्बल	दुबला
छत्र	छाता	लग्न	लगन
कण	कान	श्वसुर	ससुर
कूप	कुआँ	स्वर्णकार	सुनार
चतुष्पद	चौपाया	वर	बड़
क्षत्रिय	खत्री	मयूर	मोर
स्तम्भ	खम्ब	उत्साह	उछाह
गर्भिणी	गाभन	घृणा	घिन
गम्भीर	गहरा	कोकिल	कोयल
एला	इलायची		

पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के तद्भव रूप लिखिए –
अनार्य, अगम्य, अद्य, अग्रहायण, अश्रु, घृत, क्षेत्र, संध्या।

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम् रूप लिखिए –
अमावस, अमोल, आँख, औगुण, गाय, गोबर, कपूत, खीर, ग्यारह, जेठ।

षष्टम इकाई

पद्य

सवैया – रसखान

गद्य

भारत की बहादुर बेटियाँ

व्याकरण

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

पाठ–13

सवैया

जीवन परिचय –

रसखान दिल्ली के पठान सरदार थे। इनका असली नाम सैय्यद इब्राहीम था। इनका जन्म 1548 के आसपास माना जाता है। रसखान युवावस्था में रसिक स्वाभाव के थे। वैष्णवों के उपदेश एंव सत्संग से इनका लौकिक प्रेम कृष्णभक्ति के अलौकिक प्रेम में बदल गया। रसखान में कृष्णप्रेम की गहराई देखकर गोसाई विट्ठलनाथ जी ने इन्हें अपना शिष्य बना लिया। रसखान ने दिल्ली को छोड़कर ब्रज को ही अपना घर बना लिया। भाव विभोर ब्रजभूमि की महिमा का गान करते–करते सन् 1628 ई. को उनका देहावसान हो गया।

रचनानाएँ :– रसखान की दो रचनाएँ उपलब्ध हैः–

1. सुजान रसखान
2. प्रेम वाटिका

   रागरत्नाकर इनकी अन्य रचना है।

भावपक्ष :–

रसखान की कविताओं का मुख्य विषय कृष्णप्रेम ही है। उनकी कविताएँ कृष्ण और ब्रजप्रेम से भरी पड़ी हैं। कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति और तीव्र अनुभूति रसखान की विशेषताएँ हैं।

कलापक्ष :–

रसखान की भाषा शब्द नहीं, मधुर–कोमल पदोंवाली रस की खान हैं। सरल एवं सरस, सुललित ब्रजभाषा में काव्य रचना करने वाले रसखान के काव्य में दोहा, सवैया, कवित्त आदि छंदों एवं उपमा, रूपक, श्लेष आदि अलंकारों की अद्भुत छटा देखी जा सकती है।

साहित्य में स्थान :–

कृष्णभक्ति में तल्लीन रहने वाले रसखान का हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। निश्छल अनुभूति और आडम्बरमुक्त अभिव्यक्ति रसखान को निःसंदेह श्रेष्ठ साहित्यकारों की श्रेणी में खड़ा कर देता है।

केन्द्रीय भावः–

प्रेम एक अनुभूति है। ईष्वर प्रेम के भूखे हैं। रसखान के प्रभु अनन्त, अविनाशी, परब्रह्म हैं। वे भक्ति और प्रेम के वशीभूत होकर सगुण साकार यशोदानन्दन कृष्ण के रूप में लीला करते हैं। गोपियाँ उन्हें दोने भर छाछ के लिए नचाती हैं और वे नाचते हैं।

सवैया

धूरि भरे अति शोभित श्याम जू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।।
खेलत–खात फिरै अँगना, पग पैजनिया कटि पीरी कछौटी।।
वा छवि को रसखान विलोकत, वारत काम, कलानिधि कोटी।।
काग के भाग बड़े सजनी, हरि हाथ सौ ले गयौ माखन रोटी।।1।।

अर्थ :– इस पद में कवि रसखान ने आँगन में खेलते हुए श्रीकष्ण के बालरूप का वर्णन किया है। ब्रज की गोपियाँ कहती हैं कि हे सखि! धूल से भरे हुए श्रीकृष्ण के श्याम शरीर की शोभा निराली है। वैसी ही सुंदर उसकी चोटी बन पड़ी है। पैरों में पैजनिया और कमर में पीली कछौटी पहनकर वह आँगन में माखन–रोटी खाते हुए खेल रहे हैं। उसकी इस छवि पर करोड़ों कामदेव और करोड़ों चंद्रमा की सुदरता भी कम है। और हे सखि! कौआ बड़ा भाग्यशाली है जो श्रीकृष्ण के हाथ से माखन–रोटी छीनकर ले गया है।

आवत है वन ते मनमोहन, गाइन संग लसै ब्रज ग्वाला।।
बेनु बजावत गावत गीत अभीत, इते करिगौ कछु ख्याला।।
हेरत हेरी चकै चहुँ ओर तें, झाँकि झरोखन तै ब्रजबाला।।
देखि सु आनन को रसखानि, तज्यौ सब घोंस को ताप कसाला।।2।।

अर्थ :– इस पद में कवि रसखान ने श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों के प्रेम का वर्णन किया है। ब्रज की गोपियाँ कहती हैं कि हे सखियों! गोधूली का समय हो चुका है। मन को मोहनेवाले श्रीकृष्ण अब गायों और ग्वाल–बालों के संग मुरली बजाते हुए वन से लौटते ही होंगे। श्रीकृष्ण को जी भरकर देखना हो तो इधर तुरंत कुछ उपाय करो। ऐसा कहकर गोपियाँ अपने–अपने घर के झरोखों के पास चली जाती हैं और वहाँ से चकित होकर श्रीकृष्ण को देखने के लिए चारों ओर झांकने लगती है। रसखान कहते हैं कि श्रीकृष्ण के सुंदर मुख को देखकर गोपियाँ सूर्य की तपन का दुख भी भूल जाती हैं।

मोरपखा मुरली बनमाला, लख्यौ हिय मे हियरा उमह्यौरी।।
ता दिन ते इन बैरिन को हय, कौन न बोल कुबोल सह्यौरी।।
तौ रसखानि सनेहु लग्यौ कोउ, एक कहौं कोउ लाख कह्यौरी।।
और तो रंग रह्यौ न रह्यौ, इक रंग रंगी सोई रंग रह्यौरी।।3।।

अर्थ :– कवि रसखान कहते हैं कि ब्रज की गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम में दीवानी हो गई हैं। गोपियाँ अपने सखियों से कहती हैं कि हे सखि! जब से मैंने मोरपंख, बनमाला और मुरली धारण किये हुए श्रीकृष्ण को देखा है, मेरे हृदय में उसके प्रति प्रेम उमड़ पढ़ा है। उस दिन से मैंने इन बैरियों के कौन–कौन से व्यंग्य वचन नहीं सहो होंगे? श्रीकृष्ण से तो प्रेम हो ही गया है, अब चाहे कोई लाख कहे, उनके प्रेम का जो रंग मुझपर चढ़ा हुआ है, वह कभी नहीं छूटेगा। इस पर अब कोई दूसरा रंग नहीं चढ़ेगा।

काहू को माखन चाखि गयो, अरू काहू को दूध–दही ढरकायो।।
काहू को चीर लै रूख चढ़्यौ, अरू काहू को गुंज घरा छहरायो।।
मानै नहीं बरजै रसखान, सुजानो ही राज इन्हें घर आयो।।
आउ री बूझैं जसोमति सों, यह छोहरा जायो कि भय उपजायो।।4।।

अर्थ :– इस पद में कवि रसखान ने श्रीकृष्ण के माखनचोरी से त्रस्त गोपियों की हालत का वर्णन किया है। गोपियाँ कहती हैं कि हे सखि! यशोदा का वह लाला बड़ा उपद्रव करता है। कभी माखन खा लेता है। कभी दूध–दही को ढरका देता है। कभी हमारे वस्त्रों को लेकर झाड़ पर चढ़ जाता है। कभी हमारे गुंजे की माला को तोड़कर धरती पर बिखेर देता है। सखि! ब्रज में क्या इन्हीं का राज चलता है? चलो, यशोदा से पूछें कि उन्होंने पुत्र पैदा किया है कि हमारे लिए मुसीबत और भय पैदा किया है।

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी।।
ओढ़ि पीतांबर लै लकुटी बन, गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।।
भावतो ओहि मेरो रसखानि सो, तेरे किये सब स्वांग करौंगी।।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।5।।

अर्थ :– कवि रसखान ने इस पद में श्रीकृष्ण के प्रति ग्वालिनों के अनन्य प्रेम का वर्णन किया है। एक ग्वालिन दूसरे से कहती है – हे सखि! श्रीकृष्ण के प्रेम में मैं वह सब करूँगी, जैसा श्रीकृष्ण करते हैं। सिर पर मोरपंख धारण करूँगी, गले में गूँजे (गूँगची) की माला पहनूँगी, पीतांबर ओढूँगी, लाठी लेकर ग्वालों के संग गायों के पीछे जंगल में फिरूँगी। मुझे श्रीकृष्ण के सभी रूप भाते हैं। एक को छोड़कर मैं उनका सभी स्वांग करूँगी – मुरलीधर की इस मुरली को कभी भी मैं अपने होठों पर नहीं रखूँगी। (क्योंकि यह तो मेरी सौतन है।)

गाव गुनि गनिका गंधर्व और, सारद, सेस सबै गुन गावत।।
नाम अनन्त, गनन्त गनेस ज्यौं, ब्रह्मा, त्रिलोचन पार न पावत।।
जोगी, जती, तपसी अरू सिद्ध, निरन्तर जाहि समाधि लगावत।
ताहि अहीर की छोहरियाँ, छछिया भरि छाछ पै नाच नचावत।।6।।

अर्थ :– श्रीकृष्ण को ईश्वर का अवतार माना गया है। इस पद में कवि रसखान ने उनके इसी रूप की महिमा का वर्णन किया है। रसखान कहते हैं – गणिका, गंधर्व, शेष और शारदा सभी जिनका गुण गाते हैं; गणेश, ब्रह्मा और शिव जिनकी महिमा का पार नहीं पाते हैं; जिसे पाने के लिए जोगी, जती, तपस्वी और सिद्ध पुरूष निरंतर समाधि लगाये रहते हैं, फिर भी वे नहीं पाते हैं, ऐसे अनंत, अविनाशी ईश्वर को ब्रज के अहीर की छोरियाँ थोड़ी सी छाछ (मठे) के लिए नाच नचाती हैं। धन्य हैं ब्रज की ये छोरियाँ।

पाठ्यगत प्रश्न

प्रश्न – (1) अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. रसखान कवि ने काग को भाग्यशाली क्यों माना हैं?
2. गोपिकाएँ किसके दर्शन के लिए लालायित हैं?
3. यशोदा को गोपिकाएँ किसलिए ताने मारती हैं?
4. श्रीकृष्ण के मुरली को गोपिकाएँ अधरों पर क्यों रखना नहीं चाहती?
5. ''अहीर की छोहरियाँ'' श्रीकृष्ण को किस बात के लिए नचाती हैं?

(2) लघुउत्तरीय प्रश्न

1. बालकृष्ण की रूप–छवि कैसी है?
2. कृष्ण का वंशीवादन मनमोहक हैं, समझाइए।
3. रसखान कवि की सवैया किस भाषा में लिखी गई हैं?
4. रसखान रस के खान हैं समझाइए।
5. इन पंक्तियों में कौन–सा रस है? पहचानकर नाम लिखिए?
   1. गाव गुनि, गनिका, गंधर्व और सारद, सेस सबै गुन गावत
   2. धूरि भरे अति शोभित स्याम जू
   3. झांकि झरोखन तै ब्रजबाला

(3) दीर्घउत्तरीय प्रश्न –

1. रसखान कवि की कृष्ण–भक्ति पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. निम्न पद का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए –
   ताहि अहीर की छोहरियाँ, छछिया भरि छाछ पै नाच नचावै।
3. नीचे लिखे पंक्तियों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए –
   1. धूरि भरि अति शोभित............................ माखन रोटी।
   2. आवते वन मनमोहन.................................. ताप कसाला।
   3. काहू को माखन चाखि.............................. भय उपजायो

शब्दार्थ

धूरी भरे – धूल से सने हुए
स्यामजू – कृष्ण
पग – पैर
पैजनि – पाजेब, पाँव में पहनने का आभूषण
पीरी – पीली
कछौटी – घुटने तक कसी हुई धोती
विलोकत – देखकर
कोटि – करोड़
कलानिधि – चंद्रमा
काग – कौंआ
भाग – भाग्य
सजनी – सखी
गाइन – गाय
लसै – सोहे
बेनु – बंशी
अभीत – निर्भय

चकै – चकित
द्योस – दिन, दिवस
कसाला – कष्ट, तकलीफ
लख्यौ – देखा
हिय् हियरा – हृदय
उमह्यौ – उमड़ गया
इन बैरिन को – इन दुश्मनों को
बोल–कुबोल – भले–बुरे वचन
सहौरी – सहे
सनेह लग्यौ – प्यार हो गया
रहयौ न रहयौ – रहे या न रहे
इक रंग रंगी – एक साँवलें कृष्ण के रंग में रंग गई, एक से प्यार कर बैठी
सोई रंग रहयौ – वही रंग बना रहा

काहू को – किसी का
चाखि गयो – चख गया
ढरकायो – लुढ़का दिया
चीर लै – वस्त्र लेकर
रूख चढ्यौ – पेड़ पर चढ़ गया
गुंज – घुंघची की माला
धरा – पृथ्वी
छहरायो – बिखेर दी
बरजै – मना करने पर
आउरी – अरी सखियो, आओ
बूझै – पूछती हैं
छोहरा – छोकरा, बालक
जायो – पैदा किया है
भयो उपजायो –भय को जन्म दिया है
राखिहौ – रखूँगी
पहिरौंगी – पहनूँगी
पितांबर – पीला वस्त्र, पीतांबर

लै लकुटी – लाठी पकड़कर
गोधन – गाय–बैल आदि पशु
ग्वारन संग – ग्वालों के साथ
फिरौंगी – घूमती रहूँगी
भावते – भाते हो, प्रिय हो
ओहि – उसको, श्रीकृष्ण को
मुरलीधर – श्रीकृष्ण
अधरान धरी – होठों पर रखी हुई
न धरौंगी – नहीं रखूँगी
गुन – गुण
त्रिलोचन – महादेव
छछिया – दोना, मिट्टी का छोटा पात्र
छोहरियाँ – लड़कियाँ

पाठ–14

भारत की ये बहादुर बेटियाँ

मूलभाव :–

'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' एक फीचर है, जो विभिन्न क्षेत्रों में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँची तीन भारतीय महिलाओं पर लिखा गया है। इस तरह के फीचर को पर्सनालिटी फीचर या व्यक्तित्व सम्बंधी फीचर कहते हैं। फीचर में घटनाओं की पृष्ठभूमि, विश्लेषण, और चित्रात्मकता होती है। इसे लोकरूचि के अनुकूल बनाया जाता है। भारत की इन तीनों बहादुर बेटियों का व्यक्तित्व और कृतित्व प्रेरक प्रसंगों से भरे हुए हैं। इनकी जीवनशैली को आत्मसात कर हम भी अपने जीवनशैली में परिवर्तन ला सकते हैं। भारत की ये तीन बहादुर बेटियाँ हैं :–

1. कल्पना चावला : अंतरिक्ष में पहली भारतीय महिला।
2. किरण बेदी : एक सफल प्रशासक।
3. बछेंद्री पाल : पहली महिला एवरेस्ट विजेता।

भारत की ये बहादुर बेटियाँ

'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः' अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का निवास होता है, यानि वहाँ सुख–समृद्धि, शांति होती है। यह बात प्राचीन काल में मनुस्मृति में कही गई थी। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि उस वक्त नारी का सम्मान नहीं होता था और यह बात नारी के सम्मान के बढ़ावा देने के उद्देश्य से कही गई थी। बल्कि यह बात अनुभव से कही गई थी। प्राचीन काल में हमारे देश में नारी समाज की बहुत ही सम्मानीय सदस्य थी। गार्गी, मैत्रेयी, गौतमी, अपाला, आदि प्राचीनकाल की प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित नारियाँ हैं। प्राचीनकाल से ही नारियाँ हमारे देश में पुरूष के बराबर बैठती रही हैं। और समाज के निर्माण कार्यों में अपना योगदान देती रही हैं।

किंतु मध्यकाल तक आते–आते हमारे देश पर जल्दी–जल्दी और कई आक्रमण हुए, जिससे देश की पूरी समाज व्यवस्था ही बिगड़ गई। ऐसे में नारी के प्रति लोगों की दृष्टि भी बदली तब नारी की सीमाएँ ध धीरे–धीरे घर की चारदीवारी तक सिमट कर रह गई। आज हम जिस पुरूष प्रधान समाज की बात करते हैं, वह एक प्रकार से मध्यकाल की ही देन है। शायद यही कारण है कि मध्यकाल में मीरा के अलावा बहुत कम प्रतिष्ठित नारियों के नाम हमारे समाने आते हैं। प्राचीनकाल में यह स्थिति इतनी जटिल नहीं थी। बल्कि उस काल में तो मातृ–सत्तात्मक समाज के भी प्रमाण मिलते हैं, यानि समाज में नारी को निर्णय लेने का पूरा अधिकार प्राप्त था।

आधुनिक काल तक आते–आते मध्यकालीन मानसिकता में काफी परिवर्तन आये। नारी एक बार फिर से अपनी पूरी क्षमता, शक्ति और साहस के साथ समाज में दिखाई देने लगी। शिक्षा के प्रचार–प्रसार से उसका मध्यकालीन हीनताबोध दूर हो गया, वह पूरी तरह आत्मविश्वास से भर गई। आप आजादी की लड़ाई का उदाहरण ही ले लीजिए भीकाजी कामा, सरोजनी नायडू, अरूणा आसफ अली, कैप्टन लक्ष्मी सहगल आदि बहुत सारे नाम आपके जेहन में आते जाएँगे। गांधी जी के आह्वान पर न जाने कितनी महिलाएँ घर–बार छोड़ कर देश की आजादी के लिए संघर्ष करने निकल पडी। चाहे वह गाँव की हो ,छोटे कस्बे की हों या महानगर की हो, चाहे वे पढ़ी लिखी हों, चाहे गरीब हों या अमीर... सभी वर्गों की नारियाँ पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आजादी की लड़ाई में घर से बाहर निकल पड़ी थीं।

आजादी के बाद, वर्तमान समय में, जब शिक्षा और तकनीक की सुविधाएँ बढ़ी हैं, तो महिलाओं ने एक बार फिर से अपनी क्षमता, साहस और बुद्धिमता का परिचय देना शुरू कर दिया। आज, जब यह कहा जाता है कि महिलाएँ पुरूषों से कम नही हैं तो इसलिए नहीं कि उनके प्रति दया भावना है, बल्कि उन्हाने यह बात सिद्ध कर दिखाई है। आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसमें महिलाओं की भागीदारी नहीं है – चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो ,प्रशासन का क्षेत्र हो, राजनीति का क्षेत्र हो, अर्थव्यवस्था, व्यापार या तकनीक का क्षेत्र हो – हर जगह आपको महिलाएँ काम करती नजर आएँगी। अब तो हिमालय की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट तक पहुँचने, अंतरिक्षयान की यात्रा करने और पुरूष वर्चस्व वाले पुलिस प्रशासन के क्षेत्र में भी महिलाओं ने सफलता अर्जित कर ली हैं। आज चाहे हवाई जहाज उड़ाने का काम हो, रेल इंजन चलाने का काम हो, बस या आँटो रिक्शा चलाने का काम हो या पेट्रोल पंपो पर पेट्रोल भरने का ही काम क्यों न हो, हर काम अब महिलाएँ कर रही हैं। इंजीनियरिंग के क्षेत्र में हवाई जहाज के इंजन ठीक करने से लेकर स्कूटर ठीक करने तक के क्षेत्र में महिलाएँ सक्रिय हैं। इतना ही नहीं, अब तो उन्होंने पूरी दुनिया में सिद्ध कर दिखाया है कि महिलाएँ पुरूषों की अपेक्षा अधिक क्रियाशील, ईमानदार तथा कुशल प्रशासक होती हैं।

आज समाज का चाहे जो भी वर्ग हो, हर वर्ग की महिलाएँ समाज निर्माण के कार्य में आगे आ रही हैं। चाहे वे साधारण परिवार में पली बढ़ी हों, मध्यम परिवार में पली हों या बिलकुल निर्धन परिवार में, अभाव उनकी क्षमता के आगे बौना ही साबित होता हैं। महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिखाया हैं कि कठिनाइयाँ चाहे जितनी बड़ी हों, मुश्किलें चाहे जितनी विकराल हों, यदि साहस और आत्मविश्वास हैं तो दुनिया का कोई भी कार्य कठिन नहीं है। यही कारण है कि महिलाओं ने न केवल अपने देश में बल्कि विदेशों में भी भारत का नाम ऊँचा किया है। चाहे वह फिल्म निर्माण या अभिनय का क्षेत्र हो, फैशन का क्षेत्र हो, चिकित्सा का क्षेत्र हो, अनुसंधान का या अन्य कोई क्षेत्र, हर क्षेत्र में अपनी योग्यता का लोहा मनवाया है। अमेरिका और ब्रिटेन में ही चले जाएँ, जो कि दुनिया के शक्तिशाली देशों में गिने जाते हैं, वहाँ भारत की महिलाएँ चिकित्सा, कानून तथा फिल्म निर्माण के क्षेत्र में पुरूषों से कही आगे हैं।

भारत की आधुनिक महिलाओं की बात करते हुए हम केवल अंतरिक्ष विज्ञान ,प्रशासन तथा खेल को ही लें तो जो नाम सबसे पहले हमारे सामने आते हैं, वे हैं – कल्पना चावला, किरण बेदी, और बछेंद्री पाल। ये तीनों महिलाएँ अब भारतीय महिला के अदम्य साहस, बुद्धि कौशल और कर्तव्य निष्ठा का प्रतीक बन चुकी हैं। ये महिलाएँ किसी बहुत बड़े या सम्पन्न परिवार से नहीं आई हैं, न इन्हें अधिक सुख–सुविधाएँ प्राप्त थी। इनका पालन पोषण भी सामान्य भारतीय लड़कियों की तरह ही हुआ था। इनकी शिक्षा–दीक्षा भी सामान्य लोगों की तरह ही हुई थी। जब इन्होंने अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ना शुरू किया था, तब सामान्य लड़कियों की तरह ही इनका भी विरोध हुआ था, लेकिन इन्होंने अपने साहस और आत्मविश्वास के बल पर लोगों के विरोध या प्रतिकार पर ध्यान नहीं दिया और अपने लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ती रहीं ।

कल्पना चावला : अंतरिक्ष में पहली भारतीय महिला

कल्पना चावला का जन्म हरियाणा प्रांत के करनाल शहर में 1961 की पहली जुलाई को एक साधारण व्यापारी परिवार में हुआ था। पिता बनवारी लाल एक साधारण व्यापारी हैं तथा माँ संयोगिता एक सामान्य गृहिणी। कल्पना की पढ़ाई–लिखाई भी सामान्य लड़कियों की तरह उनके शहर के स्कूल से शुरू हुई थी, लेकिन कल्पना ने अपने लक्ष्य को ध्यान में रखा और साहस के साथ आगे बढ़ती रही। जब कल्पना 11वी कक्षा में पढ़ती थी तब अमेरिकी अंतरिक्ष यान 'वाइकिंग' मंगल ग्रह पर उतरा था। इस बात से कल्पना इतनी रोमांचित हुई कि उन्होंने अपनी कक्षा की परियोजना में मंगल ग्रह को दर्शाया। शुरू से ही कल्पना के मन में अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति लगाव रहा और वे अंतरिक्ष की यात्रा के सपने देखती रहीं। शायद यही कारण है। कि परिवारवालों के लाख मना करने के बाद भी उन्होंने चंडीगढ़ के पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज में एअरोनॉटिकल इंजीनियरिंग (वैमानिक) को अपना विषय चुना। इसके लिए उनके सहपाठी उनका मजाक, उड़ाते रहे कि देखो अब लड़कियाँ भी एअरोनाटिकल इंजीनियर बनने चली हैं, लेकिन उन्होंने किसी की परवाह नहीं की। सन् 1982 में इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त कर, कल्पना अपने परिवारवालों के कठोर विरोध के बावजूद आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका चली गईं। वहाँ उन्होंने टेक्सास विश्वविद्यालय से एअरोस्पेस इंजीनियरिंग में एम.एस. की डिग्री ली।

तत्पश्चात् बोल्डर में कोलराडो विश्वविद्यालय से 1988 में एअरोस्पेस में पी–एच.डी की डिग्री प्राप्त की। इस तरह उनके अंतरिक्ष में जाने के बचपन के सपने साकार होने का भी वक्त आ गया। जब अमेरिकी अंतरिक्षयान के कोलंबिया मिशन के लिए वैज्ञानिकों का चुनाव हो रहा था, तब 2,962 प्रतियोगियों में सर्वाधिक योग्य पाया गया और उन्हें उस मिशन का विशेषज्ञ बनाया गया। इसके लिए कल्पना ने कठोर प्रशिक्षण लिया और अंतरिक्ष की यात्रा पर पहली बार निकल पड़ी। जब वह अंतरिक्ष में थी तब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री इंद्रकुमार गुजराल ने उनसे अंतरिक्ष में ही बात कर उन्हें इस अभियान के लिए बधाई दी। उनका यह अभियान काफी सफल रहा और उस दौरान उन्होंने कई नई प्रयोग किए। हालांकि इसके बाद उन पर प्रशासन संबंधी कुछ आरोप भी लगे, किंतु उनकी परवाह किए बिना उन्होंने सबको अपनी योग्यता का लोहा मनवा दिया।

फिर जब अमेरिका के अंतरिक्ष यान कोलंबिया का दूसरी बार अंतरिक्ष में जाने का कार्यक्रम बना तो एक बार फिर से कल्पना को उसके अभियान दल में शामिल किया गया। 16 जनवरी 2003 को कल्पना एक बार फिर अंतरिक्ष की यात्रा पर निकल पड़ीं। 16 दिन के इस अभियान में 80 प्रयोग किए गए, जिसमें मानव शरीर ,कैंसर कोशिकाओं की परीक्षा और कीट पतगों पर भारहीनता संबंधी प्रयोग शामिल थे। 29 जनवरी 2003 को इस अभियान दल के यात्रियों ने अपने इस मिशन को कामयाब बताया। लेकिन दुर्भाग्य कि 16 दिन की अपनी सफल यात्रा के बाद जब अभियान दल 1 फरवरी 2003 को पृथ्वी पर लौट रहा था, तो पृथ्वी से कुछ मिनट की दूरी पर ही वह भयानक धमाके के साथ ही नष्ट हो गया और अपने अभियान दल के शेष सात साथियों के साथ अंतरिक्ष की यह बेटी अंतरिक्ष में ही खो गई।

कल्पना के इस दुर्भाग्यपूर्ण अंत से पूरी दुनिया स्तब्ध रह गई। भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संसद में कल्पना के प्रति श्रद्धांजली व्यक्त करते हुए घोषणा की कि उनकी स्मृति में अंतरिक्ष यान 'मेट सेट' का नाम 'कल्पना–1' रखा जाएगा।

इस प्रकार अदम्य साहस, दृढ़ इच्छा शक्ति और कर्तव्यनिष्ठा के बल पर भारत की बेटी कल्पना ने न केवल महिला जाति का नाम ऊँचा किया बल्कि पूरे देश का नाम भी विश्व इतिहास में मोटे अक्षरों में अंकित कर दिया।

000

किरण बेदी : एक सफल प्रशासक

इसी प्रकार जब भारतीय प्रशासक की बात चलती है तो कल्पना की तरह किरण बेदी का नाम हमारे जेहन में उभरता हैं। किरण बेदी भी एक साधारण परिवार में जन्मी थीं। उनका जन्म 9 जून 1945 को पेशावर (अब पाकिस्तान में) में हुआ था इनके परिवार का माहौल पुरूष प्रधान था। उनके दादा ही घर के तानाशाह थे। उन्हीं के फैसले लागू होते थे। लेकिन किरण ने अपने साहस और आत्म विश्वास के बल पर तमाम विरोधों को धता बताते हुए अपना लक्ष्य प्राप्त किया।

वे बचपन में रोज 16 किलोमीटर की बस यात्रा करके स्कूल जाती थीं। 7 वर्ष की उम्र में उन्होंने टेनिस खेलना शुरू किया और जब इस खेल में उनके बाल बाधा बनने लगे तो उन्हें कटवा दिया। तब से अब तक वे वैसी ही हैं। किरण का मानना हैं कि ''जो जीता वही सिकंदर' हारनेवालों के लिए दुनिया में कोई जगह नहीं हैं।'' और यही मनोबल उन्हें तमाम विरोधों और दकियानूसी खयालों के सामने डट कर खड़ा रहने में मदद करता रहा। इसी का परिणाम है कि किरण बेदी ने प्रथम भारतीय महिला आई.पी.एस. होने का गौरव प्राप्त किया।

जब किरण बेदी ने पुलिस की नौकरी में जाने का फैसला लिया तब उनके अधिकारियों, साथ चुने गए प्रशिक्षार्थियों ने उन्हें बहुत समझाया था कि पुलिस–प्रशासन महिलाओं के वश की बात नहीं है, लेकिन किरण में आत्म विश्वास इतना भरा था कि वे अपने निर्णय पर अडिग रहीं। फिर उन्होंने पुलिस का कठोर प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रशासन में ऐसे–ऐसे ऐताहासिक काम किए, जो आज तक काई पुरूष न कर सका। वे आज भी पुलिस प्रशासन में हैं **(टीप :– अब वे सेवानिवृत्त हो चुकी हैं)** और पुलिस–प्रशासन के लिए एक मिशाल हैं।

किरण ने विकट स्थितियों में भी अपने अदम्य साहस का परिचय दिया। जहाँ दिल्ली में उन्होंने पहली बार बीट अफसर और बीट बॉक्स की स्थापना की, वहीं 1980 में दिल्ली में तस्करी और सांसी अपराधी गिरोह का सफाया कराया। 1979 में जब खुली तलवारें लेकर सिखों का हुजुम निकल पड़ा था तब किरण बेदी ने सिर्फ डंडे के बल पर उन्हें खदेड़ भगाया था। इसी प्रकार जब उन्होंने यातायात पुलिस का प्रभार संभाला तब दिल्ली की सड़कों पर लापारवाही से और मनमाने ढंग से खड़ी गाड़ियों को क्रेन से उठवाना शुरू कर दिया। परिणामतः दंड शुल्क देने के भय से लोगों ने गाड़ियाँ मनमाने ढंग से खड़ी करना बंद कर दिया और सड़कों पर यातायात व्यवस्था सुचारू हो गई। इनके इस निर्णय से खीझ कर लोगों ने मजाक में उनका नाम बदल कर 'क्रेन बेदी' कर दिया था। इसी प्रकार, उन्होंने 1986 में यमुना पुश्ते की झुग्गियों में चल रही नशीले पदार्थों की अवैध तस्करी को भी बंद कराया। एक बार जब एक घर में आग लग गई थी और उसमें 17 लोग फंस गये थें, तब किरण बेदी वहाँ पहुँची और देखा कि सिपाही खड़े एक दूसरे का मुँह देख रहे हैं। तब वे पास के एक हैंडपंप के नीचे बैठ गई और एक सिपाही को बुलाकर कहा कि पानी चलाकर मुझे भिगा दो। इस तरह उनकी वर्दी पूरी गीली हो गई तो वे आग में कूद पड़ीं और अकेले एक–एक कर 8 लोगों को बाहर निकाल दिया। उन्हें ऐसा करते देख बाकी सिपाहियों नें भी वैसा ही किया और उन 17 लोगों को सुरक्षित बचा लिया गया। इस तरह के बहुत सारे साहसिक कार्य उनके नाम दर्ज हैं।

किरण बेदी को जब दिल्ली के तिहाड़ जेल का प्रभार सौंपा गया तों उन्होंने देखा कि वहाँ कैदी बहुत सारी बुराइयों में लिप्त हैं। नशाखोरी करते हैं साथी कैदियों के साथ बर्बरतापूर्ण व्यवहार करते हैं। पुलिस भी उनके साथ कठोर व्यवहार करती है तो उन्होंने वहाँ की व्यवस्था बदली। उनके लिए शिक्षा, प्रशिक्षण और मनोरंजन का प्रबंध कराया। उन्हें योगाभ्यास कराया जाने लगा। वे रोज प्रार्थना में शामिल होने लगे। उन सबको अपने हुनर दिखाने का मौका मिलने लगा। कोई दरी–कालीन बुनता, कोई पढ़ाता, कोई बागवानी करता, कोई अगरबत्तियाँ, बड़ियाँ, आचार आदि बनाता। इस तरह जेल में एक प्रकार का उत्पादन कार्य शुरू हुआ, जिसे बेचकर प्राप्त धन को जेल के सुधार कार्यों में लगाया जाने लगा। इस तरह न केवल जेल प्रशासन में सुधार आया बल्कि कैदियों के मन में जेल की बर्बरता का आतंक भी दूर हुआ। कैदियों में रचनात्मक शक्ति का विकास हुआ।

इस तरह के बहुत से काम किरण बेदी ने गरीब असहाय बच्चों तथा कैदियों के लिए काम करनेवाली स्वयंसेवी संस्थाएँ 'नव ज्योति' तथा 'इंडिया विजन' खोलकर भी किए। किरण के इन साहसिक कार्यों का तथा समाज सेवा के लिए उन्हें कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है। इनमें से 1980 में एशिया क्षेत्र का वर्ष की विशिष्ट महिला पुरस्कार, स्विस जर्मन जोसेफ व्यूज पुरस्कार तथा मैगसेसे पुरस्कार प्रमुख हैं। स्विस जोसेफ व्यूज पुरस्कार प्रदान करते हुए वहाँ की संस्था ने किरण को 'सोशल स्कल्पचर' कहा था।

इस प्रकार किरण ने यह सिद्ध कर दिखाया कि कोई भी क्षेत्र महिलाओं के लिए वर्जित नहीं है। वे अपने साहस, कर्तव्यनिष्ठा और आत्मविश्वास के बल पर कठिन से कठिन कार्य भी कर सकती हैं।

बछेंद्री पाल : पहली महिला एवरेस्ट विजेता

कल्पना और किरण की तरह ही बछेंद्री पाल भी साहस की पर्याय हैं। बछेंद्री को एवरेस्ट की चोटी पर चढ़नेवाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त है। बछेंद्री का जन्म भी परंपरागत पुरूष वर्चस्व वाले एक साधारण भारतीय परिवार में हुआ था। पिता किशनपाल सिंह और माँ हंसादेई नेगी की पाँच संतानों में बंछेद्री तीसरी संतान हैं।

किशनपाल सिंह और माँ हंसादेई नेगी की पाँच संतानों में बंछेद्री तीसरी संतान हैं। बछेंद्री के बड़े भाई को पहाड़ों पर चढ़ना अच्छा लगता था। लेकिन जब बछेंद्री उनके साथ पहाड़ पर जाना चाहती थीं तो उन्हें डांट कर मना कर दिया जाता था। इससे बछेंद्री का मनोबल और बढ़ा और पहाड़ चढ़ने की इच्छा दृढ़ होती गईं। उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे भी वही करेंगी, जो लड़के करते हैं। वे किसी से पीछे नही रहेंगी, बल्कि उनसे बेहतर ही कर दिखाएंगी। और इसी जज्बे से पर्वतारोहण का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया।

बछेंद्री को बचपन में रोज 5 किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल जाना पड़ता था। बाद में पर्वतारोहण प्रशिक्षण के दौरान उनका कठोर परिश्रम बहुत काम आया। आठवीं पास करने के बाद पिता ने उनकी पढ़ाई का खर्च उठाने से मना कर दिया। बछेंद्री ने इसका भी रास्ता तलाश किया और सिलाई का काम सीखा और सिलाई करके पढ़ाई का खर्च जुटाने लगीं। इस तरह उन्होंने संस्कृत में एम. ए. तथा बी. एड. तक की शिक्षा प्राप्त की।

पढ़ाई के साथ–साथ बछेंद्री ने पहाड़ पर चढ़ने के अपने लक्ष्य को भी हमेशा अपने सामने रखा। इसी दौरान बछेंद्री ने कालानाग पर्वत की चढ़ाई की। 1982 में उन्होंने गंगोत्री ग्लेशियर (6,672 मी.) तथा 'रूड गैरा' (5,819 मी.) की चढ़ाई की, जिससे इनमें आत्म–विश्वास और बढ़ा।

अगस्त 1983 में जब दिल्ली में हिमालय पर्वतारोहियों का सम्मेलन हुआ तब वे पहली बार तेनजिंग नोर्गे (एवरेस्ट पर चढ़नेवाले पहले पुरूष) तथा जुंके ताबी (एवरेस्ट पर चढ़नेवाली पहली महिला) से मिली। तब उन्होंने संकल्प लिया कि वे भी उनकी ही तरह एवरेस्ट पर पहुँचेगी। और वह दिन भी आया, जब उसने 23 मई को ऐवरेस्ट पर पहुँचकर भारत का झंडा फहरा दिया। उस समय उनके साथ पर्वतारोही अंग दोरजी भी थे। इस तरह बछेंद्री को एवरेस्ट पर पहुँचनेवाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त हुआ।

कहने का तात्पर्य यह है कि अदम्य साहस और आत्मविश्वास के बल पर भारतीय महिलाओं ने पूरी दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाई हैं। बहुत साधनों के न होते हुए भी उन्होंने लक्ष्य प्राप्ति में आने वाली कठिनाइयों के सामने कभी घुटने नहीं टेके। उन्होंने सिद्ध कर दिखाया कि अगर व्यक्ति में आत्म–विश्वास, लगन, साहस और दृढ़–इच्छा शक्ति हो तो अभाव या अन्य कोई भी कठिनाई उसका रास्ता नहीं रोक सकती।

आज तो भारत में महिलाओं की रक्षा और प्रोत्साहन संबंधी और उनके साथ किए जाने वाले भेदभाव के खिलाफ कई कानून भी बन गए हैं, जिसके द्वारा यदि पुरूष अपना वर्चस्व स्थापित करने लिए उन्हें प्रताड़ित करता है या परेशान करता है तो वे इसे दंडित करा सकती है। आज महिलाओं का आत्मविश्वास, लगन साहस और दृढ़ इच्छा–शक्ति है तो अभाव या अन्य कोई भी कठिनाई उसका रास्ता नहीं रोक सकती।

शब्दार्थ

अंतरिक्ष – आकाश, ग्रहों या तारों के बीच की शून्य जगह
एअरोनॉटिक्स – वैमानिकी, विमान विज्ञान एअरोनॉटिकल
इंजीनियरिंग – वैमानिक अभियांत्रिक, वैमानिकीय इंजीनियरी

अभियान – लक्ष्य, प्रेषण, मिशन
विशेषज्ञ – किसी विषय का विशेष रूप से जानकार
धता बताना (मु.) – परवाह न करना, नियम तोडना
तिहाड़ – दिल्ली में स्थित, भारत का सबसे बड़ा कारागार, जेल
खूँखार – खून पीनेवाला, भयंकर,क्रूर, निर्दय
बर्बर – उद्दंड, निर्दय
बर्बरतापूर्ण – निर्दयता से भरा, असभ्य।
अव्यवस्था – नियम के खिलाफ
अव्यवस्थित – मर्यादा रहित
पार्किंग – खड़ा करना, पार्क करना, गाड़ियों को खड़ा करना
योगासन – योग करने के लिए बैठने का ढंग, कुछ विशेष मुद्राएँ
विवश – बेबस, लाचार
हीनता – कमी, क्षुद्रता, बुराई
हीनता बोध – मन में यह विचार आना कि मैं बहुत बुरा हूँ,
अपने को छोटा समझना

हिंस्र – हिंसक, हिंसा करनेवाला क्रूर
गौरव – महत्व, सम्मान, आदर
नशाखोरी – नशा करने की आदत
नवाजा गया – सम्मानित किया गया, पुरस्कार दिया गया
सोशल (अंग्रेजी) – सामाजिक
स्कल्पचर (अंग्रेजी)– मूर्तिकला , मूर्ति, प्रतिमा
'सोशल स्कल्पचर' – यहाँ अर्थ है समाज का पुनर्निमाण करनेवाला
समाज को नये सिरे स गढ़नेवाला

पर्वत– शिखर – पहाड़ की चोटी, सबसे ऊँची चोटी
जेहन – दिमाग
तानाशाह – अपने ही बात मनवानेवाला
सर उठाने का मौका – गर्व करने का मौका।
जज्बा – हौसला, भावना

पाठ्‌यगत प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(अ) खाली स्थान भरिए :–

1. किरण बेदी ने .... की स्थापना की।
2. कल्पना चावला की स्मृति में .... का नाम 'कल्पना–1' रखा जाएगा।
3. एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला का नाम .... है।
4. किरण बेदी को .... और .... से सम्मानित किया गया।
5. कल्पना चावला ने सन् .... में इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की।

उत्तर – 1. बीट बॉक्स 2. अंतरिक्षयान मेट–सेट
3. बछेंद्रीपाल 4. मैगसेसे, स्विस जर्मन जोसेफ ब्यूज
5. सन् 1982

(ब) उचित सम्बन्ध जोड़िए –

	अ		ब
1.	किरण बेदी	–	कल्पना चावला
2.	ऐवरेस्ट की चढ़ाई	–	स्वंय सेवी संस्था
3.	एअरोस्पेस	–	मैगसेसे
4.	प्रथम भारतीय महिला आइ.पी.एस	–	बछेन्द्री पाल
5.	नव ज्योति	–	किरण बेदी

उत्तर – 1 मैगसेसे 2. बछेन्द्रीपाल 3. कल्पना चावला
4. किरण बेदी 5. स्वंय सेवी संस्था

(2) लघुउत्तरीय प्रश्न

1. एक फरवरी 2003 को क्या दुर्घटना हुईं?
2. किरण बेदी का जन्म कब हुआ और कहॉ हुआ?
3. बछेन्द्रीपाल ने 1982 में किस पर्वत की चढ़ाई की?
4. भारतीय महिलाओं ने पूरी दुनिया में अपनी पहचान कैसे बनाई?
5. एअरोनॉटिक्स इंजीनियरिंग का क्या अर्थ है?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' पाठ का मूल भाव क्या है?
2. घर में आग लगने पर किरण बेदी ने क्या किया?
3. दिल्ली के तिहाड़ जेल में किरण बेदी के द्वारा क्या–क्या कार्य करवाया गया?
4. बछेंद्रीपाल का पहाड़ पर चढ़ने की इच्छा क्यों दृढ़ होती गई ?
5. किस बात से रोमांचित होने के कारण कल्पना चावला का लगाव अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति हुआ?

6. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

तैराकी आनंद की वस्तु होने के साथ–साथ हमारी आवश्यकता भी है। नदियों के आसपास के गाँवों के लोग सड़क मार्ग न होने पर एक दूसरे से तभी मिल सकते हैं जब उन्हें तैरना आता हो अथवा नदियों में नावें हों। प्राचीनकाल मे ंनावें कहाँ थी? तब तो आदमी को तैरकर ही नदियों को पार करना पड़ता था। किंतु तैरने के लिए आदिम मनुष्य को निश्चय ही प्रयत्न और परिश्रम करना पड़ा होगा, क्योंकि उसमें अन्य प्राणियों की भांति तैरने की जन्मजात क्षमता नहीं हैं। जल में मछली आदि जलजीवों को स्वच्छंद विचरण करते देख मनुष्य ने उसी प्रकार तैरना सीखने का प्रयत्न किया और धीरे–धीरे उसने इस काम में इतनी निपुणता प्राप्त कर ली कि आज तैराकी एक कला के रूप में गिनी जाने लगी है। विश्व में जो खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं, उनमें तैराकी प्रतियोगिता अनिवार्य रूप से सम्मिलित की जाती है।

प्रश्न 1 उपर्युक्त गद्य का उचित शीर्षक लिखिए?
प्रश्न 2 गद्याांश का सारांश एक तिहाई शब्दों में दीजिए?
प्रश्न 3 तैराकी को आज कला क्यों मानते हैं?
प्रश्न 4 तैराकी व्यायाम है या खेल? तर्क दीजिए।
प्रश्न 5 प्राचीन काल में तैराकी मनुष्य की आवश्यकता क्यों थीं?

योग्यता विस्तार :–
भारत की इन बेटियों के बारे में भी जानिए

1. – पद्मश्री सबा अंजुम करीम
भारतीय महिला हॉकी टीम की पूर्व कैप्टन

भारतीय महिला हॉकी टीम की पूर्व कप्तान सबा अंजुम की सफलता की यह कहानी संघर्षों की कहानी है। इनका जन्म 12 जून 1985, को केलाबाड़ी, दुर्ग, छत्तीसगढ़ में हुआ था। इनका प्रारम्भिक जीवन मुश्किलों में बीता। इनके माता–पिता इनकी प्रतिभा को पहचानते थे। इनकी माँ ने इन्हें हर कदम पर साथ दिया। इन्हें इस मुकाम तक पहुँचाने के लिए उन्होंने घर के बर्तन तक बेच दिये।

सबा अंजुम कहती हैं – ''मैं 2011 में भरतीय महिला हॉकी टीम की कैप्टन बनी। मैंने तीन राष्ट्रमंडल खेल, चार विश्वकप, चार एशियान गेम तथा 42 प्रतियोगिताओं में भाग लिया है। मैंने 14 मेडल जीता है और 200 अंतराष्ट्रीय मैचों में 92 गोल किया है।''

टीम में ये राइट फारवर्ड के पोजीशन पर खेलती थी। तनवीर अली इनके कोच थे।

08 april 2015 भारत के राष्ट्रपति से पद्मश्री सम्मान ग्रहण करती हुई सबा अंजुम

प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान :–

सबा अंजुम को खेलों में उनकी असाधारण उपलब्धियों के लिए भारत के राष्ट्रपति ने 2013 में खेल के क्षेत्र में सर्वोच्च माने जानेवाले अर्जुन पुरस्कार से तथा 08 अप्रेल 2015 को देश के चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया है। छत्तीसगढ़ सरकार ने सबा अंजुम को राज्य के सर्वोच्च खेल पुरस्कार ''गुण्डाधूर खेल रत्न'' सम्मान से सम्मानित किया तथा राज्य पुलिस सेवा में डी. एस. पी. पद पर नियुक्त किया है। ●

2 – मैरीकॉम
''मॅग्नीफिसेन्ट मैरी (प्रतापी मैरी)''

मैरीकाम का पूरा नाम मैंगते चंग्नेइजैंग मैरीकॉम (एम सी मैरी कॉम) है। इनकी उपलब्धियों से प्रभावित होकर एआइबीए ने उन्हें ''मॅग्नीफिसेन्ट मैरी (प्रतापी मैरी) का संबोधन दिया है।''

प्रारंभिक जीवन और परिवार :–

मैरी कॉम का जन्म 1 मार्च 1983 को मणिपुर के चुराचांदपुर जिले में एक गरीब किसान के परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा लोकटक क्रिश्चियन मॉडल स्कूल और सेंट हेवियर स्कूल से पूरी की। आगे की पढाई के लिए वह आदिमजाति हाई स्कूल, इम्फाल गयीं लेकिन परीक्षा में फेल होने के बाद उन्होंने स्कूल छोड़ दिया और फिर राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय से परीक्षा दी। मैरी कॉम की रुचि बचपन से ही एथलेटिक्स में थी। उनके मन में बॉक्सिंग का आकर्षण 1999 में उस समय उत्पन्न हुआ जब उन्होंने खुमान लम्पक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में कुछ लड़कियों को बॉक्सिंग रिंग में लड़कों के साथ बॉक्सिंग के दांव–पेंच आजमाते देखा। मैरी कॉम बताती है कि – ''मैं वह नजारा देख कर स्तब्ध थी। मुझे लगा कि जब वे लड़कियाँ बॉक्सिंग कर सकती है तो मैं क्यों नहीं?'' साथी मणिपुरी बॉक्सर डिंग्को सिंह की सफलता ने भी उन्हें बॉक्सिंग की ओर आकर्षित किया। मैरीकॉम की शादी ओन्लर कॉम से हुई है। उनके जुड़वाँ बच्चे हैं।

मैरी कॉम पाँच बार ''विश्व मुक्केबाजी प्रतियोगिता की विजेता रह चुकी हैं।'' 2012 के लंदन ओलम्पिक में उन्होंने काँस्य पदक जीता। 2010 के एशियाई खेलों में काँस्य तथा 2014 के एशियाई खेलों में उन्होंने स्वर्ण पदक हासिल किया है

प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान :– बॉक्सिंग में देश का नाम रोशन करने के लिए भारत सरकार ने वर्ष 2003 में उन्हे अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया एवं वर्ष 2006 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। ''जुलाई 29, 2009 को वे भारत के सर्वोच्च खेल सम्मान राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार के लिए (मुक्केबाज विजेंदर कुमार तथा पहलवान सुशील कुमार के साथ) चुनीं गयीं।'' नरजित सिंह एवं चार्ल्स एक्टिनसन इनके कोच हैं।

उनके जीवन पर एक फिल्म भी बनी जिसका प्रदर्शन 2014 मे हुआ। इस फिल्म में उनकी भूमिका प्रियंका चोपड़ा ने निभाई है।●

भारत को अपनी इन बेटियों पर भी गर्व है :– पी. टी. उषा (एथलेटिक – दौड़), सानिया मिर्जा (टेनिस खिलाड़ी), सायना नेहवाल (बैडमिंटन खिलाड़ी)। इनके बारे में जानकारी इकत्रित कीजिए।

सानिया मिर्जा

सानिया मिर्जा, जन्म – 15 नवंबर 1986, मुम्बई
जीवनसाथी – शोएब मलिक (विवाह 2010)
अभिभावक – नसिमा मिर्जा, इमरान मिर्जा
भाई–बहन – अनम मिर्जा
खेल – लॉन टेनिस
पुरस्कार – पद्म श्री, अर्जुन पुरस्कार

साइना नेहवाल

साइना नेहवाल भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी हैं। वर्तमान में वह दुनिया की शीर्ष वरीयता प्राप्त महिला बैडमिंटन खिलाडी हैं तथा इस मुकाम तक पहुँचने वाली वे प्रथम भारतीय महिला हैं।
जन्म – 17 मार्च 1990, हिसार, हरियाणा
पुरस्कार – पद्म श्री, राजीव गांधी खेल रत्न
भाई–बहन – अबू चंद्रान्शु नेहवाल
अभिभावक – हरवीर सिंह नेहवाल, उषा नेहवाल

छत्तीसगढ़ को अपनी इन बेटियों पर गर्व है :– तीजन बाई (पंडवानी गायिका), ऋतु वर्मा (पंडवानी गायिका), ममता चद्राकर (लोक गायिका)। इनके बारे में जानकारी इकत्रित कीजिए। ●

व्याकरण

मुहावरे एंव लोकोक्तियाँ

मुहावरे का अर्थ – मुहावरे ऐसे वाक्यांश होते हैं, जो सामान्य अर्थ का बोध न करा कर विशेष अर्थ का बोध कराते हैं। नीचे कुछ मुहावरे, उनके अर्थ और वाक्य में प्रयोग दिये गये हैं :–

1.आँखें दिखाना = क्रोध करना। शिक्षक के आँखें दिखाते ही सब छात्र शांत हो गये।

2. आँखें फेर लेना = ध्यान न देना।
सोहन ने अपनी माँ की तबियत देखकर आँखें फेर लीं।

3. अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना = संकट मोल लेना।
रामसिंह से तकरार बढ़ाकर तुमने अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारी है।

4. ईंट का जवाब पत्थर से देना = जैसे को तैसा जवाब देना।
राणा प्रताप ने अकबर को ईंट का जवाब पत्थर से दिया ।

5. ईद का चांद होना = बहुत दिनों बाद दिखायी देना।
राम आजकल ईद का चाँद गया है।

6. ईंट से ईंट बजा देना = करारा जवाब देना।
शिवाजी नें औरंगजेब की ईंट से ईंट बजा दी।

7. उड़ती चिड़िया पहचानना = अनजान व्यक्तियों के बारे में भी जान लेना।
मोहन को कोई धोखा नहीं दे सकता क्योंकि वह उड़ती चिड़िया पहचानता है।

8. उल्लूसीधा करना = अपना कार्य सिद्ध करना।
दलबदलू लोग अपना उल्लूसीधा कर रहे हैं।

9. उल्टी गंगा बहना = प्रतिकूल या उल्टा कार्य करना।
लड़की द्वारा लड़के से शादी का प्रस्ताव किया जाना उल्टी गंगा बहना जैसा कार्य है।

10.दाँत पीसना = गुस्सा प्रदर्शित करना।
मुझे फूल तोड़ता देख माली दाँत पीसता हुआ मेरे पीछे दौड़ा।

11. दाँतकाटी रोटी होना = गहरी दोस्ती होना।
जगदीश और रमेश में दाँत काटी रोटी का सम्बन्ध है।

12. धूप में बाल सफेद करना = बिना अनुभव लिए अधिक उम्र होना। तुमको यह छोटा–सा कार्य करना नहीं आता। मालूम होता है तुम्हारे बाल धूप में सफेद हुए हैं।

13. निहाल होना = अत्यधिक खुश होना।
मोहिनी घनश्याम जैसा सुयोग्य बेटा पाकर निहाल हो गई।

14. नाक में दम करना = बहुत तंग करना।
मीनू और रिंकु की शरारतों ने नाक में दम कर दिया है।

15. नींद टूटना = होश में आना, सावधन होना।
मेरी नींद तब टूटी जब मेरा बहुत–सा धन नष्ट हो गया।

16. पगड़ी उछालना = बदनाम करना या निन्दा करना।
दूसरों की पगड़ी उछालने में कुछ लोगों को बड़ा मजा आता है।

17. पानी–पानी होना = शर्मिन्दा होना। रामू अपनी करनी पर पानी–पानी हुआ।

18. पानी भरना = महत्व कम हो जाना।
कालिदास के सामने तत्कालीन सारे कवि पानी भरते थे।
19. फावड़े टिकाना = विश्राम करना।
श्रमिक लोग यदि फावड़े टिका दें तो संसार का गति रूक जायेगी।
20. बातें बनाना = गप्पें हाँकना।
बहुत से लोग केवल बातें बनाते रहते हैं, काम कुछ भी नहीं करते हैं।
21. बल्लियों उछलना = बहुत खुश होना। सुरेश ने ज्यों ही अपना रिजल्ट सुना त्यों हीं बल्लियों उछलने लगा, क्योंकि वह कक्षा में प्रथम आया था।
22. बछिया का ताऊ = भोला–भाला।
मोहन के पिता बछिया के ताऊ हैं, उन्हें कोई भी डाँटकर चला जाता है।
23. भौंहों पर बल पड़ना= नाराज होना।
अकबर का सन्देश सुनकर राणा प्रताप के भौहों पर बल पड़ गये।
24. मुँह छिपाना = किसी गलती से लजाना।
मैं उसकी चोरी की बात जानता हूँ इसलिए वह मुझे देखते ही मुँह छिपाने लगा।
25. मिट्टी में मिलना = नष्ट होना।
समय पर कार्यवाही न होने कारण उसके अरमान मिट्टी में मिल गये।

लोकोक्तियाँ
लोकोक्तियाँ एंव उनके अर्थ

लोकोक्ति – लोकोक्ति शब्द का अर्थ है लोक+उक्ति, जिसका अर्थ लोक में प्रचलित कथन है। कहावत अपने में स्वतन्त्र अर्थ रखने वाली लोक प्रचलित उक्ति हैं। लोकोक्ति को कहावत भी कहते हैं।
1. गरीबी में आटा गीला = गरीबी हालत में और खर्चा बढ़ जाना। एक तो मजदूरों का वेतन कम है फिर आजकल मिलों में हड़ताल हैं जो गरीबी में आटा गीला कर रहा है।
2. घर का भेदी लंका ढाये = अपने आदमी द्वारा अपना भेद बताये जाने के कारण हानि होना।
सुदृढ़ नगर की हार का कारण असन्तुष्ट मन्त्री का दुश्मन से मिल जाना था। तभी तो कहते हैं, घर का भेदी लंका ढाये।
3. चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात = थोड़े दिनों का सुख।
जीवन में पारस्परिक प्रेम, सहयोग, सद्भाव रखना चाहिये, क्योंकि चार दिनों की चाँदनी फिर अंधेरी रात होना ही है।
4. चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता = निर्लज्ज व्यक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अपराधियों के लिए जेल जाने में कोई शर्म नहीं है, कितना भी समझाने पर चिकने घड़े में पानी नहीं ठहरता।
5. छूछुँदर के सिर पर चमेली का तेल = अयोग्य व्यक्ति को अच्छी वस्तु की प्राप्ति। बदसूरत रामू की पत्नी खुबसूरत है, जिसे देखकर गाँव वाले छूछुँदर के सिर में चमेली का तेल का मुहावरा अनायास बोल जाते हैं।
6. जिसकी लाठी उसकी भैंस = बलवान ही अधिकार जीतता है।
आजकल अराजक तत्वों का बोलबाला है, जिससे हिंसा को बढ़ावा मिलता है। जनता भी क्या करे आखिर जिसकी लाठी उसकी भैंस जो है।

7. जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ = दोनों में बुराई का होना।
नगर का प्रशासक चाहे रामलाल बने, चाहे कन्हैयालाल, नगर कल्याण दोनों से सम्भव नहीं है। क्योंकि जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ।
8. जल में रहकर मगर से बैर = अपने आश्रयदाता या अपने से अत्यधिक धनवान–बलवान से विरोध करना।
9. काला अक्षर भैंस बराबर = बिना पढ़ा–लिखा होना। रेवती पढ़ी–लिखी नही हैं, अतः वह पत्र नही पढ़ सकेगी। उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।

धनीराम सेठ क्या बिड़लाजी के बराबरी कर सकता है। कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली।
11. कोउ नृप होय हमैं का हानि = उदासीन, कोई स्वार्थ न होना।
वर्तमान भारत में राजनीतिक संकट से जनता ऊब चुकी है, उनकी उदासीनता कोउ नृप होय हमें का हानि को चरितार्थ कर रही है।
12. खोदा पहाड़ निकली चुहिया = परिश्रम अधिक फल कम मिलना। सी.बी. आई जाँच में घोटालों पर थोड़ी जानकरी ही मिल पायी। स्पष्ट है खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
13. गंगा गये गंगादास जमुना गये जमुनादास = अवसरवादी।
निंदक दोनों पक्षों में जाकर एक–दूसरे की बुराई करता है, वह खुद मंदुभाषी बना रहता है, जिससे गंगा गये गंगादास, जमुना गये जमुनादास की स्थिति उजागर होती है।
14. आम के आम गुठलियों के दाम = दूना लाभ।
रामलाल को बेटे के जन्मदिवस पर इतने उपहार मिले कि उसने खर्चे से चौगुना प्राप्त कर लिया। इसी को कहते हैं आम के आम गुठलियों के दाम।
15. अधजल गगरी छलकत जाय = थोड़ी विद्या या थोड़ा धन पाकर घमण्ड करना। संदीप ने बी.ए. क्या पास कर लिया, गाँव में वह किसी को कुछ समझता नहीं। इसी को कहते हैं, अधजल गगरी छलकत जाय।
16. अब पछताए होत क्या, जब चिंड़ियाँ चुग गईं खेत = अवसर बीत जाने पर पश्चाताप करने से कोई लाभ नहीं होता है। राकेश ने साल भर तो परिश्रम किया किया नहीं, अतः परीक्षा में फेल हो गया और लगा पश्चाताप करने। उसके पिता ने उसे समझाते हुए कहा कि अब पछताए होत क्या, जब चिंड़ियाँ चुग गईं खेत।
17. ऊँची दुकान फीका पकवान = बाहरी तड़क–भड़क अधिक, वास्तविकता कम।
मँहगे अशोक होटल से अच्छा भोजन गनेशीराम के सस्ते होटल में मिलता है। यहाँ ऊँची दुकान फीका पकवान वाली बात है।
18. का वर्षा जब कृषि सुखाने = समय बीत जाने पर सहायता देने से क्या लाभ।
भोपाल गैस पीड़ितों को राहत राशि अब मिल रही है, जब स्थिति सामान्य हो चुकी है। ऐसे में का वर्षा जब कृषि सुखाने।
19. हाथकंगन को आरसी क्या = प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं।
जहाँ तक मोहन की योग्यता का प्रश्न है, उसका परीक्षाफल आपके सम्मुख है। आप देख सकते हैं हाथकंगन को आरसी क्या।
20. दूध का दूध और पानी का पानी = सच्चा न्याय, निष्पक्ष निर्णय।
पंचायत के निर्णय ने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया।

मुहावरे और लोकोक्ति (कहावत) में अंतर :–

मुहावरा	लोकोक्ति
1. मुहावरे ऐसे वाक्यांश होते हैं, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर विशेष अर्थ का बोध कराते हैं।	लोकोक्ति शब्द का अर्थ है लोक+उक्ति, जिसका अर्थ लोक में प्रचलित कथन है। इसे कहावत भी कहते है।
2. यह एक वाक्यांश होता है।	यह पूर्ण वाक्य होता है।
3. इसका अभिधार्थ ग्राह्य नहीं होता। इसका अर्थ लोकमान्यता पर आधारित होता है।	कहावत अपने में स्वतंत्र अर्थ रखनेवाली लोक अनुभव पर आधारित लोक–प्रचलित उक्ति है। अर्थ लोकमान्यता पर आधारित होता है।
4. यह मुख्य वाक्य के साथ प्रयुक्त होता है।	यह स्वतंत्र वाक्य के रूप में प्रयुक्त होता है।
5. मुख्य वाक्य से मुहावरे को पृथक कर देने पर वाक्य का अर्थ नष्ट हो जाता है। **उदाहरण :–** **पानी–पानी होना = शर्मिन्दा होना।** रामू अपनी करनी पर **पानी–पानी हुआ।**	लोकोक्ति को मुख्य वाक्य से पृथक कर देने पर मुख्य वाक्य का अर्थ नष्ट नहीं होता। **उदाहरण :–** **गरीबी में आटा गीला = गरीबी हालत में और खर्चा बढ़ जाना।** एक तो मजदूरों का वेतन कम है फिर आजकल मिलों में हड़ताल है। **इसी को कहते हैं – गरीबी में आटा गीला।**

निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए

प्रश्न 1. मुहावरे क्या हैं?

प्रश्न 2. लोकोक्तियाँ क्या हैं?

प्रश्न 3. लोकोक्ति और मुहावरे में अन्तर बताइए?

अभ्यास :–

– इस इकाई में दिये गये पाठों को पढ़कर वहाँ से कुछ मुहावरे और लोकोक्तियाँ चुनकर उनके अर्थ समझने का प्रयास कीजिए।

– यह भी समझने का प्रयास कीजिए कि मुहावरे और लोकोक्तियों के प्रयोग से क्या भाषा की कलात्मकता और संप्रेशणीयता बढ़ती है? कैसे?

– मुहावरे और लोकोक्तियों के प्रयोग से क्या भाषा सरल, सहज और सुंदर बनती है? कैसे?

सप्तम इकाई

पद्य –

चन्दगहना से लौटती बेर – कन्हैयालाल अग्रवाल

गद्य –

1 बहादुर (कहानी) – अमरकांत

2 जैसे कोई और हो (व्यंग्य) – अशोक शुक्ल

लेखन – प्रपत्र कैसे भरें

पाठ–15

चन्द्रगहना से लौटती बेर

केदारनाथ अग्रवाल

जीवन परिचय –

केदारनाथ अग्रवाल जी का जन्म 01 अप्रेल 1911 ई, में बांदा जिले के कमासिन गाँव मे हुआ था । वे पेशे से वकील थे । आप शोषित ओर पीडित लोगों की पीड़ा को अभिव्यक्ति देते हुए उनके विरूद्ध जनचेतना जाग्रत करनेवाले, प्रगतिशील जनवादी विचारधारा के कवि हैं। आपका निधन 22 जून 2000 में हुआ।

रचनाएँ –

कविता संग्रह	–	जमुनजल तुम, फूल नहीं रंग बोलते हैं, आग का आइना आदि।
उपन्यास	–	पतिया।
निबंध संग्रह	–	विचार–बोध, विवेक–विवेचन।
वार्ता	–	कवि मित्रों से दूर।

भावपक्ष–

केदारनाथ अग्रवाल प्रकृति का मनोहारी चित्रण करने में माहिर हैं। जीवन की वास्तविता और कठोरता को सहज ही अपनी कविताओ में अभिव्यक्त करते हैं। उनकी कविताओं में श्रमिक, कृषक और उनके संघर्षशील जीवन के अनेक चित्र हैं।

कलापक्ष –

केदारनाथ अग्रवाल की भाषा सहज और सरल है। देशज और बोलचाल की लोकभाषा का प्रयोग सार्थक है। अनूठे शब्द चयन और चित्रात्मकता उनकी कविता की प्रमख विशेषता रही है। प्रतीकों का भरपूर प्रयोग किया गया है।

साहित्य में स्थान –

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील विचार धारा के प्रमुख कवि माने जाते हैं। उन्हें साहित्य अकादमी और सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

केन्द्रीय भाव–

'चन्द्रगहना से लौटती बेर' कविता प्रकृति के सौदर्य को चि़त्रित करती है। इस कविता के माध्यम से कवि ने शहरी और ग्रमीण परिवेश एवम् दोनों की जीवनशैली का तुलनात्मक और प्रतीकात्मक चित्रण किया है। यह बात शीर्षक से ही स्पष्ट हो रही है कि चंद्रगहना नामक स्थान से लौटते समय कवि ने जो देखा उसे सरल सहज शब्दों में काव्य में बांध दिया है।

चन्द्रगहना से लौटती बेर

केदारनाथ अग्रवाल

देख आया चंद्रगहना
देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेंड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।

एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सज कर खड़ा है।

पास ही मिल कर उगी है
बीच में अलसी हठीली
देह की पतली, कमर की है लचीली,
नीले फूले फूल को सिर पर चढ़ाकर
कह रही है जो छुए यह
दूँ हृदय का दान उसको।

और सरसों की न पूछो –
हो गई सबसे सयानी,
हाथ पीले कर लिए है।,
ब्याह–मंडप में पधारी;
फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे ।

देखता हूँ मैं : स्वयंवर हो रहा है
प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है
इस विजन में
दूर व्यापारिक नगर से
प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।

और पैंरों के तले है एक पोखर
उठ रहीं इसमें लहरियाँ।
नील तल में तो उगी है धास भूरी,
ले रहीं वह भी लहरियाँ।
एक चाँदी का बड़ा–सा गोल खंभा
आँख को है चकमकाता।
हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी
प्यास जाने कब बुझेगी!

चुप खड़ा बगुला डुबाए टाँग जल में,
देखते ही मीन चंचल –
ध्यान निद्रा त्यागता है,
चट दबा कर चोंच में
नीचे गले के डालता है ।

एक काले माथवाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों को झपाटे मार फौरन
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबाकर
दूर उड़ती है गगन में।

पाठगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न .1दिये गये विकल्पों में से सही विकल्प चुन कर लिखिए –

1. देह की पतली कमर की लचीली कौन है?
   क. सरसों   ख. मछली   ग. अलसी   घ. लड़की
2. गुलाबी पंगड़ी बांधे सजे–संवरे कौन खड़ा है?
   क. दुल्हन   ख. दूल्हा   ग. बाराती   घ. घराती
3. तालाब का पानी कौन पी रहा है?
   क. बगुला   ख. पत्थर   ग. मछली   घ. काली चिड़िया
4. होली के मौसम में गाया जाने वाला लोकगीत कौन सा है?
   क. जसगीत   ख. फाग गीत   ग. सुआ गीत   घ. पंथी गीत
5. आँखों के चौधियाने का कारण क्या है?
   क. सूर्य   ख. चांदी   ग. चांदनी   घ. धन

उचित सम्बंध जोडिए –

1.	हाथ पीले करना	–	सरसों का
2.	चंद्र गहना	–	पतली कमर प्रतीक
3.	अलसी	–	झपटना
4.	स्वंयवर	–	विवाह होना
5.	झपाटे मारना	–	एक गाँव

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'सायनी होना' का क्या अर्थ है?
2. 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता में मानवीयकरण अलंकार के दो उदाहरण छांटकर लिखिए।
3. कवि ने चने को गुलाबी मुरैठा बांधे बैठा हुआ क्यों कहा है?
4. बगुला समाज के किस वर्ग का प्रतीक है?
5. 'सफेद बगुले' का कविता में आशय क्या है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मानवीयकरण अलंकार को उदाहरण देकर समझाइए?
2. कविता के आधार पर हरे चने के सौंदर्य का चित्रण कीजिए?
3. व्यापारिक नगर की अपेक्षा ग्रामीण अंचल को प्रेम के लिए उर्वर क्यों माना गया है?
4. चतुर चिड़िया के लिए काला और सफेद दोनों रंगों के विश्लेषणों का प्रयोग क्यों हुआ हैं ?
5. चंद्रगहना से लौटती बेर' के माध्यम से कवि पाठक को क्या संदेश देना चाहते हैं? लिखिए।
6. निम्न पद्याशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   1. हो गई सबसे सयानी ––––––– भूमि उपजाऊ अधिक है।
   2. एक काले माथवाली चतुर चिड़िया –––––दूर उड़ती है गगन में।

शब्दार्थ

चंद्रगहना– गाँव का नाम
मुरैठा – पगड़ी
अलसी – तिलहन का एक पौधा
सयानी – बालिग, समझदार
फाग – लोक गीत जो होली के पर्व पर गाया जाता है।
स्वयंवर – लड़की अपना वर स्वयं चुनती है।
अनुराग – प्रेम, प्यार
अंचल – आँचल
पोखर – तालाब
गोल खंभा – पानी में चंद्रमा की परछाई, प्रतिबिम्ब
मीन – मछली
निद्रा – नींद
श्वेत – सफेद
चटुल – चालाक
गगन – आकाश

उत्तर

प्रश्न 1.
1. ग
2. ख
3. ख
4. ग
5. ख

उचित सम्बंध जोडिए –
1. विवाह होना
2. एक गाँव
3. पतली कमर प्रतीक
4. सरसों का
5. झपटना

पाठ—16

बहादुर

अमरकांत

अमरकांत का जीवन—परिचय — प्रसिद्ध कहानीकार अमरकांत का जन्म 01 जुलाई 1925 ई. को ग्राम नगरा जिला बलिया उत्तरप्रदेश में हुआ था। अमरकांत ने पढ़ाई ,लिखाई इलहाबाद में पूरी की । अमरकांत उन लेखकों में से हैं जो 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन ' में शामिल हुए। प्रगतिशील विचारधारा के बहुचर्चित कहानीकार हैं। 17 फरवरी 2014 ई. को आपका निधन हुआ।

भावपक्ष — लेखक किसानों पर, निम्न मध्यमवर्ग की समस्याओं पर कहानी लिखते हैं और मनुष्य की जिजीविषा व जीवन शक्ति तथा जीवन की ऊर्जा को उत्घाटित करते हैं। इनके पात्र कहीं भी निराशा और हताशा से ग्रस्त दिखाई नहीं देते। उनके पात्रों में बड़ी से बड़ी समस्याओं को झेलने की क्षमता होती हैं। मानवीय संवेदना बहुत गहरी दिखाई देती है। साथ ही मानवीय रिश्तों और सम्बंधों की सधनता दिखाई देती है। नारी पात्रों के प्रति सामाजिक सवेंदना स्पष्ट दिखाई देती है।

भाषा—शैली — कहानी की भाषा बोलचाल की भाषा है। सहज एवं छोटे वाक्यों में बड़ी से बड़ी बात कह देने की ताकत दिखाई देती है। एक तरह से इनकी भाषा विचारों के संवाहक भाषा के रूप में दिखाई देती है। मुहावरों और तत्सम, तद्भव, क्षेत्रीय भाषा और ऊर्दू के शब्दों का आवश्यकता अनुरूप प्रयोग किया गया है। कहानी की भाषा पात्रों के व्यक्तित्व और उनके भावों के अनुकूल है।

रचनाएँ —

कहानी संग्रह :— 1. जिंदगी और जोक 2. देश के लोग 3. मौत का नगर 4. मित्र मिलन 5. कुहासा 6. तूफान 7. कला प्रेमी 8. प्रतिनिधि कहानियाँ

उपन्यास :— 1. सूखा पत्ता 2. आकाश पक्षी 3. काले उजले दिन 4. कँटीली राह के फूल 5. ग्राम सेविका 6. सुखजीवी 7. बीच की दीवार 8. सुन्नर पांडे की पतोहू 9. लहरें 10. इन्हीं हथियारों से

संस्मरण :— कुछ यादें कुछ बातें

बाल साहित्य :— 1. नेउर भाई 2. बानर सेना 3. खूँटा में दाल है 4. सुग्गी चाची का गाँव 5. झगरूलाल का फैसला

साहित्य में स्थान — अमरकांत जी प्रमुख काहानीकारों में माने जाते हैं। नई काहानी आंदोलन के बाद कहानी की जो नई धारा चली उस धारा को आगे बढ़ाने में अमरकांत का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अमरकांत को 2007 में 'साहित्य अकादमी,' 2009 में ''भारतीय ज्ञानपीठ,'' सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

बहादुर

अमरकांत

केन्द्रीय भाव –

संग्रहित कहानी में निम्न मध्यवर्गीय लोगों के जीवन की मजबूरियों और उनकी मानसिकताओं को बखूबी निखारा गया है। मध्यवर्गीय परिवारों के मासूम नौकरों के प्रति किये जानेवाले व्यवहार का चित्रण हुआ है। हमें क्रूरता बुरी लगती है। कहानी पढ़कर बहादुर पर हुए अत्याचार हमें बुरा लगता है और उसके प्रति मानवीय भाव जागृत होता है – यही तो इस कहानी का उद्देश्य है।

सहसा मैं काफी गंभीर हो गया था, जैसा कि उस व्यक्ति को हो जाना चाहिए था, जिस पर एक भारी दायित्व आ गया हो। वह सामने खड़ा था और आँखों को बुरी तरह मलका रहा था। बारह–तेरह वर्ष की उम्र। ठिगना चकइठ शरीर, गोरा रंग और चपटा मुँह। वह सफेद नेकर, आधी बाह की कमीज और भूरे रंग का पुराना जूता पहने था। उसके गले में स्काउटों की तरह एक रूमाल बँधा था। उसको घेर कर परिवार के अन्य लोग खड़े थे। निर्मला चमकती दृष्टि से लड़के को देखती और कभी मुझको और अपने भाई को। निश्चय ही वह पंच बराबर हो गई थी।

उसको लेकर मेरे साले साहब आये थे। नौकर रखना कई कारणों से बहुत जरूरी हो गया था। मेरे सभी भाई और रिश्तेदार अच्छे ओहदों पर थे और उन सभी के यहाँ नौकर थे। मैं जब बहन की शादी में घर गया तो वहाँ नौकरों का सुख देखा। मेरी दोनों भाभियाँ रानी की तरह बैठकर चारपाइयाँ तोंडती थीं, जबकि निर्मला को सबेरे से लेकर रात तक खटना पड़ता था। मैं ईर्ष्या से जल गया। इसके बाद नौकरी पर वापस आया तो निर्मला दोनों जून नौकर–चाकर की माला जपने लगीं। उसकी तरह अभागिन और दुखिया स्त्री और भी कोई दुनिया में होगी? वे लोग दूसरे होते हैं, जिनके भाग्य में नौकर का सुख होता है......

पहले साले साहब से उसका किस्सा सुनना पड़ा वह एक नेपाली था, जिसका गाँव नेपाल और बिहार की सीमा पर था। उसका बाप युद्ध में मारा गया था और उसकी माँ सारे परिवार का भरण–पोषण करती थी। माँ उसकी बड़ी गुस्सैल थी और उसको बहुत मारती थी। माँ चाहती थी कि लड़का घर के काम–धाम में हाथ बटाए,जबकि वह पहाड़ या जंगलों में निकल जाता और पेडों पर चढ़कर चिड़ियों के घोसलों में हाथ डालकर उनके बच्चे पकड़ता या फल तोड़–तोड़कर खाता। कभी–कभी वह पशुओं को चराने के लिए ले जाता था। उसने एक बार उस भैंस को बहुत मारा, जिसको उसकी माँ बहुत प्यार करती थी और इसलिए वह उससे बहुत चिढ़ता था। मार खाकर भैंस भागी–भागी उसकी माँ के पास चली गई, जो कुछ दूरी पर एक खेत में काम कर रही थी। माँ का माथा ठनका। बेचारा बेजबान जानवर चरना छोड़कर यहाँ क्यों आयेगा? जरूर उस लौंडे ने उसको काफी मारा है। वह घुस्से में पागल हो गई। जब लड़का आया तो माँ ने भैंस की मार का काल्पनिक अनुमान करके एक डंडे से उसकी दुगनी पिटाई की और उसको वही कराहता हुआ छोड़कर घर लौट आई । लडके का मन माँ से फट गया और वह रात भर जंगल में छिपा रहा। जब सबेरा होने को आया तो वह घर पहुँचा और किसी तरह अंदर चोरी–चुपके घुस गया। फिर उसने घी की हँड़ियों में हाथ ड़ालकर माँ के रखे रूपयों में से दो रूपए निकाल लिए। अंत में नौ दो ग्यारह हो गया। वहाँ से छह मील की दूरी पर बस स्टेशन था, जहाँ गोरखपुर जानेवाली बस मिलती थी।

तुम्हारा नाम क्या है, जी – मैंने पूछा।

दिल बहादुर साब।

उसके स्वर में एक मीठी झनझनाहट थी। मुझे ठीक–ठीक याद नहीं कि मैंने उसको क्या हिदायतें दी। शायद यह कि वह शरारतें छोड़कर ढ़ंग से काम करे और उस घर को अपना घर समझे। इस घर में नौकर–चाकर को बहुत प्यार और इज्जत से रखा जाता है। जो सब खाते पहनते हैं वही नौकर–चाकर खाते–पहनते हैं। अगर वह यहाँ रह गया तो ढंग–शऊर सीख जाएगा, घर के और लड़कों की तरह पढ़–लिख जाएगा, और उसकी जिंदगी सुधर जाएगी।

निर्मला ने उसी समय कुछ व्यावहारिक उपदेश दे डाले थे। इस मोहल्ले में बहुत तुच्छ लोग रहते हैं, वह न किसी के यहाँ जाए न किसी का काम करे। कोई बाजार से कुछ लाने को कहे तो वह 'अभी आता हूँ' कहकर अंदर खिसक जाए। उसको घर के सभी लोगों से सम्मान और तमीज से बोलना चाहिए। और भी बहुत सी बातें हैं। अंत में निर्मला ने बहुत ही उदारतापूर्वक लड़के के नाम में से 'दिल' शब्द उड़ा दिया।

परंतु बहादुर बहुत ही हँसमुख और मेहनती निकला। उसकी वजह से कुछ दिनों तक हमारे घर में वैसा ही उत्साह पूर्ण वातावरण छाया रहा, जैसा कि प्रथम बार तोता–मैना या पिल्ला पालने पर होता है। सबेरे–सबेरे ही मुहल्ले के छोटे–छोटे लड़के घर के अंदर आकर खड़े हो जाते और उसको देखकर हँसते और तरह–तरह के प्रश्न करते। 'ऐ तुम लोग छिपकली को क्या कहते हो? 'ऐ तुमने शेर देखा है'?.......ऐसी ही बातें। उससे पहाड़ी गाने की फरमाइशें की जातीं। घर के लोग भी उससे इसी प्रकार की छेड़खानियाँ करते थे। वह जितना उत्तर देता उससे अधिक हँसता था। सबको उसके खाने और नाश्ते की बड़ी फिक्र रहती।

निर्मला आँगन में खड़ी होकर पड़ोसियों को सुनाते हुए कहती थी – बहादुर आकर नाश्ता क्यों नहीं कर लेते? मैं दूसरी औरतों की तरह नहीं हूँ, जो नौकर–चाकर को तलती–भुनती है। मैं तो नौकर–चाकर को अपने बच्चे की तरह रखती हूँ। उन्होंने तो साफ–साफ कह दिया है कि सौ–डेढ़ सौ महीनावारी उस पर भले ही खर्च हो जाये, पर तकलीफ, उसको जरा भी नहीं होनी चाहिए। एक नेकर–कमीज तो उसी रोज लाए थे... ... और भी कपड़े बन रहे हैं ......

धीरे–धीरे वह घर के सारे काम करने लगा। सबेरे ही उठकर वह बाहर नीम के पेड़ से दातून तोड़ लाता था। वह हाथ का सहारा लिए बिना कुछ दूर तक तने पर दौड़ते हुए चढ़ जाता। मिनट भर में वह पेड़ की पुलई पर नजर आता। निर्मला छाती पीटकर कहती थी – अरे रीछ–बंदर की जात, कहीं गिर गया तो बड़ा बुरा होगा। वह घर की सफाई करता, कमरों में पोंछा लगाता, अँगीठी जलाता, चाय बनाता और पिलाता। दोपहर में कपड़े धोता और बर्तन मलता। वह रसोई बनवाने की भी जिद करता, पर निर्मला स्वयं सब्जी और रोटी बनाती। निर्मला को उसकी बहुत फिक्र रहती थी। बहादुर उसको कोई काम करते देखकर कहता था – माताजी, मेहनत न करो, तकलीफ बढ़ जाएगा। वह कोई भी काम करता होता, समय होने पर हाथ धोकर भालू की तरह दौड़ता हुआ कमरे में जाता और दवाई का डिब्बा निर्मला के सामने लाकर रख देता।

जब मैं शाम को दफ्तर से आता तो घर के सभी लोग मेरे पास आकर दिन भर के अपने अनुभव सुनाते थे। बाद में वह भी आता था। वह एक बार मेरी ओर देखकर सर झुका लेता और धीरे–धीरे मुस्कराने लगता। वह किसी बहुत ही मामूली घटना की रिपोर्ट देता। बाबू जी, बहन जी का एक सहेली आया था या बाबू जी, भैया सिनेमा गया था। इसके बाद वह इस तरह हँसने लगता था, गोया बहुत ही मजेदार बात कर दी हो। मैं उससे बातचीत करना चाहता था, पर ऐसी इच्छा रखते हुए भी मैं जान–बूझकर बहुत गंभीर हो जाता था और दूसरी ओर देखने लगता था।

निर्मला कभी–कभी उससे पूछती थी – बहादुर, तुमको अपनी माँ की याद आती है?

नहीं

क्यों?

वह मारता क्यों था? '' इतना कहकर वह खूब हँसता था, जैसे मार खाना खुशी की बात हो।

तब तुम अपना पैसा माँ के पास कैसे भेजने को कहते हो?

माँ–बाप का कर्जा तो जन्म भर भरा जाता है – वह और भी हँसता था।

निर्मला ने उसको एक फटी–पुरानी दरी दे दी थी। घर से वह एक चादर भी ले आया था। रात को काम–धाम करने के बाद वह भीतर के बरामदे में एक टूटी हुई बैसखट पर अपना बिस्तर बिछाता था। वह बिस्तरे पर बैठ जाता और जेब में से कपड़े की एक गोल सी नेपाली टोपी निकाल कर पहन लेता, जो बाईं ओर काफी झुकी रहती थी। फिर वह छोटा सा आइना निकालकर बंदर की तरह उसमें अपना मुँह देखता था। वह बहुत ही प्रसन्न नजर आता था। इसके बाद कुछ और भी चीजें उसकी जेब से निकलकर उसके बिस्तरे पर सज जाती थी – कुछ गोलियाँ, पुराने ताश की एक गड्डी, कुछ खूबसूरत पत्थर के टुकड़े, ब्लेड, कागज की नावें। वह कुछ देर तक उसे खेलता था। उसके बाद वह धीमे–धीमे स्वर में गुनगुनाने लगता था। उन पहाड़ी गानों का अर्थ हम समझ नहीं पाते थे, पर उनकी मीठी उदासी सारे घर में फैल जाती, जैसे कोई पहाड़ की निर्जनता में अपने किसी बिछड़े हुए साथी को बुला रहा हो।

दिन मजे में बीतने लगे। बरसात आ गई थी। पानी रूकता था और बरसता था। मैं अपने को बहुत ऊँचा महसूस करने लगा था। अपने परिवार और संबंधियों के बड़प्पन तथा शान–बान पर मुझे सदा गर्व रहा है।

अब मैं मुहल्ले के लोगों को पहले से भी तुच्छ समझने लगा। मैं किसी से सीधे मुँह बात नहीं करता। किसी की ओर ठीक से देखता भी नहीं था। दूसरे के बच्चों को मामूली सी शरारत पर डाँट–डपट देता था। कई बार पड़ोसियों को सुना चुका था–जिसके पास कलेजा है, वही नौकर रख सकता है। घर के सवांग की तरह रहता है। निर्मला भी सारे मुहल्ले में शुभ सूचना दे आई थी – आधी तनखाह तो नौकर पर ही खर्च हो रही है, पर रूपया–पैसा कमाया किसके लिए जाता है? ये तो कई बार कह ही चुके थे कि तुम्हारे लिए दुनिया के किसी कोने से नौकर जरूर लाऊँगा ....वही हुआ ।

निस्संदेह बहादुर की वजह से सबको बहुत ही आराम मिल रहा था। घर खूब साफ और चिकना रहता। कपड़े चमाचम सफेद। निर्मला की तबीयत भी काफी सुधर गई थी। अब कोई एक खर भी न टकसाता था। किसी को मामूली काम करना होता तो वह बहादुर को आवाज देता – 'बहादुर, एक गिलास पानी।' बहादुर पेंसिल नीचे गिरी है,उठाना।' इसी तरह की फरमाइशें! बहादुर घर में फिरकी की तरह नाचता रहता। सभी रात में पहले ही सो जाते थे और सबेरे आठ बजे के पहले न उठते थे।

मेरा बड़ा लड़का किशोर काफी शान–शौकत और 'रोब –दाब' से रहने का कायल था और उसने बहादुर को अपने अनुशासन में रखने की आवश्यकता महसूस कर ली थी। फलतः उसने अपने सभी काम बहादुर को सौंप दिए। सबेरे उसके जूते में पालिश लगनी चाहिए। कालेज जाने के ठीक पहले साइकिल की सफाई जरूरी थी। रोज ही उसके कपड़े की धुलाई और इस्त्री होनी चाहिए। और रात में सोते समय वह नित्य बहादुर से अपनी मालिश कराता और मुक्की भी लगवाता। पर इतनी सारी फरमाईशों की पूर्ति में कभी–कभी कोई गड़बड़ी भी हो जाती। जब ऐसा होता, किशोर गर्जन–तर्जन करने लगता, उसको बुरी–बुरी गालियाँ देता और उस पर हाथ छोड़ देता। मार खाकर बहादुर एक कोने में खड़ा हो जाता चुपचाप – देख बे किशोर, चेतावनी देता – मेरा काम सबसे पहले होना चाहिए। अगर एक काम भी छूटा तो मारते–मारते हुलिया टाइट कर दूँगा। साला, कामचोर, करता क्या है तू? बैठा–बैठा खाता है।

रोज ही कोई न कोई ऐसी बात होने लगी, जिसकी रिपोर्ट पत्नी मुझे देती थी। मैंने किशोर को मना किया पर वह नहीं माना तो मैंने यह सोचकर छोड़ दिया कि थोड़ा बहुत तो चलता ही रहता है। फिर एक हाथ से ताली कहाँ बजती है? बहादुर भी बदमाशी करता होगा। पर एक दिन जब मैं दफ्तर से आया तो मैंने किशोर को एक डंडे से बहादुर की पिटाई करते हुए देखा। निर्मला कुछ दूरी पर खड़ी होकर, हाँ–हाँ, कहती हुई मना कर रही थी।

मैंने किशोर को डाँट कर अलग किया। कारण यह था कि शाम को साइकिल की सफाई करना बहादुर भूल गया था। किशोर ने उसको मारा तथा गालियाँ दीं तो उसने उसका काम करने से इन्कार कर दिया।

तुम साइकिल साफ क्यों नहीं करते? – मैंने उससे कड़ाई से पूछा ।

बाबू जी, भैया ने मेरे बाप को क्यों लाकर खड़ा किया? – वह रोते हुए बोला।
मैं जानता था कि किशोर उसको और भी भद्दी गालियाँ देता था , लेकिन आज उसने 'सूअर का बच्चा' कहा था, जो उसे बरदाश्त न हुआ। निस्संदेह वह गाली उसके बाप पर पड़ती थी। मुझे कुछ हँसी आ गई। खैर, किशोर के व्यवहार को अच्छा नहीं कहा जा सकता, पर गृहस्वामी होने के कारण मुझ पर कुछ और गंभीर दायित्व भी थे। मैंने उसे समझाया – बहादुर, ये आदतें ठीक नहीं। तुम ठीक से काम करोगे तो तुमको कोई कुछ नहीं कहेगा। मेहनत बहुत अच्छी चीज है, जो उससे बचने की कोशिश करता है, वह कुछ भी नहीं कर सकता। रूठना –फूलना मुझे सख्त नापसंद है। तुम तो घर के लड़के की तरह हो। घर के लड़के मार नही खाते? हम तुमको जिस जिस सुख आराम से रखते हैं, वह कोई क्या रखेगा? दूसरे घरों में जाकर देखो तो पता लगे। नौकर–चाकर भर पेट भोजन के लिए तरसते रहते हैं। चलो, सब खत्म हुआ, अब काम–धाम करो।
वह चुपचाप सुनता रहा। फिर हाथ–मुँह धोकर काम करने लगा। जल्दी ही वह प्रसन्न हो गया। रात में सोते समय वह अपनी टोपी पहन कर देर तक गाता रहा।
कुछ दिनों बाद एक और गड़बड़ी शुरू हुई। निर्मला बहुत ही पतली–पतली रोटियाँ सेंकती थी, इसलिए वह रोटी बनाने का काम बहादुर से नहीं लेती थी, लेकिन मुहल्ले की किसी औरत ने उसे यह सिखा दिया कि परिवार के लिए रोटियाँ बनाने के बाद वह बहादुर से कहे कि वह अपनी रोटी खुद बना लिया करे, नहीं तो नौकर–चाकर की आदत खराब हो जाती है, महीन खाने से उनकी आदत बिगड़ जाती है।
यह बात निर्मला को जँच गई थी और रात में उसने ऐसा ही प्रयोग किया। वह अपनी रोटियाँ बनाकर चौंके में से उठ गई। बहादुर का मुँह उतर गया। वह चूल्हे के पास सिर झुकाकर चुपचाप खड़ा रहा।

क्या हो गया रे? – निर्मला ने पूछा।

वह कुछ नहीं बोला।

चल चुपचाप बना अपनी रोटियाँ। तू सोचता है कि मैं तुझे पतली–पतली, नरम–नरम रोटियाँ सेंक कर खिलाऊँगी? तू कोई घर का लड़का है? नौकर–चाकर तो अपना बनाकर खाते ही रहते हैं। तीता तो इनको इसलिए लग रहा है कि सारे घर के लिए मैंने रोटियाँ बनाई, इनको अलग करके इनके साथ भेद क्यों किया? वाह रे, इसके पेट में तो लंबी दाढ़ी है! समझ जा, रोटियाँ नहीं सेंकेगा तो भूखा रहेगा।
पर बहादुर उसी तरह खड़ा रहा तो निर्मला का गुस्से से बुरा हाल हो गया। उसने लपककर उसके माथे पर दो–तीन थप्पड़ जड़ दिए – सूअर कहीं के! इसलिए किशोर तुझे मारता है। इसी वजह से तेरी माँ भी मारती रही होगी। चल, बना रोटी ...
मैं नहीं बनाऊँगा............मेरी माँ भी सारे घर की रोटियाँ बनाकर मुझ से रोटी सेंकवाती थी – वह रोने लगा।
तो क्या मैं तेरी माँ हूँ कि तू मुझसे जिद कर रहा है? घर के लड़कों के बराबर बन रहा है? मारते–मारते मुँह रंग दूँगी।
पर उसने अपने लिए रोटी नहीं बनाई। मुझे भी बड़ा गुस्सा आया। मैंने उसको डाँटा और झमझाया। पर वह नहीं माना। रात भर वह भूखा ही रहा।
पर सबेरे उठाकर ,वह पहले की तरह ही हँसने लगा। उसने अँगीठी जलाकर अपने लिए रोटियाँ सेंकी अपनी बनाई मोटी और भद्दी रोटी को देखकर वह खिलखिलाने लगा। फिर रात की बची हुई सब्जी से उसने खाना खा लिया। लेकिन निर्मला का भी हाथ खुल गया था। वह उससे कुछ चिढ़ भी गई थी। अब बहादुर से कोई भी गलती होती तो वह उस पर हाथ चला देती। उसको मारनेवाले अब घर में दो व्यक्ति हो गये थे और कभी–कभी उसकी एक गलती के लिए उसको दोनों मारते।
बरसात बीत बई थी। आकाश दर्पण की तरह स्वच्छ दिखाई देता। मैंने बहादुर की माँ के पास चिट्ठी लिखी थी

कि उसका लड़का मेरे पास मजे में है और मैं उसकी तनखाह के पैसे उसके पास भेज दिया करूँगा, लेकिन कई महीने के बाद भी उधर से कोई जवाब नहीं आया था। मैंने बहादुर से कह दिया था कि उसका पैसा यहाँ जमा रहेगा, जब घर जाएगा तो लेता जाएगा।

पर अब बहादुर से भूल गलतियाँ अधिक होने लगी थी। शायद इसका कारण मार–पीट और गाली–गलौज हो। मैं कभी–कभी उसको रोकना चाहता, फिर यह सोचकर चुप लगा जाता कि नौकर–चाकर तो मार–पीट खाते रहते हैं।

एक दिन रविवार को मेरी पत्नी के एक रिश्तेदार आये। वह बीवी बच्चों के साथ। वह अपने किसी खास संबंधी के यहाँ आए थे तो यहाँ भी भेंट–मुलाकात करने के लिए चले आए थे।

घर में बड़ी चहल–पहल मच गई। मैं बाजार से रोहू मछली और देहरादूनी चावल ले आया। नाश्ता–पानी के बाद बातों की जलेबी छनने लगी। पर इसी समय एक घटना हो गई।

अचानक उस रिश्तेदार की पत्नी नीचे फर्श पर झुककर देखने लगी। फिर उन्होंने चारपाई के अंदर झाँककर देखा। अंत में कमरे के अंदर चली गई और फर्श पर पड़े हुए कागजों को उठ़ाकर जाँच–पड़ताल करने लगी।

क्या बात है? – मैंने पूछा।

रिश्तेदार की पत्नी जबरदस्ती मुस्कराकर मजबूरी में सिर हिलाते हुए बोली – क्या बताएँ .... ग्यारह रूपय साड़ी के खूँट से निकालकर यहीं चारपाई पर रखे .... पर वे मिल नहीं रहे हैं....... आपको ठीक याद है न .... हाँ–हाँ – खूब अच्छी तरह याद है। ये रूपए मैंने खूँट में बाँधकर रखे थे .... रिक्शेवाले को देने के लिए खूँट खोला ही था, फिर ओ रूपए चारपाई पर रख दिये थे कि चार रूपए की मिठाई मँगा लूँगी और कुछ बच्चों के हाथ रख दूँगी। रास्ते में कोई ढंग की दूकान नहीं मिली थी, नहीं तो उधर से ही लाती। किसी के यहाँ खाली हाथ जाने में अच्छा नहीं लगता। बताइए, अब तो मैं कहीं की न रही। फिर मेरी ओर झुककर धीमे स्वर में कहा था – जरा उससे पूछिए न! वह इधर आया था। कुछ देर तक वह यहाँ खड़ा रहा, फिर तेजी से बाहर चला गया था।

अरे नहीं, वह ऐसा नहीं है। – मैंने कहा।

यू डू नाट नो, दीज पीपुल आर एक्सपर्ट इन दिस आर्ट। – रिश्तेदार ने कहा। मैंने बहादुर की ओर तिरछी दृष्टि से देखा। वह सिर झुकाकर आटा गूँथ रहा था। उसके चेहरे पर संतुष्टि एवं प्रसन्नता थी। उसने ऐसा काम तो कभी नहीं किया, बल्कि जब भी उसने दो–चार आने इधर –उधर पड़े देखे तो उठाकर निर्मला के हाथ में दिऐ थे। पर किसी के दिल की बात कोई कैसे जान सकता है? न मालूम मुझे क्या हो गया और गुस्से में आ गया।

बहादुर! मैंने कड़े स्वर में पूछा।

जी बाबूजी।

इधर आओ।

वह आकर खड़ा हो गया।

तुमने यहाँ से रूपए उठाए थे?

जी नहीं, बाबूजी, – उसने निर्भय उत्तर दिया।

ठीक बताओ .... मैं बुरा नहीं मानूँगा।

नहीं बाबूजी। मैं लेता तो बता देता।

तुम यहाँ खड़े नहीं थे? रिश्तेदार की पत्नी ने कहा – फिर तेजी से बाहर चले गए थे। देखो भैया, सच – सच बता दो। मिठाई खरीदने और बच्चों को देने के लिए ये रूपए थे। मैं तो बुरी फँसी। अब वापस जाने के लिए रिक्शे के भी पैसे नहीं।

मैं तो बाहर नमक लेने लगा था।

सच–सच बता बहादुर! अगर नहीं बताएगा तो बहुत पीटूँगा और पुलिस के सुपुर्द कर दूगाँ – मैं चिल्ला पड़ा।
मैंने नहीं लिया बाबूजी, – बहादुर का मुँह काला पड़ गया।
पता नहीं मुझे क्या हो गया। मैंने सहसा उछलकर उसके गाल पर एक तमाचा जड़ दिया। मैं आशा कर रहा था कि ऐसा करने से वह बता देगा। तमाचा खाकर वह गिरते–गिरते बचा। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे।
मैंने नहीं लिया .....
इसी समय रिश्तेदार साहब ने एक अजीब हरकत की – अच्छा छोड़िए ,इसको पुलिस के पास ले जाता हूँ। इतना कहकर उन्होंने बहादुर का हाथ पकड़ लिया और उसको दरवाजे की ओर घसीट कर ले गए। पर दरवाजे के पास उससे धीरे से बोले – देखो, तुम मुझे बता दो ..... मैं कुछ नहीं करूँगा, बल्कि तुमको ईनाम में दो रूपए दे दूँगा।
पर बहादुर ने इंकार कर दिया। इसके बाद रिश्तेदार साहब दो–तीन बार उसको दरवाजे की ओर खींचकर ले गए, जैसे पुलिस को देने ही जा रहे हैं। लेकिन आगे बढ़कर रूक जाते और उससे धीमे–धीमे शब्दों में पूछ–ताछ करने लगते।
अंत में हारकर उन्होंने उसको छोड़ दिया। और वापस आकर चारपाई पर बैठते हुए हँसकर बोले – जाने दीजिए ... ये सब बड़े घाघ होते हैं। किसी झाड़ी–वाड़ी में छिपा आया होगा या जमीन में गाड़ आया होगा।
मैं तो इन सबों को खूब जानता हूँ। भालू–बंदर से कम थोड़े होते हैं ये। चलिए, इतना नुकसान लिखा था।
इसके बाद निर्मला ने भी उसको डराया–धमकाया और दो–चार तमाचें जड़ दिए, पर वह 'नहीं–नहीं' करता रहा।
इस घटना के बाद बहादुर काफी डाँट–मार खाने लगा। घर के सभी लोग उसको कुत्ते की तरह दुरदुराया करते।
किशोर तो जैसे उसकी जान के पीछे पड़ गया था। वह उदास रहने लगा, काम में लापरवाही करने लगा।
एक दिन मैं दफ्तर से विलंब से आया। निर्मला आँगन में चुपचाप सिर पर हाथ रखकर बैठी थी। अन्य लड़कों का पता नहीं था, केवल लड़की अपनी माँ के पास खड़ी थी। अँगीठी अभी जली नहीं थी। आँगन गंदा पड़ा था। बर्तन बिना मले हुए रखे थे। सारा घर जैसे काट रहा था।

क्या बात है? – मैंने पूछा।

बहादुर भाग गया।

भाग गया! क्यों?

पता नहीं! आज तो कुछ हुआ भी नहीं था। सबेरे से ही बड़ा प्रसन्न था। हमेशा माताजी, माताजी किए जा रहा था। दोपहर में खाना खाया। उसके बाद आँगन से सिल–बट्टा लेकर बरामदे में रखने जा रहा था कि सिल हाथ से छूटकर गिर गई और दो टुकड़े हो गई। शायद इसी डर से वह भाग गया कि लोग मारेंगे। पर मैं इसके लिए उसको थोड़े कुछ कहती? क्या बताऊँ मेरी किस्मत में आराम ही नहीं।
कुछ ले गया?
यही तो अफसोस है। कोई भी सामान नहीं ले गया है। उसके कपड़े, उसका बिस्तरा, उसके जूते, सभी छोड़ गया है। पता नहीं उसने हमें क्या समझा? अगर वह कहता तो मैं उसे रोकती थोड़े? बल्कि उसको खूब अच्छी तरह पहना–ओढ़ाकर भेजती, हाथ में उसकी तनखाह के रूपए रख देती। पर वह तो कुछ ले ही नहीं गया........
और वे ग्यारह रूपए?
अरे वह सब झूठ है। मैं तो पहले ही जानती थी कि वे लोग बच्चों को कुछ देना नहीं चाहते, इसलिए अपनी गलती और लाज छिपाने के लिए यह प्रपंच रच रहे हैं। उन लोगों को क्या मैं जानती नहीं? कभी उनके रूपए रास्ते में गुम हो जाते हैं ......कभी वे गलती से घर ही पर छोड़ आते हैं। मेरे कलेजे में तो जैसे कुछ हौंड़ रहा है। किशोर को भी बड़ा अफसोस है। उसने सारा शहर छान मार, पर बहादुर नहीं मिला। किशोर आकर कहने लगा – अम्माँ, एक बार भी बहादुर आ जाता तो मैं उसको पकड़ लेता और कभी जाने न देता। उससे माफी माग लेता और कभी नहीं मारता। सच, ऐसा नौकर कभी नहीं मिलेगा। कितना आराम दे गया वह। अगर कुछ चुराकर ले गया होता तो संतोष हो जाता ......
निर्मला आँखों पर आँचल रखकर रोने लगी। मुझे बड़ा क्रोध आया। मैं चिल्लाना चाहता था पर भीतर ही भीतर मेरा कलेजा जैसे बैठ रहा हो। मैं वही चारपाई पर सिर झुका कर बैठ गया। मुझे एक अजीब सी लघुता का अनुभव हो रहा था। यदि मैं न मारता तो शायद वह न जाता।
मैंने आँगन में नजर दौड़ाई। एक ओर स्टूल पर उसका बिस्तर रखा था। अलगनी पर उसके कुछ कपड़े टँगे थे। स्टूल के नीचे वह भूरा जूता रखा था, जो मेरे साले साहब के लड़के का था। मैं उठकर अलगनी के पास गया और उसके नेकर की जेब में हाथ डालकर उसका सामान निकालने लगा – वही गोलियाँ, पुराने ताश की गड्डी, खूबसूरत पत्थर, ब्लेड़, कागज की नावें ......

शब्दार्थ :–

दायित्व	= जिम्मेदारी	हाथ खुलना	= मारने की आदत पड़ना
चमकती दृष्टि से देखा	= आशा तथा प्रसन्नता से देखना	मारते–मारते मुँह रंगना	= इतना मारना कि चेहरा लाल हो जाए
चकइक	= गोल बनावट का		
हाथ बटाना	= सहायता करना	खिलखिलाना	= जोर से हँसना
गुस्से से पागल होना	= बहुत अधिक गुस्से के कारण कुछ न देखना	बातों की जलेबी छनने लगी	= इधर–उधर की ढेर सारी बातें होने लगी
काल्पनिक अनुमान	= मन में अंदाजा करना	संतुष्टि एवं प्रफुल्लता	= संतोष और खुशी
शऊर	= ढ़ंग, तरीका	सुपुर्द	= हवाले
नौ दो ग्यारह होना	= भाग जाना	घाघ	= चालाक, मँजा होना
हिदायत	= चेतावनी	मुँह काला पड़ना	= भयभीत होना
पुलई	= टहनी का अंतिम हिस्सा	दुरदुराना	= ड़ाँट लगाना , भगाना
रिपोर्ट	= सूचना	सारा घर जैसे काट रहा था	= घर में रहना बुरा लग रहा था
तलना–भुनना	= बहुत दुख होना	प्रपंच	= छल
बैसखट	= बास की लकड़ी से बनी चारपाई	दौड़ना	= उथल–पुथल होना
निर्जनता	= सुनसान सूनापन	अलगनी	= कपड़े टाँगने की रस्सी
सवांग	= शोभा, सजावट	कलेजा बैठना	= दुखी होना
तनखाह	= वेतन	अनुशासन	= नियम व्यवस्था
कायल	= माननेवाला	गृहस्वामी	= घर का मालिक
बड़प्पन	= बड़ों का सा आचरण	भद्दी	= गंदी
एक खट भी न टकसाना	= एक तिनका भी न उठाना	तकलीफ	= दर्द
शान–शौकत	= ठाट–बाट	महीनावारी	= मासिक, प्रतिमाह
गर्जन–तर्जन करना	= डाँटना फटकारना	फिक्र	= चिंता
हुलिया टाइट करना	= बुरी तरह से पीट्ना, चेहरा बिगाड़ना	फरमाइश	= माँग
बरदाश्त	= सहन	व्यावहारिक	= व्यवहार करनेवाला
रूठना भूलना	= नाराज होना		
तीता	= कड़वा, बुरा	यू डू नाट नो, दीज पीपुल आर एक्सपर्ट इन दिस आर्ट = आप नहीं जानते, ये लोग इस कला में माहिर होते हैं।	
पेट में लम्बी दाड़ी होना	= किसी बात को छिपा कर रखना		

पाठगत प्रश्न

1. दिये गये विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सहसा मैं काफी गंभीर हो गया था जैसा कि उस व्यक्ति को हो जाना चाहिए जिस पर एक भारी दायित्व आ गया हो। यह वाक्य कौन कहता है?
   क . लेखक ख. वाचक ग. बहादुर घ . किशोर
2. कहानी में वाचक किस वर्ग का है?
   क . उच्च ख. सामंत ग. मध्य घ. निम्न
3. ''माँ–बाप का कर्जा तो जन्मभर भरा जाता है'' बहादुर के इस कथन से पता चलता है कि –
   क. उसे माँ–बाप द्वारा लिया गया कर्जा चुकाना है ।
   ख. उसके माँ–बाप जीवन भर कर्ज चुकाते रहे।
   ग. इसने माँ–बाप से बहुत सारा पैसा लिया है।
   घ. उसे अपने माँ–बाप के प्रति कर्तव्य का बोध है।
4. बहादुर बहुत संवेदनशील है, क्योंकि –
   क. वह सिल टूटने पर घर से भाग जाता है।
   ख. सभी के लिए दौड़ भाग कर काम करता है।
   ग. मारपीट का उस पर कोई प्रभाव नहीं होता।
   घ. झूठे आरोप लगने पर भी वह घर से नहीं भागता।
5. बहादुर घर में इधर –उधर पड़े आने दो उठा कर निर्मला को पकड़ा देता था, इससे पता चलता है कि
   क. ईमानदार है ख. मेहनती है ग . साहसी है घ . स्वाभिमानी है।
6. वाचक ने नौकरों के कारण सुख कहाँ देखा है?
   क. एक दुकान में. ख. अपने पड़ोसियों के घर
   ग. बहन की शादी में भाईयों के घर घ. अपनी ससुराल में

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बहादुर के भाग जाने पर घर के सदस्य स्वयं को अपराधी क्यों महसूस करते हैं?
2. बहादुर रात भर भूखा किस लिए रहा?
3. ''यू डू नाट नो, दीज पीपुल आर एक्सपर्ट इन दिस आर्ट'' का अर्थ लिखिए।
4. 'बहादुर' कहानी का उद्देश्य क्या है?
5. अमरकांत के एक उपन्यास का नाम लिखिए?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. बहादुर की पारिवारिक स्थिति का उल्लेख कीजिए?
2. बहादुर कहानी की भाषा की प्रमुख विशेषताओं को बतलाइए?
3. 'बहादुर' पात्र का चरित्र–चित्रण कीजिए?
4. किशोर बहादुर के साथ जो व्यवहार करता था उससे किशोर के चरित्र की किन विशेषताओं का पता चलता है?
5. किशोर के स्थान पर आप होते तो बहादुर के साथ कैसा व्यवहार करते और क्यों? उल्लेख कीजिए।

अपठित गद्यांश

मनुष्य के जीवन में जो आदतें पड़ जाती हैं, वे किसी न किसी रूप में जीवन भर बनी रहती हैं इसलिए बचपन से ही मितव्ययिता और बचत की आदतों का विकास आवश्यक है। कुछ बालक जेब खर्च के लिए मिले धन से ही बचत करते हैं। पैसा बचाकर अपनी–अपनी गुल्लक जल्दी–जल्दी भरने की उनमें होड़ लगी रहती है। कहा भी गया है कि एक–एक बूँद से सागर भरता है और एक–एक पैसा एकत्र करने से धन संचय होता है। अतः बालकों को ऐसी प्रेरणा की आवश्यकता है, जिसे वे नियमित रूप से बचत करने की आदत डालें और अपने लिए अनुकुल योजना को अपनाकर धन–संचय करते रहें।

प्रश्न. 1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

2 ''बूँद–बूँद से सागर भरता है'', किस उक्ति के संदर्भ में कही गई है और क्यों?

3.उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

अभ्यास :–

इस कहानी में लेखक ने अनेक स्थनों पर मुहावरों का सुंदर प्रयोग किया है। इससे कहानी की भाषा में प्रवाह और रोचकता पैदा हुई है। इनमें से कुछ मुहावरे और लोकोक्तियाँ नीचे दी जा रही है। क्या आप इन मुहावरे और लोकोक्तियाँ का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कर सकते हैं?

मुहावरे –

1. आँखें मलना
2. चारपाई तोड़ना
3. माला जपना
4. माथा ठनकना
5. नौ–दो ग्यारह होना
6. छाती पीटना
7. सीधे मुँह बात न करना
8. घर की सवांग
9. फिरकी की तरह घूमना

10 गर्जन–तर्जन करने लगना

11. हुलिया टाईट करना
12. पेट में दर्द होना
13. मुँह रंग देना

कहावतें –

1. एक हाथ से ताली नहीं बजती
2. बातों की जलेबी बनना

योग्यता विस्तार :–

कहानी – प्रेमचंद के अनुसार, ''कहानी वास्तविक जीवन की एक ऐसी काल्पनिक कथा है, जो छोटी होते हुए भी स्वतः पूर्ण एवं संगठित होती है।''

कहानी के तत्व – कहानी के छः तत्व होते हैं –

1. कथानक 2. पात्र एवं चरित्र–चित्रण 3. कथोपकथन (संवाद)
4. देशकाल और वातावरण 5. भाषा एवं शैली 6. उद्देश्य

हिन्दी कहानी का विकास – हिन्दी कहानी के विकास को चार कालखण्डों में विभाजित किया गया है –

1. प्रारंभिक प्रयोगकाल (सन् 1890 से 1910)
2. विकासकाल पूर्वार्द्ध (सन् 1910 से 1936)
3. विकासकाल उत्तरार्द्ध (सन् 1936 से 1947)
4. स्वातन्त्रोत्तर काल (सन् 1947 से अब तक)

हिन्दी के कुछ प्रमख कहानीकार

क्र.	कहानीकार का नाम		प्रमुख कहानियाँ
1.	किशोरी लाल गोसवामी	–	इन्दुमती।
2.	मुशी प्रेमचंद	–	प्रेमचंद ने 300 से भी अधिक कहानियाँ लिखी है जो 'मानसरोवर' के आठ भागों में संकलित किया गया है। इनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं – पंच परमेवर, पूस की रात, नमक का दरोगा, बूढ़ी काकी, कफन आदि।
3.	जयशंकर प्रसाद	–	आकाश दीप, पुरस्कार, आदि।
4.	चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'	–	उसने कहा था।
5.	यशपाल	–	पराया सुख, परदा।
6.	फणीश्वरनाथ रेणु	–	संवदिया, मारे गये गुलफाम
7.	मन्नू भंडारी	–	सजा, यही है जिंदगी
8.	अमरकांत	–	बहादुर, दोपहर का भोजन, डिप्टी कलक्टरी आदि।

पाठ–17

जैसे कोई और हो

अशोक शुक्ल

जीवन–परिचय –

प्रसिद्ध व्यंग्यकार अशोक शुक्ल का जन्म उत्तरप्रदेश के फतेहपुर जिला – कानपुर में 9 दिसम्बर 1940 में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई। उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु शहर आ गये। उन्होंने हिन्दी में एम. ए. किया। राजर्षि कालेज अलवर राजस्थान में हिन्दी के शिक्षक हो गए। यशस्वी शिक्षकीय जीवन के बाद आप वहीं से सेवा निवृत हुए।

रचनाएँ –

व्यंग्य उपन्यास – प्रोफेसर पुराण, हड़ताल, हरि कथा, सेवामीटर

व्यंग्य आलेख – मेरा पैंतालीसवाँ जन्म दिन

भावपक्ष –

अशोक शुक्ल जी ख्यातिप्राप्त व्यंग्यकार हैं। उनके व्यंग्य में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक समस्याओं पर तीखा प्रहार दिखाई देता है। समसामयिक समस्याओं पर उनकी व्यंग्य की धार सीधा प्रहार करती है। उनके व्यंग्य में गहरा चुटीलापन और समस्याओं के तल तक जाने की क्षमता है।

भाषा–शैली –

इनकी भाषा–शैली व्यंग्यात्मक है। व्यंग्य में अमिधा और लक्षणा की अपेक्षा व्यंजना शक्ति का प्रयोग अधिकाधिक हुआ है। कहावतों, मुहावरों आदि के प्रयोग से व्यंग्य की भाषा में मधुरता आती है। व्यंग्य बातों को घुमाफिराकर कहने की कला है। व्यंग्य की भाषा ऊपर से बड़ी सीधी, सरल–सहज होती है किंतु अंदर से मानव जीवन एवं समाज की अव्यवस्थाओं पर चोट करती हैं।

साहित्य में स्थान –

अशोक शुक्ल जी के व्यंग्य लेख व उपन्यास समय–समय पर विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। तत्कालीन पत्रिका 'सारिका' के विशेषांक में आपका व्यंग्य उपन्यास 'सेवामीटर' प्रकाशित हुआ था। आप हिन्दी साहित्य में प्रगतिशील विचार–धारा के मशहूर व्यंग्यकार के रूप में जाने जाते हैं।

जैसे कोई और हो

केन्द्रीय भाव –

जैसे कोई ओर हो' व्यंग्य में हमारे समाज में फैली बुराईयों पर, हमारे आस–पास दैनिक जीवन में घटनेवाली घटनाओं पर और अव्यस्थाओं पर चोट की गयी है। समाज में नारियों के प्रति हो रहे दुर्व्यहार पर व्यंग्य है। इसमें सरकारी बस के बहाने सरकारी तंत्र पर व्यंग्य किया गया है।

हाय! हाय! क्या चाल थी, चार कदम चलकर कैसे झटकों से रूकती थी!
जिधर से निकल जाती, सैकड़ों दीवाने घेर लेते, आगे–पीछे भगते। शोर मच जाता – आ गई, आ गई?
वह रोडवेज की बस थी।
हाय–हाय! क्या चाल थी। क्या शान थी। जैसे सरकार हो।
बिलकुल वही, सरकारों–सा स्वभाव। पहले लेट हुई। फिर ओवर लोड हो गई। कंडक्टर ने चलने की सीटी बजाई तो ड्राइवर इस शान से चढ़ा, जैसे एवरेस्ट पर चढ़ा हो। फिर उसने मुड़ कर सवारियों का निरीक्षण किया और बस स्टार्ट करने की कामना से कई पुर्जों को हिलाया–डुलाया। मगर बस बिलकुल सरकार की तरह अड़ गई, टस से मस न हुई। तब कंडक्टर ऐक्शन में आया। वाह रे कंडक्टर! आज भी जब उसका
ध्यान आता है, मुँह से धन्य–धन्य निकलता है। उसने एक साथ अनेक काम किए।
सर्वप्रथम अपने कठोर नियंत्रण में सवारियाँ उतारी और उनसे बस ठेलवाई। क्या अलौकिक दृश्य था। सहकारिता का कैसा अनूठा चित्र था! छोटे–बड़े, अमीर–गरीब, नर–नारी सभी धक्का लगा रहे थे। एकता छलक पड़ रही थी। उस दिन विश्वास हो गया, जब तक रेलगाडियाँ भी इसी तरह ठेल–ठेलकर स्टार्ट न कराई जाएगी, इस देश में सहकारिता–आंदोलन कदापि न पनप सकेगा।
बस चली। ओवरलोड थी, इसलिए चलने के साथ कई समस्याएँ उग आईं। ठीक किसी राजनीतिक दल के विभाजन की तरह कुछ लोग जो पहले खड़े थें, अब दूसरों की सीटों पर जम चुके थे। बड़ी अव्यवस्था थी, चीख–पुकार मच रही थी। झगड़े बढ़ते जा रहे थे। मारपीट की संभावना काफी उज्जवल थी। स्थिति इतनी विस्फोटक थी कि सरकार होती, तो गोली चलवा देती; तभी हमारे प्यारे कंडक्टर ने माननीय गृहमंत्री का रोल संभाला।
सर्वप्रथम उसने अपराधी और निरपराध दोनों को बुरी तरह डाँटा। लगा, गृहमंत्री रेडियो पर गरज रहे हैं। फिर उसने किसी को उठाया, किसी को बैठाया। एक आदमी को बस से उतार देने की धमकी दी। जैसे किसी सूबाई मिनिस्टर को कैबिनेट से ड्रॉप करने की धमकी दी गई हो। अंततः व्यवस्था किसी अपमानित लड़की–सी लौटी स्थिति नॉर्मल हो गई।
अब मैं कंडक्टर से प्रभावित हो चला था। स्वयं को सहकारिता–आंदोलन के कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में प्रमाणित करने के बाद उसने जिस लाघव से गृह मंत्रालय का काम संभाला था वह सराहनीय ही नहीं, सरासर दर्शनीय भी था। और ...... बस, कमाल हो गया। गृह मंत्रालय का अनुबंध पूरा होने से पहले ही बेचारे कंडक्टर को एक तीसरे मंत्रालय का काम स्वीकार करना पड़ा। यह था – 'कानून मंत्रालय'।
एक महिला किसी सज्जन की खाली सीट पर गैर–कानूनी ढ़ग से बैठ गई थीं, वे इतनी स्वस्थ थीं कि सीट में बाकी बची दो सवारियाँ कुचली जा रहीं थी। मरता क्या न करता, सभी ने मिलकर कंडक्टर से इस प्राणलेवा जुल्म के खिलाफ अपील की।
कंडक्टर ने घटनास्थल पर जाकर जाँच की, आरोप आश्चर्यजनक रूप से ही सही था। अब तो बेचारा कंडक्टर बड़े धर्मसंकट में पड़ गया – एक ओर महिला के विरूद्ध प्रबल जनमत, दूसरी ओर नारी–मात्र के प्रति पक्षपात करने की उसकी पुरानी आदत। अब क्या हो?

वही हुआ, जो युगों–युगों से होता आया है। कंडक्टर को कर्तव्य की कठोर बलिवेदी पर अपनी सुकोमल भावनाओं का खून चढ़ाना पड़ा। उसने जैसे कलेजे पर पत्थर रख निर्णय दिया–महिला सीट से उठ जाएँ।

किंतु वह पारंपरिक महिला नहीं थी, वह शीत युद्ध पर उतर आई, बिफरकर बोली, ''किसी का बाप मुझे इस सीट से नहीं उठा सकता।''

उनका दावा ठीक था, किसी का बाप जब तक भारोत्तोलन में हैवीवेट चैंपियन न हो, सचमुच उन्हें नहीं उठा सकता था। कंडक्टर तत्काल कर्मठ गाँधीवादी बन गया और उसने बस एक ओर खड़ी करवाकर घोषणा की, ''जब तक महिला सीट खाली नहीं करती, बस नहीं चलेगी।''

तब जैसा की स्वाभाविक ही है, कई शांति–प्रस्तावक समझौता कराने के लिए आगे आये। अंत में कंडक्टर की नैतिक जीत हुई और महिला को सीट खाली करनी पड़ी। यद्यपि उन्होंने सीट तभी खाली की जब उन्हें बड़े सम्मान के साथ स्वंय कंडक्टर की सीट आफ़र की गई, जिसे उन्होंने निस्संकोच स्वीकार किया।

कुछ देर बाद पहला ठहराव आया। बस का इंजन किसी अफसर के दिमाग की तरह गर्म हो गया था। उसे शाँत करने के लिए ठंडा पानी डाला गया। लगा, किसी नब्बे वर्ष के मंत्री को आँक्सीजन दी जा रही है।

कंडक्टर चलती बस से कूद कर बड़ी आत्मीयता के साथ सामने की दुकानों में घुस गया था। उसने चायवाले को अखबार दिया, पानवाले को उसके चाचा का पत्र दिया और मूँगफलीवाले को बताया कि शहर में मूँगफली के दाम बढ़नेवाले हैं। अब इतना तो अंधा भी देख सकता है कि कंडक्टर द्वारा किए गए ये तीनों काम मूलतः सूचना प्रसारण मंत्रालय के थे। बस के धीरे–धीरे ही सही, चलने से परिवहन मंत्रालय का काम तो अप्रासंगिक रूप से चल ही रहा था।

इस स्टॉपेज पर नीबू लदे। बस फिर झपक गई थी। जब उसे कोंच–कोंचकर जगाया गया, तब गुर्राकर चल पड़ी। लगभग उसी के साथ नीबुओं की ढुलाई को लेकर एक प्रेमपूर्ण लड़ाई प्रांरभ हुई। लड़ाई नीबू–स्वामी और कंडक्टर में थी। मुख्य सिद्धांत पर दोनों पक्षों के पास अपने–अपने प्रमाण थे। व्यापारी बता रहा था, उसने कब–कब, किस–किस बस से इससें भी ज्यादा माला कम पैसों में ढोया है। वह कंडक्टर को अपने पूर्ववर्ती कंडक्टरों से प्रेरणा लेने के लिए उत्साहित कर रहा था। कंडक्टर भी ऐसे अनेक उदाहरण दे रहा था, जिनमें उसने इससे भी कम माल के और ज्यादा पैसे वसूल किए थे।

दोनों पक्ष, बीच–बीच में, विपक्षी के प्रति अपना सहज प्रेम दर्शाते चल रहे थे। व्यापारी कहता था, '' तुम अपने आदमी हो, इसलिए इतना दे रहा हूँ। नहीं तो रेट इससे कम है।'' कंडक्टर का दावा था कि व्यापारी रोज का चलनेवाला है, इसलिए वह लिहाज कर रहा है, वैसे कायदे से किराया ज्यादा बनता है। फिर, हमारे देखते–देखते उन्होंने कोई ऐसा गुप्त समझौता किया, जिसे हम सुनकर भी समझ न सके। व्यापारी के समझौते के अंतर्गत कंडक्टर को नगद राशि के अतिरिक्त तीस नीबू भी दिए।

जरा सोचिए, देश में पहले ही कितनी ज्यादा मुद्रा फैल रही है। सभी चीख रहे हैं, 'मुद्रा–प्रसार बंद करो।' ऐसी नाजुक स्थिति में यदि कंडक्टर तीस नीबू न लेकर नगद मुद्रा लेता तो क्या होता। मजबूरन सरकार को नोट छापने पड़ते। मुद्रा पर अनावश्यक दबाव पड़ता। निश्चय ही इस समय कंडक्टर वित्त मंत्रालय के अवैतनिक सलाहकार के रूप में काम कर रहा था।

अगले स्टॉपेज पर, पूर्ववत पत्र बँटे, अफवाहें उड़ीं, चायवाले की बेंच पर बैठ कर कंडक्टर ने हिसाब किया। ड्राइवर को ईमानदारी के साथ उसका हिस्सा दिया और बस के कुली को अठन्नी बतौर इनाम दी। बस को अनंतकाल तक के लिए रूकी देख बहुत सी सवारियाँ उतरी, प्रायः सभी ने चाय पी। चाय वाले की बिक्री बढी, उसने चाय का स्तर गिराकर संतुलित किया।

आपने गौर किया, यह सब क्या हो रहा था? हमारे प्यारे कंडक्टर ने प्रत्यक्ष रूप से अपनी ड्राइवर की तथा कुली की और अप्रत्क्षय रूप से चाय–पान वालों की आमदनी बढ़ाई थी। वह साफ–साफ गरीबी हटा रहा था। यह प्रधानमंत्री का काम था, जो यह बिना यश की कामना से पूरा कर रहा था।

बस रात भर जगी अभिसारिका–सी फिर गई थी। लोग उसे छेड़–छेड़कर फिर से स्टार्ट हो जाने के लिए उकसा रहे थे। मैं दूर खड़ा कंडक्टर की कर्मठता पर मुग्ध हुआ जा रहा था, कैसा अद्‌भुत व्यक्ति था। मेरे देखते–देखते वह सहकारिता, गृह, कानून ,परिवहन, सूचना–प्रसारण, वित्त और प्रधानमंत्री के मंत्रालयों के काम पूरी दक्षता से पूरे करके दिखा चुका था।

अब,संभावनाओं का तो अंत है नहीं। मैं जानता था, अभी वह कंडक्टर न जाने कितने राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय दायित्व पूरे करेगा। मुझे स्पष्ट दिख रहा था, उसके कंडक्टरी थैले में बहुत–से, प्रायः सभी मंत्रालय बंद हैं। कई बार, जब थैला खोलकर मनचाही रेजगारी खोजता था, तब मुझे शक होता था, वह रेजगारी नहीं, मौके के अनुरूप किसी उपयुक्त मंत्रालय की खोज कर रहा है।

उसके गुणों का कहीं ओर–छोर न देख, मैंने आँखें बंद कर मन–ही–मन उसे श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया, फिर आँखें खोलीं तो देखा, बस ठेली जा रही थी।

पाठगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1.– दिए गये विकल्पों मे से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. बस के इंजन के गर्म होने की तुलना किससे की गई है?
   क. जलते तवे से   ख आपस में लड़ती सवारियाँ
   ग. अफसर के दिमाग से   घ. गुस्सैल कंडक्टर से
2. किसी का बाप मुझे इस सीट से नहीं उठा सकता' यह कथन किसका है।
   क. महिला यात्री का   ख. ड्राइवर का
   ग. कंडक्टर का   घ .नीबू व्यापारी का
3. बस की हालत के बयान के बहाने किसकी हालत पर व्यंग्य किया गया है।
   क. जनता   ख सरकार   ग. व्यापारी   घ. महिला
4. 'अपनी, ड्राइवर तथा कुली की आमदनी बढ़ाकर कंडक्टर गरीबी हटा रहा था', यह बात –
   क. व्यंग्य में कही गयी है।
   ख. पाठक के लिए कही गयी है।
   ग. कंडक्टर की कार्यनिष्ठा बताती है।
   घ. वास्तविक है।
5. चायवाले की बिक्री बढ़ी तो उसने क्या किया?
   क. चाय का स्तर बढ़ा दिया
   ख. चाय का स्तर गिरा दिया
   ग. चाय की मात्रा कम कर दी
   घ. चाय की कीमत बढ़ा दी

2. उचित संबंध जोड़िए –

(अ)

1	सहकारिता	– तराजू के दोनों पलड़े बराबर करना
2	कमाल हो जाना	– साथ मिलकर काम करना
3	संतुलित करना	– प्रशंसा करने के लायक
4	सराहनीय	– विचित्र कार्य हो जाना

(अ)

नीचे अंग्रेजी के कुछ शब्द और उनके हिन्दी अर्थ दिये गये हैं परंतु उनका क्रम सही नहीं हैं। अंग्रेजी शब्द और उनके अर्थ को सही क्रम देकर लिखिए –

अंग्रेजी भाब्द	–	हिन्दी में अर्थ
रोडवेज	–	चालक
कंडक्टर	–	सड़क परिवहन
ड्राइवर	–	परिचालक
ऐक्शन	–	अधिक भर्ती
स्टार्ट	–	क्रिया करना, हरकत में आना
ओवरलोड	–	बैठने की जगह
सीट	–	चालू होना
ड्रॉप	–	मंत्री
मिनिस्टर	–	काबीना
कैबिनेट	–	सामान्य
नॉर्मल	–	छोड़ना, बूँद

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. व्यंग्य विधा का अर्थ बताइये?
2. ड्राइवर और कंडक्टर की ऐंठ–अकड़ के बहाने किसकी ऐंठ–अंकड़ पर व्यंग्य किया गया है?
3. गुप्त समझौते के अनुसार नीबू के व्यापारी ने कंडक्टर को क्या दिया?
4. 'जैसे कोई और हो' में 'कोई' कौन है?
5. ' व्यवस्था किसी अपमानित लड़की–सी लौटी' इस कथन में किसके लिए तीखा व्यग्यं है ?

ग. चाय की मात्रा कम कर दी
घ. चाय की कीमत बढ़ा दी

2. उचित संबंध जोड़िए –

(अ)

1	सहकारिता	– तराजू के दोनों पलड़े बराबर करना
2	कमाल हो जाना	– साथ मिलकर काम करना
3	संतुलित करना	– प्रशंसा करने के लायक
4	सराहनीय	– विचित्र कार्य हो जाना

(अ)

नीचे अंग्रेजी के कुछ शब्द और उनके हिन्दी अर्थ दिये गये हैं परंतु उनका क्रम सही नहीं हैं। अंग्रेजी शब्द और उनके अर्थ को सही क्रम देकर लिखिए –

अंग्रेजी भाब्द	–	हिन्दी में अर्थ
रोडवेज	–	चालक
कंडक्टर	–	सड़क परिवहन
ड्राइवर	–	परिचालक
ऐक्शन	–	अधिक भर्ती
स्टार्ट	–	क्रिया करना, हरकत में आना
ओवरलोड	–	बैठने की जगह
सीट	–	चालू होना
ड्रॉप	–	मंत्री
मिनिस्टर	–	काबीना
कैबिनेट	–	सामान्य
नॉर्मल	–	छोड़ना, बूँद

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. व्यंग्य विधा का अर्थ बताइये?
2. ड्राइवर और कंडक्टर की ऐंठ–अकड़ के बहाने किसकी ऐंठ–अंकड़ पर व्यंग्य किया गया है?
3. गुप्त समझौते के अनुसार नीबू के व्यापारी ने कंडक्टर को क्या दिया?
4. 'जैसे कोई और हो' में 'कोई' कौन है?
5. ' व्यवस्था किसी अपमानित लड़की–सी लौटी' इस कथन में किसके लिए तीखा व्यग्यं है ?

6. व्यंग्य की शैली की क्या विशेषताएँ हैं?
7. इस पाठ में कुछ शब्द आये हैं जो जो नीचे दिये जा रहे हैं। इन शब्दों के अर्थ बताइए –

   1. अलौकिक
   2. सहकारिता
   3. विस्फोटक
   4. कर्मठ
   5. सराहनीय

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. नीबू के व्यापारी और कंडक्टर के बीच के विवाद को कैसे सुलझाया गया? समझइए।
2. बस और सरकारी तंत्र की किन्हीं तीन समानताओं का उल्लेख कीजिए।
3. 'जैसे कोई और हो' एक व्यग्यं रचना है। इस कथन की पुष्टि कीजिए।
4. बस कंडक्टर ने कौन–कौन सी भूमिका कैसे निभाई है? समझाइये।
5. जैसे सरकार हो' लेखक यह कथन अपनी रचना में जगह–जगह कहता है। उस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

6 निम्नलिखित वाक्यों में निहित व्यंग्य को पहचानिए और उनका आशय अपने शब्दों में लिखिए।

(अ) वे इतनी स्वस्थ थी कि सीट में बाकी बची दो सवारियाँ कुचली जा रही थी।
(ब) छोटे–बड़े, अमीर–गरीब, नर–नारी, सभी धक्के लगा रहे थे। एकता छलक पड़ रही थी।
(स) नारी–मात्र के प्रति पक्षपात करने की उसकी पुरानी आदत।
(द) किसी का बाप जब तक भारोत्तोलन में हैवीवेट चैंपियन न हो, सचमुच उसे नहीं उठा सकता था।
(इ) बस का इंजन किसी सरकारी अफसर के दिमाग की तरह गर्म हो गया था।

अभ्यास के प्रश्न –

प्रश्न 1. – इस पाठ में सरकार के – 1. कानून मंत्रालय 2, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय 3. वित्त मंत्रालय का उल्लेख हुआ है। सरकार के पास इन मंत्रालायों के अलावा और कौन–कौन से मंत्रालय होते हैं?

प्रश्न 2. – इस पाठ में 'सहकारी आंदोलन' का उल्लेख हुआ है। इस आंदोलन के बारे में जानकारी जुटाइये।

प्रश्न 3 – ' गरीबी हटाओ योजना' के बारे में आप क्या जानते हैं?

प्रश्न 4 – भरोत्तोलन किस प्रकार का खेल है? समझाइए।

प्रश्न 5 – ' हैवीवेट' किस प्रकार का खेल है? समझाइए।

शब्दार्थ :–

एवरेस्ट	– हिमालय पहाड़ की चोटी
अलौकिक	– अनोखा, अद्भुत, जो इस लोक का न हो।
सहकारिता	– साथ मिलकर काम करना
ऐक्शन में आना	– गतिशील होना
ओवरलोड होना	– क्षमता से अधिक भार ग्रहण करना
दिवाने	– दिवाना का बहुवचन, यहाँ प्रेमियों के अर्थ में है।
अव्यवस्था	– नियम–कानून का न होना, गड़बड़ी
विस्फोटक	– भभक कर फूटपड़ने वाली
जम चुके थे	– बैठ चुके थे,
केबिनेट	– मंत्रीमंडल
कर्मठ	– काम में मन लगानेवाला
लाघब	– फूर्ती
सराहनीय	– सराहना करने योग्य, प्रशंसा करने योग्य
मरता क्या न करता	– संकट के समय हर तरह की कोशिश करना
कमाल हो जाना	– विचित्र कार्य हो जाना
बिफरकर	– नाराज होकर
गांधीवादी	– व्यंग्य के रूप में प्रयोग हुआ है संकेत गांधी जी की तरह के सत्याग्रह की ओर है
आत्मीयता	– अपनापन
स्टॉपेज–बस	– पड़ाव
शांति प्रस्तावक	– शांति स्थापित करनेवाला
मुद्रा फैलाना	– मुद्रास्फीति। यह अर्थशास्त्र की शब्दावली है। लोगों के पास पैसे हो पर वस्तुओं के दाम बहुत ऊँचे हो और उन्हें खरीदना मुश्किल हो तो इस स्थिति को मुद्रास्फीति कहते हैं।
संतुलित करना	– तराजू के दोनों पलड़े बराबर करना
मुग्ध	– आकर्षित, मोहित
अभिसारिका	– रात्रि में प्रिय से मिलने के लिए जाने वाली नायिका
श्रद्धापूर्वक	– आदर भाव से

उत्तर

प्रश्न 1	**उत्तर (उचित संबंध) :–**
1.घ	
2. क	1. साथ मिलकर काम करना
3. ख	2. विचित्र कार्य हो जाना
4. क	3. तराजू के दोनों पलड़े बराबर करना
5. ख	4. प्रशंसा करने के लायक

योग्यता विस्तार :–

'व्यंग्य' एवं 'हास्य–व्यंग्य'

'व्यंग्य' शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है जो 'अज्ज' धातु में 'वि' उपसर्ग और 'ण्यत्' प्रत्यय के लगाने से बनता है। इस शब्द का मुख्यतः प्रयोग भारतीय काव्यशास्त्र में 'शब्दशक्तियों' के अन्तर्गत हुआ है। जब हम साहित्य में शब्दशक्तियों की चर्चा करते हैं तो व्यंजना शक्ति के संदर्भ में 'व्यंग्यार्थ' के रूप में इस शब्द का प्रयोग होता है। सामान्य कथन में व्यंग्य को लोग 'ताना' या 'चुटकी' की भी संज्ञा देते हैं। इस शब्द का कोशगत अर्थ है, "लगती हुई बात, जिसका कोई गूढ़ अर्थ हो।" अति साधारण रूप में इसे 'लगती हुई बात' कहा गया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने व्यंग्य की परिभाषा देते हुए कहा है, **"व्यंग्य कथन की एक ऐसी शैली है जहाँ बोलनेवाला अधरोष्ठों में मुस्करा रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठे।"** यानी व्यंग्य तीखा व तेज–तर्रार कथन होता है जो हमेशा सोद्देश्य होता है और जिसका प्रभाव तिलमिला देनेवाला होता है।

कालान्तर में व्यंग्य के साथ हास्य भी जुड़ गया और हास्य का पक्ष इतना प्रबल हो गया कि लोग इसे **'हास्य–व्यंग्य'** कहने लगे। अंग्रेजी व्यंग्यकार इसे **'सटायर'** और **'ह्यूमर'** आदि नाम से पुकारने लगे। आज तो व्यंग्य अपनी लोकप्रियता के लिए अपने में हास्य को भी समेटने लगा है। आज हास्य और व्यंग्य लगभग एकसाथ सन्निहित से हो गये हैं।

हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार	प्रमुख व्यंग्य रचनाएँ
हरिशंकर परसाई	विकलांग श्रद्धा का दौर, सदाचार की ताबीज, इंसपैक्टर मातादीन चांद पर, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, निंदा रस
शरद जोशी	जीप पर सवार इल्लियाँ, एक शंख बिन कुतुबनुमा
रवीन्द्रनाथ त्यागी	अच्छी हिन्दी, एक पुराने जमाने की नायिका, हमारा प्राचीन साहित्य
श्रीलाल शुक्ल '	राग दरबारी (उपन्यास)
शंकर पुणताम्बेकर	एक मंत्री स्वर्गलोक में, गुलेल, कलंकरेखा, फर्जी से पैदा भयो, आखरमार, रावण तुम बाहर आओ
लतीफ घोंघी	तिकोने चेहरे, उड़ते उल्लू के पंख, मृतक से क्षमा–याचना सहित, बीमार न होने का दुःख, तीसरे बंदर की कथा, चोरी न होने का दुःख, बुद्धिजीवी की चप्पलें, बुद्धिमानों से बचिए, ईमानदारी की गोलियाँ, आदि। बतरस (व्यंग्य संग्रह),

पाठ–18

प्रपत्र कैसे भरें

भूमिका –

विद्यालय में नामांकन कराना हो, परीक्षा देनी हो, रेलवे का आरक्षण कराना हो, किसी को पैसा भेजने हो, बैक से पैसा निकलना हो या जमा कराना हो, हर काम के लिए आपको लिखित आवेदन करना पड़ता है। आवेदन में एकरूपता के लिए हर संस्था अलग–अलग कार्यों के लिए प्रयुक्त आवेदन का प्रपत्र तैयार करती है जिसे आपको भर कर जमा कराना होता है। यह प्रपत्र आवश्यकता अनुसार अलग–अलग प्रकार के तैयार किए जाते हैं जिन्हें भरना जरूरी होता है। जैसे बैंक से पैसा निकालने के लिए चैक भरकर देना होता है। मनीआॅडर भेजने के लिए मनीआॅडर फार्म भरना पड़ता है। इस पाठ मे हम विभिन्न प्रकार के फार्म भरना या प्रपत्र भरना सीखेगें।

प्रपत्र क्या है? –

सामान्य प्रपत्र के लिए 'फार्म' शब्द प्रचलित है। प्रपत्र एक प्रकार का मुद्रित और व्यवस्थित आवेदन पत्र होता है। जिसमें आवश्यक सूचनाएँ भरनी होती है। उदाहरण के लिए यदि लम्बी रेल यात्रा पर कहीं जाना हो तो आरक्षण कराने के लिए एक प्रपत्र भरना होता है जो रेलवे आरक्षण प्रपत्र कहलाता है। इसी प्रकार आगे की पढ़ाई जारी रखनी हो तो नामांकन पत्र और परीक्षा से पूर्व परीक्षा प्रपत्र भरकर विद्यालय या विश्वविद्यालय में प्रवेश पा सकते हैं, परीक्षा दे सकते हैं। यदि आप अपनी माँ को रूपये भेजना चाहते हो तो इसके लिए सबसे पहले डाकघर से मनीआॅडर फार्म प्राप्त करना होगा, उसे भरना होगा। पैसा जमा कराने होंगे तब ही आप माँ के लिए घर रूपये भेज सकते हैं।

प्रपत्र की उपयोगिता –

राष्ट्रीय मुक्त शिक्षा संस्थान में प्रवेश लेने के लिए आपने एक छपा हुआ फार्म खरीदा होगा और फिर उसे निर्धारित तिथि तक अपने पास के अध्ययन केंद्र पर जमा किया होगा या डाक द्वारा मुख्य कार्यालय भेजा होगा। किसी कार्य को सुचारू और सुसंगत ढ़ग से संपन्न करने के लिए हर संस्था कुछ प्रपत्र तैयार करती है।उपभोक्तओं की सुविध ाा और कार्यालयों की कार्य पद्धति में एकरूपता लाने की दृष्टि से इन्हें तैयार किया जाता है जिससे यह अधिक उपयोगी सिद्ध हो।

प्रपत्रों के प्रकार –

प्रपत्र मूलतः आवेदन पत्र ही होते हैं। आवश्यकताओं के अनुरूप इन आवेदन पत्रों का आकर–प्रकार और स्वरूप भिन्न–भिन्न होते हैं। आमतौर पर हर प्रकार के प्रपत्रो में 'अभ्यर्थी का पूरा, नाम' पिता का नाम, जन्मतिथि, तथा स्थान का नाम आयु, लिंग, पता, स्थायी पता, टेलीफोन नम्बर आदि भरना होता है। आइये हम निम्न प्रपत्रों को कैसे भरें, समझते हैं।

1. प्रवेश के लिए आवेदन पत्र –

आइये देखे आवेदन पत्र किस प्रकार भरना चाहिए

● विद्यार्थी का पूरा नाम –

U	R	W	A		V	E	R	M	A				

● पिता का नाम

S	A	N	J	E	E	T		V	E	R	M	A	

● माता का नाम

P	R	A	N	I	T	A		V	E	R	M	A	

विद्यार्थी पिता और माता का नाम अंग्रेजी के केपिटल अक्षर में लिखना चाहिए लिखते समय मुख्य नाम और उपनाम के बीच एक खाना अवश्य छोड़ देना चाहिए। एक खाना छोड़ने से यह पता चलता है कि ऊर्वा और वर्मा या संजीव कुमार और वर्मा अलग–अलग शब्द हैं।

यही फार्म भरने का सही तरीका है। ऐसा केवल नाम लिखते समय ही नहीं बल्कि पता लिखते समय, माता या पिता का नाम लिखते समय भी किया जाता है।

पत्र व्यवहार के लिए पता

M	I	G	1	-	7	3	8		A	M	A	D	I	N	A	G	A	R

B	H	I	L	A	I		N	A	G	A	R						

D	I	S	T		D	U	R	G		C	G						

पिन कोड

4	9	1	0	0	6	9

एस. टी. डी कोड़

0	7	8	8

मोबाइल नं.

9	4	2	4	2	6	4	4	0	4

● पत्र व्यवहार करते समय भी वही विधि अपनायी गयी है। एम. आई. जी. – 738 मकान की सख्या है, आमदी नगर मोहल्ले का नाम है भिलाई नगर शहर तथा दुर्ग जिला है। सी. जी. छत्तीसगढ़ राज्य है। यहाँ खाना छोड़ने का मतलब है कि इनके बीच अर्ध विराम लगा है।

● पिन कोड एस.टी. डी. कोड और दूरभाषा संख्या, मोबाइल नंबर पर क्रमशः छः, चार, सात और दस खाने हैं। अंकों को भरते समय ध्यान रखें कि सभी खाने भर जाएँ।

● यदि अंको की सख्या खानों से कम हो तो शुरू के खाने छोड देने चाहिए। उसमें हाइफन (–) का चिह्न लगा देनी चाहिए।

● जन्मतिथि

2	8	0	5	1	9	9	4

यह लिखते समय इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि दिन और माह यदि एक अंक का हो तो उसके आगे शून्य डाल कर भरा जाना चाहिए। उपर भरे जन्मतिथि 28. 05.1994 इसमें माह में एक अंक है। उसके आगे शून्य लगाकर 05 भरा गया है।

- लिंग

  पुरूष ☐ महिला ☐

  प्रपत्र में दिये गये निर्देश के अनुसार जो भी उचित हो यदि सही का निशान लगाना हो तो वह लगाएँ अथवा महिला अथवा पुरूष लिखना हो तो वह लिखें –

- सामान्य ☐ आरक्षित ☐
- विकलांगता ☐
- वंचित वर्ग ☐

जहाँ आवश्यकता हो वहाँ सही का निशान लगायें। उदाहरण स्वरूप यदि आप महिला हैं तो महिला के दिये गए खाने में (सही) चिन्ह लगाएँ और पुरूष हैं तो पुरूष के खाने में (सही) का चिह्न लगाएँ।

हस्ताक्षर

हस्ताक्षर के लिए बने स्थान का नमूना

प्रपत्र पर हस्ताक्षर अवश्य करें। अर्थात आपके नाम की पहचान बताने वाली लिखावट/ आपके लिखे हुए नाम से पता चलता है कि आप ही हैं कोई और नहीं। इसलिए इन्हें जगह–जगह बदल–बदल कर नहीं लिखना चाहिए। आपके हस्ताक्षर का प्रयोग बैंक के खाते खोलते समय होता है या प्रमुख दस्तावेज तैयार करने में इनका बहुत महत्व होता है। यदि आप प्रपत्र पर सही स्थान पर अपने हस्ताक्षर नहीं करेंगे तो आपके आवेदन पर विचार नहीं किया जायेगा।

मनीआर्डर फार्म कैसे भरें ? –

मनीआर्डर फार्म

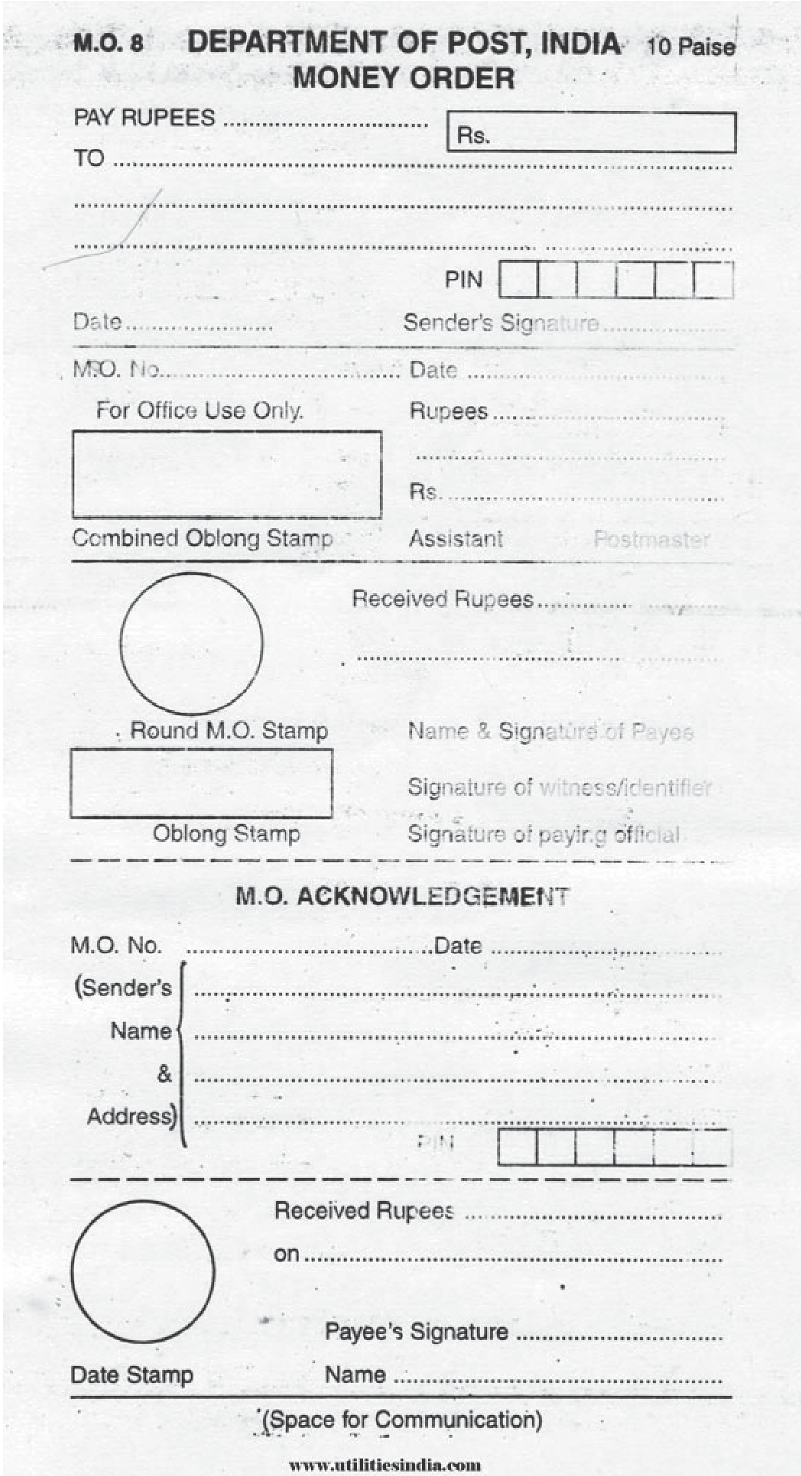

M.O. 8 DEPARTMENT OF POST, INDIA 10 Paise

MONEY ORDER

PAY RUPEES .... Rs.

TO ....

....

....

PIN

Date .... Sender's Signature ....

M.O. No. .... Date ....

For Office Use Only. Rupees ....

....

Rs. ....

Combined Oblong Stamp Assistant Postmaster

Received Rupees ....

....

Round M.O. Stamp Name & Signature of Payee

Signature of witness/identifier

Oblong Stamp Signature of paying official

M.O. ACKNOWLEDGEMENT

M.O. No. ....Date ....

(Sender's ....

Name ....

& ....

Address) ....

PIN

Received Rupees ....

on ....

Payee's Signature ....

Date Stamp Name ....

(Space for Communication)

www.utilitiesindia.com

इस पत्र को ध्यान से पढ़िये। इसके हिस्सों में अलग–अलग सूचनाएँ दी गई हैं। पहले हिस्से में उस व्यक्ति का नाम और पता लिखा जाता है जिसको मनीआर्डर भेजा जाना है। दूसरे हिस्से को खाली छोड़ दिया जाता है। यह डाक घर के कार्यालय–प्रयोग के लिए है। तीसरे हिस्से को भी आप छोड़ दीजिए। इसे मनीऑडर प्राप्त व्यक्ति भरेगा। चौथे हिस्से में अपना नाम लिखिए। पाँचवा हिस्सा खाली छोड़ दीजिए। यह मनीऑडर प्राप्तकर्ता के उपयोग के लिए है। सदेश के लिए स्थान में आप जिसे रूपये भेज रहे हैं उसके लिए कोई संदेश भेजना चाहते हैं, उसे संक्षेप में लिखिए।

नीचे मनीआर्डर फार्म के नमूने में इसे भरने का तरीका बताया जा रहा है।

पहला हिस्सा –

सेवा में,

श्री धैर्य कुमार देवांगन
ग्राम–पोष्ट – बाकुलबाई
जिला नारायणपुर
राज्य – छत्तीसगढ़
पिन – 494661

दूसरा हिस्सा न भरें –

यह कार्यालय प्रयोग के लिए है। इसे डाक घर का कर्मचारी भरेगा।

तीसरा हिस्सा –

इसे प्राप्तकर्ता भरेगा। यदि आप मनीऑडर प्राप्त करते हैं तो इसे आपको ही भरना होगा और अपने हस्ताक्षर करने होंगे।

चौथा हिस्सा –

मनीआर्डर पानेवाला अपना नाम और पता मनीआर्डर पावती वाले हिस्से में लिखेगा –

संजीव कुमार
एम. आई. जी –899
कलश आवासीय परिसर
लोधी पारा के पास
पुराना सरकण्डा
बिलासपुर
छत्तीसगढ़

पाँचवा हिस्सा –

यह प्राप्तकर्ता के उपयोग के लिए है। आप तब भरें जब आपको मनीऑडर मिलता है।

अंतिम हिस्सा –

इस स्थान में आप संदेश भेज सकते हैं। उदाहरण के लिए 'आपके बेटे के इलाज के लिए पैसे भेज रहा हूँ और पैसों की आवश्यकता हो तो अवश्य सूचित कीजिएगा।'

चाहें तो अब नाम पता भी नीचे लिख सकते हैं।

बैंक में प्रयुक्त फार्म –

बैंक में उपभोक्ता मुख्य रूप से पैसा जमा कराने या निकालने जाते हैं। पैसे निकालने के लिए आहरण आदेश फार्म या चेक भरना होता है।

एक उदाहरण :–

सं. F. No. 292

बँक ऑफ बडोदा बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

यह फार्म चेक नहीं है इसके साथ पासबुक जरूरी है.
हा चेक नाही ह्यासोबत पासबुक असणे आवश्यक आहे.
This form is not a cheque.
Pass Book must accompany this.

बचत बैंक
SAVING BANK

खाता नं./खाते क्र. Account No.

शाखा Branch ____________

दिनांक/Date ____________

मुझे/मला/Pay Self ____________

रुपये/Rupees ____________

____________ अदा करे/द्यावेत

रु. Rs. ____________

नकद अदा करे
रोख रक्कम द्यावी
PAY CASH

हस्ताक्षर/सही/Signature ____________

खातेदार का नाम/खातेधारकाचे नाव/Name of the a/c holder ____________

नामांकन सुविधा उपलब्ध/नामांकनाची सोय उपलब्ध आहे./Nomination facility available

SGI 5000 Pads x 100/09-12

नगद राशि जमा करने का प्रपत्र :–

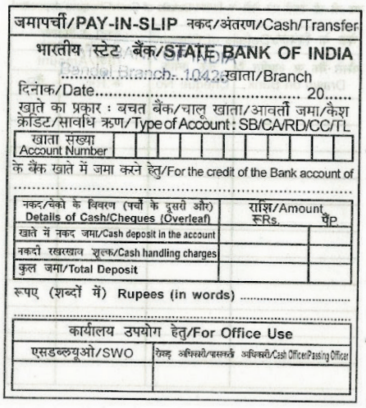

जमापर्ची/PAY-IN-SLIP नकद/अंतरण/Cash/Transfer

भारतीय स्टेट बैंक/STATE BANK OF INDIA

Bandel Branch- 10426 खाता/Branch

दिनांक/Date.............................. 20......

खाते का प्रकार : बचत बैंक/चालू खाता/आवर्ती जमा/कैश क्रेडिट/सावधि ऋण/Type of Account : SB/CA/RD/CC/TL

खाता संख्या Account Number

के बैंक खाते में जमा करने हेतु/For the credit of the Bank account of ....

नकद/चेको के विवरण (पर्चों के दूसरी ओर) Details of Cash/Cheques (Overleaf)	राशि/Amount रूRs.	पैP.
खाते में नकद जमा/Cash deposit in the account		
नकदी रखरखाव शुल्क/Cash handling charges		
कुल जमा/Total Deposit		

रूपए (शब्दों में) Rupees (in words) ....

कार्यालय उपयोग हेतु/For Office Use	
एसडब्ल्यूओ/SWO	रोकड़ अधिकारी/पासकर्ता अधिकारी/Cash Officer/Passing Officer

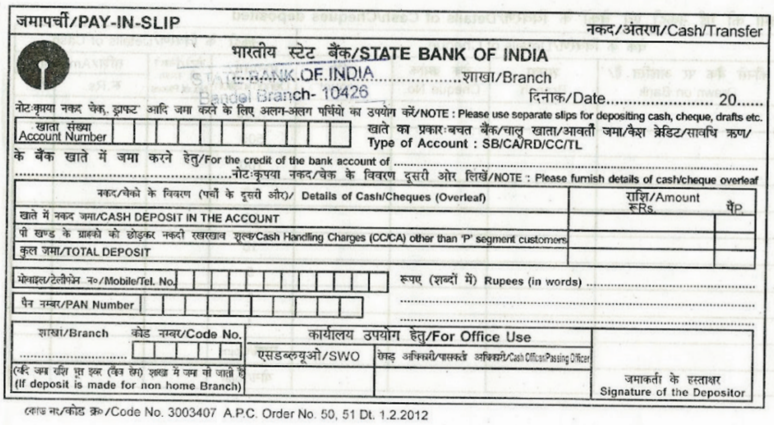

जमापर्ची/PAY-IN-SLIP नकद/अंतरण/Cash/Transfer

भारतीय स्टेट बैंक/STATE BANK OF INDIA

STATE BANK OF INDIA Bandel Branch- 10426 ....शाखा/Branch

दिनांक/Date...................... 20......

नोट:कृपया नकद चेक, ड्राफ्ट आदि जमा करने के लिए अलग-अलग पर्चियो का उपयोग करें/NOTE : Please use separate slips for depositing cash, cheque, drafts etc.

खाता संख्या Account Number

खाते का प्रकार:बचत बैंक/चालू खाता/आवर्ती जमा/कैश क्रेडिट/सावधि ऋण/ Type of Account : SB/CA/RD/CC/TL

के बैंक खाते में जमा करने हेतु/For the credit of the bank account of ....

..............................नोट:कृपया नकद/चेक के विवरण दूसरी ओर लिखें/NOTE : Please furnish details of cash/cheque overleaf

नकद/चेको के विवरण (पर्चों के दूसरी ओर)/ Details of Cash/Cheques (Overleaf)	राशि/Amount रूRs.	पैP.
खाते में नकद जमा/CASH DEPOSIT IN THE ACCOUNT		
पी खण्ड के ग्राहको को छोड़कर नकदी रखरखाव शुल्क/Cash Handling Charges (CC/CA) other than 'P' segment customers		
कुल जमा/TOTAL DEPOSIT		

मोबाइल/टेलीफोन न०/Mobile/Tel. No.

पैन नम्बर/PAN Number

रूपए (शब्दों में) Rupees (in words) ....

शाखा/Branch कोड नम्बर/Code No.	कार्यालय उपयोग हेतु/For Office Use		
....	एसडब्ल्यूओ/SWO	रोकड़ अधिकारी/पासकर्ता अधिकारी/Cash Officer/Passing Officer	
(यदि जमा राशि मूल इतर (होम ब्रांच) शाखा में जमा की जाती है) (If deposit is made for non home Branch)			जमाकर्ता के हस्ताक्षर Signature of the Depositor

कोड नं०/कोड क्र०/Code No. 3003407 A.P.C. Order No. 50, 51 Dt. 1.2.2012

छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षाकर्मी चयन परीक्षा के आवेदन–पत्र हेतु निर्धारित प्रपत्र का नमूना :–

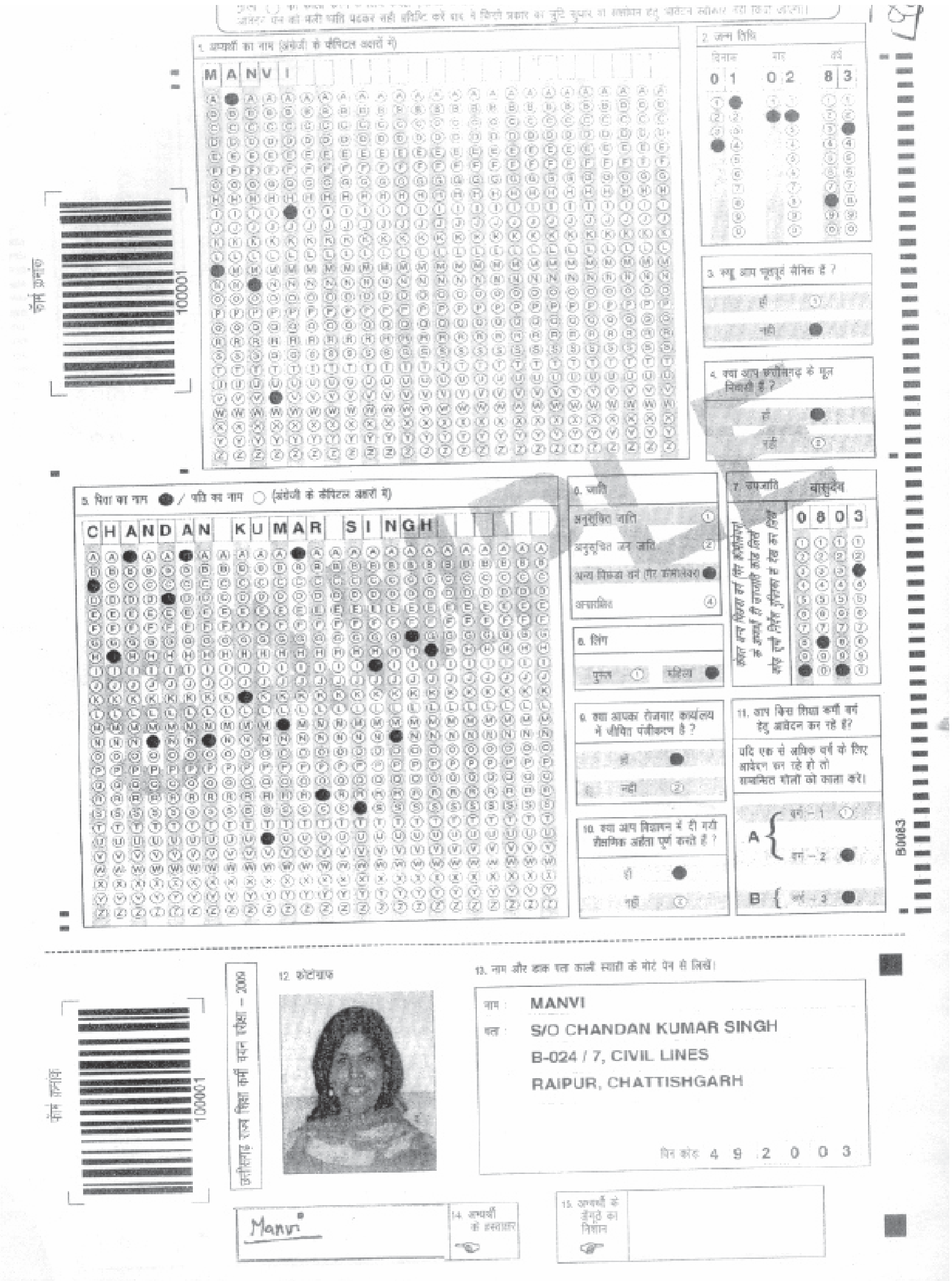

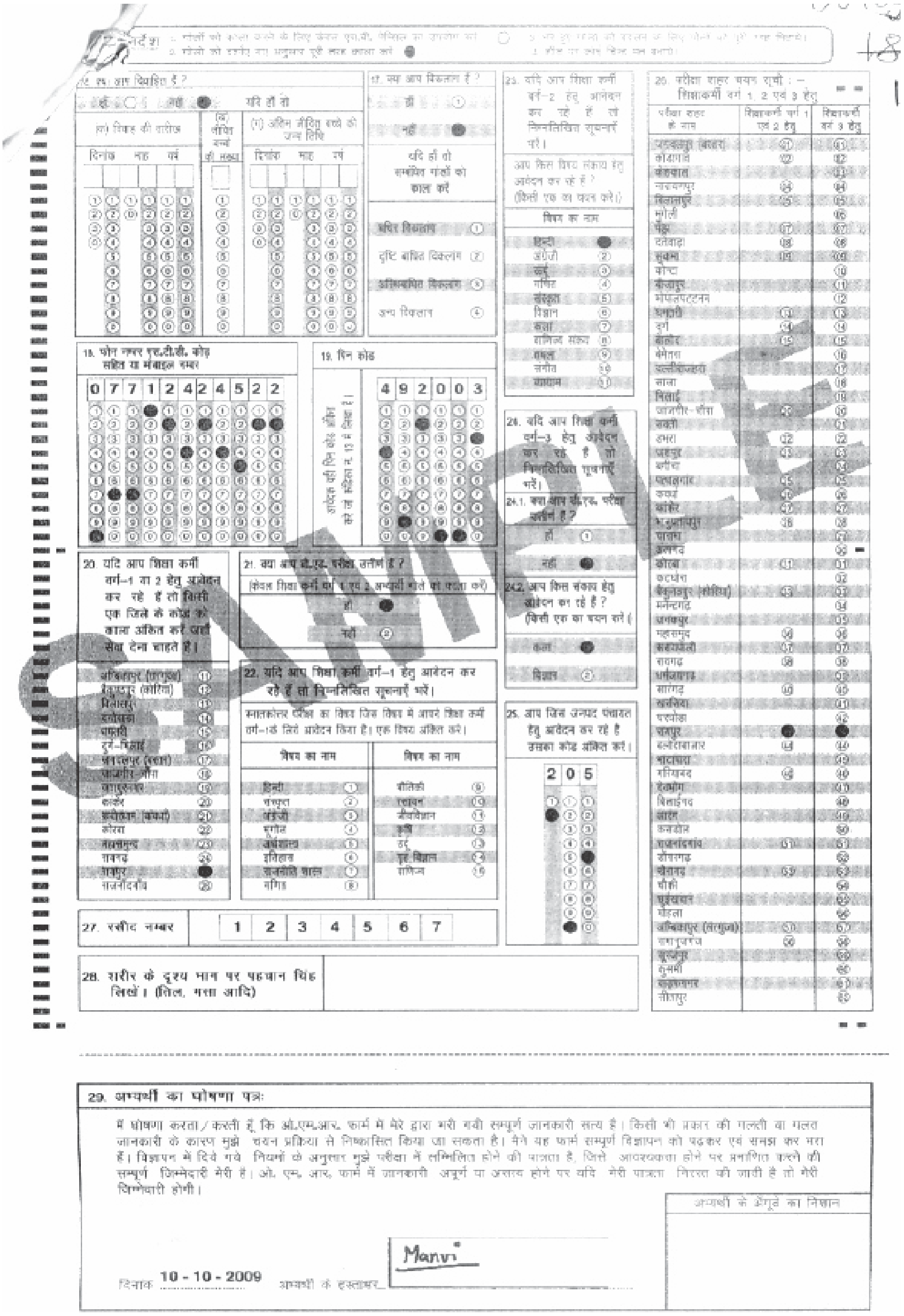
निर्देश
2. गोलों को दर्शाए गए अनुसार पूरी तरह काला करें
यदि हाँ तो
(अ) विवाह की तारीख
दिनांक माह वर्ष
जीवित बच्चों की संख्या
(स) अंतिम जीवित बच्चे की जन्म तिथि
यदि हाँ तो सम्बंधित गोलों को काला करें
दृष्टि बाधित विकलांग
अन्य विकलांग
18. फोन नम्बर एस.टी.डी. कोड सहित या मोबाइल नम्बर
0 7 7 1 2 4 2 4 5 2 2
19. पिन कोड
4 9 2 0 0 3
20. यदि आप शिक्षा कर्मी वर्ग–1 या 2 हेतु आवेदन कर रहे हैं तो किसी एक जिले के कोड को काला अंकित करें जहाँ सेवा देना चाहते हैं।
21. क्या आप बी.एड. परीक्षा उत्तीर्ण हैं ?
22. यदि आप शिक्षा कर्मी वर्ग–1 हेतु आवेदन कर रहे हैं तो निम्नलिखित सूचनाएँ भरें।
विषय का नाम
24. यदि आप शिक्षा कर्मी वर्ग–3 हेतु आवेदन कर रहे हैं तो निम्नलिखित सूचनाएँ भरें।
24.2 आप किस संकाय हेतु आवेदन कर रहे हैं ? (किसी एक का चयन करें।)
कला
विज्ञान
25. आप जिस जनपद पंचायत हेतु आवेदन कर रहे हैं उसका कोड अंकित करें।
2 0 5
26. परीक्षा शहर चयन सूची :– शिक्षाकर्मी वर्ग 1, 2 एवं 3 हेतु
27. रसीद नम्बर
1 2 3 4 5 6 7
28. शरीर के दृश्य भाग पर पहचान चिह्न लिखें। (तिल, मस्सा आदि)
29. अभ्यर्थी का घोषणा पत्रः
मैं घोषणा करता/करती हूँ कि ओ.एम.आर. फार्म में मेरे द्वारा भरी गयी सम्पूर्ण जानकारी सत्य है। किसी भी प्रकार की गल्ती या गलत जानकारी के कारण मुझे चयन प्रक्रिया से निष्कासित किया जा सकता है। मैंने यह फार्म सम्पूर्ण विज्ञापन को पढ़कर एवं समझ कर भरा हैं। विज्ञापन में दिये गये नियमों के अनुसार मुझे परीक्षा में सम्मिलित होने की पात्रता है, जिसे आवश्यकता होने पर प्रमाणित करने की सम्पूर्ण जिम्मेदारी मेरी है। ओ. एम. आर. फार्म में जानकारी अपूर्ण या असत्य होने पर यदि मेरी पात्रता निरस्त की जाती है तो मेरी जिम्मेवारी होगी।
अभ्यर्थी के अँगूठे का निशान
Manvi
दिनांक 10 - 10 - 2009
अभ्यर्थी के हस्ताक्षर
SAMPLE

पाठगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न.एक– दिये गये प्रश्नों में से सही विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. मनीआर्डर फार्म के दूसरे हिस्से में निम्नलिखित में से कौन क्या लिखता है –
   क. प्रेषक संदेश लिखता है
   ख. कोई कुछ नहीं भरता
   ग. प्राप्तकर्ता हस्ताक्षर करता है
   घ. डाकखाने के कर्मचारी आवश्यक जानकारी भरते हैं।

2. मनीआर्डर के पहले हिस्से में 'सेवा में' के नीचे दिए गऐ रिक्त स्थान पर क्या लिखते हैं –
   क. अपना पता
   ख. अपने डाक घर का पता
   ग. जिसे मनीआर्डर भेजना है उसका पता
   घ. गाँव के मुखिया का नाम

3. नाम लिखने के लिए दिये गये खानों को कैसे भरा जाता है?
   क. दो वाक्यों के बीच एक खाना खाली छोड़ दिया जाता है।
   ख. हर वर्ग के बीच एक खाना खाली छोड़ दिया जाता है।
   ग. दो शब्दों के बीच एक खाना खाली छोड़ दिया जाता है।
   घ. कोई भी खाना खाली नहीं छोड़ा जाता।

उत्तर माला

प्रश्न एक – 1. घ 2. ख 3. ग

अष्टम इकाई

पद्य

मेघ आये – सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

गद्य

ठेले पर हिमालय (संस्मरण) – धर्मवीर भारती

व्याकरण

वाक्य की सामान्य अशुद्धियाँ

पाठ–19

मेघ आए

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

जीवन परिचय –

हिन्दी नवगीत परम्परा के सर्वश्रेष्ठ कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म 15 सितम्बर 1927 ई. को बस्ती उत्तर प्रदेश में हुआ था। आपकी शिक्षा बस्ती, वाराणसी फिर इलाहाबाद में हुई। अपनी आजीविका के लिए पहले शिक्षकीय कार्य किये इसके बाद आकाशवाणी में सहायक प्रोड्यूसर हुए। वे साप्ताहिक पत्रिका दिनमान के उप–संपादक थे। बच्चों की पत्रिका 'पराग' का सम्पादन कार्य भी किया। आपका स्वर्गवास 23 सितंबर 1983 ई. में हुआ था।

रचनाएँ–

काव्य :– तीसरा सप्तक, काठ की घंटियाँ, बांस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, कुआनो नदी, जंगल का दर्द, खूंटियों पर टंगे लोग, क्या कहकर पुकारूँ : प्रेम कविताएँ, कविताएँ (1), कविताएँ (2), कोई मेरे साथ चले

कथा–साहित्य : – पागल कुत्तों का मसीहा (लघुउपन्यास), सोया हुआ जल (लघुउपन्यास), उड़े हुए रंग (उपन्यास), कच्ची सड़क, अंधेरे पर अंधेरा

नाटक :– 1. बकरी 2. लड़ाई 3. अब गरीबी हटाओ 4. कल भात आएगा तथा हवालात

यात्रा संस्मरण :– 1. कुछ रंग कुछ गंध

बाल कविता :– 1. बतूता का जूता 2. महंगू की टाई

बाल नाटक :– 1. भों–भों खों–खों 2. लाख की नाक

भावपक्ष– सक्सेना जी की कविताएँ शोषण, अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष और विद्रोह को प्रदर्शित करती हैं। इनकी कविताओं में एक ओर व्यक्तिगत प्रेम और सौंदर्य चित्रित होती है तो दूसरी ओर शोषित और पीड़ित मानव के समग्र रूप का चित्रण होता हैं। वे समाज में विद्यमान असमानताओं का सूक्ष्मतम् चित्र प्रस्तुत करते हैं। आप नई कविता के जाने माने कवि कहलाते हैं। आपकी कविता नई कविता को नया मोड़ और नई दिशा देने की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

कलापक्ष – कवि की भाषा सरल और सहज है। बोलचाल की भाषा से शब्दों का सार्थक चयन उनकी कविताओं में हुआ है। लोकमानस के चित्र के साथ ग्रामीण भाषा का पुट दिखाई देता है। उनकी कविता रूपक, उपमा, पुनरूक्ति अलंकारा से अलंकृत हैं जिससे कविता के सौंदर्य में अभिवृद्धि होती है। कविताओं में मुहावरों का सार्थक प्रयोग किया गया है। कविता में मुक्तक छंदों का प्रयोग किया गया है।

साहित्य में स्थान – सक्सेना जी हिन्दी नई कविता के नवगीत परम्परा के सशक्त कवि माने जाते हैं। सम्पादक और अनुवादक के रूप में इन्हें विशेषज्ञता हासिल है। आपको अनेक बार राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत किया गया है। आप हिन्दी साहित्य के इतिहास में तार सप्तक के कवि के रूप में जाने जाते हैं।

मेघ आए

केन्द्रीय भाव–

'मेघ आए' कविता के माध्यम से कवि ने मेघ का चित्रण गाँव में शहर से आए मेहमान की तरह किया है। कविता में दो अर्थ साथ–साथ चलते हैं, एक बादल का दूसरा मेहमान का।

मेघ आए, बड़े बन–ठन के, सँवर के।
आगे–आगे नाचती–गाती बयार चली,
दरवाजे–खिड़कियाँ खुलने लगीं गली–गली,
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।
मेघ आए, बड़े बन–ठन के, सँवर के।

पेड़ झुक झाँकने लगे, गरदन उचकाए,
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा नदी ठिठकी, घूँघट सरके।
मेघ आए, बड़े बन–ठन के, सँवर के।

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,
'बरस बाद सुधि लीन्हीं'–
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,
हरसाया ताल, लाया पानी परात भर के।
मेघ आए, बड़े बन–ठन के, सँवर के।

क्षितिज–अटारी गहराई, दामिनी दमकी,
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की,
बाँध टूटा, झर–झर मिलन के अश्रु ढरके,
मेघ आए, बड़े बन–ठन के, सँवर के।

000

पाठ्यगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य या असत्य लिखिए।

क. बूढ़ा व्यक्ति मेहमानों के सामने नहीं उठता।
ख. परात में पानी भरने घर का मुखिया तालाब चला गया।
ग. मेघ का वर्णन मेहमान के रूप में किया गया है।
घ. कविता में दो स्थितियाँ साथ–साथ चित्रित नहीं हुई है।
च. श्री सर्वेश्वर दयाल सक्सेना प्रयोगवादी कवि हैं।

प्रश्न 2.दिये गये विकल्पों में से एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

1. 'मेघ आए' कविता में किसका वर्णन किया गया हैं।
   (क) पाहुन का (ख) वर्षा ऋतु का
   (ग) आँधी का (घ) नदी का
2. बयार कब चली?
   (क) मेघ आने से पहले (ख) मेघ के साथ
   (ग) चली ही नहीं (घ) मेघ जाने के बाद
3. किवाड़ की ओट से लता ने क्या कहा?
   (क) अभी–अभी क्यों आए
   (ख) क्यों आ गए
   (ग) बहुत दिन बाद आए
   (घ) बहुत दिन बाद आते
4. ''ताल लाया पानी परात भरके'' से कवि का आशय क्या है?
   (क) ताल और नदी एक हो गए हैं।
   (ख) ताल का पानी भरा परात लाया है।
   (ग) पानी से भरा ताल जैसा लगता है।
   (घ) बारिश से ताल भर गये हैं।
5. जब कवि एक स्थिति के साथ विभिन्न पक्षों का वर्णन दूसरी स्थिति के साथ विस्तार से करता है तब उसे कहते हैं –
   (क) रूपक अलंकार (ब) साँग रूपक अलंकार
   (ग) रूप अलंकार (घ) बाज रूपक अलंकार

प्रश्न 3 लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) 'क्षमा करो, गाँठ खुल गई भरम की' पंक्ति में किसने किससे क्षमा मांगी?
(2) पाहुन के संदर्भ में दामिनी का क्या तात्पर्य है?
(3) 'मेघ आए' कविता में ग्रामीण शब्दों का प्रयोग कहाँ–कहाँ हुआ है? लिखिए।
(4) निम्न लिखित के प्रतीक अर्थ लिखिए।
    (क) बयार (ख) लता (ग) पेड़ (घ) ताल

प्रश्न 4 दीर्घउत्तरीय प्रश्न

(1) 'मेघ आए' कविता की भाषा सरल और सहज है। उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए
(2) मेघ और मेहमान के आने से वातावरण में क्या–क्या परिवर्तन हुए? समझाइये।
(3) बादल के आने से ग्रामवासी किस प्रकार अपनी खुशियाँ मनाते हैं? स्पष्ट कीजिए।
(4) सभी ग्रामवासी 'हरसाया' हुआ या बहुत खुश किस कारण से होते हैं? समझाइये।
(5) निम्नलिखित का अर्थ स्पष्ट कीजिए –
    (1) जुहार की।
    (2) बरस बाद सुधि लीन्हीं।
    (3) झर–झर मिलन के अश्रु ढरके ।

शब्दार्थ

मेघ	–	बादल	
संवर	–	सजना	
बयार	–	हवा	
पाहुन	–	अतिथि, मेहमान	
बांकी	–	तिरछी	
जुहार	–	नमस्ते, प्रणाम करना	
सुधि	–	याद करना	
ओट	–	पीछे (छुप के)	
किवार	–	दरवाजा	
हरसाया	–	प्रसन्न हुआ, हर्षित हुआ	
ताल	–	तालाब	
क्षितिज	–	जहाँ धरती और आकाश मिले दिखाई देते हैं।	
अटारी	–	मकान के ऊपर का कमरा या कक्ष	
दामिनी	–	बिजली	
दमकी	–	चमकना, दहकना	
अश्रु	–	आँसू	

उत्तर माला :–

प्रश्न 1.	प्रश्न 2.
1 असत्य	1 ख
2 असत्य	2 क
3 सत्य	3 ग
4 असत्य	4 ख
5 सत्य	5 ख

योग्यता विस्तार

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षामण्डल कक्षा दसवी के हिन्दी विशिष्ट की पाठ्यपुस्तक में वर्षा ऋतु से संबंधित दो कविताएँ दिये गये हैं। पहली कविता है – प्रकृति के सुकुमार कवि के नाम से प्रसिद्ध सुमित्रानंदन पंत की 'पर्वत प्रदेश में पावस' तथा दूसरी कविता है – आधुनिक युग की मीरा – महादेवी वर्मा की 'वर्षा सुंदरी के प्रति'। सुमित्रानंदन पंत तथा महादेवी वर्मा, दोनों ही छायावाद के चार स्तंभों में से हैं तथा इनकी संदर्भित कविताएँ छायावाद की श्रेष्ठ रचनाएँ हैं।

उपर्युक्त दोनों कविताओं – 'पर्वत प्रदेश में पावस' तथा 'वर्षा सुंदरी के प्रति' को आपने पढ़ी भी होगी। इन कविताओं को पुनः पढ़िए और 'मेघ आये' कविता के काव्यसौंदर्य के साथ इनके काव्यसौंदर्य की तुलना कीजिए।

पाठ–20

ठेले पर हिमालय

धर्मवीर भारती

जीवन परिचय – प्रयोगवादी कविता के सुप्रसिद्ध कवि श्री धर्मवीर भारती का जन्म गंगा की पवित्र नगरी इलाहाबाद में 25 दिसंबर 1926 ई. में हुआ था। इनकी शिक्षा–दीक्षा अपने गृहनगर में हुई थी। स्वतंत्र लेखन ही उनका व्यवसाय रहा है। इन्होंने जीवन पर्यन्त सम्पादकीय कार्य ही किया। 04 सितंबर 1997 को आपका निधन हुआ।

भावपक्ष – धर्मवीर भारती प्रयोगवादी कविता के शीर्षस्थ कवि रहे हैं। आप 'अंधायुग' जैसे गीत–नाट्य के प्रमुख नाटककार भी रहे हैं। अज्ञेय के प्रयोगवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने में उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया। कवि और उपन्यासकार के अलावा यात्रा वृतांत की विधा में भी माहिर रहे हैं। 'ठेले पर हिमालय' यात्रावृतांत में बहुत ही रोचक शब्दों में आत्मीय से लेखन कार्य किया हैं जिसे पढ़कर सहसा ही नैनीताल की वादियों में खो जाने की कल्पना हो सकती हैं।

भाषा–शैली – लेखक ने अपनी भाषा में प्रतीकों एवं बिम्बों का प्रयोग बहुत ही सार्थक रूप में किया है। गद्य में भी वे बिम्बों और प्रतीकों की काव्य भाषा का प्रयोग सुन्दरतापूर्ण करते हैं। भाषा प्रतीकों के कारण कहीं–कहीं दुरूह लगती है किन्तु भाषा में लयात्मकता दिखाई देती है। इनकी आकर्षक भाषा–शैली आत्मीयता और स्वच्छंदता को स्पष्ट करती है।

रचनाएँ –

कहानी संग्रह :– मुर्दों का गाँव, स्वर्ग और पृथ्वी, चाँद और टूटे हुए लोग, बंद गली का आखिरी मकान, साँस की कलम से, समस्त कहानियाँ एक साथ
काव्य रचनाएँ :– ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष, कनुप्रिया, सपना अभी भी, आद्यन्त
उपन्यास :– गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा, ग्यारह सपनों का देश, प्रारंभ व समापन
निबंध संग्रह :– ठेले पर हिमालय, पश्यंती
कहानियाँ :– अनकही, नदी प्यासी थी, नील झील, मानव मूल्य और साहित्य, ठण्डा लोहा,
पद्य नाटक :– अंधा युग
आलोचना :– प्रगतिवाद : एक समीक्षा, मानव मूल्य और साहित्य

साहित्य में स्थान – सम्पादक के रूप में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' जैसे उपन्यास लिखकर हिन्दी कथासाहित्य को एक नया आयाम दिया है। 1972 में इन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। इसके अलावा साहित्य के कई महत्वपूर्ण पुरस्कारों से आपको समय–समय पर नवाजा गया था।

ठेले पर हिमालय

धर्मवीर भारती

केन्द्रीय भाव – इस यात्रा वृतांत में लेखक ने व्यक्तिपरकता, स्वच्छंदता, आत्मीयता और आकर्षक भाषा–शैली का प्रयोग करते हुए नैनीताल से रानीखेत और मझकाली के रास्ते की भयानकता का वर्णन बड़ी ही ईमानदारी से किया है। हिम–दर्शन, यात्रा के दृश्य, रास्ते की सुंदरता और अपने मित्रों से लगाव का सार्थक और आत्मीयता से चित्रण किया है।

ठेले पर हिमालय–खासा दिलचस्प शीर्षक है न! और यकीन कीजिए इसे बिल्कुल ढूँढना नहीं पड़ा। बैठे–बिठाए मिल गया। अभी कल की बात है, एक पान की दुकान पर मैं अपने एक गुरूजन उपन्यासकार मित्र के साथ खड़ा था कि ठेले पर बर्फ की सिलें लादे हुए बर्फवाला आया। ठंडे, चिकने, चमकते बर्फ से भाप उड़ रही थी। मेरे मित्र का जन्म–स्थान अल्मोडा है, वे क्षण–भर उस बर्फ को देखते रहे, उठती हुई भाप में खोए रहे और खोए–खोए से ही बोले, 'यही बर्फ तो हिमालय की शोभा है'।

वे हँसे भी, पर मुझे लगा कि वह बर्फ कहीं उनके मन को खरोंच गई ओर ईमान की बात यह है कि जिसने 50 मील दूर से भी बादलों के बीच, नीले आकाश में हिमालय की शिखर–रेखा को चाँद–तारों से बात करते देखा है, चाँदनी में उजली बर्फ को धुँधले हल्के नीले जाल में दूधिया समुद्र की तरह मचलते ओर जगमगाते देखा है, उसके मन पर हिमालय की बर्फ एक ऐसी खरोंच छोड़ जाती है, जो हर बार याद आने पर पिरा उठती है। मैं जानता हूँ, क्योंकि वह बर्फ मैंने भी देखा है।

सच तो यह है कि सिर्फ बर्फ को बहुत निकट से देख पाने के लिए ही लोग कौसानी गए थे। नैनीताल से रानीखेत ओर रानीखेत से मझकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए, कोसी। कोसी से एक सड़क अल्मोड़े चली जाती है, दूसरी कौसानी। कितना कष्टप्रद, कितना सूखा और कितना कुरूप है वह रास्ता! पानी का कहीं नाम–निशान नहीं, सूखे–भूरे पहाड़, हरियाली का नाम नहीं। ढालों को काट कर बनाए हुए टेढ़े–मेढ़े रास्ते पर अल्मोड़े का एक नौसिखिया और लापरवाह ड्राइवर जिसने बस के तमाम मुसाफिरों की ऐसी हालत कर दी कि जब हम कोसी पहुँचे तो सभी के चेहरे पीले पड़ चुके थे। कौसानी जाने वले सिर्फ हम ही थे, वहाँ उतर गए। बस अल्मोड़े चली गई सामने के एक टीन के शेड में काठ की बेंच पर बैठ कर हम वक्त काटते रहे। तबीयत सुस्त थी ओर मौसम में उमस थी। दो धंटे बाद दूसरी लॉरी आकर रूकी और जब उसमें से प्रसन्न–बदन शुक्ल जी को उतरते देखा तो हम लोगों की जान में जान आई। शुल्क जी जैसा सफर का साथी पिछले जन्म के पुण्यों से ही मिलता है उन्होंने हमें कौसानी जाने का उत्साह दिलाया था ओर खुद तो कभी उनके चेहरे पर थकान या सुस्ती दिखा ही नहीं, पर उन्हें देखते ही हमारी भी सारी थकान काफूर हो जाया करती थी।

कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल–कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे–छोटे सुन्दर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुन्दर है सोमेश्वर की घाटी! हरी–भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे–छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी–कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी–नालों पर बने हुए पुल। कहीं–कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी–मेढ़ी, ऊपर–नीचे रेंगती हुई ककरीली पीठवाले अजगर–सी सड़क पर धीरे–धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उस का सुहानापन हमें और भी तन्द्रालस बना रहा था। पर ज्यों–ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब–सी निराशा छाती जा रही थी – अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं। कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी के बारे में सुना जाता था।

आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी से अधिक मोह है, गांधी जी ने यहीं अनासक्ति योग लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंट का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, गाँव, सुंदर हैं, किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी–कभी अपना–अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों–ज्यों कौसानी नजदीक आता गया त्यों–त्यों अधैर्य फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने बहुत लंबा मोड़ लिया और ऊँचाई पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला हैं, उस पर, बिल्कुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसानी के अड्डे पर जाकर बस रूकी। छोटा–सा बिल्कुल उजड़ा–सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम –निशान नहीं। बिल्कुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति–सा स्तब्ध खड़ा रह गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था। सामने घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कत्यूर की रंग–बिरंगी घाटी छिपा रखी है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल–लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद–सफेद पत्थरो की कतार और इधर–उधर से आकर आपस में उलझ जानेवाली बेलों की लड़ियों–सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठा कर कलाई में लपेट लूँ, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात् हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक...... कि लगा इस धरती पर तो जूते उतार कर, पाँव पोंछ कर आगे बढ़ना चाहिए। धीर–धीरे मेरी निगाहों ने इस घाटी को पार किया और जहाँ ये हरे खेत और नदियाँ और वन, क्षितिज के धुँधलेपन में नीले कोहरे में घूल जाते थे, वहाँ पर कुछ छोटे पर्वतों का आभास अनुभव किया, उसके बाद बादल थे और फिर कुछ नहीं। कुछ देर बाद उन बादलों में निगाह भटकती रही कि अकस्मात् फिर एक हल्का–सा विस्मय का धक्का मन को लगा। इन धीरे–धीरे खिसकते हुए बादलों में यह कौन चीज है, जो अटल है। यह छोटा–सा बादल के टुकड़े–सा–और कैसा अजब रंग है इसका, न सफेद, न रूपहला, न हलका नीला...... पर तीनों का आभास देता हुआ। यह है क्या? बर्फ तो नहीं है। हाँ जी! बर्फ नहीं तो क्या है? और अकस्मात् बिजली–सा यह विचार मन में कौंधा कि इसी घाटी के पार वह नगाधिराज, पर्वतसम्राट हिमालय हैं, इन बादलों ने उसे ढाँक रखा है, वैसे वह क्या सामने है, उस का एक कोई छोटा–सा बाल–स्वाभाव वाला शिखर बादलों की खिड़की से झाँक रहा है। मैं हर्षातिरेक से चीख उठा, ''बरफ्! वह देखो!'' शुक्ल जी, सभी ने देखा, पर अकस्मात् वह फिर लुप्त हो गया। लगा, उसे बाल–शिखर जान किसी नें अंदर खींच लिया। खिड़की से झाँक रहा है, कहीं गिर न पड़े! पर उस क्षण के हिम–दर्शन ने हममें जाने क्या भर दिया था। सारी खिन्नता, निराशा थकावट–सब छू–मंतर हो गई। हम सब आकुल हो उठे। अभी ये बादल छँट जायेंगे फिर हिमालय हमारे सामने खड़ा होगा – निरावृत. ...... असीम सौंदर्यराशि हमारे सामने अभी–अभी अपना घूँघट धीरे से खिसका देगी और..... और तब? और तब? सचमुच मेरा दिल बुरी तरह धड़क रहा था। शुक्ल जी शांत थे, केवल मेरी ओर देख कर कभी–कभी मुस्करा देते थे, जिसका अभिप्राय था, 'इतने अधीर थे, कौसानी आया भी नहीं और मुँह लटका लिया। अब समझे यहाँ का जादू'! डाकबँगले के खानसामें ने बताया कि ''आप लोग बड़े खुशकिस्मत हैं साहब! 14 टूरिस्ट आकर हफ्ते भर पडे रहे, बर्फ नहीं दिखी। आज तो आप के आते ही आसार खुलने के हो रहे हैं।''

सामान रख दिया गया। पर, सभी बिना चाय पिए सामने के बरामदे में बैठे रहे। एकटक सामने देखते रहे। बादल धीरे–धीरे नीचे उतर रहे थे और एक–एक कर नए–नए शिखरों हिम–रेखाएँ अनावृत हो रही थी। और फिर सब खुल गया। बाईं ओर से शुरू हो के दायीं ओर गहरे शून्य में धँसती जाती हुई हिम–शिखरों की ऊबड़–खाबड़, रहस्यमयी रोमाचंक श्रृंखला। हमारे मन से उस समय क्या भावनाएँ उठ रही थी यह अगर बता पाता तो यह खरोंच, यह पीर ही क्यों रह गई होती। सिर्फ एक धुँधला–सा संवेदन। इसका आशय था कि जैसे बर्फ की सिल के सामने खड़े होने पर मुँह पर ठंडी–ठंडी भाप लगती है, वैसे ही हिमालय की शीतलता माथे को छू रही है और सारे संघर्ष, सारे अंतर्द्वंद्व, सारे ताप जैसे नष्ट हो रहे हैं।

क्यों पुराने साधकों ने दैहिक और भौतिक कष्टों को ताप कहा था। और उसे शमित करने के लिए वे क्यों हिमालय जाते थे, यह पहली बार मेरी समझ में आ रहा था और अकस्मात् एक दूसरा तथ्य मेरे मन के क्षितिज पर उदित हुआ। कितनी पुरानी है यह हिमराशि! जाने किस आदिम काल से यह शाश्वत, अविनाशी हिम इन शिखरों पर जमा हुआ है। कुछ विदेशियों ने इसलिए हिमालय की इस बर्फ को कहा है–चिरन्तन हिम (एटर्नल स्नो)। सूरज ढल रहा था। और सुदूर शिखरों पर दर्रे, ग्लेशियर, ढाल, घाटियों का क्षीण आभास मिलने लगा था। आतंकित मन से मैंने यह सोचा था कि पता नहीं इन पर कभी मनुष्य का चरण पड़ा भी या नहीं या अनंतकाल से इन सूने बर्फ–ढँके दर्रों में सिर्फ बर्फ के अंधड़ हू–हू करते हुए बहते रहे हैं।

सूरज डूबने लगा और धीरे–धीरे ग्लेशियरों में पिघली केसर बहने लगी। बरफ कमल के लाल फूलों में बदलने लगी, घाटियाँ गहरी पीली हो गई। अँधेरा होने लगा तो हम उठे और मुँह–हाथ धोने और चाय पीने लगे। पर सब चुपचाप थे, गुमसुम, जैसे सबका कुछ छिन गया हो, या शायद सब को कुछ ऐसा मिल गया हो, जिसे अंदर ही अंदर सहेजने में सब आत्मलीन हों या अपने में डूब गए हों।

थोड़ी देर में चाँद निकला और हम फिर बाहर निकले........... इस बार शांत था। जैसे हिम सो रहा हो। मैं थोड़ा अलग आरामकुर्सी खींच कर बैठ गया।

यह मेरा मन इतना कल्पनाहीन क्यों हो गया है? इसी हिमालय को देख कर किसने–किसने क्या–क्या नहीं लिखा और यह मेरा मन है कि एक कविता तो दूर, एक पंक्ति, एक शब्द भी तो नहीं जागता। पर कुछ नहीं, यह सब कितना छोटा लग रहा है, इस हिमसम्राट के समक्ष। पर धीरे–धीरे लगा कि मन के अंदर भी बादल थे जो छँट रहे हैं। कुछ ऐसा उभर रहा है, जो इन शिखरों की ही प्रकृति का है, जो इसी ऊँचाई पर उठने की चेष्टा कर रहा है, ताकि इनसे इन्हीं के स्तर पर मिल सके। लगा, यह हिमालय बड़े भाई की तरह ऊपर चढ़ गया है, और मुझे–छोटे भाई को – नीचे खड़ा हुआ, कुंठित और लज्जित देखकर थोड़ा उत्साहित भी कर रहा है, स्नेह–भरी चुनौती भी दे रहा है – ''हिम्मत है? ऊँचे उठोगे'?

पाठ्यगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न–1. दिये गये विकल्पों में से सही विकल्प छाँटकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(1) लेखक किसे निकट से देखने कौसानी गया था ?

(क) हिमालय को (ख) कौसानी को

(ग) बादलों को (घ) हिम को

(2) किसने कहा था – स्विजरलैंड का आभास कौसानी में होता है?

(क) शुक्ल (ख) लेखक (ग) सेन (घ) गाँधी जी

(3) लेखक क्या देखकर हर्षातिरेक से चीख उठता है?

(क) पर्वत (ख) हरियाली (ग) बर्फ (घ) सोमेश्वर घाटी

(4) हिमालय के हिम को चिरंतन कहा गया है क्योंकि यह हिमराशि –

(क) बहुत पवित्र है (ख) बहुत सफेद है

(ग) बहुत अधिक है (ग) बहुत पुरानी है

(5) कोसी से अल्मोड़ा जाने वाले रास्ते को कैसा बताया गया हैं–

(क) आर्कषक (ख) हरा–भरा (ग) ऊबड–खाबड़ (घ) सूखा और कुरूप

प्रश्न 2. निम्न लिखित कथन सत्य है या असत्य, लिखिए।

(1) हिमालय की शोभा बर्फ से है।

(2) ठेले पर हिमालय के लेखक के मित्र का जन्म नैनीताल में हुआ था।

(3) कौसानी की तुलना आइसलैण्ड से की गयी है।

(4) सोमेश्वर की घाटी के पूर्व में ऊँची पर्वत माला पर कौसानी बसा हुआ है।

(5) वह स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं, क्षिजित कहलाता है?

लघुउत्तरीय प्रश्न

(1) कौसानी की तुलना स्विजरलैण्ड से क्यों की गई है।

(2) अनासक्ति योग किसने लिखा है ?

(3) हिमालय को देखकर लेखक का मन कल्पना हीन क्यों हो गया ?

(4) डाक बंगले के खानसामा के लेखक को खुशकिस्मत कहने का क्या कारण था?

(5) कौसानी के बस अड्डे पर पहुँचकर लेखक का मन खिन्न हो जाता है क्यों?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) इसयात्रा वृतांत की भाषा शैली पर उदाहरण सहित टिप्पणी लिखिए।

(2) ठेले पर हिमालय रचना में आए खुबसूरत स्थलों का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

(3) कौसानी में लेखक के हिम दर्शन के घटना क्रम का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए?

(4) कौसानी आ जाने पर भी बर्फ दिखाई न देने पर लेखक की मनोदशा कैसी हो गयी थी, समझाइये?

(5) 'ठेले पर हिमालय' में लेखक ने हिमालय की पुरातनता और शीतलता का वर्णन किया है। उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए

निम्न अवतरण को पढ़िए और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

लेखक ने पाठ के अंत में कहा है – ''लगा, यह हिमालय बड़े भाई की तरह ऊपर चढ़ गया है, और मुझे, छोटे भाई को, नीचे खड़ा हुआ, कुंठित और लज्जित देखकर थोड़ा उत्साहित भी कर रहा है, स्नेह–भरी चुनौती भी दे रहा है – ''हिम्मत है? ऊँचे उठोगे''?

प्रश्न 1. लेखक ने हिमालय को बड़ा भाई क्यों कहा है?

प्रश्न 2. लेखक को लगा कि हिमालय उसे – ''स्नेह–भरी चुनौती भी दे रहा है ''हिम्मत है? ऊँचे उठोगे''? लेखक के इस कथन का आशय क्या है?

शब्दार्थ

- मुसाफिर – यात्री
- उजली – साफ
- नौसिखिया – नया–नया सीखा हुआ
- काफूर होना – गायब होना
- तंद्रालस – नींद का आलस
- आभास – झलक
- क्षोम – झुंझलाहट
- अनखाते हुए – अनमना होकर
- स्तब्ध – जड़
- तंद्रा – आधी नींद में
- शीर – सिर
- स्मृति – याद
- पिराना – दर्द होना
- अकस्मात् – सहसा
- किन्नर – पुराणों में वर्णित एक जाति
- निष्कलंक – कलंक रहित, निर्दोष
- नगाधिराज – पर्वतों का राजा
- हर्षातिरेक – अत्यधिक प्रसन्नता
- विस्मय – अचरज
- लुप्त – गायब
- असीम – सीमा रहित
- निरावृत – जिसको कभी ढका ही न गया हो।
- अनावृत – जिसका आवरण हटाया गया हो।
- शाश्वत – नित्य
- क्षीण – सूक्ष्म, निर्बल
- चेष्टा – कोशिश
- शमित – शांत
- अविनाशी – नाश न होने वाला

उत्तर माला 1. घ 2. घ 3. ग 4. घ 5. क

योग्यता विस्तार

उपसर्ग एवं प्रत्यय :–

उपसर्ग :–

उपसर्ग उस शब्द या शब्दांश को कहते हैं, जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करता है।

जैसे – परा + जय = पराजय (यहाँ 'परा' उपसर्ग है।)

उपसर्ग के प्रयोग से शब्द की तीन स्थितियाँ होती हैं –

अ. नया शब्द बनता है।
जैसे – प्र + हार = प्रहार

ब. मूल अर्थ में परिवर्तन नहीं होता परंतु अर्थ में तेजी आती है।
जैसे – परि + भ्रमण = परिभ्रमण

स. विलोम शब्द बनता है। जैसे – अ + सत्य =असत्य,
परा + जय = पराजय

उपसर्ग की विशेषताएँ :–

ये शब्दांश होते हैं।
वाक्य में ये स्वतंत्र रूप में प्रयुक्त नहीं होते।
इनके अर्थ नहीं होते। किसी शब्द के साथ संगति बैठने पर ही ये अर्थवान बनते हैं।

प्रत्यय :–

शब्दों के बाद जो अक्षर या अक्षर समूह लगाया जाता है, उसे 'प्रत्यय' कहते हैं।

जैसे – भला + आई = भलाई (यहाँ 'आई' प्रत्यय है।)
प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं –

1. कृत् प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

1. कृदन्त – क्रिया या धातु के अन्त में प्रयुक्त होनेवाले प्रत्ययों को कृत प्रत्यय कहते हैं और उनके मेल से बने भाब्द को कृदन्त।
2. तद्धित – संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अन्त में लगनेवाले प्रत्यय को तद्धित कहा जाता है और उनके मेल से बने शब्द तद्धितान्त।

जैसे – मानव + ता = मानवता

हिन्दी में जो उपसर्ग एवं प्रत्यय मिलते हैं, वे संस्कृत, हिन्दी तथा उर्दू (अरबी तथा फारसी) के हैं। 'ठेले पर हिमालय' पाठ में आये निम्न शब्दों को पढ़िए। इनके उपसर्ग तथा प्रत्यय को पहचानिए –
अधैर्य, अपार, अनावृत अनासक्ति, प्रतिक्रिया निष्कलंक, निराशा, लापरवाह, खुशकिस्मत,
बर्फवाला, सुहानापन, धुँधलेपन, थकावट,
नौसिखिया, सहयोगी

पाठ–21

तालिका निर्माण कैसे करें

भूमिका –

आपने विभिन्न विषयों के पाठों को या पत्र–पत्रिकाओं को पढ़ते समय या चुनाव परिणाम आदि से संबंधित समाचार, दूरदर्शन पर देखते समय, कुछ तालिकाएँ देखी होगी। आजकल तो यह विज्ञापनों, खेल से जुडी सूचनाओं आदि में भी प्रयोग होने लगा है। वस्तुतः आज ये अध्ययन का आवश्यक अंग बन गए हैं। इनकी सहायता से विषयों को स्पष्टता से समझा जा सकता है।

उद्‌देश्य –

तालिका, आरेख पढ़ने के पश्चात आप –

- वैज्ञानिक तालिका तथा वैचारक लेखन में आरेख, चित्र आदि के महत्व का उल्लेख कर सकेंगे।
- सरल तालिका आदि का निर्माण कर सकेंगे और आरेख आदि बना सकेंगे।
- भाषा के संप्रेषण का संबंध स्थापित कर सकेंगे।
- घर, मुहल्ला, शहर आदि का नक्शा पढ़ना सीख सकेंगे।

तालिका, आरेख आदि के द्वारा विषय प्रस्तुति का महत्व –

सदैव हमारी यह कोशिश होती है कि अपनी बात को हम दूसरों तक ठीक–ठीक पहुँचा सकें। इसके लिए हम उपयुक्त शब्दों, चित्रों संकेतों आदि का प्रयोग करते हैं। आपको याद है, हिन्दी की वर्णमाला सीखते समय आपने /अ/ को अनार के चित्र /क/ को कलम या कमल के चत्र के सहारे सीखा था। असल दृश्य सामने हो तो शब्द अधिक प्रभावी बत जाते हैं। दुनिया भर के आँकड़ों को केवल विवरण के रूप में आपके सामने रख दिया जाए तो वह अत्यंत बोझिल हो जाएगा। यद इन्हीं आँकड़ों आदि के विवरण कम शब्दों में देकर तालिका, आरेख, चार्ट आदि के सहारे उन्हें समझाएँ तो बात आईने की तरह साफ हो जाएगी। प्रस्तुतिकरण के इन्हीं वैज्ञानिक तरीकों की चर्चा हम आगे करेंगे।

तालिकाएँ –

आपको अपने विद्यालय के समय सारणी की याद होगी। कैलेण्डर में एक ओर दिनों के नाम होते है दूसरी ओर दिन की सख्या या तारीख लिखी होती है। यह तालिका का सरलतम रूप में एक क्रमबद्ध व्यवस्था है। तालिका का मुख्य उद्‌देश्य संख्यात्मक तथ्यों को अर्थात् आकड़ों के खानों और पंक्तियों के रूप को व्यवस्थित करना होता है जिससे अध्ययन करनेवालों का ध्यान अपने आप महत्वपूर्ण सूचनाओं की ओर आकर्षित हो सके।

तालिका को इस प्रकार परिभाषित किया जाता है ''तालिका संकलित और वर्गीकृत आँकड़ों को क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित ढंग से इस प्रकार प्रदर्शित करने की क्रिया है, जिसमें उन्हें तुलनीय बनाया जा सके तथा उनके लक्षणों को प्रदर्शित किया जा सके।''

तालिका की विशेषताएँ –

एक उत्तम तालिका (सारणी) की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं –

(1) **आकर्षक हो** – तालिका देखने में आकर्षक व सुन्दर होनी चाहिए। तालिका को आकर्षक बनाने के लिए उसके आकार, खानों व पँक्तियों के अनुपात, संख्याओं की लिखावट, आदि पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

(2) **प्रबंध योग्य आकार** – तालिका का आकार न तो अधिक बड़ा और न अत्यधिक छोटा होना चाहिए। यदि अधिक जानकारी का समावेश करना हो तो एक बड़ी तालिका की अपेक्षा कई छोटी–छोटी तालिका बनायी जा सकती है।

(3) **उद्देश्यानुसार** – तालिका सदैव छात्रों के भरे जाने वाले प्रपत्र के उद्देश्य के अनुकूल होने चाहिए।

(4) **तुलनात्मक** – तालिका में तथ्यों की व्यवस्था इस प्रकार करनी चाहिए, जिससे उनकी तुलना सरलता से की जा सके।

(5) **समायोजना महत्व के अनुसार** – तालिका के खानें इस प्रकार से बनाए जाने चाहिए जो आंकडों के महत्व के अनुरूप हों और आंकडों की विशेषताएँ ठीक प्रकार से प्रकट हो जाए।

(6) **स्पष्टता** – तालिका की व्यवस्था इस प्रकार की जानी चाहिए कि एक सामान्य व्यक्ति भी उसे समझ सके। अतः तालिका सुनियोजित व वैज्ञानक ढंग से निर्मित हो।

आपको बाजार से ढेर सारी जीचें एक साथ लाने को कहा जाए, तो आप एक तालिका बनाकर रख लेते हैं, ताकि चीजें छूट न जाएँ और उनकी मात्राएँ एक दूसरे के साथ न हो जाएँ। आपको एक दर्जन केला, आधा किलो चाय की पत्ती, दस किलो आटा, पांच किला चीनी, एक किलो आलू लाने को कहा गया है तो इसे तालिका के रूप में इस प्रकार से लिख लेते हैं।

सामान	मात्रा
केले	1 दर्जन (12)
चाय की पत्ती	500 ग्राम
आटा	10 किलो
चीनी	5 किलो
आलू	1 किलो

भारत में लिंग अनुपात की निम्नलिखित तालिका देखें। नीचे लिखे विवरण को पढ़ें तो यह तालिका आपको समझ में आ जाएगी –

जनगणना वर्ष	लिंग अनुपात (1000 पुरूषों पर पर स्त्रियों की संख्या)	जनगणना वर्ष	लिंग अनुपात (1000 पुरूषों स्त्रियों की संख्या)
1901	972	1951	946
1911	964	1961	941
1921	955	1971	930
1931	950	1981	934
1941	945	1991	929

भारत में लिंग अनुपात स्त्रियों के प्रतिकूल है और यह भी कि दिनों–दिन यह अनुपात कम होता जा रहा है ऐसी स्थिति समाज में स्त्रियों को पुरूषों की तुलना में नीचा दर्जा दिए जाने के कारण है। उक्त तालिका को देखने के बाद हम यह पाते हैं कि समाज में लड़कों को प्राथमिकता दी जाती है। लड़कों की देखभाल अधिक की जाती है तथा लड़कियों की उपेक्षा की जाती है।

वृक्ष ओरख –

सामग्री को प्रस्तुत करने का एक अन्य तरीका है वृक्ष आरेख। इस प्रकार की प्रस्तुति में वृक्ष के साथ शाखाओं से शाखाएँ निकलती चली जाती हैं। प्रारंभ में इसका प्रयोग आपसी रिश्तों को समझने के लिए किया जाता था। अब अन्य सामग्रियों के प्रस्तुति करण में इसका प्रयोग खूब होने लगा है।

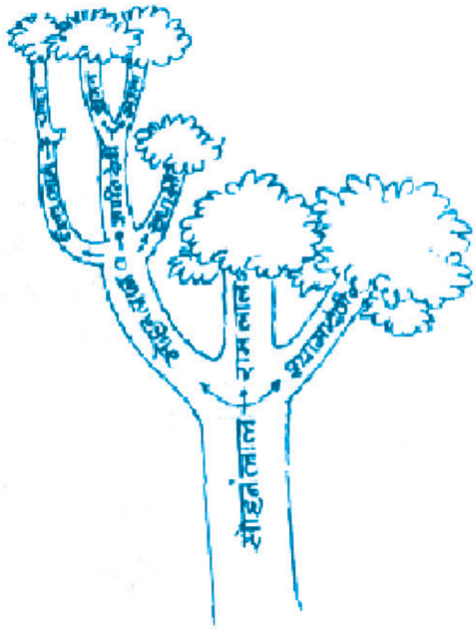

एक उदाहरण लें :–

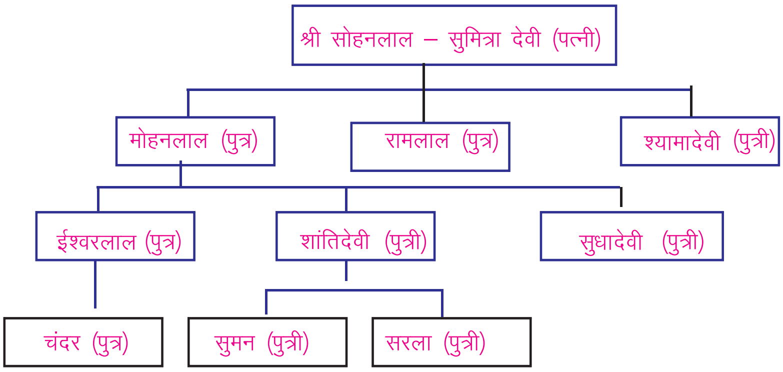

आरेख : वंश वृक्ष

इस आरेख से हमें पता चल जाता है कि सोहन लाल जी चंदर के परदादा थे और मोहन लाल जी उसके दादा। मोहन लाल के पुत्र ईश्वर लाल तथा दो पुत्रियाँ शांति देवी और सुधा देवी हैं। ईश्वर लाल का एक ही पुत्र चंदर है। इस प्रकार के आरेख से आप देखते ही पता लगा सकते हैं कि किसका किससे क्या संबंध है। इसी आरेख को वंश वृक्ष भी कहा जाता है।

प्रवाह चार्ट :–

हिंदी में जिसे प्रवाह चार्ट कहते हैं उसे अंग्रेजी में फ्लो चार्ट कहते हैं। इस चार्ट में वैसी सूचनाएँ प्रस्तुत की जाती है। जिनमें प्रवाह हो यानी कि एक दूसरे से जुडी हुई हों। एक प्रकार से कह सकते है कि प्रक्रिया को प्रवाह चार्ट द्वारा दर्शाया जा सकता है। उदाहरण के लिए आपके पाठों में आने वाले बिन्दुओं को लें तो चार्ट इस प्रकार से बनेगा –

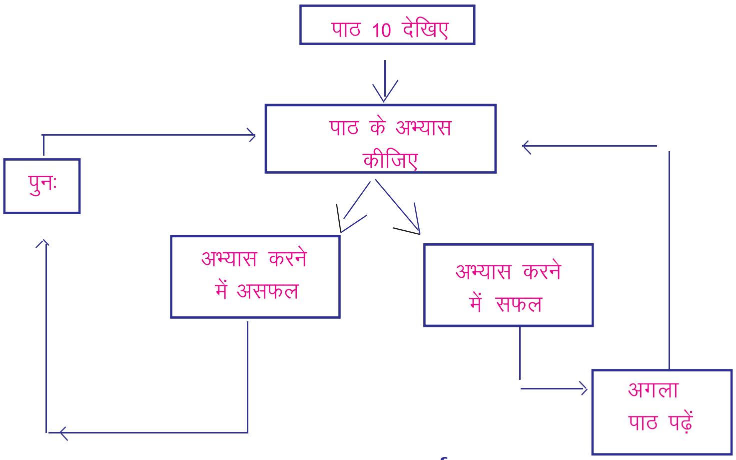

प्रवाह चार्ट

इस प्रकार के चार्ट का प्रयोग विज्ञान में बहुत होता है। विज्ञान के विद्यार्थी इससे अच्छी तरह से परिचित होंगे।

स्तंभ चित्र –

नीचे का चित्र आप देख रहे हैं न। यहाँ स्तंभो (इंत) के माध्यम से 1901 से 2001 तक प्रत्येक दशक में हुई जनसंख्या वृद्धि और इसमें होने वाले परिवर्तन को दिखाया गया है। ऊँचे होते स्तंभ बढ़ती जनसंख्या को बता रहे हैं। आप पायेंगे कि 1911 से 1921 के दशक में दंड छोटा हुआ है। इस दशक में फ्लू के कारण पूरी जनसंख्या के 7 प्रतिशत लोगों की मृत्यु हो गई थी, इसीलिए जनसंख्या बढ़ने के बदले घट गई थी।

स्तंभ चित्र या बार–चार्ट भी एक तरह की तालिका ही है। क्या आपने इस पर सोचा कि तालिकाओं के विभिन्न रूपों में या तरीकों में संबंध होता है। उदाहरण के लिए बढ़ती जनसंख्या के इस स्तंभ को तालिका के रूप में भी दिखा सकते हैं।

वर्ष	जनगणना	जनसंख्या वृद्धि प्रतिशत
1901 – 11	23.84	5.75
1911 – 21	25.21	0.31
1921 – 31	31.86	11
1931 – 41	36.11	14.22
1941 – 51	43.92	13.31
1951 – 61	54.81	21.51
1961 – 71	68.33	24.8
1971 – 81	23.50	24.66
1981 – 91	25.13	23.5
1991 – 2001	27.91	18.6

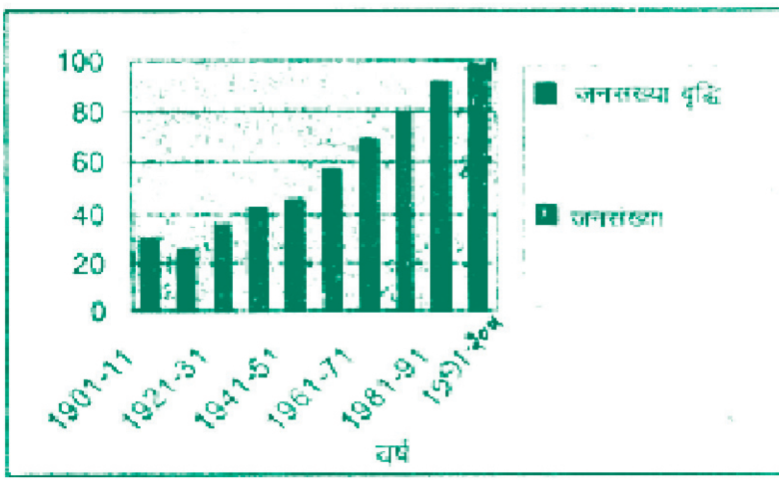

पाठगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. दिये गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखत प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1 जब प्रक्रियाएँ एक दूसरे पर आधारित होती हैं जिसमें एक प्रवाह होता है तो वे दर्शाई जाती है।
(1) आरेख द्वारा (2) वृत्त द्वारा
(3) प्रवाह चार्ट द्वारा (3) स्तंभ द्वारा

2. प्रवाह–चार्ट को और क्या कहते हैं ?
(1) पाई चार्ट (2) सिम्सा चार्ट
(3) डेल्टा चार्ट (4) फ्लो चार्ट

3. स्तंभ चित्र एक तरह की तालिका है। इसे कहते हैं –
(1) पार – चार्ट (2) सार चार्ट (3) बार चार्ट
(4) कार – चार्ट

4. दूरदर्शन में प्रसारित होने वाली मौसम की जानकारी दर्शाई जाती है।
(1) आरेख चित्र (2) वृक्ष चित्र
(3) रूप चित्र (4) मानचित्र

प्रश्न 2. तालिका की विशेषताओं का वर्णन कीजिए !

प्रश्न 3. तालिका के महत्व को समझाइए !

प्रश्न 4. तालिका को परिभाषित कीजिए ?

प्रश्न 5 नीचे दिए गए प्रवाह चार्ट को ध्यान से देखिए इसमें दिखाया गया है कि रोगाणु कैसे फैलते है।

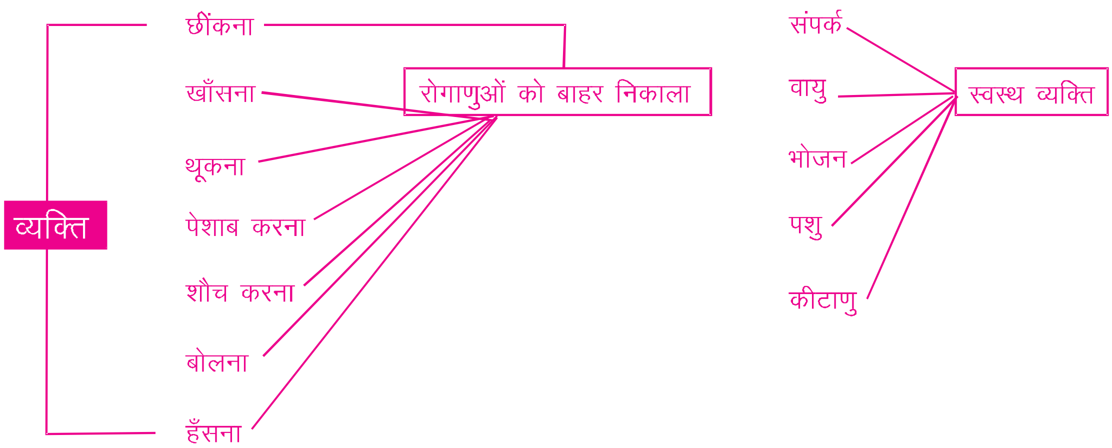

इस चार्ट को पढ़कर नीच दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. व्यक्ति किन–किन क्रियाओं से रोगाणुओं को बाहर निकालता है?
2. किन–किन माध्यमों से रोगाणु स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में पहुँच जाते हैं?

उत्तर माला प्रश्न 1. 1 – 3, 2 – 4, 3 – 3, 4 – 4,

व्याकरण

वाक्य शुद्धिकरण

वाक्य – पंडित कामता प्रसाद गुरू के शब्दों में – "एक पूर्ण विचार व्यक्त करनेवाला शब्दसमूह वाक्य कहलाता है।" मनुष्य अपनी भावनाओं को मौखिक और लिखित रूप से व्यक्त करता है। शब्द का वह समूह जिससे पूरा–पूरा भाव प्रकट होता है वाक्य कहलाता है।

वाक्य रचना की विशेषताएँ –

1. विचारों को जागृत करने की क्षमता
2. अर्थ की स्पष्टता
3. शब्दों का निश्चित क्रम
4. माधुर्य

वाक्य संबंधी सामान्य दोष –

1. वर्ण संबंधी दोष

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
क) चाय में सक्कर अधिक है।	क) चाय में शक्कर अधिक है।
ख) ब्यापार चल रहा है।	ख) व्यापार चल रहा है।
ग) वह घर छोर गयी।	ग) वह घर छोड़ गयी।

2. मात्रा संबंधी वाक्य

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
क) मंदिर हीमालय पर है।	क) मंदिर हिमालय पर है
ख) महादेवी वर्मा प्रसिद्ध कवियित्री है	ख) महादेवी वर्मा प्रसिद्ध कवयित्री है
ग) मैं कवी हूँ।	ख) मैं कवि हूँ।

3. अनुस्वार संबंधी दोष

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
क) मै घर नही जाउँगी।	क) मैं घर नहीं जाउँगी।
ख) हंसना मना है।	ख) हँसना मना है।

4. संधि संबंधी दोष

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
क)ा उपरोक्त प्रसंग सही है।	क) उपर्युक्त प्रसंग सही है।
ख) डॉ. एम. मिश्रा सृजन है।	ख) डॉ. एम. मिश्रा सर्जन हैं।
ग) अन्याधिका विकास हुआ है।	ग) अत्यधिक विकास हुआ है।

5. समास संबंधी दोष

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
क) मोहन निः स्वार्थी है।	क) मोहन निः स्वार्थ है।
ख) भारत उन्नतशील देश है।	ख) भारत उन्नतिशील देश है।
ग) मेरी बहन सदेव मेरे पास रहती है।	ग) मेरी बहन सदैव मेरे पास रहती है।

6. प्रत्यय संबंधी दोष

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
क) अनिता के बालों में सौदर्यता है।	क) अनिता के बालों में सुन्दरता है।
ख) धैर्यता धारण करो।	ख) धैर्य धारण करो।

7. वचन संबंधी दोष

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
क) दस लड़की पढ़ रही है।	क) दस लड़कियाँ पढ़ रही हैं।
ख) आजकल सभी दुःखी है।	ख) आजकल सभी दुःखी हैं।
ग) श्री कृष्ण के अनेंकों नाम है।	ग) श्री कृष्ण के अनेक नाम है।

8. लिंग सम्बधी दोष

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
क) घर की दाईं ओर सड़क है।	क) घर के दाईं ओर सड़क है।
ख) तुमने झूठ क्यों बोली ?	ख) तुमने झूठ क्यों बोला ?
ग) यह कलम मेरा है।	ग) यह कलम मेरी है।

9. कारक संबंधी दोष

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
क) मेरा जीवन सुख मे बीत रहा है।	क) मेरा जीवन सुख से बीत रहा है।
ख) मेरे को भूख लगी है।	ख) मुझे भूख लगी है।
ग) घर पर सब कुशल हैं।	ग) घर में सब कुशल हैं।

10. क्रियाविशेषण संबंधी दोष

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
क) जैसा बोओगे उसी तरह काटोगे।	क) जैसा बोओगे वैसा काटोगे।
ख) जितनी करनी वैसी भरनी।	ख) जैसी करनी वैसी भरनी।
ग) गीदड़ बड़ा चालाक होता है।	ग) गीदड़ बहुत चालाक होता है।

11. क्रिया संबंधी दोष

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
क) आप वहाँ अवश्य जाओ।	क) आप वहाँ अवश्य जाएँ।
ख) तुम भोजन करेगा।	ख) तुम भोजन करोगे।
ग) चोर डर कर दौड़ गया।	ग) चोर डरकर भाग गया।
घ) सफलता परिश्रम पर नर्भर	ग) सफलता परिश्रम पर निर्भर करती है। होती है।

12. सर्वनाम संबंधी दोष

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
क) मेरे ध्यान मित्र की ओर था।	क) मेरा ध्यान मित्र की ओर था।
ख) गीता ने अपनी पुस्तक उसकी	ख) गीता ने अपनी पुस्तक अपने भाई को दी।

13. विशेषण संबंधी दोष

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
क) एक फूल की माला लाओ।	क) फूल की एक माला लाओं।
ख) हवा गर्म चल रही है।	ख) गर्म हवा चल रही है।
ग) मै आगामी वर्ष आगरा गया था।	ग) मैं गत वर्ष आगरा गया था।
घ) यह हमारे आगामी विधायक हैं।	घ) यह हमारे भावी विधायक है।

नवम् इकाई

पद्य

सूरदास, तुलसीदास एवं मीरा के पद

गद्य

सरकारी मकान (कहानी) – डॉ. रामदरश मिश्रा

व्याकरण

अलंकार – श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास

पाठ–22

सूरदास के पद

सूरदास

जीवन परिचय – सूरदास जी सगुण भक्त कवि हैं। इनका जन्म सन् 1478 में दिल्ली के निकट हरियाणा प्रान्त के सीही नामक गाँव में हुआ था। सूरदास जी नेत्रहीन थे, किन्तु इन्होंने कृष्ण की बाल लीला का अद्भुत वर्णन किया है। सूरदास जी का निधन पारसौला नामक गाँव में सन् 1585 में हुआ।

रचानाएँ – सूरदास जी ने पाँच ग्रन्थ लिखे। जिनमें अंतिम दो ग्रथ अप्राप्त हैं।

1. सूरसागर 2. सूरसारावली 3. साहित्यलहरी 4. नल दमयन्ती
5. ब्याहलो।

भाव पक्ष – सूरदास ने श्री कृष्ण की बाललीला का बहुत ही सजीव चित्रण किया है। आप के पदों में वात्सल्य, श्रृंगार एवं भक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। सूरदास वात्सल्य रस के सम्राट हैं। नेत्रहीन होने पर भी उन्होंने बालकों की क्रीड़ा, चपलता, स्पर्धा एवं वाक–चातुरी का वर्णन बहुत ही निपुणता के साथ किया है।

कला पक्ष – सूरदास ने ब्रजभाषा में अपना काव्य सृजन किया है। आप की भाषा सहित्यिक होते हुए भी किलिष्टता से दूर है। आप ने मुक्तक शैली का प्रयोग किया है। सूर के पद गेय शैली में हैं। इनके काव्य में अंलकारों की छटा बहुत ही मनोहर है। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि अंलकारों का बहुत ही स्वाभाविक वर्णन किया है।

साहित्य में स्थान – सूरदास जी वात्सल्य एवं श्रृंगार रस के महान कवि हैं। आप का वात्सल्य वर्णन अद्वितीय है। सूर हिन्दी के साहित्याकाश के सूर्य है।

00

सूरदास के पद

केन्द्रीय भाव – सूरदास के इन पदों में कृष्ण बालक के रूप में लीला कर रहे हैं। उन्हीं सामान्य बच्चों की तरह जिन्हें हम इस संसार में देखते हैं।

1.
हरि अपने आँगन कछु गावत।
तनक–तनक चरननि सों नाचत, मनहिं–मनहिं रिझावत।
बांह उठाय काजरी–धौरी, गैयनि टेरि बुलावत।
कबहुक बाबा नन्द पुकारत, कबहुक घर में आवत।
माखन तनक आपने कर लै, तनक–बदन में नावत।
कबहुक चितै प्रतिबिम्ब खम्भ में, लोनी लिये खवावत।
दुरि देखति जसुमति यह लीला, हरष आनंद बढ़ावत।
सूर स्याम के बालचरित, नित–नित देखत भावत।

अर्थ :– श्रीकष्ण की बाल–लीलाओं का वर्णन करते हुए सूरदास कहते हैं कि श्रीकृष्ण अपने घर के आँगन में खेल रहे हैं। वे कभी अपने छोटे–छोटे पैरों पर नाचते हैं, कभी गाते हैं, कभी रूठते हैं, कभी दोनों हाथ उठाकर कजरी और धौंरी गायों को पुकारते हैं और कभी नंद बाबा को पुकारते हुए घर के अंदर चले आते हैं। वे कभी स्वयं माखन खाते हैं कभी अपने शरीर पर लगाते हैं, तो कभी खंभे में अपने प्रतिबिंब को देखकर उसे माखन खिलाने का प्रयास करते हैं। श्रीकृष्ण की यह लीला देखकर माता यशोदा हर्षित होती हैं। सूरदास जी कहते हैं कि श्रीकृष्ण की यह बाललीला सदा देखते रहने की इच्छा होती है।

2.
सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरनि चलत रेनु तन मंडित, मुख दधि लेप किए।।
चारू कपोल, लोल लोचन, गोरोचन तिलक दिए।
लट लटकनि मनु मत्त मधुपगन, मादक मधुहि लिए।।
कठुला कंठ, ब्रज केहरि नख, राजत रूचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कल्प जिए।।

अर्थ :– सूरदास कहते हैं कि श्रीकृष्ण अपने हाथों में माखन लिये सुशोभित हो रहे हैं। वे घुटनों के बल चल रहे हैं। उनका शरीर धूल से सना हुआ है। उनके गाल सुंदर हैं, आँखें चंचल हैं, मुँह में माखन और माथे पर गोरोचन का तिलक लगा हुआ है। उनके चेहरे परष लटकते हुए केश मधु पीकर मद में झूमते–गाते हुए भौरों के झुण्ड की तरह दिखाई दे रहे हैं। (अर्थात श्रीकृष्ण का मुख फूल की तरह और लटकते हुए केश भौरों की तरह दिखते हैं।) उनके गले में हँसुली सुशोभित हो रही है, जिसमें बाघ के नाखून जड़े हुए हैं। सूरदास कहते हैं कि हरि के इन लीलाओं को पलभर भी देख लेने के बाद कौन है जो सौ कल्पों तक जीना चाहेगा?

पाठगत के प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. श्रीकृष्ण के मुख पर लिपटा है।
   अ. धूल ब. दही स. मक्खन
2. सूरदास का जन्म हुआ –
   अ. सीही ग्राम ब. मथुरा स. ब्रज
3. हाथ उठा कर श्रीकृष्ण किन गायों को पुकारते हैं –
   अ. भूरी–सफेद ब. लाल–काली स. काली–सफेद
4. सूरदास जी किसके भक्त थे –
   अ. राम के ब. श्रीकृष्ण के स. शिव के
5. सूरदास जी की काव्य भाषा है –
   अ. ब्रज ब. अवधी स. राजस्थानी

लघुउत्तरीय प्रश्न –

1. श्रीकृष्ण गले में क्या पहने हुए हैं?
2. सूर के पदों में किसकी त्रिवेणी बहती है?
3. श्रीकृष्ण के हाथ में क्या है?
4. श्रीकृष्ण किसको मक्खन खिलाना चाहते हैं?
5. बाल श्रीकृष्ण किसमें अपना प्रतिबिम्ब देखते हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. निम्नलिखित पँक्तियों की संदर्भ व प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए –
   हरि अपने आंगन .... बदन में नावत।
2. 'सोभित कर नवनीत लिए। घुटुरनि चलत रेनु तन मंडित, मुख दधिलेप किए'। उपरोक्त पँक्ति का भाव स्पष्ट कजिए।
3. प्रस्तुत पद के अधार पर श्रीकृष्ण के बालसौंदर्य का वर्णन कीजिए।
4. यशोदा बाल श्रीकृष्ण की किन क्रीड़ाओं को देख कर प्रसन्न होती हैं।
5. पाठ में दिये गये पदों के आधार पर सूरदास के काव्य के कला पक्ष की विशेषताएँ लिखिए।

शब्दार्थ

1 तनक–तनक = छोटे–छोटे।
रिझावत = रिझाते हुए।
कजरी = काली।
धौरी = सफेद।
तनक बदन में = छोटे से मुख में।
कबहुक = कभी।
नावत = रखती है।
लोनी = मक्खन।
खवावत = खिलाते हैं।
दुरि = छिपकर।

2 सोभित = सुशोभित हो रहे हैं।
नवनीत = मक्खन।
रेनु तन मंडित = धूल से सना हुआ शरीर।
चारू = सुन्दर।
लोल = चंचल।
गोरोचन = जिससे तिलक लगाया जाता है।
मत = मतवाले।
मधुपगन = भौंरों का समूह।
मधुहि = शहद।
कठुला = गले में पहनने वाली हँसली।
कल्प = बहुत लम्बा समय।
केहरि नख = शेर (बाघ) का नाखून।

वस्तुनिष्ठ (उत्तर)

1. ब. दही
2. अ. सीही ग्राम
3. स. काली–सफेद
4. ब. श्रीकृष्ण के
5. अ. ब्रज

तुलसीदास के पद

गोस्वामी तुलसीदास का जीवन परिचय – गोस्वामी तुलसी दास का जन्म सन् 1532 को उत्तर प्रदेश के बांदा जनपद के राजापुर गाँव में हुआ था, किन्तु विद्वनों में उनके जन्म के संबंध में मतभेद हैं। कुछ विद्वान उनका जन्म उत्तर प्रदेश के एटा जिले के सोरों नामक तीर्थ स्थान पर हुआ मानते हैं। तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम एवं माँ का नाम हुलसी था। तुलसीदास अपनी पत्नी रत्नावली से अत्याधिक प्रेम करते थे, तथा उसी की प्रताड़ना से आप का हृदय वैराग्य भाव से भर गया और आप राम के भक्त बन गये। तुलसी दास का निधन काशी में सन् 1623 में हुआ।

रचनाएँ – राम चरित मानस, कवितावली, दोहावली, गीतावली, कृष्ण गीतावली, विनय–पत्रिका, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्नावली, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, बरवै रामायण।

भाव पक्ष – तुलसी दास जी ने दास्य भाव से राम की भक्ति की है। तुलसीदास का सम्पूर्ण काव्य समन्वय की विचारधारा को लेकर चला है। तुलसी का साहित्य लोकहित की भावना से युक्त है। आपने प्रायः सभी रसों का प्रयोग अपने काव्यों में किया है।

कला पक्ष – तुलसीदास की काव्य की भाषा अवधी और ब्रज है। आप की भाषा में संस्कृत के शब्दों की बहुलता है। भाषा में माधुर्य, ओज और प्रसाद गुण हैं। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों एंव चौपाई, दोहा, सोरठा, हरिगीतिका, कवित्त, सवैया आदि छंदों का प्रयोग किया है। श्रृंगार, शान्त एवं वात्सल्य रस का आपने सबसे अधिक प्रयोग किया है। तुलसीदास जी ने अपने समय की प्रायः सभी प्रचलित शैलियों में काव्य रचना की है।

साहित्य में स्थान – तुलसीदास जी का रामचरित मानस जन आस्था का केन्द्र है। इसकी काव्य धारा घर–घर में गूंजती है। इसने आप को विश्व–ख्याति प्रदान की है। तुलसीदास जी संत शिरोमणी एवं कवि शिरोमणी है। साहित्य में आप का स्थान अत्यन्त गौरवशाली है।

पद

केन्द्रीय भाव – प्रस्तुत दोहे में कौशल्या के वियोग को कवि ने दर्शाते हुए लिखा है, कि राम के वियोग में कौशल्या को भवन सूना लगता है, और इस सूनेपन में उन्हें राम के क्रियाकलाप याद आते हैं।

जब–जब भवन बिलोकति सूनो।
तब–तब बिकल होति कौसिल्या, दिन–दिन प्रति दुख दूनो।।
सुमिरत बाल–विनोद राम के, सुन्दर मुनि–मनहारी।
होत हृदय अति सूल समुझि पद–पंकज अजिर–बिहारी।।
को अब प्रात कलेऊ माँगत, रूठि चलैगो, माई।
स्याम–तामरस–नैन स्रवत जल, काहि लेऊँ उर लाई।।
जीवों तो बिपति सहौ निसि–बासर, मरौं तो मन पछिताये।
चलत विपिन, भरि नयन राम को, बदन न देखन पायो।।
तुलसीदास यह दुसह दसा अति, दारून बिरह घनेरो।
दूरि करै को भूरि कृपा बिनु, सोक जनित रूज मेरो।।

गोस्वामी तुलसीदास

अर्थ :– तुलसीदास ने इस पद में श्रीराम के वन–गमन के बाद माता कौशल्या के दुखों का वर्णन किया है। माता जब–जब अपने भवन को देखती हैं, श्रीराम को न पाकर उनका दुख दुगुना हो जाता है। ऋषि–मुनियों के मन को हरने वाले श्रीराम की बाललीलाओं का स्मरण करके उनका हृदय व्याकुल हो जाता है। उनके हृदय में बड़ी पीड़ा होती है जब उन्हें कमल के समान कोमल पैरों वाले बाल श्रीराम का आँगन में खेलना याद आता है। माता कौशल्या कहती हैं कि अब यहाँ कौन है जो प्रातःकाल भोजन मांगेगा और नहीं देने पर रूठ जायेगा? इन बातों को सोचकर माता कौशल्या के सोने के समान (दुख के कारण पीले हो चुके) आँखों से आँसू झरने लगते हैं। श्री राम के वन गमन के समय माता कौशल्या उन्हें देख नहीं पाई थी क्योंकि उनकी आँखें आँसुओं से भरे हुए थे। अब वे सोचती हैं कि जीने पर उनके बिछोह का दुख सहना पडेगा और मरने पर यह पछतावा बना रहेगा। तुलसीदास कहते हैं, माता कौशल्या कहती हैं कि हे प्रभु कृपा करके मेरे कठिन दुख को दूर करो।

पाठगत् प्रश्न

खाली स्थान भरिए –

1. तुलसीदास की पत्नी का नाम .... था।
2. तुलसीदास के अराध्य .... थे।
3. राम की माँ का नाम .... था।
4. श्रीरामचंद्र को वन की ओर जाते देख कवि को .... होती है।
5. तुलसीदास की विश्व प्रसिद्ध रचना .... है।

लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. कौशल्या का मन क्यों विकल हो रहा था?
2. वन गमन के समय कौशल्या राम को क्यों नहीं देख सकीं?
3. कौशल्या को भवन क्यों सूना लगता है?
4. तुलसीदास जी के माता–पिता का क्या नाम था?
5. तुलसीदास ने अपनाा काव्य लेखन किन भाषाओं में किया है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. तुलसीदास जी ने कौशल्या के दुःख का वर्णन किस प्रकार किया है?
2. तुलसीदास का भाव पक्ष एवं कला पक्ष लिखिए।
3. तुलसीदस की भक्ति भावना पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
4. संकलित पदों में किन–किन पँक्तियों में अनुप्रास अलंकार है छाँटकर लिखिए।
5. कौशल्या को राम की कौन–कौन सी बातें स्मरण आ रहीं हैं?

शब्दार्थ

विलोकति = देखती है।, मनहरी = मन को हरने वाला।, अजिर–बिहारी = आँगन में बिहार करने वाला।
कलेऊ = सुबह का भोजन।, तामरस = स्वर्ण।, नैन स्रवत = आँखों से आँसू बहना।
काहि लेऊँ उर लाई = किसे हृदय से लगा लू।, बिरह = वियोग की दारूण पीड़ा। रूज = रोना, कष्ट।

उत्तर – खाली स्थान

1 – रत्नावली 2 – श्री राम
3 – कौशल्या 4 – दारुण दुख
5 – रामचरित मानस

मीरा – पदावली

मीराबाई

जीवन परिचय – मीराबाई का जन्म राजस्थान में मेवाड़ के पास चौकडी नामक गाँव में सन् 1498 के आस–पास माना जाता है। मीराबाई के पिता रत्नसिंह थे। जब मीरा चार वर्ष की थी, उनकी माता का देहान्त हो गया। मीरा बाई का बचपन अपने पितामाह के यहा बीता। 18 वर्ष की आयु में आप का विवाह राणा साँगा के पुत्र भोजराज के साथ हो गया, किन्तु एक वर्ष में ही मीराबाई के पति का देहान्त हो गया। मीरा बचपन से ही कृष्ण भक्त थी। अब पूरी तरह मीराबाई कृष्ण भक्ति में लीन हो गई। उन्होंने समस्त राजवैभव का त्याग कर दिया और वृन्दावन चली गई, वहाँ से द्वारिका चली गई। कृष्ण भक्ति के पदों का गायन करते–करते सन् 1546 में आपने इस शरीर का त्याग कर दिया और कृष्ण में लीन हो गईं।

रचनाएँ – मीराबाई की निम्नांकित चार रचनाएँ मीरा की पदावली के नाम से संग्रहित हैं –

1. गीत गोविन्द का टीका,
2. नरसी जी रो मायरो,
3. राग गोविन्द
4. सोरठा के पद।

भाव पक्ष – मीरा भक्तिकालीन कवयित्री थी। वे सगुण भक्ति धारा की थी। मीरा कृष्ण को अपना आराध्य मानती थी। मीरा ने कृष्ण को पति मानकर समर्पित भाव से कृष्ण की भक्ति की है। मीरा के पद माधुर्य भाव से परिपूर्ण हैं। मीरा ने अपने कुछ पदो में रैदास को गुरू मानकर स्मरण किया है। विरह की भार्मिक तीव्र अनुभूति मीरा के पदों में पाई जाती है।

कला पक्ष – मीरा की काव्य भाषा ब्रज है। जिसमें राजस्थानी, गुजराती, पूर्वी हिन्दी, पंजाबी, के शब्दों की बहुलता है। मीरा बाई ने अलंकारों का प्रयोग बहुत सहजता के साथ किया है। मीरा का काव्य माधुर्य गुण से ओत–पोत है। मीराबाई ने बहुत ही सरल शब्दों में अपने मन की पीड़ा व्यक्त की है।

साहित्य में स्थान – मीराबाई में सगुण और निर्गुण दोनों की विशेषता पाई जाती है। कृष्ण को आराध्य मानकर कविता करने वाली मीरा की पदावली हिन्दी सहित्य के लिए अनमोल है। भक्तिकालीन कवियों में आप का स्थान श्रेष्ठ है।

पद

केन्द्रीय भाव – इस पद में कृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति और उनका प्रेम दिखाई देता है। मीरा बाई ने इस पद में कुल की झूठी मर्यादा का परित्याग करके अपने को कृष्ण की भक्ति में लीन कर लिया। मीरा के इस पद में समर्पण का भाव है।

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
तात–मात, भ्रात–बंधु, आपनो न कोई।
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई।
संतन ढिग बैठि–बैठि, लोक लाज खोई।
चुनरी के किये टूक, ओढ़ लीन्हीं लोई।
मोती मूँगे उतार बनमाला पोई।
अँसुवन जल सींचि–सींचि, प्रेम–बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई, आनंदफल होई।
दूध की मथनियाँ बड़े, प्रेम से बिलोई।
माखन जब काढ़ि लियो, छाछ पिए कोई।
भगति देखि राजी हुई, जगत देखि रोई।
दासी 'मीरा' लाला गिरिधर, तारो अब मोही।

मीराबाई

अर्थ :– मीराबाई कहती हैं कि इस संसार में पर्वत को धारण करनेवाले, गिरधर–गोपाल के अलावा मेरा और कोई दूसरा नहीं है। जिसके सिर मोर पंखों का मुकुट है (अर्थात श्रीकृष्ण) वही अब मेरे पति हैं। चाहे कोई कुछ भी करे, मैंने कुल की मर्यादा को त्याग दिया है। संतों के पास बैठ–बैठकर मैंने लोक–लाज खो दी है। मैंने श्रीकृष्ण भक्ति की प्रेमरूपी जिस बेल को अपने आँसुओं के जल से सींच–सींचकर बोया था, उसमें अब आनंद रूपी फल लग चुके हैं। इसी भक्ति ने मुझे आनंद दिया है। संसार ने तो मुझे दुख के अलावा और कुछ नहीं दिया। हे गिरधर! अब तो तुम ही मेरे स्वामी हो। मैं तुम्हारी दासी हूँ, मुझे इस संसार के दुखों से तार लो।

पाठगत् प्रश्न

वस्तुनिष्ट प्रश्न – **सही विकल्प छाँट कर लिखिए –**

1. मीरा ने गिरधर गोपाल किसको कहा है?
   (क) श्रीराम को (ख) श्री कृष्ण को
   (ग) हनुमान को (घ) बलराम को
2. मीरा कृष्ण से तारने की बात करती हैं।
   (क) कठिन भक्ति से (ख) संसार के कष्टों से
   (ग) साधु–संतों से (घ) प्रेम के भाव से
3. मीरा किस काल की कवयित्री थी –
   (क) वीरगाथा काल की (ख) भक्तिकाल की
   (ग) रीतिकाल की (घ) आधुनिककाल की

4. मीरा के पदों में कौन सी भावना है –
(क) निवेदन की (ख) आदेश की
(ग) समर्पण की (घ) पश्चताप की

5. मीरा ने किसको अपना पति माना –
(क) राम को (ख) शिव को
(ग) कृष्ण को (घ) हनुमान को

लघुउत्तरीय प्रश्न –

1. मीरा ने कृष्ण के लिए किस–किस का त्याग किया?
2. मीरा बाई ने किस जल से अपनी प्रेम की बेल को सींचा?
3. मीरा बाई की रचनाओं के नाम लिखिए।
4. 'मेरे तो गिरधर गोपाल'.......... पद में कौन सी दो भाषाओं के रूप मिलते हैं।
5. 'अँसुवन जल सींच–सींच प्रेम–बेली बोई।' पँक्ति में कौन सा अलंकार है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. मीरा के पद की भाषा पर टिप्पणी लिखिए।
2. 'असुवन जल सींचि–सींचि प्रेम–बेलि बोई।' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. मीरा सब कुछ त्याग कर श्री कृष्ण की भक्त क्यों हो गई?
4. मीरा बाई के काव्य का भाव–पक्ष और काल–पक्ष लिखिए।
5. निम्नांकित पँक्तियों की संदर्भ–प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।
भगति देखी राजी हुई, जगत देखी रोई।
दासी 'मीरा' लाल गिरधर तारो अब मोही।।

शब्दार्थ

गिरधर = गोवर्धन पर्वत को धारण करनेवाले, श्रीकृष्ण। कुल = वंश।
कानि = मर्यादा।
संतन ढिग = संतों के पास। अँसुवन जल = आँसुओं रूपी जल से।
प्रेम बेलि बोई = प्रेम रूपी बेल बोई है।

उत्तर

1. (ख) श्री कृष्ण को 2. (ख) संसार के कष्टों से
3. (ख) भक्तिकाल की 4. (ग) समर्पण की
5. (ग) कृष्ण का

संत रैदास

योग्यता विस्तार :–

इन महान संत कवियों के बारे में भी जानिए।

संत रैदास (संत रवि दास)

संत रैदास (संत रवि दास) भी भक्तिकाल के महान कवि थे। इनका जन्म काशी, उत्तरप्रदेश में हुआ था। ये कबीर के समकालीन थे। इनके जन्मतिथि के बारे में मतभिन्नता है। अधिकांश विद्वान इनका जन्म 1450 ई. में तथा निधन 1520 ई. के आसपास मानते हैं। इनके भी पद जन–जन में लोकप्रिय हैं। निम्नलिखित भजन को आपने अवश्य सुना होगा। इसका भावार्थ समझने का प्रयास कीजिए।

प्रभुजी! तुम चंदन हम पानी। जाकी अंग–अंग बास समानी।
प्रभुजी! तुम घन–बन हम मोरा। जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभुजी! तुम दीपक हम बाती। जाकी जोति बरै दिन–राती।
प्रभुजी! तुम मोती हम धागा। जैसे सोनेहि मिलत सोहाग।
प्रभुजी! तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भक्ति करै रैदासा।

गुरू बाबा घासीदास

गुरू बाबा घासीदास ग्राम गिरौदपुरी तहसील बलौदाबाजार, जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ में 18 दिसंबर 1756 को पिता महँगूदास जी एवं माता अमरौतिन के यहाँ अवतरित हुए थे। गुरूजी सतनाम धर्म के प्रवर्तक हैं। गुरूजी छत्तीसगढ़ के महान संत व समाजसुधारक थे। इनके उपदेश और संदेश क्रांतिकारी व युगप्रवर्तक हैं। ''मनखे–मनखे एक समान'' का संदेश देकर इन्होंने समरस समाज की स्थापना का क्रांतिकारी प्रयास किया।

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल रायपुर कक्षा दसवीं की हिन्दी विशिष्ट पाठ्य पुस्तक में गुरू बाबा घासीदास की जीवनी विस्तार से दी गई है। इस पुस्तक से गुरू बाबा घासीदास के संदेशों, उपदेशों तथा उनके व्यक्तित्व के बारे जानें।

गुरू बाबा घासीदास

पाठ–23

सरकारी मकान

लेखक – डॉ. रामदरश मिश्र

जीवन परिचय – डॉ. रामदरश मिश्र का जन्म 15 अगस्त सन् 1924 को गोरखपुर जिले के ग्राम डुमरी में हुआ था। आप ने एम. ए. तक शिक्षा प्राप्त की और दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से प्रोफेसर पद से सेवा मुक्त हुए। मिश्र जी को 25 जनवरी 2007 को उत्तर प्रदेश के सर्वश्रेष्ट पुरूस्कार 'भारत भारती' से सम्मानित किया गया। मिश्र जी ने उपन्यास, कहानियाँ, काव्य, ललित निबंध, यात्रा वृतांत, आत्मकथा, संस्मरण, बहुत ही सफलता के साथ लिखे हैं। उनकी रचनाओं में उनका सहज, सरल, निश्छल, व्यक्तित्व दिखाई पड़ता है।

रचानाएँ –

काव्य संग्रह – पक गई है धूप, दिन एक नदी बन गया, बारिश में भीगते बच्चे।
उपन्यास – पानी के प्राचीर, जल टूटता हुआ।
कहानी संग्रह – खाली घर, एक वह दिनचर्या।
ललित निबंध – कितने बजे हैं, बबूल और कैक्टस।
यात्रा वर्णन – तना हुआ इन्द्रधनुष, भोर का सपना।
आत्मकथा – सहचर है समय, स्मृतियों के छंद।

भाषा शैली – मिश्र जी की भाषा सरल–सहज है। छोटे–छोटे वाक्यों और आसानी से समझ में आने वाले शब्दों के सहारे आप भाषा में दृश्य रचते हैं। मिश्र जी ने अपने लेखों, कहानियों, उपन्यासों आदि में बोलचाल की स्वाभाविक शब्दावली का प्रयोग किया है। आपने अपनी भाषा में संस्कृत के शब्दों अर्थात तत्सम–तद्भव शब्दों का भी प्रयोग किया है। आपने अरबी–फारसी एवं देशज शब्दों का भी प्रयोग किया हैं। इस प्रकार स्वाभाविक बोलचाल की शब्दावली का प्रयोग करने से साहित्य में स्वाभविकता आ गई है। मिश्र जी ने मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया है।

डॉ. रामदरश मिश्र ने वर्णनात्मक, भावात्मक, विवेचना, संवाद, दृश्यात्मक तथा व्यंग्यात्मक शैलियों आदि का प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान – डॉ. रामदरश मिश्र ने समस्या मूलक निबंध, कहानियाँ लिखी हैं। आप का साहित्य उच्चकोटी का है। हिन्दी साहित्य आप से और अधिक उत्तम साहित्य प्राप्त करने की इच्छा रखता है।

सरकारी मकान

मूल भाव – इस कहानी में कहानीकर हमें सचेत करना चाहता है, कि हम बनवारी की तरह स्वार्थी और आत्म केन्द्रित न बनें। यह कहानी अपने में सीमित होते मनुष्य को राह से भटकने से रोकती है। कहानी से हमें शिक्षा मिलती है, कि स्वार्थ में अन्धे होकर हमें माता–पिता के प्रति अपने कर्त्तव्य को नहीं भूलना चाहिए।

चिट्ठी पढ़वाकर सुमित्रा जब लाजो के पास गई तो उसका चेहरा उल्लास से चमक रहा था। "क्या बात है, बहना, आज तेरे चेहरे पर उजाला फैला हुआ है ?" लाजो ने पूछा।

"लाजो, जाकर कह दे लोगों से, सुमित्रा के बेटे ने उसे कानपुर बुलाया है। वह कानपुर जाएगी। अफसर बेटे के साथ रहेगी। वह वहाँ उसका इलाज कराएगा। लोग कहते थे न कि सुमित्रा का बेटा नालायक निकल गया है। अपनी बीमार माँ को गाँव में अकेली छोड़कर शहर में मौज कर रहा है।"

लाजो मुसकाई। बोली, "यह तो बहुत अच्छी बात हुई, बहना ! बनवारी को अकल तो आई। अब तेरी बुढ़ौती बेटे–बहू और पोते–पोतियों के बीच चैन से कट जाएगी। हे ईश्वर तू कितना दयवान है! कब जा रही है, बहना?"

"वह पहली तारीख को आएगा और तीन को मुझे लेकर लौट जाएगा।"

सुमित्रा खाँसने लगी। लाजो ने उसे ध्यान से देखा। समझ नहीं पाई कि आज की खाँसी, खुशी की है या पुरानी बिमारी की।

"अच्छा, लाजो, जाऊँ। लोगों के काम–काज कर आऊँ और उनसे कह भी आऊँ कि आप लोग मेरे भरोसे मत रहिएगा। अब मैं अपने अफसर बेटे के साथ रहने के लिए कानपुर जा रही हूँ।"

सुमित्रा उछाह में चली गई तो लाजो फिर मुस्काराई। सोचने लगी, "आदमी का मन भी क्या चीज है। सुमित्रा कल तक मुझसे अपने बेटे और बहू की निर्दयता की कहानी कहते–कहते रो पड़ती थी। आज बेटे ने तनिक प्रेम से छू दिया तो माँ के भीतर जमा हुआ सारा गिला–शिकवा गलकर बह गया और उसका झुका हुआ सिर तन कर ऊँचा हो गया।"

सुमित्रा पिछड़े वर्ग के एक खाते–पीते परिवार की बहू बनकर आई थी। पति अपने दो बीघा खेत पर तो काम करता ही था, बड़े लोगों के खेतों पर भी काम करता था। घर ठीक–ठाक चल रहा था। संतानें भी दो ही थीं। एक बेटी और बेटा। बेटी बड़ी थी। बेटा बनवारी जब दस साल का हुआ तो एक दुर्घटना में पति की मौत हो गई। बेटा कस्बे के एक स्कूल में पाँचवीं में पढ़ता था। विपरीत परिस्थितियों में भी सुमित्रा चाहती थी कि बनवारी पढ़े–लिखे और बड़ा आदमी बने। उधर सयानी होती बेटी के विवाह की चिंता खाए जा रही थीं।

समय बीतने के साथ बेटी की शादी हो गई और बनवारी ने भी बी. ए. कर लिया। लेकिन अब तक दो बीघा खेत रेहन चढ़ चुका था। बनवारी नौकरी के लिए दौड़–धूप करने लगा। आखिर सेल्स टैक्स विभाग में उसे क्लर्की मिल गई और उसकी नियुक्ति कानपुर में हो गई।

सुमित्रा की खुशी का ठिकाना न रहा। वह अपने तन–मन पर लगे घावों पर जैसे हाथ फेरती बोली, "कोई बात नहीं, अब सारे घाव फूल बन जाएँगे। रेहन रखे खेत वापस आ जाएँगे और अब पूरा गाँव कहेगा– 'देखो, अफसर की महतारी जा रही है।" वैसे तो उसकी पट्टीदारी के कई लोग शहरों में नौकरी कर रहे हैं, लेकिन सभी मजूरे हैं – कोई कुली है, कोई चपरासी है, कोई रिक्शा चलाता है, कोई ईंट–गारा ढोता है; लेकिन उसका बेटा तो बड़े लोगों के लड़कों की तरह अफसरी कर रहा है। इससे उसकी जाति का सिर ऊँचा हुआ है।

बनवारी जब कानपुर जाने लगा तो माँ से बोला था, "अब घबराना नहीं, माँ, संकट के दिन कट गए। अब सब कुछ ठीक हो जाएगा। वहाँ कुछ ठीक–ठाक होते ही तुम्हें बुला लूँगा।"

"अरे, मुझे वहाँ कैसे बुलाओगे, बेटा? अपना गाँव और पुश्तैनी मकान छोड़कर मैं शहर में कैसे रह सकती हूँ? हाँ, बहू ला दो। हम दोनों साथ–साथ अपने खेतों में काम करेंगे और यहीं मौज से रहेंगे। हाँ, रेहन पड़े अपने खेतों को जरूर छुड़ा देना, बेटे।"

"ठीक है, माँ, जैसी तेरी इच्छा।"

बनवारी ने नौकरी शुरू कर दी। शहर के एक गंदे मोहल्ले की एक चाली में एक कमरा किराए पर लिया। शुरू में उसने कुछ पैसे माँ के नाम भेजे और फिर एक दिन माँ को बताए बिना सहकर्मी की कुछ पढ़ी–लिखी लड़की से शादी कर ली।

बनवारी इस बार घर आया तो सुमित्रा बहुत रोई। बनवरी ने अपने ढंग से उसे समझा दिया सुमित्रा ने कहा, "बेटे, खेत रेहन पड़े हैं। उन्हें छुड़ाने का इंतजाम होना चाहिए। अब तुम्हारा पैसे भी नहीं आते हैं। तबीयत खराब रहती है। जाने क्या हो गया है।"

"माँ, अब खेत छुड़ाकर क्या होगा? अब कौन यहाँ खेती करने आएगा? नई नौकरी है। जरा संभल जाऊँ और ठीक–ठाक मकान मिल जाए तो तुम्हें भी वहाँ बुला लूँ। जाते ही कुछ पैसे भेज दूँगा, ताकि तुम्हारा काम चल सके।"

"और बेटे, बहू को साथ क्यों नहीं लाए?"

"लाऊँगा, माँ, अभी उसकी तबीयत ठीक नहीं थी।"

इस बार बनवारी गया तो चुप्पी साध ली। सुमित्रा पेट पालने के लिए दूसरों के खेतों और घरों में काम करने लगी थी। बिरादरी के लोग उसे सुनाकर कहते थे, "देखो, अफसर की माँ जा रही है, दूसरों के घर में चौका–बर्तन करने, पानी भरने। अरे, अफसर से अच्छे तो हमारे कुली–कबाड़ी बेटे ही हैं न, जो शहरों में रहकर भी हमारे सुख–दुःख में साथ खड़े हैं।"

सुमित्रा जिन लोगों के यहाँ काम करती थी वे बनवारी को सीधे गाली देकर कहते, "कपूत साला! नौकरी क्या मिली, माँ को ही भूल बैठा।"

सुमित्रा सुनती, कुछ नहीं बोलती, बल्कि बेटे की निंदा सुनकर उसे तकलीफ ही होती। जहाँ बोलना होता, यही कहती, "ना, ना ऐसा मत कहिए। मेरा बनवारी ऐसा नहीं है। वह जरूर किसी संकट में है। साथ में जोरू भी तो है। पैसा नहीं बचता होगा। एक दिन जरूर अपने साथ ले जाएगा।"

लेकिन लाजो उसकी अंतरंग थी। उसके आगे वह फूट पड़ती थी और अपना सारा दुख–दर्द उड़ेल देती थी। सुबक–सुबक कर रोती थी और कहती थी, "बनवारी ऐसा कपूत निकलेगा, मैंने कभी सोचा नहीं था, बहन। उसी की पढ़ाई में खेत रेहन चढ़ गए। वह मुझे किसके भरोसे छोड़ गया है?"

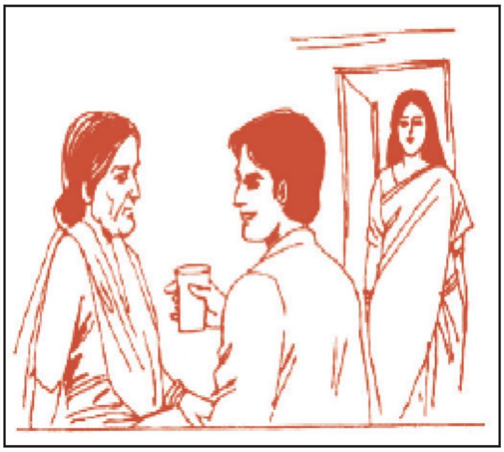

लाजो उसे ढाँढस बँधाती और जितना संभव होता, उसकी सहायता करती। सुमित्रा को लगता, जैसे उसका कोई अपना बचा हुआ है। बनवारी की चिट्ठी आई तो सुमित्रा के साथ लाजो भी खिल उठी थी। उसने सुना कि सुमित्रा लोगों को सुना–सुनाकर कह रही थी, "मेरा अफसर बेटा मुझे लेने आ रहा है। मैं कहती थी न, वह किसी लाचारी में फँसा होगा। अब तुम लोगों को परतीति हुई कि नहीं? अरे, अपने बेटे को माँ ही पहचान सकती हैं दूसरे लोग क्या पहचानेंगे।"

गाँव के लोग सुन रहे थे। कुछ व्यंग्य से मुसकरा रहे थे, कुछ बहुत तृप्ति अनुभव कर रहे थे कि बेचारी बीमार औरत सहारा पा जाएगी।

बनवरी आकर माँ को ले गया। बहू ने भी बहुत आवभगत की। पल भर में ही उसकी सारी शिकायतें बह गईं। सुमित्रा को ज्ञात हुआ कि बहू पेट से है। उसे बहुत अच्छा लगा।
उसका पोता होगा। बेटे–बहू और पोते के साथ जीवन के बचे–खुचे दिन आराम से बीत जाएँगे।
दो–चार दिन बाद बनवारी ने कहा, "माँ, चलो, तुम्हें डॉक्टर को दिखा लाएँ।"
"हाँ, बेटे, चलो। खाँसी बढ़ती जा रही है।"
डिस्पेंसरी के डॉक्टर ने देखा–परखा। उसने सलाह दी, "इन्हें अस्पताल ले जाओ, पूरी तरह इनकी जाँच कराओ। डॉक्टरी रिपोर्ट में क्या आता है, देखकर ही दवा दी जा सकती है। तब तक ये दवाएँ देते रहो।"
सुमित्रा अस्पताल में दिखाने को ले जाई गई तो डॉक्टर ने भर्ती कर लिया और जाँच की प्रक्रिया शुरू हो गई। जाँच की रिपोर्ट मिलते ही बनवारी प्रसन्न हो उठा। वह घर में प्रवेश करते ही खुशी से चिल्लाने लगा – "कुसुम, कुसुम ! अरे तुम कहाँ हो?"
कुसुम रसोई में थी। वहीं से बोली, "अरे, बाबा, क्या है? क्या कुसुम–कुसुम चिल्ला रहे हो?"
"अरे, चिल्लाने की बात ही है। अरे, पगली, माँ को वही बीमारी है, जिसके आधार पर सरकारी क्वार्टर मिल जाता है।"
"कुसुम की आँखें चमक उठीं। बोली सच?"
"हाँ रे, सच। अब तो सरकारी मकान मिल जाएगा। उसमें तीन कमरे होंगे। एक ड्रॉइंग रूम होगा, एक बेडरूम और एक उसका होगा न।"
"किसका?"
उसने कुसुम के पेट की ओर इशारा करते हुए कहा, "इसका"।
"धत्।"
और बनवरी ने खुशी से कुसुम को चूम लिया।
"अरे, हटो, कोई देख लेगा।"
"हाँ, अब यह संकट भी तो दूर हो जाएगा। ... इस पंचायती घर में हम प्रेम भी तो नहीं कर सकते।"
"और माँजी कहाँ रहेंगी?"
"अरे, अभी तो तीसरा कमरा खाली होगा, और कौन–सा माँ यहाँ ज्यादा दिन तक रहने वाली है।"
कुसुम ने प्रश्न भरी दृष्टि से बनवरी को देखा। वह मुसकराता वहाँ से हट गया।
बनवारी ने अर्जी दे दी और जल्दी ही उसे क्वार्टर मिल गया। सुमित्रा कुछ दिन अस्पताल में रहकर चाली वाले घर में लौट आई थी और जब सरकारी क्वार्टर में ले आई तो उसे लगा कि खुली हवा में आ गई है। उसे लगा कि नई दवाओं से धीरे–धीरे उसकी स्थिति बेहतर हो रही है। लेकिन कुछ दिनों बाद वह यह भी महसूस करने लगी कि बेटे और बहू के व्यवहार में वह गरमाई नहीं रही, जो शुरू में थी। बल्कि बात–बात में वे दोनों झल्ला उठते थे। बाजार से आने वाली दवाएँ बंद कर दी गई और डिस्पेंसरी से दवा आने लगी। खाँसी फिर बढ़ने लगी। बहू–बेटे की क्रूर उदासीनता से तंग आकर एक दिन सुमित्रा बोली, "इससे अच्छा तो अपना गाँव ही था।"

बेटे को जैसे एक सूत्र मिल गया। बोला, "माँ तुम्हें गाँव बहुत याद आता है न ! तो गाँव ही चली जाओ। आखिर वहाँ पुश्तैनी मकान भी तो है। उसकी भी देखभाल होनी ही चाहिए।"

सुमित्रा ने आहत दृष्टि से बेटे की ओर देखा। उसकी आहत दृष्टि देखते–देखते रोष से लाल होने लगी। बोली, "मैं सब समझती हूँ बनवारी। मैं कल ही गाँव चली जाऊँगी। मुझे पता है कि मैं अधिक दिन जिंदा नहीं रहूँगी। लेकिन जब मरना है तो अपने लिए घिन से भरे इस सरकारी मकान में क्यों मरूँ? क्यों न अपने पुश्तैनी घर की गोद में सिर डाल कर चुपचाप सो जाऊँ ?"

और एक दिन गाँव के लोगों ने देखा कि सुमित्रा सिर पर अपनी गठरी उठाए स्टेशन से गाँव की ओर खाँसती हुई चली आ रही है, धीरे–धीरे।

000

पाठगत् प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. कहानी का आरम्भ .... घटना से होता है।
2. कहानी का महत्वपूर्ण मोड़ .... से शुरू होता है।
3. पत्र पढ़कर सुमित्रा का खुश होना उसकी .... विशेषता प्रकट करता है।
4. माँ की बिमारी की खबर सुनकर खुश होने से बनवारी के .... गुण का पता चलता है।
5. शहरी परिवेश मनुष्य को .... बना देता है।

लघुउत्तरीय प्रश्न –

1. बनवारी कहाँ तक पढ़ा था?
2. बनवारी शहर क्यों गया था?
3. शहर में सबसे अधिक समस्या किस चीज की होती है?
4. इस कहानी का मूल कथ्य क्या है?
5. बनवारी के व्यवहार से सुमित्रा सब से अधिक आहत कब होती है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. सरकारी मकान कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिये।
2. इस कहानी से क्या संदेश मिलता हैं? कहानीकार ने किस उद्देश्य से यह कहानी लिखी है?
3. बनवारी का चरित्र–चित्रण कीजिए।
4. सरकारी मकान कहानी की विषय वस्तु अपने शब्दो में लिखिए।
5. कहानी में शहरी परिवेश किस रूप में व्यक्त हुआ है?

अपठित गद्यांश

निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

पं. दीनदयाल ने विवेकानंद से राष्ट्र चिंतन, गाँधी जी से सादगी और चाणक्य से नीतिमत्ता और स्पष्ट ध्येयवादिता ग्रहण की। एक बार कार्यकर्त्ताओं ने उनसे पूछा – "हमें राष्ट्र–सेवा की प्रेरणा कहाँ से मिलेगी?" इसके उत्तर में दीनदयाल जी ने कहा – "अपने चारों ओर ध्यान से देखो। रास्ता चलते हुए क्या तुम्हें ऐसे–ऐसे लोग नहीं दिखाई देते जो अस्वस्थ होते हुए भी गरीबी के कारण रिक्शा या ठेला खींचने के लिए मजबूर हैं। गर्मी की चिलचिलाती धूप में नंगे पाँव किसी वृद्ध को पसीने–पसीने होकर ठेला खीचतें देखते हो, तो क्या तुम्हारे मन में कुछ उमड़ता–घुमड़ता नहीं? रेलवे स्टेशन के किसी कोने में कोई गरीब माँ अपने नंगे–भूखे बच्चों को किसी फटे टाट से लपेटकर जाड़े में ठिठुरती दिखती है तो क्या तुम्हारी अंतरात्मा विद्रोह नहीं करती? दस–बारह साल के छोटे बच्चों को मजबूरीवश मजदूरी करते देखकर तुम्हारा मन नहीं रोता? आखिर ये सब कौन हैं? ये ही हमारे देशबन्धु हैं। ये हमारी प्रेरणा के स्त्रोत हैं। इन्हें सुखी–संपन्न बनाना ही हमारी साधना है। जब तक यह प्रेरणा बनी रहेगी, हमारी कार्य शक्ति कभी कुंठित नहीं होगी"।

1. अस्वस्थ होते हुए भी व्यक्ति काम करने के लिए क्यों और कब मजबूर होता है?
2. अनुच्छेद का एक तिहाई शब्दों में सारांश लिखिए।
3. अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।
4. हमें किनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

शब्दार्थ

उल्लास – खुशी। चेहरे पर उजाला फैला हुआ है – यहाँ अर्थ है कि मन की खुशी के कारण चेहरे पर भी चमक आ गई है।
अकल – बोलचाल में अक्ल को अकल कहा जाता है। , उछाह – उत्साह। , गिला–शिकवा – शिकायत।
सिर तन कर ऊँचा होना – (मुहावरा) मन में गर्व का भाव आना। ,
पिछड़ा वर्ग – समाज में जाति तथा धन संपत्ति के आधार पर जिन्हें पीछे छोड़ दिया गया है, ऐसे लोगो का समूह।
विपरीत – उल्टी, जो अनुकूल या सहायक न हो।
रेहन चढ़ना – कर्ज लेकर सूद की जगह कर्ज देने वालों को खेती के लिए खेत दे देना।
कर्ज लौटा देने पर खेत पर फिर उसके मालिक का अधिकार हो जाता है, यानी रेहन छूट जाता है।
घाव फूल बन जाएँगे – सारे दुःख समाप्त हो जाऐंगे।
महतारी – माँ।, मजूरे – मजदूर।
पेट पालना – जीवित रहने के लिए भोजन–पानी की व्यवस्था करना।
जोरू – पत्नी।
अंतरंग – करीबी, जिससे बहुत अपनापन हो।
कपूत – कुपुत्र, बुरा बेटा।
परतीति – प्रतीति, जानकारी, ज्ञान।
तृप्ति – संतोष।
शिकायतें बह गई – शिकायतें समाप्त हो गईं।
बहू पेट से है – बहू गर्भवती है, बहू को बच्चा होने वाला है।
गरमाई – गर्माहट, प्रेम।
आहत – चोट ग्रस्त, चोटिल, जख्मी।
रोष – क्रोध, गुस्सा। दृष्टि लाल होना – आँखें लाल होना (मुहावरा), क्रोध से भर जाना।

व्याकरण

अलंकार

अलंकार का अर्थ – अलंकार शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है – आभूषण। जैसे आभूषण नारियों का श्रृंगार है, उसी प्रकार साहित्य में शब्द और अर्थ में चमत्कार उत्पन्न करनेवाले तत्व अलंकार हैं।
अलंकार की परिभाषा – शब्द और अर्थ में सौंदर्य उत्पन्न करनेवाले तत्वों को अलंकार कहते हैं; अर्थात, **काव्य की शोभा बढ़ानेवाले तत्व को अलंकार कहते हैं।**

अलंकार के प्रकार – अलंकार के प्रमुख तीन प्रकार हैं –

1. शब्दालंकार – जहाँ काव्य में शब्दों में चमत्कार उत्पन्न हो वहाँ शब्दालंकार होता है। अनुप्रास, श्लेष, यमक, वक्रोक्ति शब्दालंकार के भेद हैं।
उदाहरण – 'चारू चन्द्र की चंचल किरणें।'

2. अर्थालंकार – जहाँ काव्य के अर्थ में सौंदर्य पाया जाय, वहाँ अर्थालंकार होता है।
उदाहरण – पीपर पात सरिस मन डोला।'

3. उभयालंकार – जहाँ काव्य के शब्द और अर्थ दोनों में चमत्कार (सौंदर्य) निहित हो वहाँ उमयालंकार होता है।
उदाहरण – मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्त्र दृग–सुमन फाड़।।

1. श्लेष अलंकार

परिभाषा – श्लेष शब्द का अर्थ है, चिपका हुआ। अर्थात जहाँ काव्य में प्रयुक्त एक ही शब्द के कई अर्थ निकलते हो, अर्थात एक ही शब्द में कई अर्थ चिपके हों वहाँ श्लेष अलंकार होता है।
उदाहरण – रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती, मानुष, चून।।

इसमें पानी के तीन अर्थ हैं – मोती के लिए पानी का अर्थ है, उसकी चमक, मनुष्य के लिए पानी का अर्थ है, उस का सम्मान और चूने के लिए पानी का अर्थ है, उसका गुण।

2. रूपक अलंकार

परिभाषा – जब उपमेय में उपमान का आरोप किया जाता है और दोनों में कोई भेद नहीं होता, वहाँ रूपक अलंकार होता है।
उदाहरण – 'चरण–सरोज पखारन लगा।'
अर्थत केंवट श्रीराम के कमल रूपी चरणों को धोने लगा।।

इस पद में उपमेय 'चरण' को ही उपमान 'सरोज' बताकर चरण और कमल में एकरूपता दिखाई गई है, अतः यहाँ रूपक अलंकार है।

3. उपमा अलंकार

परिभाषा – उपमा शब्द का अर्थ है तुलना। जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु की अन्य व्यक्ति या वस्तु से गुण–धर्म के आधार पर तुलना की जाए, वहाँ उपमा अलंकार होता है।
उदाहरण – 'पीपर पात सरिस मन डोला।'

इसका अर्थ है – 'मन, पीपल के पत्ते के समान डोलने लगा।'यहाँ चंचल मन की तुलना डोलते हुए पीपल के पत्ते से की गई है। इस पद में –

1. (चंचल) मन – उपमेय
2. पीपल (का डोलता हुआ) पत्ता – उपमान
3. डोलना – साधारण धर्म, तथा
4. सरिस (के समान) – वाचक शब्द है।

अर्थात् उपमा अलंकार के चार अंग होते हैं –

1. उपमेय 2. उपमान 3. साधारण धर्म, तथा 4. वाचक शब्द

उपमा के अंग

उदाहरण – 'सीता का मुख चंद्रमा के समान सुंदर है।' इस पद में –

1. उपमेय – जिसकी किसी अन्य वस्तु स तुलना की जाये उसे उपमेय कहते हैं।' मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है। यहाँ मुख की तुलना चन्द्रमा से की गई है। अतः मुख उपमेय है।

2. उपमान – जिस वस्तु से तुलना की जाती है, उसे उपमान कहते है। मुख की तुलना यहाँ चन्द्रमा से की गई है। अतः यहाँ चन्द्रमा उपमान है।

3. वाचक शब्द – जो शब्द समानता बतानेवाले हो उसे वाचक शब्द कहते हैं।

4. साधारण धर्म – उपमेय और उपमान में जिन गुणों के कारण तुलना की जाती है, उन्हें साधारण धर्म कहते हैं।

उपमा अलंकार के प्रकार –

1. पूर्णोपमा – जहाँ उपमा अलंकार के चारों अंग विद्यमान रहते हैं। वहाँ पूर्णोपमा अलंकार होता है।

जैसे – मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है। इस वाक्य में उपमा के चारों अंग विद्यमान है।

2. लुप्तोपमा – जाहँ उपमा अलंकार का एक या एक से अधिक अंग का लोप हों अर्थात उपमेय, उपमान, वाचक शब्द और सधारण धर्म में से कोई भी एक या एक से अधिक अंग लुप्त हों। वहाँ लुप्तोपमा अलंकार होता है।

4. उत्प्रेक्षा अलंकार

परिभाषा – जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना व्यक्त की जाये। वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसमें 'मनु', 'मानो', 'मनो', 'जनु', 'जानो' आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

उदहरण – लता भवन ते प्रकट भए, तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग विमल विधु जलद–पटल विलगाइ।।

यहाँ राम–लक्ष्मण लता मण्डप से ऐसे निकले मानो दो चन्द्रमा बादलों में से निकले हो।

5. अनुप्रास अलंकार

परिभाषा – जहाँ एक ही वर्ण बार–बार दोहराया जाए अर्थात वर्णों की आवृत्ति हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण – चारू चंद्र की चंचल किरणें,
खेल रही थीं जल थल में।

अनुप्रास अलंकार के भेद –

1. छेकानुप्रास – जहाँ स्वरूप और क्रम से अनेक व्यंजनों की आवृत्ति एकबार हो वहाँ छेकानुप्रास होता है।

उदाहरण – बगरे बीथिन में भ्रमर, भरे अजब अनुराग।
कुसुमित कुंजल में भ्रमर, भरे अजब अनुराग।।

2. वृत्यानुप्रास – जहाँ एक वर्ण की आवृत्ति अनेक बार हो वहाँ वृत्यानुप्रास होता है।

उदाहरण – चामर–सी, चंदन–सी, चंद–सी,
चाँदनी चमेली चारू चंद–सी सुघर है।

3. लाटानुप्रास – जब तक शब्द या वाक्यखंड की आवृत्ति उसी अर्थ में हो पर तात्पर्य या अन्वय में भेद हो, वहाँ लाटानुप्रास होता है।

उदहारण – राम भजन जो करत नहिं, भव–बन्धन भय ताहि।
राम भजन जो करत, नहिं भव–बन्धन भय ताहि।।

4. अन्त्यानुप्रास – जहाँ अंत में तुक मिलता हो वहाँ अन्त्यानुप्रास होता है।

उदाहरण – लगा दी किसने आकर आग।
कहाँ था तू संशय के नाग।।

5. श्रुत्यानुप्रास – जहाँ कानों के मधुर लगने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है, वहाँ श्रुत्यानुप्रास होता है।

उदाहरण – दिनान्त था, थे दीनानाथ डूबते,
सधेनु आते ग्रह ग्वाल बाल थे।

दशम इकाई

पद्य

बीती विभावरी – जयशंकर प्रसाद

गद्य

अखबार की दुनिया

लेखन

कैसे बनाएँ परियोजना

पाठ–24

बीती विभावरी जाग री

कवि जयशंकर प्रसाद

जीवन परिचय – जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी 1889 ई. में वाराणसी के एक प्रसिद्ध 'सूँघनी साहू' परिवार में हुआ। बाल्यावस्था में ही आप के माता–पिता का स्वर्गवास हो गया था। स्वाध्याय से ही आपने हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला, उर्दू– फारसी आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। आप का बाल्य काल ध ान वैभव में बीता किन्तु बाद में आपकी आर्थिक स्थिति बिगड़ गई और शेष जीवन धनाभाव में व्यतीत हुआ। मात्र 48 वर्ष की आयु में 14 जनवरी 1937 ई. को काशी में आप का निधन हो गया।

रचनाएँ –

काव्य :– कानन कुसुम, महाराणा का महत्व, झरना, आँसू, लहर, प्रेम पथिक
महाकाव्य :– कामायनी,
नाटक :– स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, धुवस्वामिनी, जन्मेजय का नाग यज्ञ, राज्यश्री, कामना, एक घूंट
कहानी संग्रह :'– छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी, इन्द्रजाल
उपन्यास :– कंकाल, तितली, इरावती

भावपक्ष – प्रसाद जी छायावाद के आधार स्तम्भ हैं। आपने प्रकृति का बहुत ही सुन्दर मानवीयकरण किया है। आप के काव्य में प्रकृति के प्रति गहरी आत्मीयता है। प्रसाद जी के काव्य में प्राकृतिक वर्णन दिखते हुए भी राष्ट्रीय भाव छिपे रहते हैं। प्रसाद जी आधुनिक शैव थे, क्योंकि उनके काव्य में आनंदवादी दर्शन होते हैं। प्रसाद के साहित्य में भारत के अतीत के दर्शन होते हैं। आप के काव्य में रहस्यमयी सत्ता का आभास मिलता है।

कलापक्ष – जयशंकर प्रसाद खड़ीबोली के बहुत ही समर्थ कवि थे। भाषा व्याकरण सम्मत है, किन्तु सरल एवं सुगम है। संस्कृत के शब्दों का अत्यधिक प्रयोग होने पर भी भाषा क्लिष्ट नहीं हुई है । प्रसाद जी ने मानवीकारण, उपमा, उत्प्रेक्षा, एवं रूपक आदि अलंकारों का प्रयोग अधिक किया है।ँ लक्षणा एवं व्यंजना शब्द शक्ति का प्रयोग आप के काव्य में देखने को मिलता है।

साहित्य में स्थान – प्रसाद जी का कामायनी महाकाव्य विश्व काव्य का श्रृँगार है। प्रसाद जी छायावाद के एक श्रेष्ठ कवि के साथ ही एक महान नाटककार और कहानीकार भी थे। हिन्दी साहित्य सदा ही आप का ऋणी रहेगा।

बीती विभावरी जाग री

केन्द्रीय भाव – 'बीती विभावरी जाग री' कविता जय शंकर प्रसाद के काव्य संग्रह लहर से ली गई है। इस कविता में एक सखी दूसरे सखी को संबोधित करते हुए कह रही है कि – हे सखि! प्रकृति अपने समस्त सौंदर्यं और संगीत के साथ जाग गई है, तब तुम्हीं क्यों अपने सौदर्यं और माध ुर्य को लेकर सो रही हो। कविता में प्राकृतिक – चित्रण के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण के लिए उद्‌बोधन भी किया गया है। यह कविता सौदर्यं पर रचित कोमल–रागात्मक कविता है, जिसमें कवि ने प्रकृति का सुन्दर मानवीकरण किया है।

बीती वभावरी, जाग री।
अंबर–पनघट में डुबो रही –
तारा–घट, ऊषा–नागरी।

खग कुल, कुल–कुल–सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी लाई
मधु–मुकुल नवल रस गागरी।

अधरों में राग अमंद पिए,
अलकों में मलयज बंद किए,
तू अब तक सोई है आली!
आँखों में भरे विहाग री!

जयशंकर प्रसाद

अर्थ :– रात बीत गई है, हे सखि! अब तो जगो। देखो, सुबह होने वाली है। उषा–रूपी स्त्रियाँ (उषाकाल का मावनीकरण, स्त्री के रूप में चित्रण), अंबर–रूपी पनघट में, (समानता – प्रातः होने पर आकाश का रंग नीला हो जाता है, पानी का रंग भी नीला होता है।) तारे–रूपी घड़ों में पानी भर रही हैं। पक्षियों का चहचहाना, घड़े में पानी भरते समय कुल–कुल की आवाज जैसा प्रतीत हो रहा है। कोमल पत्तियों का आँचल (पौधों का मानवीकरण) डोल रहा है। लो! लताएँ भी मानों अधखिले फूलों में मधु–रस की गगरी भर कर ले आईं हैं। तुम अपने होठों में, कभी मंद न पड़नेवाला अनुराग लिए, अपने केशों में मलयज बयार को बंद किए और आँखों में विहाग–राग लिये कब तक सोती रहोगी?

विशेष – रूपक अलंकार – उषाकाल – नागरी (स्त्री), अंबर (आकाश) – पनघट, तारे – घड़े
मानवीकरण अलंकार – उषाकाल – नागरी (स्त्री)

पाठगत प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

सही विकल्प चुनकर लिखिए –

1. इस कविता में किस समय का वर्णन है?
   (क) शाम का (ख) भोर का
   (ग) दोपहर का (घ) रात का
2. 'अधरों में राग अमंद पिए' पँक्ति किसके बारें में कही गई है?
   (क) मोर (ख) मलयज
   (ग) सखी (ग) खग कुल
3. 'नागरी' कह कर कवि किसे संबोधित करना चाहता है ?
   (क) भौंरों को (ख) मोर को
   (ग) सुन्दर स्त्री को (घ) हर व्यक्ति को
4. इस कविता की भाषा –
   (क) संस्कृत निष्ठ है (ख) सरल है
   (ग) उर्दू है (घ) मिलीजुली है।
5. कविता में प्रमुख रूप से किस का वर्णन है ?
   (क) प्रेयसी का (ख) पक्षी का
   (ग) प्रकृतिक का (घ) पनघट का

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. इस कविता में भोर के सौदर्य चित्रण का प्रमुख उद्देश्य किसको जगाना है?
2. 'अंबर रूपी पनघट में तारा रूपी घट' कौन डुबो रही है?
3. कविता में किस समय जगने की बात कही गई है?
4. लताएँ क्या भर लाई हैं?
5. कौन आलस्य में सो रही है?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न –

1. 'बीती' विभावरी जाग री' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
2. इस कविता का काव्य–सौन्दर्य एवं भाषा–सौन्दर्य लिखिए।
3. जयशंकर प्रसाद के काव्य की तीन विशेषताएँ लिखिए।
4. कविता के अनुसार प्रातःकालीन सौन्दर्य का चित्रण कीजिए।
5. इस कविता में कवि ने प्रकृति का मानवीकरण किस प्रकार किया है?

शब्दार्थ

विभावरी = रात्रि।
अंबर–पनघट = आकाश रूपी पनघट।
तारा–घट = तारे रूपी घड़े।
ऊषा = प्रातःकाल का समय।
नागरी = स्त्री।
खग–कुल = पक्षियों का समूह।
कुल–कुल = घड़े भरने का शब्द।
किसलय = कोपलें।
लतिका = लता।
मुकुल = अधखिला फूल।
नवल = नया।
गागरी = छोटा कलश।
अधरों = होठों।
राग = लगाव।
अमंद = कम नहीं होने वाला, जो न हो।
अलकों = केशों।
मलयज = सुगंधित वायु।
आली = सखी।
विहाग = रात्रि में गाया जानेवाला एक राग।

योग्यता विस्तार

छायावादी युग :– हिन्दी साहित्य में सन् 1920 से सन् 1936 तक के कालखण्ड को छायावादी युग कहा जाता है। इस युग के प्रमुख कवि और उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं –

क्र.	प्रमुख छायावादी कवि	रचनाएँ
01	जयशंकर प्रसाद	महाकाव्य – कामायनी, काव्य संग्रह – लहर, झरना, आँसू
02	सुमित्रानंदन पंत	काव्य संग्रह – वीणा, पल्लव, गुंजन
03	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	काव्य संग्रह – परिमल, अनामिका, गीतिका
04	महादेवी वर्मा	काव्य संग्रह – नीहार, रश्मि, नीरजा

प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी वर्मा छायावाद के प्रमुख कवि, और छायावाद के चार स्तंभ माने जाते हैं। रामधारी सिंह 'दिनकर' तथा रामकुमार वर्मा छायावदी युग के अन्य प्रमुख कवि हैं।

छायावाद की परिभाषा

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार – "स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह ही छायावाद है।"
डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार – "जब परमात्मा की छाया आत्मा में पड़ने लगती है और आत्मा की छाया परमात्मा में, तब वही छायावाद कहलाता है।"

छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ –

01. स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह
02. प्रकृति का मानवीकरण
03. नारी के प्रति नवीन भावना
04 व्यक्तिवाद की प्रधानता
05 चित्रात्मक भाषा एवं लाक्षणिक पदावली
06 अलंकार विधान में नवीनता
07 प्रगीतों का आधिक्य

इस पाठ में संकलित कविता **'बीती विभावरी'** छायावाद की एक श्रेष्ठ रचना है। इसमें छायावाद की उपर्युक्त सभी विशेषताएँ समाविष्ट हैं। जैसे – कविता के विषय वस्तु में कोई कहानी या कोई मानवीय पात्र नहीं है। यहाँ प्रकृति के क्रियाकलापों का वर्णन है। यह स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। उषाकाल को पनिहारिन, अंबर को पनघट और तारों को घड़े के रूप में चित्रित किया गया है। प्रातःकाल में पक्षियों के चहचहाने की आवाज की तुलना घड़े में पानी भरते समय होनेवाली आवाज से गई है। यही प्रकृति का मानवीकरण है। इस कविता की अलंकार योजना में नवीनता है। कविता पढ़ते समय मस्तिष्क में प्रातःकाल का दृश्य साकार हो उठता है। यही चित्रात्मक भाषा है। भाषा और शैली में नवीनता भी दिखाई दे रही है।

पाठ – 25

अखबार की दुनिया

भूमिका – समाचार एक ऐसा माध्यम है, जिसका उपयोग किसी न किसी रूप में प्रत्येक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में करता है। यह समाचार हमें अखबार, रेडियों, टेलीविजन, और इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त होते हैं। यही समाचार हमें विश्व से जोड़ते हैं। क्या कभी आपने इस विषय पर ध्यान दिया कि अखबारों में केवल समाचार छपते हैं, या और भी महत्वपूर्ण चीजें छपती हैं।

आइए इन्हीं बातों को हम 'अखबार की दुनिया'पाठ में पढ़ें।

उद्देश्य –

1. अखबार के विभिन्न अंग होते हैं – समाचार, सम्पादकीय, फीचर, फोटो, कार्टून,ग्राफिक,विज्ञापन आदि।
2. समाचारों के आधार पर किसी घटना के बारें में अपना निष्पक्ष और तार्किक दृष्टिकोण विस्तृत कर सकते हैं।
3. समाचारों का विश्लेषण कर सकते हैं।
4. समाचारों की उपयोगिता बता सकेगें।

अखबारों का स्वरूप – अखबारों में केवल समाचार ही नहीं छपतें, बल्कि समाचारों पर आधारित और समाचारों से अलग हटकर भी बहुत सारी चीजें छपती हैं।

अखबारों के अंग – समाचार, संपादकीय, फोटो, फीचर, लेख, कार्टून, ग्राफिक और विज्ञापन आदि अखबारों के अंग हैं।

समाचार – समाचारों को प्रकाशित करने के लिए सीमित स्थान निर्धारित होता है।

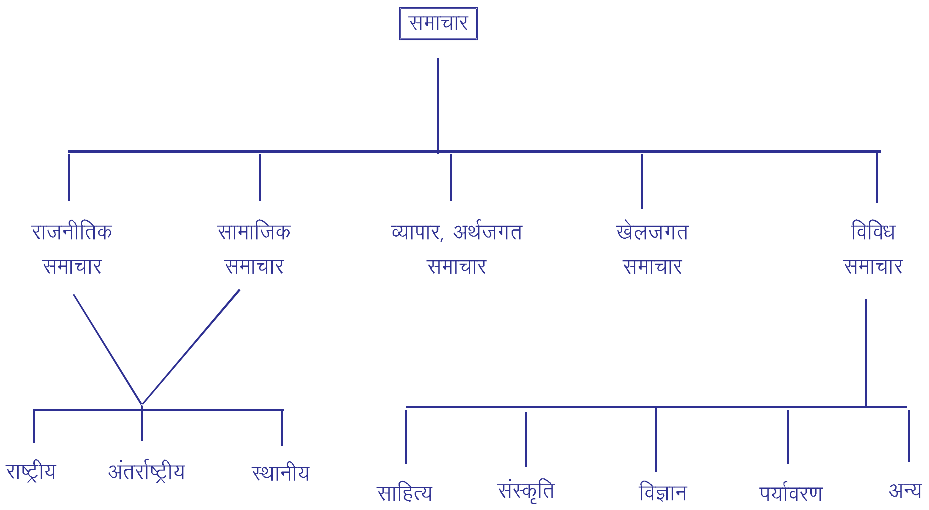

हर अखबारों में में अलग अलग क्षेत्रों के अनुसार संवाददाताओं का वर्गीकरण किया जाता है। सभी संवाददाता प्रतिदिन अपने क्षेत्र के समाचार शाम तक अखबार के कार्यालय में पहुँचाते हैं। इसके अतिरिक्त पी. टी. आई., यू. एन. आई., ए. पी., ए. एफ. पी. रायटर आदि सरकारी तथा गैर सरकारी देशी–विदेशी समाचार एजेंसियों भी हैं जो अपने सदस्य अखबारों को प्रतिदिन समाचार भेजती रहती हैं। अखबारों में समाचारों के चयन के लिए प्रतिदिन शाम को संपादकीय विभाग के सभी प्रमुखों की प्रधान संपादक के साथ बैठक होती है और उसमें आम सहमित से समाचारों का चयन और स्थान निर्धारत किया जाता है। जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण समाचार होते हैं, उन्हें प्रमुख स्थान अर्थात प्रथम पृष्ठ पर छापा जाता है। इसके बाद इससे कम महत्व के समाचार छापे जाते हैं।

समाचार के अंग – समाचार के प्रमुख अंगो को निम्नलिखित रेखांकन के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है :

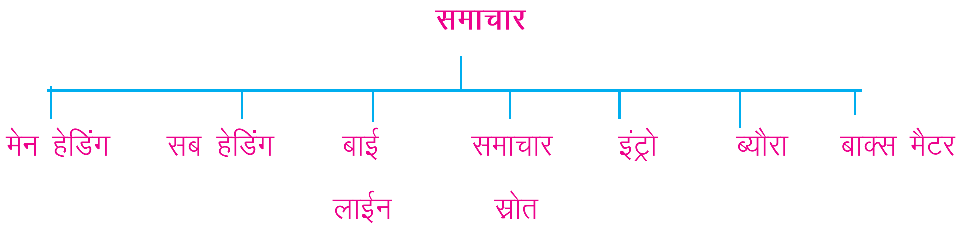

आइए इन अंगों के बारे में थोड़ी जानकारी प्राप्त करें –

मेन हेडिंग– (मुख्य शीर्षक) – मेन हेडिंग को पढ़कर ही हमें पूरे समाचार के बारें में एक मोटी जानकारी मिल जाती है।

सब हेडिंग (उप–शीर्षक)– मेन हेडिंग को पढ़ने के बाद पाठक के मन में एक के बाद एक कई जिज्ञासाएँ उठती हैं। इन्हें शान्त करने के लिए छोटे–छोटे वाक्यों मे सब हेडिंग दिये जाते हैं। सब हेडिंग पढ़कर ही समाचार की मुख्य बातों का पता चल जाता है। जैसे – हमने चुनाव सुधार अध्यादेश पर राष्ट्रपति अब्दुल कलाम द्वारा संसद को भेजी गई रिपोर्ट पर संसद की कार्यवाही के समाचार को लिया इसमें आप देख सकते है कि अखबार ने मेन हेडिंग के साथ सब हेडिंग भी दिये हैं।

बाई लाइन – समाचार लिखने वाले अथवा प्रस्तुत करने वाले संवाददाता के नाम को बाई लाईन कहते हैं।

समाचार स्त्रोत – यह समाचार का एक महत्वपूर्ण अंग है। इससे समाचार की प्रामाणिकता का पता चलता है। इसमें समाचार का ब्यौरा देने से पहले यह बताया जाता है, कि समाचार कहाँ से प्राप्त हुआ तथा किस माध्यम से प्राप्त हुआ। समाचार के हेडिंग के बाद जहाँ से समाचार शुरू होता है, वहाँ सबसे पहले दो समाचारों में लिखा है, विशेष संवाददाता, और अन्य दो समाचारों में लिखा है 'ब्यूरो' इसका अर्थ यह होता है कि दो अखबारों के विशेष संवादाता स्वयं जाकर वह समाचार लाए और अन्य दो अखबारों ने अपने व्युरों के माध्यम से वह समाचार प्राप्त किया।

इंट्रो – यह अंग्रेजी के इंट्रोडक्शन (परिचय) का संक्षिप्त रूप है। शुरू में थोड़े

मोटे अक्षरों में एक पैरा दिया जाता है। जिसमें संक्षेप में पूरे समाचार की मुख्य सुचनाएँ रहती है।

ब्यौरा – इन्ट्रों के बाद विस्तार से समाचार लिखा जाता है, इसे ही ब्यौरा कहते हैं। इसमें घटना से संबंधित सभी जानकारियाँ दी जाती हैं।

बाक्स मैटर – बॉक्स में प्रकाशित समाचार मुख्य समाचार के ही पूरक होते हैं, किन्तु उनका महत्व मुख्य समाचार से कम नहीं होता। कई बार बॉक्स में समाचार के मुख्य घटनाक्रम का ब्यौरा दिया जाता है। बड़े महत्व के समाचारों के साथ ही बॉक्स में समाचार दिये जाते हैं।

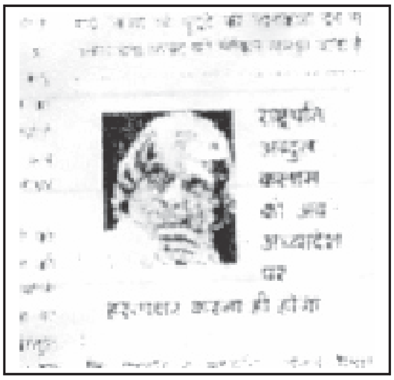

समाचार प्रस्तुति – समाचारों का कार्य किसी भी घटना के बारे में लोगों को सूचना देना होता है। इस तरह से किसी भी संवादाता को समाचार मे अपने विचार व्यक्त करने की बहुत कम गुजांइश रहती है। किंतु कई बार देखा गया है, कि विवादास्पाद समाचारों को संवाददाता अपने विचारों से मेल खाते तथ्यों अथवा अपने विचारों से मेल खाते विचारों वाले व्यक्तियों के कथनों को अधिक उजागर कर, समाचार को अपने अनूकुल बनाकर प्रस्तुत कर देते हैं। उस समाचार के पीछे उनकी विचार धारा अथवा विचार दृष्टि छिपी रहती है।

संपादकीय – संपादक की कोशिश रहती है, कि किसी भी घटना के बारें में जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए ही टिप्पणी दे, क्योंकि अखबार न सिर्फ जनता का सच्चा शिक्षक होता है, बल्कि जनता के हितों का रक्षक भी होता है। इय तरह किसी भी अखबार का संपादकीय उसी की मांग करता है, जो सही मायने में होना चाहिए।

फोटो – अखबार में छपनेवाला फोटों भी अपने आपमें एक समाचार होता है। कई बार एक फोटो और उसके नीचे दी गई दो पँक्तियों की सूचना हमारे मन पर गहरा प्रभाव डालती हैं। फोटो देखने के बाद सम्पूर्ण समाचार को पढ़ने की जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है। अतः फोटो अपने आप में एक समाचार होता है। कई अखबार अक्सर बड़ी घटनाओं के बाद घटना के अलग–अलग पहलुओं को उजागर करने वाले कई फोटो एक साथ प्रकाशित करते हैं। इसे फोटो फीचर कहा जाता है। इस तरह फोटो के माध्यम से घटना के विभिन्न पहलुओं के समाचार अपने आप उजागर हो जाते हैं।

फीचर – फीचर अखबार का एक बहुत ही सुन्दर और आकर्षक अंग होता है। जब से अखबारों की रंगीन छपाई शुरू हुई है, फीचर के कारण अखबारों की सुन्दरता बढ़ गई है। वास्तव में फीचर बहुत सारी चीजों का मिलाजुला रूप है। इसकी अनेक शैलियाँ हैं। फीचर एक लेख के रूप में भी हो सकता है, सिर्फ फोटो के रूप में भी हो सकता है, और छोटी–छोटी सूचनाओं के रूप मे भी हो सकता है। लेकिन फीचर हमेशा सूचनापरक होता है और उसका कोई न कोई लक्ष्य होता है।

लेख – अखबारों में प्रायः दो प्रकार के लेख प्रकाशित होते हैं –

1. – वे लेख होते हैं जो संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होते हैं।
2. – जो फीचर वाले पन्नों में प्रकाशित होते हैं।

संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले लेखों की अनिवार्य शर्त यह होती है वे किसी घटनाक्रम अथवा समाचार पर आधारित हो। लेकिन फीचर वाले पन्नों पर प्रकाशित होने वाले लेख किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो सकते हैं। जैसे – राजनीति, विज्ञान, समाज, खेल, फैशन, फिल्म, व्यापार, पर्यटन आदि कसी घटना पर आधारित होते हैं। इसमें सूचनाओं का होना अनिवार्य होता है।

साक्षात्कार – साक्षात्कार यानी किसी व्यक्ति से बातचीत। इसे अंग्रेजी में इंटरव्यू कहा जाता है। साक्षात्कार मुख्यतः आमने–सामने बैठकर बातचीत के माध्यम से किसी विषय पर जानकारी प्राप्त करने को कहते हैं, लेकन आजकल फोन पर भी बातचीत के आधार पर सूचनाएँ प्राप्त की जाती हैं। यह साक्षात्कार का एक तरीका है। साक्षात्कार किसी घटना, विषय – वस्तु, या प्रसिद्ध व्यक्तियों से उनके बारे में जानकारी प्राप्त करना है।

व्यंग्य चित्र (कार्टून) – समाचारों परा आधारित व्यंग्य चित्र सिंगल बाक्स अर्थात् एक घेरे में होते हैं। समाचारों पर आधारित कार्टून अखबार की संपादकीय टिप्पणियों, लेखों, और फोटो की तरह ही महत्वपूर्ण होता है। एक छोटे से कार्टून के द्वारा किसी घटनाक्रम की जितनी तीखी टिप्पणी की जा सकती है उतनी तीखी टप्पणी आधे पृष्ठ के लेख में भी मुश्किल है। कुछ कार्टून केवल लोगों के मनोरंजन की दृष्टि से अखबारों में छापे जाते हैं।

ग्रफिक – ग्राफिक सूचनाओं और चित्रों का एक मिलाजुला रूप है। बड़ी घटनाओं के साथ ग्राफिक अवश्य दिया जाता है। एक छोटे से ग्राफ से बहुत सी सूचनाएँ और आँकड़ें एक साथ प्रदर्शित किये जा सकते हैं। ग्राफिक समाचार का सहायक अंग होता है।

विज्ञापन – विज्ञापन अखबारों की आय का प्रमुख साधन हैं। विज्ञापन जुटाने के लिए संवादाताओं की तरह ही विभिन्न क्षेत्रों में अखबार एजेट और कर्मचारी नियुक्त किये जाते हैं। अखबारों को जितने अधिक विज्ञापन प्राप्त होते हैं उनकी उतनी ही आय होती है इस तरह विज्ञापन अखबार का एक अनिवार्य अंग बन चुका है।

26/153 सुन्दर गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु योग्य वर चाहिये सरकारी अर्द्धसरकारी फोटो बायोडाटा सहित संपर्क करें 38/1, न्यू मालवीय नगर, ऐशबाग, लखनऊ फोन 261102 1472

विज्ञापन के प्रकार – अखबारों में प्रकाशित होने वाले विज्ञापन मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं – बड़े विज्ञापन और छोटे विज्ञापन। बड़े विज्ञापन अखबार के पृष्ठ पर स्थान (लम्बाई चौड़ाई) के हिसाब से प्रकाशित होते हैं। ये विज्ञापन पूरे पृष्ठ के भी हो सकते हैं तथा चौड़ाई कॉलम के भी हो सकते हैं। बडे विज्ञापनों में चित्र और सूचनाएँ भी होती हैं, छोटे में नहीं।

विज्ञापन की भाषा – विज्ञापन लिखते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है, कि विज्ञापन की भाषा रोचक सरल और प्रभावित करने वाली हो। विज्ञापन बनाते समय यह भी ध्यान रखा जाता है, कि विज्ञापन संक्षिप्त रोचक आकर्षक, तथा प्रभावशाली होने के साथ ही साथ उसमें पूरी जानकारी भी हो। अखबार का विज्ञापन टी बी. रेडियों के विज्ञापन से अधिक समय तक उपभोक्ता के बीच रहता है।

पत्र – पाठकों के पत्र अखबारों में प्रकाशित किये जाते हैं। इस से अखबारों को अपने समाचारों संपादकीय अथवा अन्य सामग्रियों को सुधारने का अवसर मिलता है।इसके साथ ही पाठकों के पत्र अखबारों के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।

मौसम और बाजार भाव – वस्तुओं के भाव रोज बढ़ते–घटते रहते हैं। ऐसे में व्यपारियों और दुकानदारों को बाजार भाव की जानकारी आसानी से प्राप्त हो जाती है।

कई बार हम मौसम की जानकारी भी जानना चाहते हैं, कि कल कितनी गर्मी थी या सर्दी थी अथवा कल बारिश होगी या नहीं।

प्रिंट लाइन – प्रिंट लाइन प्रायः अखबारों के आखरी पृष्ठ के नीचे दी जाती है। इसके अतिरिक्त अखबारवाले उसके लिए कोई अन्य जगह भी चुन सकते हैं। प्रिंट लाइन देना अखबारों के लिए कानूनी रूप से आवश्यक है।

समाचारों की भाषा – अखबारों की भाषा अलग–अलग हो सकती है। एक संवादाता की भाषा दूसरे से भिन्न रहती है। किन्तु यदि ध्यान दिया जाय तो यह पता चलता है कि अलग–अलग समाचारों की भाषा भी अलग–अलग होती है। जैसे राजनीतक समाचार, खेल समाचार, फैशन और दुनिया के समाचार, बाजार तथा वाणिज्य संबंधी समाचार आदि सभी की भाषा अलग होती है। समाचारों में भाषा पर यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि भाषा जनसाधारण की समझ में आसानी से आ सके।

समाचारों की उपयोगिता – हर व्यक्ति के अन्दर यह जिज्ञासा होती है कि हमारे आसपास क्या हो रहा है, या दुनिया में कौन सी घटना घटी आदि। यह सभी जानकारियाँ हमें अखबारों को पढ़ने से प्राप्त होती है। रोजगार संबंधी जानकारी भी हमें अखबार से ही प्राप्त होती है। अखबार जनता की समस्याओं को भी उठाते हैं, और जनता के अधिकारों की रक्षा भी करते हैं। इसीलिए पत्रकारिता को लोकतन्त्र का चौथा खंभा कहा जाता है।

इलेक्ट्रानिक अखबार – यह अखबार का एक नया रूप है। इस अखबार को केवल कप्यूटर पर इंटरनेट के द्वारा ही पढ़ा जा सकता है। इलेक्ट्रानिक अखबार अन्य अखबारों से महंगा है और आम जनता की पहुँच से बाहर है। आज जिस प्रकार लोगों में पल – पल की सूचनाओं के प्रति जिज्ञासा तेजी से बढ़ती जा रही है। उसमें इलेक्ट्रानिक अखबार बहुत तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। इलेक्ट्रानिक अखबारों में भी अन्य अखबारों की तरह संवाददाता, संपादक फोटो, ग्रफिक, कार्टून आदि की भूमिका भी महत्वपूर्ण है।

पाठगत प्रश्न

दिये गये विकल्पों से सही विकल्प चुनकर लिखिए –

1. अखबारों में प्रकाशित किये जाते हैं –
   (क) सभी समाचार (ख) परिचितों के समाचार
   (ग) राजनीतिक दलों के समाचार (घ) महत्वपूर्ण समाचार
2. फोटो के नीचे छपी सूचना को अखबार की भाषा में कहते हैं –
   (क) इन्ट्रो (ख) सब हेडिंग
   (ग) कैप्शन (घ) समाचार स्त्रोत
3. फीचर में किसका होना अनिवार्य होता है –
   (क) सूचनाएँ (ख) संपादक के विचार
   (ग) घटना क्रम (घ) फोटो
4. साक्षात्कार में मुख्य रूप से होता है –
   (क) घटना का विवरण (ख) आँकड़ें
   (ग) समाचारों के प्रमाण (घ) किसी व्यक्ति से बात चीत
5. समाचारों की भाषा में उदाहरण की गुजांइश –
   (क) होती है (ख) अधिक होती है।
   (ग) नहीं होती है। (घ) कम होती है।

नीचे दीये वाक्यों से सहीं वाक्य के सामने (✓) और गलत के सामने गलत (✗) का निशान लगायें

(क). संपादकीय में समाचारों पर संपादक की स्वतंन्त्र टिप्पणी होती है। (✓)
(ख) फोटो भी अपने आप में एक समाचार होता है। (✓)
(ग) यह आवश्यक नहीं कि फीचर सूचनापरक हो। (✓)
(घ) बाजार–भाव से ग्राहकों को कोई लाभ नहीं होता। (x)
(च) ग्रफिक सूचनाओं और चित्रों का मिलाजुला रूप होता है। (✓)

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. छोटे विज्ञापनों को प्रायः किसके अंतर्गत प्रकाशित किया जाता है?
2. समाचारों पर आधारित कार्टून प्रायः कहाँ प्रकाशित होते हैं?
3. ग्रफिक में किस बात का होना आवश्यक नहीं होता?
4. प्रिंट लाइन में किसके बारें में जानकारी नहीं दी जाती है?
5. जब आप किसी घटना के बारे में पूछते है कि क्या हुआ तो यह समाचार का कौन सा अंग होगा?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. विज्ञापन लाभ का एक चक्रीय क्रम तैयार कीजिए।
2. समाचार तटस्थ और निष्पक्ष होते हैं, इस पर टिप्पणी लिखिए।
3. यह आवश्यक नहीं कि फीचर सूचना परक हो, स्पष्ट कीजिए।
4. आप कौन सा अखबार पढ़ते है? उसमें समाचारों के अलावा क्या–क्या छपता है? खोज कर सूची बनाइए।
5. किन्हीं चार हिन्दी अखबारों के नाम लिखिए तथा उनमें किस तरह के समाचार छपते हैं लिखिए।

पाठ – 26

कैसे बनाएँ परियोजना

परियोजना क्या है? –

परियोजना शब्द के सामने परि उपसर्ग लगाने से बना है। परियोजना में परि शब्द पूर्णता के अर्थ में लगा है। अतः परियोजना का शाब्दिक अर्थ होता है। किसी भी विचार को व्यस्थित रूप में प्रस्तुत करना। परियोजना के लिए अंग्रेजी में 'प्रोजेक्ट' शब्द का प्रयोग किया गया है। प्रोजेक्ट का एक अर्थ होता है प्रकाशित करना। अर्थात् परियोजना किसी समस्या या किसी विषय के तत्वों को प्रकाशित करने के लिए तैयार की गई पूर्ण विचार योजना।

परियोजना का स्वरूप – परियोजना कई प्रकार से तैयार की जा सकती है। हर व्यक्ति इसे अपने ढंग से बना सकता है। परियोजना को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

1. समस्या मूलक परियोजना

किसी विषय की सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करने के लिए समस्याओं से जुडी परियोजना समस्या के निदान के लिए तैयार की जाती है और समस्या के समाधान के सुझाव भी दिये जातें हैं। इस तरह की परियोजना, प्रायः सरकारी अथवा संगठनों द्वारा किसी समस्या पर कार्य करने हेतु तैयार की जाती हैं। इससे समस्या के प्रत्येक पहलू पर कार्य करना सरल हो जाता है।

2. दूसरी परियोजना आसानी से बनाई जा सकती है इसे शैक्षिक परियोजना भी कहते है। इसे भी दो भागों में बाँटा जा सकता है –

1. पाठ पर आधारित परियोजना।
2. शुद्ध ज्ञान के विषयों पर आधारित परियोजना
   इन परियोजना के लिए नया नया तथ्य विषय संबंधी एकत्र किये जाते हैं।

परियोजना का महत्व – परियोजना तैयार करने के लिए विषय के संबंध में सावधान रहना चाहिए। विषय वही चुनना चाहिए जो अपनी रूचि का हो। जिस पर काम करने से हमें आनन्द आये और सभी वस्तुएँ हमें आसानी से मिल जायें।

परियोजना की विशेषताएँ –

इसकी विशेषताएँ निम्नानुसार हैं –

1. परियोजना किसी समस्या के निदान के लिए तैयार की जाती है।
2. किसी विषय की व्यवस्थित जानकारी के लिए भी परियोजना तैयार की जाती है।
3. शैक्षिक परियोजना में खेल–खेल में ही बहुत कुछ सीख जाते हैं।
4. परियोजना मुख्य तथ्यों पर आधारित होती हैं।
5. परियोजना में अपनी भावना व्यक्त करने का अवसर बहुत कम होता है।
6. परियोजना तैयार करने के लिए विषय चयन की पूरी स्वतन्त्रता होती है।

परियोजना कैसे बनाएँ –

1. परियोजना तैयार करने के लिए विषय का चयन समझदारी से करें।
2. अपनी रूचि के ही विषय का चयन करें।
3. परियोजना तैयार करते समय आप को भरपूर आनन्द आना चाहिए।
4. परियोजना के विषय को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।
5. समाचार पत्रों से समाचार और सुन्दर चित्र एकत्रित करना।
6. यदि ग्राफिक और रेखाचित्र प्राप्त हो सके तो बहुत अच्छा है।
7. आँकड़ों के आधार पर समस्या के विभिन्न पहलुओं को अलग–अलग शीर्षक से उसका विश्लेषण करें।
8. जो भी चित्र, आँकड़े, रेखाचित्र, ग्राफिक विज्ञापन आप जहाँ से भी प्राप्त करें। उसका उल्लेख अपनी परियोजना में अवश्य करें

समस्या प्रधान परियोजना –

उदाहरण स्वरूप यदि आप को' पेयजल समस्या' विषय पर परियोजना तैयार करनी है तो इस समस्या पर लिखने के पहले उससे संबंधित सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करें। कारणों को जानें। इसके लिए यह आवश्यक है कि आप जाने कि वर्षा कम होने के कारण नदियों का जलस्तर घट गया है। भूमि का जलस्तर भी काफी कम हो गया है। प्राकृतिक स्त्रोत भी जैसे कुएँ तालाब सूख गये हैं। प्रदूषण के कारण पानी का पीने लायक न होना, जनसंख्या वृद्धि, पानी का अनावश्यक खर्च आदि इस समस्या के कारण हैं। अब इसके प्रत्येक पहलू पर अलग–अलग आँकड़ें एकत्रित करें।ये आँकड़े आपको समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं सरकार द्वारा जारी जल संरक्षण संबंधी पोस्टरों, दस्तावेजों आदि से प्राप्त हो सकता है। अब आप यह देखिए कि जिन राज्यों में पेयजल संकट है वहाँ रोज प्रति व्यक्ति कितने लीटर पानी की आवश्यकता है, और वहाँ कितना पानी उपलब्ध हो पा रहा है। साधारण तौर पर एक व्यक्ति को प्रतिदिन सात लीटर पानी की आवश्यकता होती हैं। उन्हे उतना पानी मिल रहा है या नहीं। समाचार पत्रों में प्रायः नलों पर लगी लम्बी कतार या खाली रखे बर्तनों के चित्र छपते रहते हैं। यह चित्र आपकी परियोजना के लिए प्रमाण का काम करेंगे। अब आप इस बात का पता लगाइए कि प्रशासन इस ओर क्या प्रयास कर रहा है, और प्रशासन अपने प्रयासों में कितना सफल हो रहा है। प्रशासन द्वारा चलाई जा रही योजना में क्या कमी है। यह सभी तथ्यों को विस्तार से लिखना आवश्यक है। साथ ही प्रमाण प्रस्तुत कीजिए और अपने सुझाव भी अवश्य लिखिए।

शुद्ध ज्ञानवर्द्धक विषयों पर परियोजना – इस तरह की परियोजनाएँ, किसी विषय के बारे में समुचित और रोचक जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से तैयार की जाती है। ऐसी परियोजनाएँ समस्या प्रधान परियोजनाओं से केवल इस बात में भिन्न होती हैं कि इन परियोजनाओं में आप अपने भावों की अभिव्क्ति नहीं कर सकते या बहुत कम कर सकते हैं। बाकी सभी बिन्दु समस्या प्रधान परियोजना के समान ही है। उदाहरण के लिए भारत में दशहरा' पर एक परियोजना बनाते है।

'भारत में दशहरा

भारत एक विशाल देश है। यहाँ विभिन्न संस्कृतियों के लोग पाये जाते हैं, तथा अलग–अलग त्यौहार मनाये जाते हैं। जैसे – होली, दीपावली, क्रिसमस, बैसाखी, ईद, पोंगल आदि। इन्हीं में एक त्यौहार दशहरा भी है। दशहरा भिन्न–भिन्न तरह से देश के सभी हिस्सों में मनाया जाता है।

दशहरा मनाने का उद्देश्य – भारत में दशहरा मनाने के पीछे मान्यता है, कि इसी दिन भगवान राम ने लंका के अत्याचारी राजा रावण पर विजय प्राप्त की थी। इसलिए इसे विजया दशमी का त्यौहार भी कहते हैं। रावण के आतंक से पूरी पृथ्वी के लोग परेशान थे। राम ने जब रावण को मार दिया तो सब ने राहत की साँस ली इस लिए इस दिन को बुराई पर अच्छाई की विजय का दिन भी कहा जाता है इसी दिन से भारत में दशहरा पर्व मनाया जाने लगा राम और रावण के बीच दस दिन तक युद्ध चला। ऐसा प्रतीत होने लगा कि शायद राम हार जायेंगे। तब राम ने दुर्गा (शक्ति) की पूजा की और शक्ति प्राप्त कर युद्ध किया, तथा युद्ध जीत गये इसी कारण दशहरा के नौ दिन पहले से दुर्गा पूजा की जाती है। इन नौ दिनों में लोग दुर्गा की पूजा करते है।, और उपवास–व्रत आदि रखते हैं।

दशहरा के अलग–अलग रूप – प्रत्येक प्रान्त में अलग–अलग ढंग से दशहरा मनाया जाता है। दशहरा में रामलीला की जाती है। इसमें रामायण की कथा का अभिनय कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। उत्तर प्रदेश में बनारस के पास रामनगर की रामलीला प्रसिद्ध है।

बंगाल में दशहरा दुर्गा पूजा के रूप में मनाया जाता है इस दिन दुर्गा की प्रतिमा का विसर्जन बहुत धूमधाम से किया जाता है। पंजाब में दुर्गा के स्वागत और पूजा अर्चना के लिए जगराते किये जाते हैं।

गुजरात में नौ दिन तक रोज रात में रास खेले जाते हैं। इसमें स्त्री और पुरूष साथ मिलकर डांडिया नृत्य करते हैं। और भजन गाते हैं। हिमाचल में कुल्लू का दशहरा बहुत अधिक प्रसिद्ध है। यह मान्यता है कि देवी देवताओं का निवास कुल्लू ही है। इसलिए सभी देवी देवताओं की प्राचीन प्रतिमाओं को सुन्दर सिहासनों पर बिठाया जाता है। इसके दर्शन किये जाते हैं। दशहरा के दिन रावण के पुतले के दहन की भी प्रथा है।

दशहरा केवल भारत ही में नहीं किन्तु इंडोनेशिया और इंग्लैण्ड में भी रामलीला का आयोजन किया जाता है। रामलीला पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। बाली द्वीप तो एक ऐसी जगह है जहाँ प्रतिदिन शाम के समय रामलीला का आयोजन होता है।

दशहरा भारत का एक ऐसा त्यौहार है जिसे बुराई पर अच्छाई के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है और इसमें पूरे देश की विभिन्न संस्कृतियों की झलक मिलती है। सभी संस्कृतियों को एक धागें में पिरोए रखने में दशहरा का बहुत योगदान है।

समस्या प्रधान परियोजना –

1. बेकारी की समस्या
2. भारत में नारी शिक्षा
3. दहेज की समस्या
4. नारी उत्पीड़न
5. बाल श्रमिक
6. बिजली चोरी की समस्या
7. पर्यावरण प्रदूषण से उत्पन्न समस्या
8. लगातार बढ़ती जनसंख्या की समस्या
9. वाहनों की बढ़ती संख्या और यातायात में परेशानी
10. नक्सली की समस्या
11. गरीबी की समस्या

शुद्ध ज्ञानवर्द्धक विषय संबंधी परियोजना –

1. भारत में होली का त्यौहार
2. गणतन्त्र दिवस
3. बाल दिवस
4. भारत के पर्यटक स्थल
5. भारत के आदिवासी
6. पंचायती राज्य
7. भारत की वीर महिलाएँ
8. भारत के प्राचीन मन्दिर
9. हिमालय का सौन्दर्य
10. दूध देने वाले पशु
11. भारत का हॉकी खेल

पाठगत प्रश्न

दिये गये विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर लिखिए –

1. परियोजना निम्न खिखित में से किस तरह के विषयों पर तैयार नहीं की जा सकती –
   (क) समस्या प्रधान (ख) भावना प्रधान
   (ग) सामाजिक (घ) आर्थिक
2. परियोजना तैयार करने के मुख्य कौन–कौन से आधार हैं –
   (क) तथ्य, आँकड़े, चित्र अभिव्यक्ति
   (ख) केवल चित्र और आँकड़े
   (ग) भावना और चित्र
   (घ) तथ्य और भावना
3. परियोजना लिखी जाती है –
   (क) सीमित समय में (ख) अध्ययन केन्द्र पर
   (ग) परीक्षा भवन पर (घ) पर्याप्त समय में
4. शैक्षिक परियोजना की विशेषताएँ है कि इसमें –
   (क) कल्पना की उड़ान प्रस्तुत की जा सकती है।
   (ख) बात खेल–खेल में सीखी जा सकती है।
   (ग) भावनाएँ अभिव्यक्त की जा सकती हैं।
   (घ) प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं होती।
5. परियोजना तैयार करते समय चित्र देना –
   (क) आवश्यक है। (ख) आवश्यक नहीं हैं।
   (ग) भावनाएँ अभिव्यक्त करता है। (घ) तीनों मे से कोई नहीं।

उत्तर
1 ख
2 क
3 घ
4 ख
5 क

लघुउत्तरीय प्रश्न –

1. परियोजना कैसे लिखी जाती है?
2. परियोजना के दो तथ्यों पर प्रकाश डालिए।
3. क्या परियोजना कल्पना पर आधारित होती है?
4. समस्या मूलक परयोजना केवल तथ्यों पर आधारित होती है, स्पष्ट करिये।
5. परियोजनाएँ मुख्य रूप से कितने प्रकार की होती हैं, लिखिए।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. होली पर एक परियोजना तैयार कीजिए।
2. परियोजना का स्वरूप कैसा होता है?
3. परियोजना की विशेषताएँ लिखिए। (कोई चार)
4. परियोजना क्या है?
5. परियोजना कैसे बनाई जाती है?